रेवांचल के गीत

मध्यप्रदेश के बघेलखण्ड का वाचिक पक्ष

प्रो. मिथिला प्रसाद त्रिपाठी

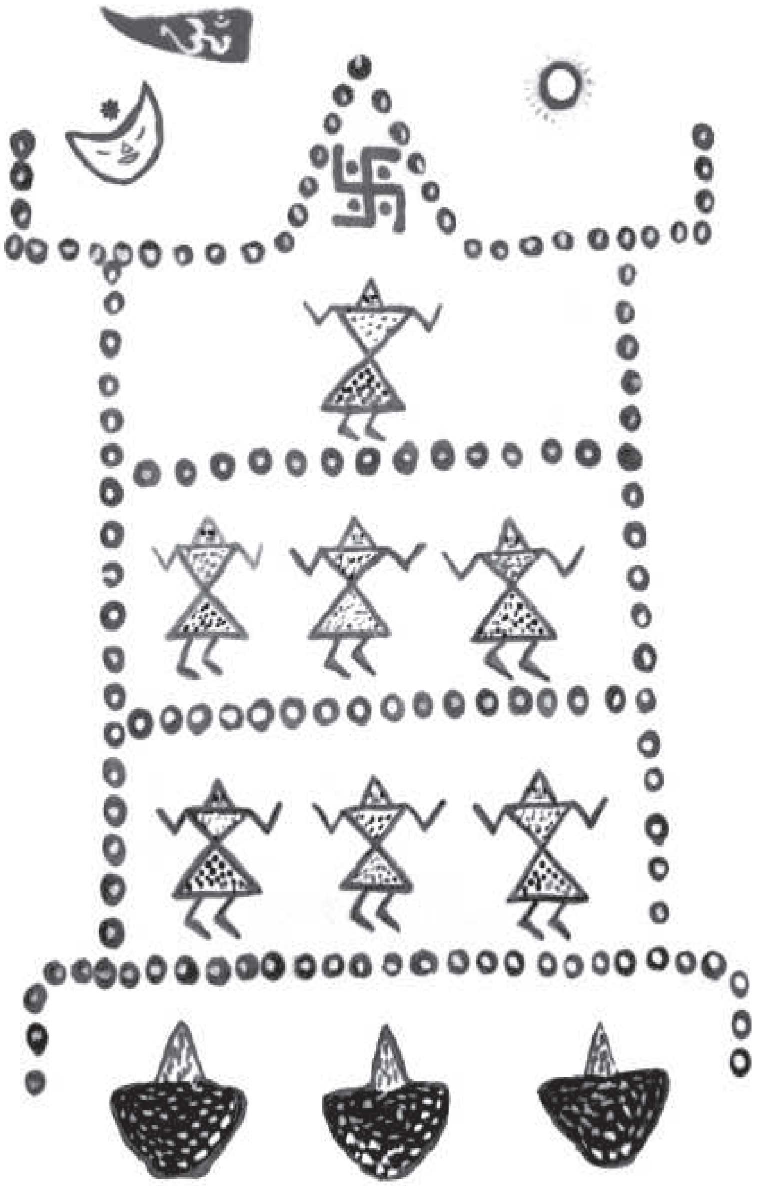

रेवांचल के गीत

मध्यप्रदेश के बघेलखण्ड का वाचिक पक्ष

प्रो. मिथिला प्रसाद त्रिपाठी

प्रधान सम्पादक
श्रीराम तिवारी

सम्पादक
अशोक मिश्र

आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् भोपाल का प्रकाशन

प्रकाशक – आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
जनजातीय संग्रहालय, श्यामला हिल्स, भोपाल–462002
मध्यप्रदेश, भारत
फोन – 0755–2661948, 2661640
E-mail : mplokkala@rediffmail.com

प्रकाशन वर्ष – वर्ष 2012 प्रथम संस्करण

स्वत्वाधिकार – आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

शब्दांकन – आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

आवरण – बघेली लोक चित्र/ अकादमी संकलन से

मुद्रण – शासकीय केन्द्रीय मुद्रणालय, भोपाल

मूल्य – 300/– रुपये (तीन सौ केवल)

■ पुस्तक से सम्बन्धित समस्त विवादों का न्यायालयीन कार्य क्षेत्र भोपाल होगा।

■ पुस्तक में प्रकाशित समस्त सामग्री लेखक की है, आवश्यक नहीं कि प्रकाशक इससे सहमत हो।

ISSN - 978-81-922558-2-8

संस्कार गीतों की परम्परा लोक गीतों का आधार है। वाचिक परम्परा में लोकगीत शब्द रचना और संगीत रचना एक साथ है। संस्कारों के गीत विभिन्न अवसर और अनुष्ठानों तथा लोकाचारों से जुड़े हुए हैं। वे साहित्य और संगीत की लोकपरम्परा से आगे हमारी सांस्कृतिक चेतना और स्वरूप का दर्शन हैं। संस्कार गीत मूलत: स्त्रियों का गान हैं, उनकी भावाभिव्यक्ति हैं। संस्कार गीतों के भाव, सम्वेदना और संगीत में भारतीय संस्कृति का हार्द्र बसता है।

संस्कार गीतों के माध्यम से हम जनपदीय भूगोल और उसके जीवन के उदात्त पक्षों, स्वप्नों, अकांक्षाओं तथा आचरण को सहजता से समझ सकते हैं। वाचिकता में गीत की यात्रा ही इसकी प्रमाणिकता है कि गीत में वर्णित तथ्य और संकेत उस जनपद के जीवन आचरण का हिस्सा हैं।

बघेली की वाचिक परम्परा अत्यंत समृद्ध रही है। विविधतापूर्ण वाचिक साहित्य के संस्कार गीतों पर आधारित यह पुस्तक आपके हाथों में है। संस्कृत साहित्य के ख्यात आचार्य प्रो. मिथिला प्रसाद त्रिपाठी ने अकादमी के आग्रह पर बघेली गीतों के संग्रह और अनुवाद करने की कृपा की है। अकादमी आपके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती है।

– **सम्पादक**

लोक सदा जनमानस की सापेक्षता में ही विकसित होता है। जनमानस में अपनी वृत्तियाँ– प्रवृत्तियाँ यथावसर पल्लवित पुष्पित होती रहती है। उनकी मुखरता सर्वापेक्षी और सार्वजनीन होने पर लोक की हो जाती है। यही लोक शास्त्र का प्रयोक्ता भी है और उसकी प्रयोगशाला भी है। लोक ही सर्वातिशायी है। इसी ने शास्त्रों को रचा भी, अपनाया भी, परीक्षण भी किया और नकार भी दिया। यह शास्त्र भी शास्त्र के लिए नहीं होता है यह तो लोक के लिए ही बनता है, उसी के लिए होता है। लोक अवश्यम्भावी होता है। शास्त्र में विकल्प यदा–कदा ही मिलते हैं, परन्तु लोक में तो विकल्पों की अधिकता रहती है, क्योंकि ये सर्वजन हिताय और सर्वजनसुखाय होते है। लोक चाहे तो शास्त्र निरपेक्ष भी रह सकता है– उसे अपना चरम, जीवन की सहजता, सुगमता और ध्येयनिष्ठता से प्राप्त करना होता है। यह वही लोक है जो जनहित में मनुष्य को भी देवता बना देता है और अहित के कारण मानव को दानव भी बना देता है। मानवता के आयामों को पाने के लिए और उसे पालने के लिए लोक ही सर्वोपरि है। कभी–कभी यह लोक भी बहुमत से तटस्थता को भूलने लगता है, तो कभी वह जनहित से विचलन करने लगता है– तब वही शास्त्र रचता है, उसे मानता भी है और मनवाता भी है। उसे आचरणीय और आदरणीय भी बना देता है। लोक शक्ति अतर्क्य और अतुल्य है।

लोक मनुष्य केन्द्रित तो होता ही है, परन्तु उसमें मनुष्य की पूर्णता को ढूँढने के लिए पशु भी, पक्षी भी, पेड़ भी, लताएँ भी नदी भी, तालाब भी सबके सब उपयोगी रहते हैं। ये सब मानव सापेक्ष होकर 'लोक' के हो जाते है। मानव निरपेक्षता इन्हे लोक से तोड़ देती है, तिरस्कृत कर देती है– अधिक क्या लोक में सन्दर्भ हीन बना देती है। इस प्रकार कभी मानवीकरण के बहाने और कभी साधारणीकरण के बहाने लोक अपने परिवेश से लेखा–जोखा करता ही रहता है। यही समर्थ लोक ही दिशा और दृष्टि दोनों प्रस्तुत करता है और मानवीय सुख–दुःख, हास–परिहास, प्रसन्न –उदास को भी समझता–समझाता है। इसी लोक ने अपने पवन, पानी को समझा और वातावरण भी निर्मित कर लिया। क्षेत्र के अनुसार इनकी बोली–बानी, रहन– सहन, आचार–व्यवहार तथा आदान–प्रदान बनते गए। यह सब जीवन के लिए, जीवन में बिम्बित आत्मा–परमात्मा

के लिए ही होते हैं, सबके लिए होते हैं, तो कभी संस्कृति बन जाते हैं, तो कभी सभ्यता ही बने रहते हैं। ठण्डी हो या गर्मी, वर्षा हो या पतझड़ सब में लोक अपनी प्रकृति के अनुसार आचार–व्यवहार गढ़ लेता है। ये सब कभी ज्योतिष से, कभी परम्पराओं से, तो कभी दशहरा, दीवाली, आखातीज आदि के द्वारा प्रमाणित–परीक्षित होते रहते हैं। जब कुछ नहीं होता है तब भी यह लोक 'ब्रह्मवाक्यं प्रमाणम्' या देवी–देवताओं के पूजागृहों में अपनी सभी मान्यताओं–भावनाओं और परम्पराओं को सौंप देता है। यही लोक जो वेदपाठी ब्राह्मण को रावण बना देता है तथा प्रसिद्ध को अप्रसिद्ध और अप्रसिद्ध को प्रसिद्ध बना देता है।

इस लोक के पास एक बोली होती है, वह भाषा भले ही न हो, परन्तु विभाषा, उपभाषा या व्यवहारभाषा तो होती ही है। लोक के सुख और दुःख, उत्थान–पतन, हास–परिहास और वेदना–संवेदना की वही साक्षी होती है। उसमें कभी–कभी भगवान्, देवता या यजन भी होते हैं और कभी नहीं भी होते है। परन्तु उसमें सारे रिश्ते जुड़े होते हैं। परिवार, कुटुम्ब, समाज बनने–बनाने की सारी क्षमताएँ इसमें भरी रहती है। भावना–कल्पना बरसती रहती है। कभी गाए जाना, कभी दोहराते रहना, कभी किस्से–कहानी बनकर आते रहना और कभी कभार परम्परा से प्राप्त उदाहरणों के रूप में उद्धृत होते रहना ही इनकी जीवन्तता है।

महाकौशल देश का उत्तर पूर्वी भू–भाग जिसकी पहचान रीवा, सतना, सीधी, शहडोल और उमरिया जिले से इन दिनों हो रही है– 'बघेलखण्ड' के नाम से जाना जाता है। वहाँ की लोक भाषा 'बघेली' है। बघेलों से शासित होने के कारण यह भू–भाग बघेलखण्ड कहा गया तथा इस क्षेत्र के लोगों की बोली होने से इसे बघेली कहा गया है। आज कटनी एवं अनूपपुर जिलों के अधिकांश भागों में तथा डिण्डोरी व मण्डला जिलों के बहुसंख्यक लोग भी इसी बोली को बोलते हैं। सतना से जुड़े पन्ना जिले के लोगों और बांदा, इलाहाबाद तथा मिर्जापुर जिलों के भी कुछ भागों के लोगों की व्यवहार में आने वाली बोली बघेली ही है। भाषा विज्ञान की दृष्टि से तो बघेली, छत्तीसगढ़ी और अवधी तीनों को अवधी ही कहा जाता है।

नर्मदा का रेवा भी एक नाम है। यह रेवा अमरकंटक में पैदा होती है। इस रेवा के अमृतप्रवाह का श्री गणेश भी और आरंभ मंगल भी बघेली बोली के क्षेत्र में ही आता है। बघेली बोली वाला भाग रेवा या नर्मदा के उत्तरी भाग में स्थित होने से रेवा या रीवा के नाम से जाना जाता है। रीवांचल बोल व्यवहार रिमही, रिमहाई या बघेली में होता है। रीवा क्षेत्र के लोग रिमहा या रिमाड़ी कहे जाते है। रेवा (नर्मदा) और गंगा–यमुना का यह भू–भाग अपने सुख–दुःख का परस्पर कथन इसी बोली बानी में करता है। रीवांचलवासियों की भावनाओं की साक्षी यही बोली रही है। जब यहाँ के रहवासियों के

घरों, गाँवों और समाजों में कोई उत्साह, प्रसन्नता और उल्लास के प्रसंग आते हैं, तब कोई पूजा, पाठ, अनुष्ठान या वैदिक विधि–विधान होने लगता है, परन्तु उसकी पूर्ति मानों नारियों के कण्ठों से निकले हुए सुरों से भरे लोकगीतों के बिना नहीं होती है। आपस में बैठी हुई स्त्रियाँ वाचिक परम्परा से, श्रुति परम्परा से अपने पारम्परिक सुर संगीतों में रचे–बसे और उतर आए हुए लोकरस का साक्षात्कार ही करने–कराने लगती हैं। नानी–दादी के कहानी–किस्से भूलते जा रहे है, परन्तु पण्डितों की वेदपरम्परा की भाँति नारियों में आरोह–अवरोह, यति, द्रुति, बिलंबित, ताल, लय, धुन सबको सहेजते हुए ये गीत बेटियों–बहुओं की धरोहर बनते रहे है। मंगल गान, उत्सवगान धरती के स्वरों में लहराने लगता है, पूजा प्रसंगों, ऋतुपरिवर्तनों, खेतों–खलिहानों, नाते–रिश्तों, संस्कारों, यात्राओं में बरबस ही लोक गाने लगता है, संस्कृति जगने लगती है। टूटते–जुड़ते रिश्ते नए होने लगते हैं, गीतों में समाए समाज के मानवमात्र के बहुरंगी और बहुआयामी जीवन के हर मोड़, हर करवटें और हर चालें इन्हें ज्ञात होती हैं। वेदों को लिपियों ने बांध लिया है, समेट लिया है और अब वे श्रुति नहीं, लिखित हो गये हैं। अतीत की अकल्पित बौद्धिकता का प्रमाणन उनमें होने लगता है, परन्तु वर्तमान को अतीत से निकालकर वाचिकता को, सामाजिकता को और सांस्कृतिक साक्ष्य को आज भी कण्ठों से कण्ठों तक, कानों से कानों तक, बानी से बानी तक, लयधुनों से साकार करते हुए लोक अपने रस को बरसता है, बरसाता है, डुबाता है और साधारणीकरण करता हुआ तृप्त करता रहता है। लोक जीवन का मर्म, स्मरणीय, अविस्मरणीय संवेदना की सरस नीरस कनखियाँ और आहें ये गीत सहसा कह उठते हैं। जो भाव अन्यत्र नहीं प्रकट हो पाते है, वे इन्हीं में भरे रहते हैं। वेदियों और मण्डपों में पंडितों के मन्त्र भले थक जांय, परन्तु लोक का कण्ठ कभी सूखता नहीं, कभी भूलता नहीं है और कभी रुकता भी नहीं है। इनके संकल्पों में नक्षत्र–ग्रह और राशि आए या न आए, परन्तु गोतियों परिवारों का सच्चा स्वरूप नाते–रिश्तों का उमड़ता हुआ संसार, सयानों, जवानों और बालकों सबके सुरों में हिलोल मारने लगता है, किलोल करने लगता है और तब लगता है कि रीवांचल की धरती का उल्लास शब्द पा गया है, आवाज दे रहा है और अपनों से अपनेपन की बातें कहता भी है, समझाता भी है और चेताता भी है। लोक रस शाश्वत है, मानवीयता का अमर सन्देश है, उनकी बोली बानी का सारस्वत उन्मेष है, चिरन्तन भी है, चिरनवीन भी है, आस्वाद्य भी है और आहार्य भी है। बार–बार पढ़े गए वेदियों में वेदों के मन्त्र तो दक्षिणामुखी बने रहते है, परन्तु ये लोक मन्त्र बेमोल हैं, अनमोल हैं, बोली का ऋण उतारते हैं। ये जब भी गाए जाते हैं सदा सुनने योग्य, दोहराने योग्य, और आज भी पुरखों को प्रत्यक्ष कराने में लगे रहते हैं। इनकी कोई दक्षिणा नहीं होती है। ये परिवार, गोत्र, कुटुम्ब और नातेरिश्तो को ही बांधते–जोड़ते और सजाते–रमाते रहते है। इनकी अविरलता अपनी परम्परा में सदा शाश्वत रहती है।

घर–परिवार के मनमुटाव, जोड़–तोड़, ईर्ष्या–द्वेष से इन्हें कोई सरोकार नहीं होता। लोक गीत तो संबंधों से ही बनता है, बढ़ता है और गाया जाता है। आजी–आजा, माँ–बाप, काका–काकी, फूफा–फूफू, मामा–मामी, भाई– भाभी, जीजा–जीजी के बिना कोई गीत न बनता है, न पूरा होता है और न ही सुर भरता है।

बदलती हुई दुनिया ने इन कण्ठों को सुखा दिया है, परम्परा को खण्डित कर दिया है, संस्कृति को आधारहीन कर दिया है, हमें इन्हें बचाना, सजाना और कहीं न कहीं सुरक्षित रखना होगा। आज चौपालें सूनी हो रही है, बड़े–बूढ़े थके भी हैं, कटे भी है; सास और बहू, माँ और बेटी, दादी और नानी रिश्तों में ही रह गयी है। भारत को भारत के गाँवों को नागरी लीला निगलने में लगी है और सबसे पहले उसने बोली पर आक्रमण किया है, लोक रस में व्यभिचार बढ़ गए है, न जाने बिना स्थायी भाव के रस कैसे बनेगा। नगरों ने गाँवों को सांस्कृतिक रूप से चोट पहुँचाया है। बोलियों का ऋण चुकाए बिना साहित्य सर्जना कपोलकल्पित रहेगी। साहित्य हो या शास्त्र; लोक के बिना अधूरे हैं, अपूरे हैं, और अनबूझे भी हैं। शब्दों का अर्थ तो लोक ही हैं, शब्द भी लोक ही देता है अपने अर्थों को जाँचने–परखने के लिए और यही शब्द का अर्थ से जुड़कर, एकाकार होकर, अनुभूति देकर, साहित्य बन जाता है। परन्तु वहाँ भी लोक ही सचेतक है, प्रेरक है, बोधक है और शोधक भी है। अस्तु यही लोक रस सब रसों का धारक मानव जनमते ही संस्कारों में संवरने लगता है, इसका रुदन हँसने का अभ्यास करने लगता है और मानवता के संस्कारों से बढ़ता हुआ मनुष्य, पुरुषोत्तम, देव और भगवान् तक पहुँच जाता है। यह शिशु से प्रौढ़ बनता हुआ अनेकों ऋतुओं, पर्वों, उत्सवों, संस्कारों, यात्राओं और पूजा प्रसंगों से लेकर यात्राएँ करता है, इसका अन्तर्मन अपनों से अपना अनुभव, उल्लास, सुख–दुःख बांटने के लिए छलकने लगता है, ललकने लगता है और लयों–धुनों में शब्दों की रचना कर देता है– गीत बन जाते हैं, गान बन जाते हैं और वे एक के नहीं मानवीयता के पहरेदार होते हैं, वे घर के, आँगन के, अमराई के, खेत के, खलिहान के, शयन के, जागरण के, तीर्थ के, संस्कारों के और शिशु, तरुण, प्रौढ़ सबके होते है, सबके लिए होते हैं और लोक साक्षी होते हैं। ये गीत समाज, व्यक्ति, देश, जाति सबको लांघते भी हैं और समाहित भी करते है, इनकी पंक्तियाँ वेद मन्त्रों की भाँति आरोहावरोह से बंधी है, शब्द समर्थ है, परन्तु क्षेत्र बदलते ही बोली भावों को सम्हालती हैं, शब्दों की शैली में स्वयं बदल जाती है। हवा, पानी, रहन–सहन के साथ समझौता करती हैं, इसी से लोक रस है, इसी से ये लोकगान है।

– प्रो. मिथिला प्रसाद त्रिपाठी

242, महाश्वेता नगर, उज्जैन (मध्यप्रदेश)

अनुक्रम

सोहर / 13

सोहर दादरा / 106

व्रतबन्ध / 147

तिलक / 160

विवाह / 194

बन्ना या बनरा / 229

सोहाग / 269

बेलनहाई गारी / 302

जेवनार गारी / 330

अंजुरी (द्विरागमन) / 365

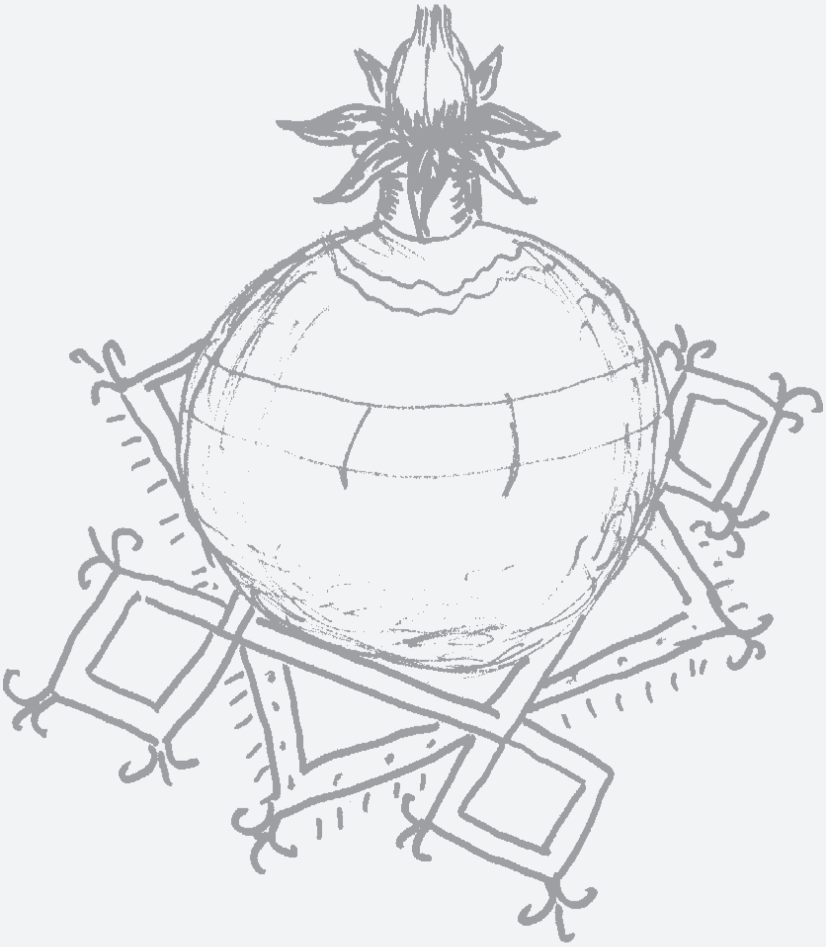

सोहर

मानव सहजीवन का अभ्यासी होता है। वह एक से दो और तीन बनने की भावना से परिवार का निर्माण कर बैठता है। द्वैत को अद्वैत में बदलने का क्रम ही विवाह संस्कार हो जाता है। यह विवाह स्त्री और पुरुष का युग्मभाव, दाम्पत्य भाव सिरजता है। इसका लक्ष्य विलासिता नहीं सन्तति प्राप्ति है, पितृऋण से मुक्ति है। रिमहों का जीवन विवाहोत्तर सन्तति की प्राप्ति ही है। पुत्रों के आते ही गाए जाने वाले गीतों में पुत्र की इच्छा, पुत्रोत्पत्ति, पुत्र हेतु पूजन, पुत्राभाव में दुःखी होना, पुत्रकामना से व्रत करना, पातिव्रत्य से पुत्र पाना, पुत्र का सपना देखना, पुत्रोत्सव का मनाना, पुत्र के प्रति मोह होना, पुत्र होने पर नेग बांटना आदि भावों से भरे गीतों का गान प्रायः कलकंठियों द्वारा पुत्र होते ही सम्पन्न होता है। लोक भाषा में इन्हें 'सोहर' गान कहा जाता है। तुलसी इसे 'सोहिलो' कहते है। यह सूतिका गीत है, सर्जना और सृष्टि का सुख–दुःख इनमें साद्यन्त व्याप्त रहता है।

विवाह के बाद दम्पति चाहते हैं कि उनके घर राम आए, लवकुश आए, सुपुत्र आए जो उनके वंश, क्षेत्र व गोत्र का नाम आगे बढ़ाते रहे। सगर्भा स्त्री की प्रसव पीड़ा सुनकर गाँव की सुहागिनियाँ प्रसव पण्डिताएँ आ जाती हैं। 'सोवरि' में उस क्षण की प्रतीक्षा करती हैं, जब पुत्र 'कहाँ–कहाँ' से प्रश्न करें और उत्तर में सोहर गीत झनक उठते है। सारा घर सोहर की धुन में भर जाता है, उल्लास उमंग मचलता है, इनाम, बकसीस दिए जाते हैं, यही पुत्रजन्म दशरथ को ब्रह्मानंद और परमानंद दोनों दे रहा था।

एक लालच जिय ललचइ जो विधि पुजवइ हो
अब सासु जो होती कौशिल्या ससुर राजा दशरथ हो

दुसरी लालच जिया ललचइ जो विधि पुजवइ हो
अब देवरा त होते राजा लछिमन पुरुष भगवान् हो
तिसरी लालच जिया तरसइ, जो विधि पुजवइ हो
अब पुत्र त होते कुश–लव, घर सेवक हनुमान् जी हो

श्री राम के आदर्श से भरा हुआ रिमहा समाज कभी उन्हें और कभी उनके परिवार को अपने में समाहित कर लेना चाहता है। सौभाग्यवती नारी की भावना है कि उसे सास कौशल्या जैसी और ससुर दशरथ जैसे मिले। देवर लछिमन जैसा तो तभी मिलेगा जब पति श्रीराम जैसे मिलेंगे और घर में लव और कुश जैसे बेटे होंगे। श्री राम के सेवक हनुमान् जैसे होने की कल्पना पुत्र चाहने वाली रिमहीं नारी अपने गीतों में प्रकट कर देती है। वह अपने परिवार को ही श्री राम का परिवार बना लेने का मानो संकल्प ले रही है।

यह गीत भारतीय नारी की ऐसी लालच है जो उसे आदर्शों की पराकाष्ठा का संयोग करा सकती है। भारत का प्रत्येक घर जब राम के आदर्श से भर जायेगा, तभी भाई–भाई का प्रेम, पाल्य–पालक का उदाहरण, सीता का पवित्र चरित्र का उदाहरण प्राप्त हो सकेगा। रीवांचल की नारियों की भावना सामाजिक और सांस्कृतिक राष्ट्रीयता के स्वरों को झंकृत करती हुई पुत्रोत्सव की भूमिका में पुत्रोत्पत्ति की संभावना में समूह स्वर से गान करती हुई राष्ट्र के लिए समर्पित घर के निर्माण की भावना को मुखरित करती हुई सोहर गाती है।

धनी धनी रे अजुधिया धनी रे राजा दशरथ हो
धनी तोरी भाग कौशिलिया त रामा जनम भए हो
भड़वा के लूट भई जब रामा जनम भए हो
भड़वा के नाते रमइया रमइया दूध पीहैं हो
कपड़ा के लूट भई जब रामा जनम भए हो
कपड़ा के नाते रमइया रमइया धोती पहिनइं हो
गउअन के लूट भई जब रामा जनम भए हो
गउअन के नाते रमइया त कपिला राखइं हो
हथिअन केर लूट भई जब रामा जनम भए हो
हथिअन के नाते करहुला रमइया घर सोहइ हो

लोकगीतों का अधिकांश प्रतिपाद्य राम में पर्यवसित होता है। यह गीत भी श्रीराम

के जन्म का वर्णन करता है। अयोध्या धन्य हो गयी, दशरथ जी भी धन्य हो गए और क्या कहें कौशल्या का भाग्य धन्य है, जहाँ श्री राम का जन्म हुआ है। श्री राम के जन्म पर अनेक भाण्डों बर्तनों को लुटा दिया गया था। इसी से पात्रों में श्री राम जी दूध पिएंगे। कपड़ों को लुटाया गया, कपड़ों में से ही दान करने के बाद श्री राम धोती पहनेंगे। गोदान लुटाया गया और गायों में से कपिला रख ली गयी; श्री राम के लिए। हाथियों को राम के जन्म समय लुटा दिया गया, परन्तु राम के लिए युवा हाथी रखा गया।

बर्तनों, कपड़ों, गायों और हाथियों को पुत्रोत्सव में श्री दशरथ जी ने जनता में लुटा दिया, परन्तु दूध पीने हेतु बर्तन, धोती के लिए कपड़ा, गोदुग्ध के लिए कपिला गाय और श्री राम की शोभा के लिए तरूण हाथी रख लिया गया।

यह गीत जन्मोत्सव में दान बाँटने का निरूपण करता है और इस दान प्रसंग से बालक के लिए वस्तुओं को रखने का भी सन्देश देता है। आज के दशरथों की अयोध्या में यह सब तो नहीं होता, परन्तु उसका अनुवर्तन करते हुए दान दिया जाता है। इनाम दिया जाता है, परन्तु लोक के इस नियम में क्रमशः दृढ़ता समाप्त होती जा रही है।

काहे बिन सूना नगर अयोध्या त केहिआ बिन बैठक हो
अब केहि बिन राम रसोइयां केहिआ बिन आंगन हो
राम बिन सूनी है नगरी अयोध्या लखन बिन बैठक हो
अब सीता बिन राम रसोइयां लखन बिन आंगन हो
के के आए भरि गै अयोध्या केकरे आए बैठक हो
अब के के आए राम रसोइयां केकरे आए आंगन हो
रामा आए भरि गइ अयोध्या लखन आए बइठक हो
अब सीता आए राम रसोइयां लखन आए आंगन हो

पुत्रोत्सव के समय गाए जाने वाले सोहर गीतों में मुख्य भाव पुत्र ही होता है। गीत कहीं भी किसी भी प्रकार से शुरू होता है, परन्तु उसकी परिणति पुत्रमहोत्सव में ही हो जाती है। प्रश्नों द्वारा गीतों के शुरू होने की परम्परा है? किसके बिना अयोध्या सूनी लगती है और किसके बिना बैठक सूनी रहती है? किसके बिना रसोईघर सूना–सूना रहता है और आँगन किसके बिना सूना रहता है। इसी का उत्तर देता हुआ गीत आगे बढ़ जाता है कि अयोध्या श्री राम के बिना सूनी है, श्री लक्ष्मण के बिना बैठक सूनी रहती है। राम की रसोई सीता के बिना सूनी रहती है, परन्तु आँगन बालक के बिना सूना रह जाता है। फिर प्रश्न ही गीत को आगे ले जाता है कि किसके आने से अयोध्या भरी–भरी लगती है? किसके रहने से बैठक भर जाती है और किसके आने से

राम–रसोई भर जाती है? साथ ही कौन आता है, तब आँगन भर जाता है। उत्तर देता हुआ गीत कहता है कि श्री राम के आने पर अयोध्या, लक्ष्मण के आने पर बैठक और सीता के आने पर रसोईघर भर जाता है। परन्तु ललना या पुत्र के आने पर ही आँगन भरता है, सजता है और सुन्दर लगता है। राम यदि भगवान् है तो आँगन की शोभा बालक के खेलने से ही होती है। घर का भगवान् तो बालक ही होता है।

गंगा के तीरे मड़ैया रमैया यज्ञ रोपइं हो
बिना सीता यज्ञ न होय सितल बन सेवइ। हो
बहिरे से उचि गे है रामा भीतर उचि बोलइं हो
लछिमन एक बेर जाहु वृन्दावन भौजी लेवाइ लावा हो
आगे के घोड़िला गुरूजी व पाछे के लछिमन हो
अब हेरय लागें रूख के मड़इया जहां सीता तप करैं हो
अंगना बुहारत चेरिया झरोखबन चितवइं हो
सीता आवत हंय गुरूजी तुम्हारेन पाछे लछिमन देवरा हो
नहाय खोरि के सीता रानी ओरी धरे ठाढ़े है हो
सखियां आवत हंइ गुरूजी हमारे त पीछे लछिमन देवरा हो
सोनेन आरती साजिनि त साजि संवारिनि हो
पूजइ लागी गुरूजी के पांव चरन गहि लागइं हो
इतनी सुन्दर सीतल रानी गुनन के आगरि हो
कौने गुन त्यागे अवध का अवध नहिं आए हो
बोले ता बोले गुरुजी अब मति बोलो हो
गुरुजी अस के रूठे भगवान् सपनेउं नहिं देखें हो
अगिनि कुण्ड महं बोरिन फेरि निकारिनि हो
मोरे नमयें गरभ भगवान् त वन का निकारिनि हो

यह गीत सीता निर्वासन की कथा कहता है– गंगा के किनारे श्रीराम यज्ञारंभ करते है। सीता के बिना यज्ञ नहीं होगा, सीता तो बनवासिनी हो गयी है। राम यज्ञस्थल से उठकर अन्दर जाकर लक्ष्मण जी से कहते हैं कि एक बार वृन्दावन जाओ और भाभी को लेकर आ जाओ। आगे के घोड़े से गुरूजी पीछे के घोड़े में लक्ष्मण थे और पेड़ों की कुटी ढूँढने लगते हैं, जहाँ सीता तपस्या कर रहीं थी। आँगन में झाडू लगाने वाली सीता को गुरूजी और उनके देवर लक्ष्मण के आने की सूचना देती है। सीता ने स्नान किया और घर के दरवाजे में निकलकर सोने की थाल में आरती सजा कर सखी से गुरूजी और देवर लक्ष्मण के आने की बातें करने लगती है। गुरूजी की पादपूजा आरती किया, प्रणाम किया और तब वे कहने लगते हैं कि इतने सौन्दर्य और गुणों वाली सीता

आपने अयोध्या क्यों त्याग दिया? अयोध्या क्यों नहीं आती हो? सीता ने कहा— अब बोल दिया, परन्तु गुरूजी आगे न बोलें, क्योंकि मेरे ऊपर भगवान् ही रूठ गए हैं। सपने में भी ऐसा नहीं देखा था। मुझे आग के कुण्ड में डुबाकर निकाला गया था। नौ मास का गर्भ था, तब भगवान् से मेरे पति ने वन के लिए भेज दिया था। यहाँ वृन्दावन या तो तुलसी वन है अथवा सीता की तपस्या भूमि का प्रतीक नाम है, क्योंकि वृन्दा ने भी पति के लिए तपस्या वृंदावन में ही की थी। गुरूजी को घुडसवार बनाकर ले आने वाला गीत संभवतः उलाहना के लिए ही प्रयुक्त हुआ है।

मइहर केरि तुम देवी मंडिल मां बिराजी हो
अब बिनती करउं कर जोरे दरस मइया देतिउ हो
दरशन तरसे हां नैना मिलन का ही जियरा हो
मइया लीन्हे अनेक रंग फूल कै माला सुहावन हो
अन्धन देती तैं नैना कोढ़िन कांहीं काया हो
मइया निर्धन का धन देतीं बांझिन को ही लाला हो
होत भोर भिनसारे ललन मोरे होइगें हो
मइया तै मोही ललना जो दीन्हे बधइया लइके अउबै हो
अन्धन देतीं तै नैना कोढ़िन कांहीं काया हो
मइया निर्धन का धन देतीं बांझिन को ही लाला हो
होत भोर भिनसारे ललन, मोरे होइगें हो
मइया तै मोही ललना जो दीन्हे बधइया लइके अउबै हो

यह सोहर गीत रीवाचंल के शारदापीठ मैहर की देवी की प्रार्थना पुत्र प्राप्ति के लिए प्रस्तुत करता है। गीत में मैहर की देवी जो कि मंदिर में विराजती हैं, उन्हें विनती करने से आरंभ होता है और दर्शन देने का आग्रह करता है। हाथ जोड़कर प्रार्थना लोकललना ने की है कि माँ! तुम्हारे दर्शन के लिए नयन और मिलने को हमारा जी तरस रहा है। हे माँ तुम्हारी सुहावनी माला में अनेक रंगों के फूल गुंथे हुए हैं, तुम अन्धों को नेत्र और कुष्ठ रोगियों को शरीर का दान करती हो। गरीबों को तुम धन देती हो तथा वन्ध्याओं को पुत्र देती रही हों। मैं चाहती हूँ कि सुबह—सुबह मेरे घर पुत्र पैदा हो जाये और जब मेरे बेटा होगा तो बधाई लेकर मैं तुम्हारे यहाँ आऊँगी।

इस गीत में पुत्र प्राप्ति हेतु माँ शारदा से प्रार्थना की गयी है, साथ ही पुत्रोत्सव की बधाई माँ के यहाँ बजवाने की मन्नत भी की गयी है।

रामा राम कहि गोहराऊं लखन उचि बोले हो

अब भइ है कलेउना के जून गउएं दुहि लावा हो
कहना बंधी हमइं गइयां त कहंना बछोलना हो
अब कहना धरी दोहनी नोइया कहां लगबइया हो
सारि मं बंधी हबइं गइया ता परछिन बछुला हो
अब गोरसिन धरी है दोहनिया रकेई खूंटी नोइया हो
का खाती है उयं गइयां का खायं बछोलना हो
अब का खायं उहि गइया दुहबइया गउअन दुहि लाबा हो
चारा खायं उहिं गइया दूध पियइं बछोलना हो
माखन मिसरी खाय दुहबइया गइया दुहि लाबा हो
कउने रंग हमै गइया कउन रंग बछोलना हो
अब कउने रंग दुहबइया गउअइं दुहि लावा हो
लाली रंगन केरि गइया सुपेत रंग बछोलनाहो
अब समरे बरन दुहबइया गउआ दुहि लाबा हो

इस गीत के द्वारा कलेवा के समय गाय का दूध बालक को चाहिए, अस्तु गोदोहन की आवश्यकता है। इसी गोदोहन प्रसंग पर यह पूरा गीत बन गया हैं। नव प्रसूता रामजी कहती हुई पुकार लगाती है, तब लक्ष्मणजी उठकर खड़े हो जाते हैं और बोलते हैं। उन्हें कहती है कि बेटे के कलेवा (प्रातराश) सुबह के अल्पाहार का समय हो गया है, इसलिए गाय दोहन कर लाएँ। प्रश्नोत्तर में ही पूरा गीत चलता है, गायें कहाँ बाँधी गयी हैं? उनके बछड़े कहाँ बंधे है? दोहनी (दुग्ध पात्र या दोहनपात्र) कहाँ रखा है? तथा नोई–गायों के पैर बांधने की रस्सी कहाँ रखी है? दूध दुहने वाले कहाँ है? उत्तर है कि यह गाय गोशाला में बांधी है, गोशाला से लगी परछी या बनी छत के नीचे बछड़े बंधे हुए है, दोहनी गोरसी अर्थात्–दूध गर्म करने के लिए आग जलाने के पात्र पर रखा है। खूँटी में नोई रखी है। पुनः प्रश्न उठता है कि वे गायें क्या खाती है? बछड़े क्या खाते है? और गाय दुहने वाले क्या खाते है? यह सब जानकर गायें दुहकर लाओ। वे गायें घास चारा खाती है। बछड़े तो दूध ही पीते हैं, गायों को दुहने वाले माखन–मिसरी खाते हैं। ऐसी गायों को दुह लावो, गायों का रंग क्या है? और बछड़े कौन से रंग के है? दुहने वाले भी किस रंग के हैं? गायें दुह करके लाइए। गायें लाल लाल रंग की है, परन्तु बछड़े सफेद रंग के हैं, गाय दुहने वाला सांवले रंग का है। गाय दुह कर लाओ।

लोक गीतों में राम का प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है। कभी राम पति के

रूप में याद किए गए हैं तो कभी पुत्र के रूप में भी स्मरण किए जाते हैं। इस गीत में ये राम पति के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। इसके साथ ही लक्ष्मण देवर के रूप में हो जाते हैं। यदि घर में बच्चों के सुबह के भोजन का समय हो जाता है तो इसकी व्यवस्था के लिए माँ अपने बेटे के पिता को ही सब काम कहने को तत्पर हो जाती है। यहाँ गाय दुहने के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्दों की भरमार है। कलेवा, बछोलना, दोहनी, नोई, लगबइया, सारि, परछिन, गोरसी, दुहबइया, सुपेत आदि शब्दों का प्रयोग विशेषतया बघेली में ही किया जाता है। दूध दुहने की बात तब तक पूरी नहीं होती जब तक गाय, बछड़ों, दुहने वाले के विषय में सारी जानकारी प्रश्नोत्तर से नहीं पूरी हो जाती है। लाल रंग की गाय जो गोशाला में बंधी है, उसका बछड़ा परछी में बंधा है। श्यामल रंगी दुहने वाला दोहनी में नोई की मदद से दुह रहा है। मिट्टी का बड़ी तगाड़ीनुमा बर्तन गोरसी कहा जाता हैं। यह लोक गीत कलेवा के लिए गोदोहन मात्र के लिए विवरण देता है जो रेवांचल के घरों की प्रत्येक सुबह आमतौर पर देखा जाता है या घटित होता है।

रामा सोवइं फूल के सेजरिया त सीता जगामइं हो
मोरे नइहर होइ बिअहवा नैहर हम जाबइ हो
जाहु सीता तोहरे बिअहवा नैहर तुहिनि जइहउ हो
रामा घर मां सिखावइं बाइस दिना रहबइ हो
रामा के सजि गए घोड़बा लखन के बछेड़वा हो
रानी सीता के सजि गए महफबा तीनउ चले नेउते हो
रामाजी उतरे हंइ बगिया लखन फुलबगिया हो
साथी सीता जी उतरी गजओवरी माया रीझि भेंटइ हो
अब रामा के भीजइं तिलकिया लछिमन केरि मउरबा हो
रानी सीता केर सोलह सिंगार बनहिं बन भींजइ हो

श्रीराम के ससुराल गमन का प्रसंग लेकर गीत चलता है। श्रीराम फूल की शैय्या पर सो रहे हैं, उन्हें सीता जगाती हैं और कहती है कि मेरे मायके में विवाह हो रहा है अस्तु मैं मायके जाऊँगी। राम ने कहा– सीताजी जाओ तुम्हारे मायके में विवाह है, तुम्ही मायके जाओगी, रामजी ने घर में सिखाया कि बाइस दिन मैं रहूँगा। घोड़ा श्री रामजी के लिए, बछेड़ा श्रीलक्ष्मण जी के लिए तथा सीता जी के लिए पालकी सजी। तीनों लोग निमन्त्रण में चल दिए। श्रीराम बगीचे में उतर जाते हैं और लक्ष्मणजी पुष्पवाटिका में उतर जाते हैं, परन्तु सीताजी अटारी में गयी, माता ने रीझ–रीझ कर उन्हें गले से लगा लिया। पानी के कारण श्रीराम का तिलक भींगने लगता है। लक्ष्मण जी के सिर की मौरी भीगने लगी और सीता का सोलह श्रृंगार भीगने लगता है।

दो भागों का गीत लगता है। एक तो सीता, राम और लक्ष्मण की यात्रा सम्पन्न होकर वे स्थान पर पहुँच जाते हैं, दूसरा तीनों वन में भीग जाते हैं। ऐसा लगता है दूसरा भाग बारात की तैयारी का है। सजने के बाद पानी बरसने पर तीनों भीग जाते हैं।

राजा सोच उर मांही पुत्र मोरे नाहीं हो
रानी तीन तीन घर मांही हृदय नाहीं चैना हो
गुरूजी से विनय सुनाई गुरुहि समुझाई हो
राजन मन वांछित वर पाई जनम लेइहैं ललनाहो
गुरु आयसु जब पाई करइं यज्ञ जाई हो
प्रकटे अगिन देव तहंआई खीर नृप दीन्हे हो
दीन्हेउ खीर खवाई अवध सुख छाई हो
गर्वित भइ कौशिल्या तीनो माई खुशी छाई अंगनाहो
केहिं के जनमे है रघुवर केहिं के लछिमन हो
केहिं के भरत सुजान केहि के रिपुदमनहो
माई कौशिल्या जी के राम सुमित्रा के लक्ष्मण हो
माई कैकयी के भरत सुजान कउन घर गइयाहो
अब केकरे खुशी छाई अंगना आए प्रभु भवना हो
रानी लुटावै घर सोनमा नृपति घर गइया हो
सब रानी खुशी छाई अंगना कौशिल्या जी के भवना हो

यह सोहर गीत भी रामजन्म के प्रसंग का है। राजा दशरथ के मन में चिन्ता हुई कि मेरे बेटा नहीं है, तीन–तीन रानियाँ घर में है, परन्तु मन में चैन नहीं है। गुरूजी से विनय सुनाते हैं; समझाते हैं। राजा को मनवांछित वरदान मिला, गुरू की आज्ञा से यज्ञ किया, अग्नि प्रकट हुए राजा को खीर दिया, खीर रानियों को खिला दिया। अयोध्या में आनन्द बढ़ गया। कौशिल्या आदि तीनों रानियाँ गर्व से भर गयी, आँगन में खुशियाँ छा गयी। राम–लक्ष्मण और भरत का जन्म क्रमशः कौशिल्या, सुमित्रा एवं कैकेयी से हो गया। रानी घर में सोना लुटा रही हैं, राजा घर में गाएं लुटा रहे हैं। कौशिल्या जी के घर में, आँगन में, सब प्रकार की खुशियाँ छा गयी हैं।

चइतइ केर महीना अउर तिथि नवमी हो
रामा लिहिनि अवतार मनुज तनु धरिके हो
केकरे जनम लिहिनि रामा केकरे जनमें लछिमन हो
अब केकरे भे भरत भुआल मनुज तनु धरि के हो

कौशिल्या के जनमें हंइ रामा सुमित्रा के लछिमनहो
अब कैकयी के भरत भुआल मनुज तनु धरि के हो
कउने घड़ी जनमें है राम कउने घड़ी लछिमन हो
अब कउने घड़ी भरत भुआल मनुज तनु धरिके हो

यह सोहर गीत भी राम जन्म के प्रसंग का ही है। चैत की रामनवमी को श्रीराम ने मनुष्य शरीर धारण कर अवतार लिया। राम ने किससे जन्म लिया, लक्ष्मण ने किससे और राजा भरत ने कहाँ जन्म लिया? कौशिल्या से राम, सुमित्रा से लक्ष्मण और कैकेयी से राजा भरत का जन्म हुआ, वह भी मनुष्य का शरीर धारण करते हुए। राम किस घड़ी में जनम लिए और लक्ष्मण ने कौन–सी घड़ी में तथा राजा भरत भी मनुष्य का शरीर धारणकर किस घड़ी में जन्में हैं। श्रीराम, लक्ष्मण और भरत ने शुभ घड़ी में जन्म लिया था।

इस गीत में श्रीरामादि के जन्म का महीना, तिथि और समय का वर्णन हुआ है। ऐसे गीत मांगलिक भी हैं, सोहर भी हैं। अतः प्रायः घर–घर गाये जाते हैं।

मचिअइ बइठीं कौशल्या रानी सिंहासन राजा दशरथ हो
अब जौने दिन राम जनम भए धरती अनन्द भए हो
जौने दिन रामा जनम भए सोना मनि लूट भई हो
सोनमां के नाते बेसरिआ कौशल्या नाके सोहइ हो
जौने दिन रामा जनम भए रुपवन (रुपियन) लूट भई हो
अब रुपया के नाते पायलिया कौशल्या पाए सोहइ हो
जौने दिन रामा जनम भए कपड़न लूट भई हो
अब कपड़ा के नाते चुनरिया कौशल्या अंग सोहइ हो
जौने दिन रामा जनम भए गउअन लूट भई हो
अब गउआ के नाते बछोलन कटोरन दूध पिअइं हो
जौने दिन रामा जनम भए भड़वन लूट भई हो
अब भड़वा के नाते करोलवा रमइया हांथे पानी पिअइं हो
जौने दिन रामा जनम भए हंथियन लूट भई हो
अब हंथिअन के नाते करहुला रमइया द्वारे झूमइं हो
जौने दिन रामा जनम भए घोड़वन लूट भई हो
अब घोड़वा के नाते बछेड़वा रमइया द्वारे नाचइं हो

श्रीराम जन्म के प्रसंग का सोहरगीत है। राजा दशरथ सिंहासन और रानी कौशिल्या मचिआ पर बैठी हैं। जिस दिन श्रीराम जी का जन्म हुआ सारी धरती में आनन्द हुआ, उसी दिन सोना और मणि लुटायी गई। कौशिल्या के नाक में सोना के नाते बेसर सुशोभित है, उस जन्मदिन पर रूप या चाँदी लुटायी गई। चाँदी की पायल कौशिल्या जी के पैरों में सजी हुई है, उस जन्मदिन पर कपड़ों की लुटाई हुई और कपड़ों में चुनरी कौशिल्या जी के सुशोभित हो रही है। जब राम का जन्म हुआ गायों की लूट हुई, गायों के नाम पर बछड़ें कटोरों में दूध पीते बचे थे। उस दिन भड़वा अर्थात् भाण्ड या बर्तनों की लूट हुई। श्रीराम के हाथ में पानी पीने के लिए करोला मात्र ही बचा था। हाथी की लूट हुई, परन्तु रामजी के द्वार पर करहुला अर्थात् हाथी का बच्चा झूम रहा था। राम जन्म के दिन घोड़े भी लूटे गये और घोड़ा के नाम पर बछेड़ा रामजी के द्वार पर नाच रहे थे।

राम जन्मोत्सव में राजा ने इतना सामान लुटाया कि सोने में बेसरि, चाँदी में पायल, कपड़ों में चुनरी, गायों में बछड़े, बर्तन में पानी पीने हेतु करोला, हाथी के नाम पर बच्चे, घोड़े के नाम पर उसके भी बच्चे बचे थे। सब कुछ लुटा दिया था। दशरथ के घर जब राम जी आए तो अन्य सभी वस्तुएँ मिथ्या थी और निरर्थक सी लगने लगी थी।

केकर राग सोहाग केहिआ बइराग हो
केहिआ चाही घर अंगना हो
सीता के राग सोहाग रमइया बइराग हो
कौशल्या का चाही घर अंगना हो
सोने के खड़ाऊँ राम पहिने अंगन बिच ठाढ़े हो
माता देहु वचन हम बोल बचन अनमोल बनइ हम जाबइ हो
लावा न सोने कइ सरइया नयन पूत फोरा हो
पूत जिभिया मां धरा हो अंगार बचन कइसे बोलउं हो
बनइ कइसे भेजउं हो।
मुंह भरि देहु असीस बनइ हम जाबइ हो
अंखियां मां खोसउं सरइया त जिभिया मां अंगरा धरौ हो
छतिया बजर परि जाय बचन कइ से बोलउं हो

यह गीत भी परिवार की मार्मिक ममता का प्रकाशन करता है। किसे अनुराग और सौभाग्य दोनों चाहिए और कौन वैराग्य (उदासी) चाहता है और कौन घर– आँगन आदि

संस्कार चाहता है। यह सीता को पति अर्थात् सौभाग्य भी चाहिए और साथ ही अनुराग स्नेह या प्रेम भी चाहिए, राम को वैराग्य वांछित है और घर– आँगन राज पाट सब तो कौशिल्या को ही चाहिए। आँगन के बीच सोने की खड़ाऊँ पहनकर श्रीराम जी खड़े होते हैं और माता से अनमोल वचन माँगते हैं, कहते हैं कि हम वन जायेंगे। माँ अपने बेटे को न तो वन जाने को कह सकती और न ही वन जाते हुए वनवासी रूप को देख सकती है। अतः वह कहती है– बेटा सोने की सलाई सलाख ला दो और मेरी दोनों आँखें फोड़ दो और बेटा मेरी जीभ पर जलता अंगारा रख दो, मैं वन जाने का वचन कैसे बोलूँगी, वन कैसे भेजूँ? राम ने कहा– माँ खूब प्रसन्नता पूर्वक आशीर्वाद दे दो, हम वनवासी हो जायेंगे, परन्तु पुनः माँ कहती है कि आँखों में सलाखे डाल लूँगी, जीभ में अँगार रख लूँगी, छाती में वज्रपात हो जायेगा। यह बात मैं कैसे बोल सकती हूँ।

यह गीत एक माँ की पुत्र के प्रति ममता की सीमा का उद्घाटन करता है।

मेघन हो मोरे मेघा तुहिनि मोरे सब कुछ हो
बरसहुं कजली बन के भीतर तिनहुं मोरे बन गएं हो
अब रामा बिन सूनी है अयोध्या लखन बिन चौपरिया हो
अब सीता बिन सूनी है रसोइयां तीनहु जन बन गएं हो
अब रामा के भीजइ मकुटिया लखन सिर पगड़ी हो
रामा त आए सकारे लखन दुपहरिया हो
अब सीता त आई गइधुरिया तीनउं मोरे आएं हो
रामा कै भरिगै अजुध्या लखन चउपरिया हो
अब सीता कइ भरिगै रसोइयां तिनहुं मोरे आए हो

इस गीत में सीता, राम और लक्ष्मण के वनवास के प्रसंग को लेकर चर्चा की गयी है। मेघों से प्रार्थना की गयी है कि तीनों लोग वनवासी हो गए है, इसलिए उन्हें गर्मी लग रही है। चौपाल अब लक्ष्मण के बिना सूनी है और सीता के बिना रसोई घर सूना है, तीनों लोग वन गए हैं। श्रीराम का मुकुट भीग रहा है। पानी बरसने पर लक्ष्मण के सिर की पगड़ी भीग रही है। श्री रामजी सुबह–सुबह आ गए है, लक्ष्मण जी दोपहर को आ गए हैं, और सीता जी गोधूलि के समय आई। श्री राम के आ जाने से अयोध्या भरी पूरी हो गयी, लखन के आने से चौपाल भर गयी और सीता के आने से रसोई घर भर गया। ये अपने अभीष्ट तीनों लोग आए है।

यह गीत समान रूप से एक परिवार की पूर्णता हेतु संकेत करता है। पति–पत्नी के साथ देवर का महत्व यहाँ बिम्बित हो रहा है। रसोई घर, चौपाल एवं नगर से

अभिप्राय है कि बिना भोजन शाला के घर का स्वरूप नहीं बनता है और भोजन निष्पादन हेतु गृहिणी भी अपेक्षित है, परन्तु द्वार–दरबार हेतु पति का छोटा भाई भी घर की समस्याओं के निवारण हेतु वांछित होता है। गाँव नगर की सामाजिक स्थिति हेतु गृहपति का दायित्व भी पृथक् होता है। गीत के माध्यम से तीनों का घर में अपना पृथक् स्थान है।

बन मां हइ बइठी सीता रानी मन मां बिसूरइं हो
अब को मोरे आगे पीछे बइठी लटै लट बेउरी हो
अब को धौं धकरिन बोलाई ता नारा छिनाई हो
अब को लाई सोने के छूरा रूपेन केर खप्पर हो
अब को लाई शाला दुशाला पितम्बर ओढ़ाई हो
बनवां से निकली बनसत्तिन सीता का समुझावइं हो
अब हम तोहरे आगे पीछे बइठब लटइ लट बेउरब हो
सीता हम लोह धकरिन बोलाउब त नारा छिनाउब हो
अब हम लउबै सोने के छूरा त रूपे के खप्पर हो
सीता हम लउबइ शाला दुशाला पीताम्बर ओढ़उबइ हो
भोर भए हंइ भिनुसारे त लालन भें हंइ त होरिल भें हंइ हो
अब बाजइं लागीं अनन्द बंधइया गावइं सखी सोहरि हो
हंकरउ नगर केर नउआ हंकरि वेगि लावा हो
नउआ रचि रचि बांटा हरदिया रोचन पहुंचावा हो
पहिला रोचन मोरे गुरूजी का दुसरा कौशिल्या जी का हो
अब तिसरा रोचन लछिमन देवरा पपीहवा न जानइ हो
दुअरा मां बइठे है राजा राम व भइया लखन गए हो
भइया भहर भहर होइ माथा रोचन कहं पाए हो
भला बउरान हो भइया भलिनि मति मारी हो
भइया भउजी के भे है नन्दलाल रोचन हम पाएन हो

सीता की प्रसवावस्था में भावी क्रियाओं के प्रति चिन्ता इस गीत में वर्णित है। वन में बैठी हुई सीता रानी मन में ही सोचती रहती हैं कि अब मैं तो अकेली हूँ, मेरे आगे–पीछे कौन बैठेगा? बालों के लट को कौन अलग–अलग करेगा? बेटा होने पर कौन दाइन को लाएगा और नालच्छेदन कराएगा? अब सोने का छूरा कौन लाएगा? रूप अर्थात् चाँदी का खप्पर कौन लाएगा? शाल और दुशाला कौन लाएगा? कौन पीला कपड़ा ओढ़ाएगा? इसी बीच वन शक्ति या वनदेवता निकलती हैं और सीता को समझाने

लगती हैं कि मैं तुम्हारे आगे–पीछे बैठूँगी, लट (बालसमूह) अलग–अलग करूँगी, सोने का छूरा और चाँदी का खप्पर भी मैं ही लाऊँगी। शाल और दुशाला भी मैं ही लाऊँगी और पीला कपड़ा भी मैं तुम्हें ऊपर से ओढ़ा दूँगी। इसके बाद गीत का चिन्तन वाला भाग समाप्त हो जाता है। बड़े सुबह ही पुत्र जन्म होता है– आनन्द बढ़ता है, बधाई बजने लगती है, सखियाँ सोहर गाने लगती हैं, नगर से नाई बुलाया जाता है और उसे हल्दी से रंगी हुई चावल की राशि जिसे रीवांचल में रोचना कहा जाता है, रोचना बाँटने या पहुँचाने का आदेश दिया जाता है। यही पुत्रोत्सव की सूचना या निमन्त्रण होता है। सीता अर्थात् जननी ने रोचना पहुँचाने का निर्देश भी दिया है। पहला निमंत्रण मेरे गुरुदेव को देना, दूसरा माँ कौशिल्या जी को, तीसरा नेउता देवर लक्ष्मण को देना, परन्तु पपीहा को जानकारी नहीं होने पाए। इसके बाद तीसरा बिन्दु प्रकट होता है। श्रीराम दरवाजे पर बैठे थे। वहाँ लक्ष्मण पहुँचे और वे पूछते हैं कि तुम्हारा सिर भहर अर्थात् चमक रहा है, रोचन कहाँ मिल गया? भाई भला आप नासमझ बन रहे हो, भाभी के नंदलाल अर्थात् पुत्र हुए हैं, उसी का रोचना हमें मिला है।

यह गीत श्रीराम द्वारा वन भेजी गई सीता के प्रसव काल की बातें करता है। वनदेवता सीता की मदद को तैयार होती है, साथ ही पुत्रोत्पत्ति की जानकारी वनवासिनी सीता श्री राम को नहीं देना चाहती। यह सूचना गुरु, सासु और देवर को दे दी जाती है। पुत्र पैदा होने की सूचना लक्ष्मण के ललाट पर लगे हल्दी चावल के रोचन या तिलक से राम को प्राप्त होती है। वस्तुतः वह गीत श्रीराम को सूचना न दिए जाने के अभिप्राय को ही प्रकट करता है।

कहंवा से आई उमा देवी कहंवा महादेव हो
अब कहंवा से आए भगवान् मेढ़ुलिया विराजी हो
दक्खिन से आई उमा देवी त पच्छिम से आए महादेव हो
उत्तर से आए भगवान् मेढ़ुलिया विराजइं हो
काह चढ़इ उमा देवी त काह महादेव हो
अब काह चढ़इ भगवान् मेढ़ुलिया विराजइं हो
दाल चढ़इ उमा देवी त चाउर महादेव हो
फूल चढ़इ भगवान् त मेढ़ुलिया विराजइं हो
काह खाइं उमा देवी त काह महादेव हो
अब काह खाइं भगवान् मेढ़ुलिया विराजइं हो
पेड़ा खाइं उमा देवी त बरफी महादेव हो
लड़्डू खाइं भगवान् मेढ़ुलिया विराजइं हो

काह पिअइ उमा देवी त काह महादेवहो
अब काह पिअइ भगवान् मेढुलिया विराजइं हो
दूध पिअइ उमादेवी त जलवा महादेव हो
अब अमृत घूंटै भगवान् मेढुलिया विराजइं हो

देवी पूजन या देवपूजन सूतकान्त में होता है। उस समय गाए जाने वाला सोहर गीत भी मिलता है। इसमें उमा, महादेव एवं भगवान् विषयक वर्णन उपलब्ध होता है। उमा देवी, महादेव और भगवान् कहाँ से आए है– यह प्रश्न हुआ और उत्तर में दक्षिण से उमा देवी, पश्चिम से महादेव तथा उत्तर से भगवान् के आने का उत्तर मिलता है। इन देवों को क्या चढ़ाया जाता है? इस प्रश्न के उत्तर में भी दाल उमाजी, चावल शिवजी और फूल भगवान् को चढ़ाये जाने का उल्लेख मिलता है। तीनों के भोजन का प्रश्न होता है और पेड़ा उमाजी, बरफी महादेव और लड्डू भगवान् खाते हैं– यह उत्तर मिलता है। पीने के प्रश्न के उत्तर में उमाजी दूध, शिवजी जल और अमृत भगवान् पीते हैं– यह कहा गया है।

शिव और पार्वती के बिना गृहस्थ जीवन बनता नहीं है। दाम्पत्य के लिए उमा की पूजा, विद्या के लिए शिव की पूजा तो पौराणिक मत है ही, परन्तु शिव और पार्वती सर्जना के, सृष्टि के देव हैं। पारिवारिक अनुशासन के भी प्रतीक हैं, परन्तु भगवान् विष्णु पालन पोषण के ही देवता है। सृष्टि का पालन पोषण भगवान् ही करते हैं। मेढुली एक स्थान गाँव में होता है, जहाँ ग्राम देवता की पूजा होती है। दाल, चावल, फूल, दूध, जल, मिष्ठान्न सब गृहस्थी में सदा उपलब्ध रहते हैं और इन्हीं से देवी–देवता सब पुजाते हैं। प्रसन्न होते हैं और घर–परिवार का पोषण–पालन, पल्लवन और संवर्द्धन करते रहते हैं।

कहंना से आई देवी दाई कहना शिवशंकर हो
अब कहनां से आए भगवान् मण्डिल मोरो जगमग हो
उत्तर से आई देवी दाई पश्चिम शिवशंकर हो
अब पूरब से आए भगवान् मण्डिल मोरो जगमग हो
का चढ़ि आई देवी दाई काहेन शिवशंकर हो
अब का चढ़ि आएं भगवान् मण्डिल मोरो जगमग हो
सिंह चढ़ि आई देवी दाई नन्दी शिवशंकर हो
अब गरुड़ चढ़ि आए भगवान् मण्डिल मोरो जगमग हो
का लैके आई देवी दाई काहिन शिवशंकर हो
अब का लैके आए भगवान् मण्डिल मोरो जगमग हो

धन लैके आईं देवी दाई धरम शिवशंकर हो
अब पूत लैके आए भगवान् मण्डिल मोरो जगमग हो

इस सोहर गीत में अपने मंदिर के जगमग होने का वर्णन है, इस जगमगाहट का कारण देवी, शिव और भगवान् का घर में आना है, गीत का प्रश्न है कि देवी, महादेव और भगवान् कहाँ से आए है? वहीं उत्तर भी है कि उत्तर से देवी, पश्चिम से शिव और पूर्व दिशा से भगवान् आए है। अब ये तीनों देवी–देवता किस वाहन से आए हैं? इस जिज्ञासा में सिंहवाहिनी देवी, नन्दीवाहन शिव और गरुड़वाहन भगवान् का उल्लेख किया गया है। पुनः पृच्छा है कि देवी, शिव और भगवान् जब आए तब क्या लेकर आए हैं? उत्तर है कि देवी धन लाती हैं, शिवजी धर्म लेकर आते हैं और भगवान् पुत्र लेकर आते हैं।

सिंह पराक्रम और शौर्य का प्रतीक है, उसी से धनार्जन संभव है। देवी अर्थात् मातृ शक्ति के पराक्रम से ही धन सुरक्षित हो जाता है, परन्तु यह धन शिव अर्थात् मंगल वृत्ति से धर्माचरण और धर्मार्जन में लगता है। मातृ शक्ति का धन, पितृशक्ति का धर्म मिलकर पालन शक्ति से प्राप्त पुत्र का रक्षणपोषण और संवर्धन करते हैं। भगवान् का दिया पुत्र धनवान् होकर भी धर्मवान् रहा आए, ऐसी भावना से ही घर में जगमगाहट और प्रकाश हो सकेगा, इसी भाव का यह गीत है। जहाँ माता–पिता पार्वती–शिव या दम्पति सुखी प्रसन्न रहेंगे, वही भगवान् पुत्र देंगे और वह घर–परिवार समृद्धि की ओर जायेगा।

अंगना बटोरइं अंजनी माता व हनुमान ठुनकै हो
मइया होइगै कलेउना के जून कलेउना हम खाबइ हो
जाहु तू बेटा अशोक वन अशोकवन विचरहु हो
अब लाल–लाल फल खाए हरेन मत खाएहु हो
भोर भए भिनसारे सुरुज पउ फाटी हो
अब लीलि लिहिन हनुमान् त दुनियां अंधेरीहो
यह गति देखइं देवता त बहुतइ अरज करइं हो
हनुमत उगिलि दिया भगवान् त दुनियां अंधेरी हो
जो एहिं मंगल गावइं गाइ के सुनावैं हो
अब तरि बइकुण्ठहिं जाइं सुनइया फल पावहिं हो

यह लोकगीत तो है परन्तु हनुमान् के दिव्य चरित्र का निदर्शक भी बना हुआ है। भूखे हनुमान माँ अंजनी से अरझते हैं, आग्रह करते हैं कि माँ कलेवा का समय हो

गया है; मुझे कलेवा (प्रातराश) करना है। माँ ने कहा– बेटा, तुम अशोक वन चले जाओ, वहाँ वन–वन में विचरण करते रहना। पके–पके लाल–लाल फल तो खा लेना, परन्तु हरे फलों को मत छूना। सुबह हो रही थी, सूरज की किरणें प्रकट हो रहीं थीं, तब लाल सूर्य को देख लाल फल समझ कर हनुमान ने निगल लिया। सारी दुनिया में अंधेरा छा गया और यह स्थिति देवताओं ने देखी तो प्रार्थना की कि दुनिया में अंधेरा हो गया है। हनुमान् जी सूर्य न निगलो। हनुमान् ने सूर्य को उगल दिया। यह कथानक मांगलिक है, जो इसका गान करता है, गाता है, गा गाकर सुनाता है वह तर जाता है, वैकुण्ठलोक चला जाता है और श्रोता लोगों को भी फल मिलता है।

भादौं निशि अंधियरिआ ता जग जोग रोहनी हो
अब प्रकटे हैं दीनदयाल मनुष तन धरिकै हो
कोठवा मां ठाढे दोनौं कर जोरे देवकी हो
अब खुल गए हैं हंथकड़ियां त बिजुर किवाड़ हो, त चन्द्रहरि ठाढ़े हो

यह छोटा सोहरगीत है जो श्री कृष्ण जन्म की स्थिति का विवरण प्रस्तुत करता है। भादौं का महीना है, रात अंधेरी है। संसार में रोहिणी नक्षत्र का योग मिला है, इसी समय दीन के प्रति दया करने वाले प्रभु मनुष्य का शरीर धारण करते हुए प्रकट हुए हैं। देवकी जी जेल की कोठरी अर्थात् कमरे में दोनों हाथ जोड़कर खड़ी हुई हैं। हाथों की हंथकड़िया खुल जाती हैं और व्रज के समान कठोर कपाट भी खुल जाते हैं। सामने चन्द्र के समान उज्ज्वल वर्ण के प्रभु श्रीकृष्ण खड़े दिखने लगते हैं।

यह गीत सूचित करता है कि अंधकार में या न सूझने–समझने की स्थिति में ही दीनता का भाव उदित होता है, तभी प्रभु की दया प्रकट होती है। उन्हें प्रणाम करने पर गमनागमन का बन्धन टूट जाता है और संसार के सभी दरवाजे भी खुल जाते हैं। प्रभु के मिलने पर; ईश्वर का साक्षात्कार होने पर कोई भी बन्धन नहीं रह पाता। सभी ओर से मुक्त होना स्वाभाविक ही है।

छापक पेड़ कदम केर पतवन झापक हो
ओहीं तरी खेलै कन्हइया त हंथवा मां गेद लिहे हो
खेलतइ खेलत गेंदवा त गिरि गै जमुन जल हो
अब कूदि गें कान्हा कालियादह गेंदवा के कारन हो
नाग त सोवइं सेजरिया नागिनि जागइ त बेनिया डोलावइ हो
पीछे लउटि जब देखइ कन्हइया पीछे ठाढ़े हो
भागइ क होइ कान्हा भागउ कहा ता मोरा मानहु हो

मोरा नाग छोड़इ फुंसकार सांवरी होइ जइहंउ हो
कन्हइया कुश कइ डरिया उखारइं त नाग नाथि डारइं हो
अब नाग के पीठि असवार त गोकुला सिधारइं हो
रोवइं कान्हा से नागिनि बिनती बहुत करै हो
कान्हा राखहु मोरा अहिवात व नाग नहिं मारउ हो
कान्हा कहइं ना रोवहु नागिनि धीर धरहु हो
फुलबा लेबइं झरहाइ त नाग फेरि देबइं हो
केहि घर बजत बधइया त केहिं घर सोहर हो
केहि घर परा है तुषार कंधइया फिरि आए हो
नन्द घर बजत बंधइया जसोदा घर सोहर हो
कंसा घर परा है तुषार कंधइया घर आए हो

यमुना के किनारे घने पत्तों वाला छोटा और छायादार कदम्ब का पेड़ लगा हुआ है और उसी पेड़ के नीचे हाथों में गेंद लेकर कन्हैया खेल रहे हैं। खेलते–खेलते गेंद जमुना जी के जल में गिर पड़ती है और कालिया दह में श्री कृष्ण कूद पड़ते हैं। नाग लोग अपनी शैय्या में सो रहे हैं, परन्तु नागिनें जग रहीं थीं, पंखा झल रही थीं। वे जब पीछे मुड़कर देखती हैं, तब श्रीकृष्ण खड़े दिखते हैं। नागिनें कहने लगती हैं– कन्हैया चाहो तो भाग जाओ, मेरा कहना मान लो, मेरा नाग फुसकार लगाएगा तो हम सब काली हो जायेंगी। इधर कन्हैया ने कुश उखाड़ लिया और उसी से नाग को नाथ दिया, उसी नाग की पीठ पर सवारी कर लिया और गोकुल चलने लगे। अब नागिनें कन्हैया से रोने लगती हैं, प्रार्थना करने लगती हैं कहती हैं। कि– हे कन्हैया! मेरे सोहाग या अहिवात या दाम्पत्य की रक्षा करो, नाग को मत मारो। कन्हैया ने कहा– नागिनों रोओ मत, फूल की गेंद झहराकर–हिलाकर ले लूँगा और नाग को लौटा दूँगा। गीत कहता है कि कहाँ बधाई बजी, कहाँ सोहर हुई और कहाँ पत्थर पड़ गया? उत्तर है कि नन्द जी के यहाँ बधाई बजी, यशोदा के यहाँ सोहर गायी गयी, कंस के घर पत्थर पड़ गया, कन्हैया घर आ गए।

यह गीत श्रीकृष्ण लीला के बहाने कालिया नाग से बचने पर पुत्रोत्सव की सूचना देता है। बचपन में बालक को विष से बचने पर पुनर्जन्म ही माना जाता है। यदि न बचते तो कंस परम प्रसन्न होता, परन्तु उसकी योजना में तुषार पात हो गया।

अरे छापक पेड़ छिउलिया त मोतिअन करहइं हो
अब ओहीं चढ़ि कृष्ण कन्हइया बजावें मुख मुरली हो

कृष्णा हो तुम कृष्णा यशोदा जी के बालक हो
कृष्ण सांझइ के मुरली बजाए देखन हम अउबइ हो
पांच बीरन कै बहिनियां ससुर कइ लोलारी हो
अपने प्रभुजी की प्राणन प्यारी देखन कइसे अइहै सुनन कैसे अइहै हो
पांचों भइया का बिरिया लगउबै ससुर पइयां लगबइ हो
अपने प्रभुजी कै बेनिया डोलउबइ देखन चले अउबै सुनन चले अउबै हो
सांझ के बाजी बसुरिया सबेरे तक बाजइ हो
अब ऐसनि नारि गंवारिनि देखन नहिं आई सुनन नहिं आई हो

छिउला (पलाश) का घना पेड़ है। ऐसा लगता है मोतियों की लड़े लग रही हैं। उसी में कन्हैया चढ़ गए और मुँह से मुरली बजाने लगते हैं। किसी स्त्री ने बाँसुरी सुनते हुए कहा कि– हे कान्हा! तुम यशोदा जी के बालक हो, सायंकाल बंशी बजाना, मैं देखने आऊँगी। कृष्ण कहते हैं– तुम पाँच भाइयों में एक बहन हो, अपने ससुर की दुलारी हो, अपने पति की प्राण प्यारी हो, तब कैसे देखने सुनने आओगी। स्त्री कहती है कि पाँचों भाइयों को मैं बीड़ा लगाऊँगी। ससुर के पैर पड़ूँगी। अपने पति को पंखा झलूँगी और देखने–सुनने चली आऊँगी। शाम को बाँसुरी बजने लगती है और सुबह तक बजती रही, परन्तु वह स्त्री न तो देखने आती है और न ही सुनने आती है।

इस गीत में कोई नारी श्रीकृष्ण को बंशी बजाने के लिए सायंकाल का निमन्त्रण देती है, परन्तु श्रीकृष्ण की बंशी सारी रात बजती रहती है। वह अपने भाईयों को पान का बीड़ा लगाती है। ससुर की सेवा और प्रणाम करती रहती है। पति को हवा करती रहती है, परन्तु बंशी सुनने–देखने नहीं जाती है।

ऊँचै घाट जमुन केर विरबा कदम केर हो
अब ओही तीरे ठाढ़े कन्हइया खेलइं लाला गेंदवा हो
फेंकिन गेंदि जमुनजल परिगै कालियादह हो
अब कूदि पड़े है सिरी कृष्ण गेंदौना के कारन हो
नाग के सोवइ बरजोरे नागिन लट छोड़े हो
अब केखर आहे तूं लालनमां केखर गभुआर हो
नन्द के आहेन हम ललना यशोदा गभुआर हो
अब कृष्ण हइ हमारा नाम गेंदौना खेलै आयों हो
चल हट जा नन्द के ललना यशोदा गभुआर हो
अब नाग छोड़इं फुंसकार सामर होइ जइहै हो

नागन बिच होवें असवार फनन पर नचवै हो
अब छोड़ि देते हमरो नाग पइयां तोरे लागउं हो

जमुना जी के ऊँचे घाट पर कदम का पेड़ लगा है और उसी किनारे पर कन्हैया गेंद खेल रहे है। गेंद को जमुना जी के जल में फेंक दिया। वह कालियादह में पड़ गयी। इसके बाद श्रीकृष्ण गेंद के लिए कालियादह में कूद पड़ते है। वहाँ तो नाग वरजोरी किए सो रहे थे। नागिनें लट फैलाकर सो रही थी। वे पूछने लगती हैं कि तुम किसके बेटे हो, किसके सुकुमार हो। श्रीकृष्ण ने कहा कि मैं नन्द बाबा का प्यारा पुत्र हूँ, यशोदा माता का सुकुमार हूँ। नागिनें कहती हैं कि फुसकारी चलेगी तो काले पड़ जाओगे। श्रीकृष्ण जी ने उत्तर दिया कि मैं नागों के ऊपर सवारी करूँगा और उनके फनों पर नाचता रहूँगा। वे बोलीं— हे कृष्ण! हमारे नागों को छोड़ दो, हम तुम्हारे पैरों में प्रणाम कर रहे हैं।

इस गीत में कृष्णावतार की कालियमर्दन लीला का विवेचन मिलता है। पुत्रोत्सव में गाया जाने वाला सोहर गीत इसमें धुन के नाते है, बाललीला के नाते है। प्रायः सोहर गीत श्री राम की लीलाओं से भरे होते हैं, परन्तु कुछ श्रीकृष्ण आश्रित गीत भी होते हैं।

ललना मथुरा नगरिया मां आज जहलिया मां फूल हो
आधी रतिया के रहा है समइया कि रोहिणी नरखत लागे हो
ललना देवकी की कोखिया मां जनमब आज हरि होरिल हो
खुलि गई है गोड़े के बेंड़िया हांथन हंथकड़िया हो
ललना सोइगे है पहरू के लोग फटकवा त खुलिगे है हो
तब कहत कन्हइया अस बानी सुनहु मोरी मइया हो
ललना हमका तू गोकुला भेजावहु समय न लगावहु हो
पिता वसुदेव सुनि बोलिया कि मनवा मगनभए हो
ललना सुपवा में लाल क लेटाई कि गोकुला पयान करइं हो
जैसइ जमुना मां जाइ पगुधारइं कि जमुना अगम जल बाढ़इ हो
ललना पिता वसुदेव गए डेराई कि कैसे अब पार होबइ हो
जमुना की देखि ऐसन बाढ़ कन्हैया पगवा छुआवइं हो
ललना छटि के हंइ जमुना के नीर कि राजा ओंहीं पार भए हो
पहुंचे वसुदेव गोकुला नगरिया कि नन्द के भवनवां हो
ललना जाइ गे लेटउते यशोदा के गोद कन्या लैके लौटइं हो
यशोदा के गोदवा कन्हइया कन्हैया भल खेलइं हो
ललना खुशी भई गोकुल नगरिया सोहरं मिलि गाबइं हो

यह गीत कृष्ण जन्म प्रसंग का है। मथुरा नगरी के जेल में आज फूल– फूल गया। रोहिणी नक्षत्र में आधीरात को ललना का जन्म देवकी की कोख से हुआ। पैर की बेड़ी और हाथ की हथकड़ी खुल जाती है। पहरेदार सो गए, फाटक सब खुल गए। तब कन्हैया ने माँ से कहा कि माँ मुझे शीघ्र गोकुल भिजवा दो, देर न लगाओ। पिता वसुदेव ने बात सुनकर जाने का मन किया। सूप में बेटे को लिटाकर गोकुल चल पड़े। जैसे ही यमुना में जाकर पैर रखा वैसे ही उसमें अथाह जल बढ़ गया पिता डर गए कैसे पार जाऊँगा? बाढ़ देख कन्हैया ने पैर छुआ दिया, पानी उतर गया और वसुदेव उस पार चले जाते हैं। वसुदेव गोकुल गए और नन्द के घर पर बेटे को यशोदा की गोद में लिटा दिया, साथ ही कन्या को ले लिया और लौट आए। यशोदा की गोद में कन्हैया अच्छे लगने लगते हैं। सारी गोकुल नगरी प्रसन्न हो गयी और अच्छी सोहर गाने लगती है।

हम बनबइ लोना दाइनि त नारा छिनउबै हो
सीता हम आगू पीछे तोहरे रहबइ छठी पुजबउबइ हो
होत भोर पही फाटत त ललना जनम भए हो
अब बाजइ लागी अनन्द बधइया गामइं सखि सोहरि हो
तुम पूत भए हा विपत्ति मां बहुत सोचति मां हो
अब कुश ओढ़न अउर कुश डासन बनइ फल भोजन हो
जो पूत होते अजुध्या बहुत सुख मनतेउं हो
अब राजा त पटना लुटउतें कौशल्या रानी अभरन हो
बन परबत कर नउआ बोलाए चलें अउतें हो
अब जाते है धाय अजुध्या रोचन दइ अउतें हो
पहिले दिहे राजा जनक का त दुसरे कौशिल्या का हो
अब तिसरा रोचन लछिमन देवरा पै पिया नहिं जानइं हो
पथरा केरी पथरइली एंगुर रंगढारी हो
अब तेहि चढ़ि रामा दंतुन करैं लछिमन रोचन लाए हो
की कोउ लाए हइं नउआ कि धौ कोउ बरिआ हो
लछिमन भहर भहर सिर होंय रोचन कहं पाएउं हो
जे सीता घर से निकारिनि बनइ पहुंचाइनि हो
अब उनहिन के भए हइं ललनमां रोचन हम पाएन हो
भला बउराने है लछिमन धौ को मति मारिसि हो
अब ओंही पापिनिया के नउआ पै हम ही न बताया हो

हकरे महल में पहरुआ कि तैं चले अउते हो
अब देते नगर का बोलउआ हम वन का खेलइ जाबइ हो
एक बन नाके दुसर बन तिसर बन पहुंचे हो
अब नन्ही नन्ही हांथ धनुहियां बालक दुइ खेलइं हो
केखर तू पुतबा नतिया केखर तू भतिजबा हो
लड़िकौ कउने माया केरी कोखिया जनम ते जुड़ाया हो
हम राजा जनक केर नतिया सितल के दुलरुआ हो
अब बापउ के नांउ न जानित लखन के भतिजवा हो

यह इस गीत में सीता की प्रसूति और लव–कुश के जन्म प्रसंग का मार्मिक चित्रण है। वनवासिनी तपस्विनी सीता के पुत्रों के नालच्छेद के लिए गीत में कोई कहने लगती है कि मैं तो दाई धाय या लोना नामक सेवकिनी बनूँगी। लोना बनकर बेटों का नालच्छेदन कर दूँगी। सीता को आश्वासन देती हुई कहती है कि मैं तुम्हारे साथ साथ या आगे–पीछे रही आऊँगी। साथ रहकर षष्ठी पूजा भी कराऊँगी। इसके बाद सुबह–सुबह सूर्योदय के समय बालक पैदा होता है। सखियाँ सोहर गीत गाने लगती हैं, आनन्द भरी बधाई बजने लगती है। सीता बेटों को सम्बोधित करती है कि– हे पुत्र! तुम्हारा जन्म विपत्ति में, कष्ट में और परेशानियों में ही हुआ है। कुश ही ओढ़ने के लिए, कुश ही बिछाने के लिए और वन के फलों का भोजन ही मिलना है। इसके बाद कल्पनाएँ उमड़ आती हैं और गीत आगे बढ़ने लगता है कि– हे पुत्र! जो तुम अयोध्या में होते तो बहुत सुख मनाती। राजा दशरथ तो कपड़ों को लुटाते रहते, कौशल्या रानी आभूषण लुटाती रहती। वनों से, पर्वतों से नाई बुलाए गये और वे दौड़कर अयोध्या जाते हैं, वहाँ रोचन अर्थात् पीले चावल (निमन्त्रण) दे आते हैं। यह रोचना पहले राजा जनक को, दूसरा रानी कौशल्या को और तीसरा रोचना देवर लक्ष्मण को देते हैं, प्रियतम श्री राम नहीं जान पाते हैं। पत्थर की बनी हुई पथरैली अर्थात् पत्थर की पाटासनी जो लाल रंग से रंगी होती हैं और उस पर बैठकर राम दातून करते रहते हैं, तभी लक्ष्मण रोचना ले आते हैं। श्री राम ने पूछा कि यह तुम्हारे सिर का चमकता–लपकता रोचन कहाँ मिला है? क्या कोई नाई ले आया है? अथवा बारी लेकर आया है। तब लक्ष्मण ने कहा कि जिस सीता को घर से निकाला और वन पहुँचा दिया था, इन्हीं के ललना–शिशु पैदा हुए हैं। उन्हीं का रोचन हमें मिला है। श्रीराम ने कहा कि– हे लक्ष्मण ! तुम बाउर या पागल कैसे हो गए हो, तुम्हारी किसने मति भ्रष्ट कर दी है, उस पापिनी अर्थात् बेचारी के नाई आए और हमें नहीं बताया। महल में पहरेदारों को बुलाया और कहा कि यहाँ आओ, नगर मे बुलौआ दे दो। हम वन खेलने जाएँगे। एक वन से दूसरे वन और

तीसरे वन में पहुँचे। वहाँ देखा कि छोटे–छोटे हाथों में छोटी–छोटी धनुही दो बालक खेल रहे हैं, पूछा कि तुम किसके पुत्र और किसके नाती हो, किसके भतीजे हो? बच्चों किस माँ की कोख से जनम लेकर उसके हृदय को ठण्डा किया है? उत्तर मिला कि हम राजा जनक के नाती (दौहित्र) हैं और सीता माता के दुलारे बेटे हैं, लक्ष्मण के भतीजें है, परन्तु पिता का नाम नहीं जानते हैं।

यह लोकगीत वनवासिनी सीता की सगर्भावस्था का चित्र प्रस्तुत करता है। वन में सीता की दशा को देखकर कोई संवेदनाशीलवती नारी ने कहा कि नारा काटने के लिए मैं ही लोना दाई बन जाऊँगी। चक्रवर्ती राजा के पौत्रोत्सव की स्थिति सोचकर सीता को लगा कि यह तपोवन है। कुश की शैय्या, कुशासनी, कुशवस्त्राच्छादन सब वन्य जीवन का ही है। यदि यही अयोध्या का प्रसंग होता तो सब राज–व्यवहार में हो पाता। परन्तु ममता का मंदिर अयोध्या में रोचना के लिए उत्कण्ठित हो जाता है। इधर सीता अयोध्या में पुत्रोत्पत्ति की जानकारी देना चाहती हैं, उधर राम को भी उकण्ठा बनी हुई है। यह निमंत्रण राम को नहीं था। राजा को नहीं था, क्योंकि राजा ने वनवास दिया था। यह जानकारी पाकर जब भी राम वन में गये, तब दो बालक तो मिले, परन्तु उनका परिचय दण्ड का प्रतिकार सा था। वे जनक के दौहित्र थे, लक्ष्मण के भतीजे थे, सीता के पुत्र थे, परन्तु पिता का नाम नहीं जानते थे। यही लोकन्याय है। शास्त्र और राजधर्म क्या कहता है? परन्तु लोक धर्म और लोक न्याय यथार्थ को, समूह जीवन को, परिवार जीवन को सहेजता है। संभवतः वे लव–कुश राजकुमार नहीं थे। रामकुमार थे अस्तु वे व्यक्ति निर्माण, चरित्रनिर्माण हेतु अयोध्या के महल की अपेक्षा वन में थे, उन्हीं के मुख से पिता का नाम न बताना प्रमाणित करता है कि 'भाग्यायत्तं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरुषम्' उनका पौरुष ही परिचय है, राजत्व की छाया के बिना राम के पुत्र शौर्य में, आचरण में, श्रेष्ठ पुरुष बने। इसी से वे इस गीत में पिता का नाम नहीं जानते। साथ ही सगर्भा सीता के निष्कासन के परिणाम हेतु लोक व्यग्ङय भी है।

अगहन मां अलसानी पूष गरुआनी हो
अब माघ मां मकर नहानी तिरबेनी के संगम हो
फागुन मां होरी खेलबइ चइत नउमी करबइ हो
बइसारव मं फूला हइ टेसू त चुनरी रंगउबइ हो
जेठ मां तपत शरीरा अषाढ मोरिला बोलइं हो
अब तो सामन परा हइ हिंडोलना सबै सखि झूलइं हो
भादौ की रात अंधिअरिआ कन्हइया जनम भा हो
अब सास तिथि आठउं यशोदा कोखि जनमइ हो

यह गीत यशोदा के होने वाले पुत्र के माध्यम से कृष्ण जन्माष्टमी को केन्द्र में रखकर बना है। यहाँ अगहन महीने में अलसाने अर्थात् गर्भधारण की बात इंगित की गयी है। पौष महीने में गर्भधारण का ज्ञान होने का पता चलता है। त्रिवेणी के संगम में माघ महीने में मकर के सूर्य होने पर स्नान करने का वर्णन है। फागुन में फगुआ होरी का खेलना हुआ और चैत में नवरात्र और नौमी की उपासना की गयी। वैशाख में पलाश छिवला के लाल–लाल फूलों जैसे चुनरी रंगाकर पहनने के वर्णन होने पर भी जेठ की तपन शरीर सहन कर लेता है, बोलता भी है। श्रावण मास में दोला हिंडोला या झूला का उत्सव में आनन्द मिलता है। सारी सखियों के साथ वह झूलते हुए भादौं में कृष्ण पक्ष में अष्टमी को जन्म लिया, बालक कन्हैया सा ही होता है।

यहाँ कन्हैया को जन्म यशोदा ने दिया है और घर–घर में यशोदाएँ कान्हा को जन्म देकर उतना ही आनन्द उत्साह मनाती हैं, जितना जन्माष्टमी–रामनवमी को मनाया जाता है।

रंग महल सोवत रहिउं सपन एक देखउं हो
स्वामी भौजी के हुए हंइ नन्दलाल हुंअन हम जाबइ हो
ना तोहरे नउआ न बारी न भइया न भतिजबा हो
धना ना तोहरे डोलिया कहरिया हुंअन कइसे जाबू हो
स्वामी भउजी के भए हैं नन्दलाल त संगे मां जाबइ हो
इतना जो दिखिनि हबइ भइया त माया से अरुझि करइं हो
माया आवत है जीजी हमारि त का दइ मनउबइ हो
दइ दीन्हे हंसिल घोड़बा हांथेनि भरि छड़िया हो
बेटा दइ दीन्हे गले कइ रुमालिया निहुरि पइयां लागिउ हो
मचिअइ बइठीं हां सासू त बहुआ अरुझि करइं हो
सासु अउती हां ननंदि हमारि त का दइ मनउबइ हो
दै दिहिउ पाए कइ पइलिया हांथेनि भर कंगना हो
बहुआ दै दिहिउ काने कै झूमकि निहुरि पइयां लागिउ हो

यह गीत ननद को भाभी के यहाँ पुत्रोत्पत्ति की सूचना मिलने पर होने वाली हलचल पर केन्द्रित है। ननद अपने पति से कहती है कि रंगमहल में सो रही थी। एक सपना देखा। स्वामी! भाभी के बेटा हुआ है, वहाँ मैं जाऊँगी। पति कहता है न नाई, न ही बारी, न भाई, न भतीजा, कोई सन्देश नहीं; कैसे जाओगी? कहार भी नहीं डोली पालकी भी नहीं; कैसे वहाँ जाओगी? वह कहती है कि भाभी के बेटा हुआ है; मैं आपके

साथ चलूँगी। यह बात उसके भाई ने समझा और माँ से कहने लगे? माँ मेरी बहन आ रही है, उसे क्या देकर मनाएँगे, प्रसन्न करेंगे। माँ कहती है कि हंस चाल का घोड़ा दे देना, हाथ का छड़ा दे देना, गले की रूमाल भी देकर झुककर प्रणाम कर लेना। मचिया में बैठी सास से बहू ने ननद को देकर खुश करने का उपाय पूछा। सास ने कहा—बहू पैरों की पायल दे देना, हाथ का कंगन दे देना, कान की झूमका भी देकर झुककर पांव पड़ लेना।

ननद पुत्र होने पर नेग माँगती है, ठुनकती है। उसे भाई—भाभी मनाते हैं वह घर की बेटी ही होती है। सासु से परामर्श लेना स्वाभाविक है। उसे क्या देना है, सास ने बता दिया। यह गीत उत्सव के समय पुत्र के सुख में ननद को प्रसन्न करने का यहाँ विवरण है।

स्वामी तुहिन मोर स्वामी तुहिन मोर स्वामी हो
अब ननद का लगा अठमासा त जलदी बिदा करा हो
ससुरा गए है दक्खिन कहं जेठ पच्छिम कहं हो
बहनोइया त गए हंइ विदेश त कइसे बिदा करी हो
ससुरा त आए हं दक्खिन ते और जेठा पच्छिम से हो
बहनोइया दूर देश ते जलदी बिदा करा हो
लहंगा त गए हंइ सियन कहं लुंगरा बनन कंह हो
अब चोलिया भई हां अनमोल त कइसे बिदा करी हो
ककना त गए हंइ गढ़न कहं छन्नी बनन कहं हो
अब दोहरी त भई अनमोल त कइसे बिदा करी हो
कंकना त देव मइके केर छन्नी मै आपनि हो
अब दोहरी त करि दे उधार त जल्दी बिदा करो हो

कोई बहू अपने पति से बहुत आग्रह करती हुई कहती है कि ननद का आठवां महीना लगा है, अस्तु उसे शीघ्र ससुराल भेजने का निवेदन करती है। पति कहता है कि ससुर दक्षिण दिशा में गए हैं। जेठ पश्चिम दिशा में गए हैं और बहनोई भी घर से बाहर धनार्जन के लिए गए हैं, इस स्थिति में विदा कैसे करेंगे? कुछ दिन बाद ससुर, जेठ और बहनोई सब घर आ जाते हैं, तब फिर विदा का आग्रह करने लगती है। फिर उसका पति कहने लगता है कि लहंगा सीलने गया है, लुंगरा भी बनाया जा रहा है, चोली मंहगी हो गयी है, कैसे विदा करें? और भी कहता है कि कंगन गढ़ने के लिए दिया है, छन्नी भी बनवायी जा रही है और दोहरी तो मिल ही नहीं रही है, अब कैसे

विदा करूँ? बहू प्रस्तावित करती है कि मायके का कंगन दे दूँगी, छन्नी तो अपनी ही दे दूँगी और दोहरी उधारी कर दूँगी, जल्दी–जल्दी विदा कर देना।

यह गीत एक भाभी की चिन्ता प्रकट करता है कि ननद के प्रसव काल में बहुत व्यय होगा, अस्तु विदा कर देने की योजना बनाती है, परन्तु भाई कभी कपड़ों, कभी गहनें और कभी घर में कोई न होने का तर्क देता रहता है। वह इन समस्याओं का समाधान भी करती जाती है, अन्ततः अपना ही आभूषण देना कुछ उधारी करने का सुझाव भी दे डालती है। गीत यहीं पूरा हो जाता है, जो केवल यही सूचित करता है कि ननद भाभी का प्रचलित व्यवहार यहाँ भी जीवित है।

मचिअइ बइठीं सुभद्रा त सुरुज मनावइं हो
मोरे भइया के जो होइहैं होरिलवा, बधइया लइके जाबइ हो
एतना जो सुनिनि हंइ भउजी त धाइ महल गईं हो
स्वामी धीरे धीरे बाजइ बधइया धीरेनि उठि सोहर हो
अब सुनइ पइंही ननंदी सुभद्रा बधइया लइके अइहीं हो
रामा भोर भए हां भिनसारेन लालन भें हंइ त होरिल भें है हो
अब बाजइ लागी अनन्द बधइया गावइं सखि सोहरि हो
बाजत आवंइ दस बाजन अउर कसायल हो
अब नाचति ननंदी सुभद्रा पायल नहिं बाजइ हो
एतना जो दिखिनि हंइ भइया त धाइ महल गें हैं हो
धना अउतीं है बहिनी हमारी गरब नहि कीन्हे निहुरि पइयां लागेउ हो
ननंदी तुहिनि मोरी ननदी तुहिनि मोरी सब कुछ हो
ननंदी सिठिया भरे हंइ मोरे हाथ मै कैसे पइयां लागउं हो
ललना के रतुली पलंगिया ओहिनि चढ़ि बइठा हो
हांथेनि कछु डारा गरेनि पहिरावा हो
सोनवा त मोरे सेर भर, रूपिया पसेरी भर हो
भउजी हम त लेबइ गजमोहना भतिज नेउछावरि हो
सोनवा त हइ हमरे अनधन रुपवा पसेंरी भर हो रुपवन ओरी चुअइ हो
ननंदी एक नहीं देवइ गजमोहना तौ गरुहै दामकेर त हमरे बबुल केर हो
इतना जो सुनिन हंइ ननंदी त ननंदी रिसाइ गई हो
एक गजमोहना के कारण ननंदी रिसाइ गई हो
इतना जो दिखिन हइं भइया त धाइ महल गए हो
धौ कौन बचन तुम बोलिउ तौ ननंदी रिसाइ गई हो

सोनमां त देत रहिउं सेर भर रुपवा पसेरी भर हो
राजा एक नहिं दीन्हेउ गजमोहना त ननंदी रिसाइ गई हो
झोरवा से लिहिनि भभूतवा त माथवा लगाइ लिहिनि हो
भइया होइगे है जोगिया वैरागिया बहिनिया के कारन हो
हंकरइं नगर केर कहरा हंकारि वेगि लावहु हो
कहंरा हलि भलि डोलिया सजावा त बहिनी मनाइ लई हो
सभवा से उठे ननदोइया त धाइ महल गे हंइ हो
धना अउती हंइ भउजी तुम्हारी त सरहज हमरिउ हो
धना बरहों मां लिंहे गजमोहना त पउंदि डराए हो हो
बहिनि चढ़ि आवइ गरब नहिं कीन्हिउ पलंग बइठाइउ हो
बारह गजमोहना के कारन भइया विदेशी किहेउ हो
ननंदी एक गजमोहना के कारण भइया विदेशी किहेउ हो
भइया होइगे है जोगिया बैरागिया त एक तोहरे कारन हो

इस गीत में सुभद्रा ननद की प्रतिनिधि है। ननद की यह कल्पना कि भाभी के बेटा होगा तो बधाई लेकर जाऊँगी। भाभी को परेशान कर देती है। मचिया में बैठी हुई सुभद्रा जी सूर्य से मन्नत कर रही हैं कि यदि मेरे भाई के बेटा होगा तो मैं बधाई लेकर जाऊँगी। इतना सुनते ही भाभी दौड़कर महल में घुस जाती है। बच्चा भी हो चुका है। बधाई बज रही हैं, सोहर गीत गाए जा रहे हैं। महल में जाकर वह पति से बोलने लगी कि स्वामी जी बधाई धीरे–धीरे बजवाएँ, और सोहर गीत भी धीरे–धीरे गाने दें, क्योंकि ननद सुभद्रा जी सुन पाएंगी, तो बधाई ले के आ जायेंगी। सुबह–सुबह बेटा हो गया और बधाई बजने लगती है, सभी सखियाँ सोहर गाने लगती हैं। दस बाजे बजते हुए आ रहे हैं और कषाय रंग के लोग साथ में है। यह दृश्य भाई ने जब देखा तो महल में प्रवेश कर जाते हैं। पत्नी से कहते हैं कि प्यारी पत्नी, मेरी बहन आ रही है, तुम घमण्ड में नहीं रहना, झुककर पांव पड़ना। ननद के आने पर भाभी कहती है कि ननद जी तुम्हीं हमारी सब कुछ हो। मेरे हाथ में सीठा लगा है, मैं कैसे पैर पडूँ। ललना की रंगीन, छोटी पलंग है, उसमें बैठ जाओ। बेटे के हाथ में कुछ डाल दो, गले में भी कुछ पहना दो। तब ननद अपनी भाभी से कहती है कि मुझे अब नेवछावर चाहिए। हमारे पास एक सेर सोना है और पाँच सेर (पसेरी भर) चाँदी है। भाभी मैं तो गजमोहन बेटे की नेवछावर में लूँगी। भाभी ने कहा कि सोना तो हमारे लिए अन्य धन सा है, रूपया चाँदी की ओरी चू रही है, अर्थात् बरसात हो रही है, परन्तु मैं गजमोहन नहीं दूँगी। वह भारी मूल्य का है और हमारे पिता जी ने दिया है। इतना सुनने पर ननद नाराज हो जाती

है, रूठ जाती है। केवल गजमोहन के कारण वह रूठ जाती है। यह देखकर भाई दौड़कर महल में घुस जाता है और पत्नी से कहने लगा कि तुमने क्या बोल दिया कि तुम्हारी ननद रूठ गयी है। वह बोलती है कि मैं सोना एक सेर और चाँदी पाँच सेर दे रही थी, परन्तु गजमोहन नहीं दिया और वे रूठ गयी हैं। भाई ने झोले से भभूत निकाल लिया और माथे पर लगा लिया। वह अपनी बहन के लिए जोगी–बैरागी हो गया है। बैरागी होने के बाद भाभी ने कहारों को बुलवाया, डोली सजवाया और पालकी में चढ़कर बहन को; ननद को मनाने के लिए चल देती है। अपनी सरहज को आते देखकर ननदोई पत्नी को समझाने लगते हैं कि प्रिये तुम्हारी भाभी और मेरी सरहज चली आ रही है, बरहों के समय तुम गजमोहन ले लेना और पउंदि अर्थात् पदयात्रा में चलते समय कपड़ा बिछाकर उसी से चलना। बहन के पास चढ़कर भाभी आ रही है, उससे घमंड नहीं करना, पलंग में बैठा लेना। भाभी के आने के बाद का हाल है कि वह ननद से कहने लगती है कि– हे ननद जी! तुम्हारे पास बारह गजमोहन हैं और एक ही हमारे पास है, तुम्हारे द्वारा माँगे गए एक गजमोहन के कारण तुम्हारे भाई विदेश चले गए हैं। तुम्हारे कारण ही तुम्हारा भाई जोगी–बैरागी बन गया है।

इस गीत में ननद भाभी की अस्मिता का रूपांकन हुआ है। संभवतः गजमुक्ता के हार को गजमोहन कहा जाता है। यह बहुमूल्य होता है। इस प्रकरण को यथावत् छोड़कर भाई वैराग्य ले लेता है, परन्तु उसकी पत्नी ननद के घर जाती है और उसे कहती है कि तुम्हारे पास बारह हार हैं, मेरे पास एक ही हार है, परन्तु उसे भी चाहती हो कि मेरे पास न रहे, सम्भवतः इसी से ननद का भाई वैराग्य ले चुका है। वह भी अपनी बहन के व्यवहार या रूठने के कारण बैरागी बन गया है।

यह गीत प्रमाणित करता है कि बेटे के जन्म पर ननद बहुमूल्य नेग लेती थी, रूठती थी, भाई की क्षमता का ध्यान नहीं देती हुई, इस प्रकार की हठधर्मिता का व्यवहार करती थी।

न्हाइ धोइ ठाढ़ी ननदिया त सुरुज मनावइ हो
सुरुज भउजी का देहु नन्दलाल उठाइ लइ जाबइ हो
खिरकी से बहुआ नहाइनि सुरुज पइयां लागइं हो
अब सुरुजेन अंचरा फहराइनि त गरभ जनानेउ हो
पूत मोरा बसइ विदेशवा बहुआ धमधूसरि हो
बहुआ कउन छैला चित डारिउ त गरभ जनाइउ हो
संझहिन डोरी लगायेउं आधी राति बांधेन हो
सासू चीन्हा तू आपन पुतवा लांछन न लगावहु हो

नहाना–धोना करके ननद जी खड़ी होती हैं और पवित्रता से सूर्य देव को मनाती हैं कि– हे सूर्यदेव! भाभी को नन्दलाल अर्थात् पुत्र दे दो तो मैं उसे उठा ले जाऊँगी। खिड़की से बहू ने स्नान के बाद सूर्य को प्रणाम करती है और उनकी तरफ आँचल फैला देती है। कृपा प्राप्त होती है और सगर्भा दिखने लगती है। सास कहती है कि मेरा पुत्र विदेश में रहता है, बहू खा–खाकर मोटी हो गयी है, तुमने किस छैल अर्थात् रसिक व्यक्ति से चित्त लगा लिया और सगर्भा हो गयी हो। बहू कहती है कि शाम को ही रस्सी लगा दूँगी और रात तक बंधी रहेगी। आधीरात को सास को कहने लगती है। आप अपने पुत्र को पहचानो, मेरे ऊपर दोषारोपण मत करना।

यहाँ पर गीत के द्वारा यह प्रकट हुआ है कि कोई बहू सगर्भा होती है, परन्तु यह उसकी सास को सन्देह हो जाता है तो इसी बात का निराकरण किया जाना बहू के लिए आवश्यक होता है। बहुएँ परिवार की मर्यादा एवं भाभी कुलाचार की पोषिका होती है, अस्तु बदलते परिवेश में भी सासुएँ उन्हें अपनी मर्यादा और आचार की दीक्षा देने में तत्पर रहती है।

ननदी भउजी मिलि बइठीं त एकमति कीन्हिनि हो
भउजी जो तोरे होइहंइ नन्दलाल चुनरिया लइ लेबइ हो
ननदी तुहइं मोरी ननदी तुम ही मोरी सब कुछ हो
ननदी तोहरा बचन फुरि होतै चुनरिया दइ देबइ हो
आठ महिन मां के बीते नमए लाला जनमें हइं हो
अब बाजइ लागी आनंद बधइया गामइं सखि सोहर हो
धीरेनि बजइ रे बधइया धीरेनि उठइ सोहरि हो
अब सुनइ पइहीं ननदी हमार बधइया लइके अइहइं हो
चुनरिया लइ लेइहंइ हो
सौ रे लगइ मोरे घांघरे सवा सौ छोरउ हो
अब सौ रे लगइ मोरे अंचरे चुनरिया नहिं देवइ हो

ननद और भौजाई एक साथ बैठकर परामर्श करती हैं कि यदि भौजाई के पुत्र पैदा होगा तो ननद चुनरी ले लेगी। यह सुनते ही भौजाई ननद की प्रशंसा करती हुई कहती है कि तुम हमारी सर्वस्व हो, तुम्हारी बात यदि सच हो जायेगी तो मैं चुनरी दे दूँगी। अब आठ मास बीत गए नवें में पुत्र पैदा हुआ, तब बधाइयाँ बजाई जाने लगीं, सखियों का सोहर गान परिसर को गुंजित करने लगता है, बधाइयों का वाद्य स्वर मन्द–मन्द रहता है। सोहर का स्वर भी धीरे–धीरे ही होता है। भौजाई को लगा कि

मेरी ननद जी सुनेंगी तो बधाई लेकर आ जायेंगी और चुनरी ले जायेंगी। उसका घाघरा सौ रुपैया का बना है, सवा सौ रुपये में छोर किनारा मिलता है, आंचल भी सौ रुपये में ही मिलता है, अब मैं चुनरी नहीं दूँगी।

यह गीत ननद भाभी के बीच के स्वाभाविक बातों का प्रसंग हैं,। हर ननद को भाभी से बच्चे होने पर ठुनकने और नेग माँगने का स्वभाव होता है। भाभी भी नेग तो देती है, परन्तु नकारती भी रहती है। लगता है यही रस दोनों के रिश्तों को संजीदा रखता है, जागृत रखता है, सजग रखता है और सरस भी रखता है। माँगना–नकारना–देना फिर बातों में उतार चढ़ाव करते रहने से ही घर–परिवार–समाज ननद और भाभी के सम्बन्धों को बड़ी ही नजाकत, उत्साह और उत्कण्ठा से देखता है। उजड़ते–उखड़ते परिवारों और व्यवहारों ने इन रिश्तों में भी ग्रहण लगाना आंरभ कर दिया है।

पहिल महिनमां जो लागा माथा मोरा ठनकइ हो
अब दूसर महिनमां जब लागा बदन मोरा सिहरइ हो
तिसरे महिनमां के लागत गोड़ मोर फाटइ हो
चउथ महिनमां के लागत अंबिलिया के साधि लागइ हो
स्वामी पंचमां महिना जब लागा मछरियाचित लागइ हो
छठमां महिनमां जब लागइ नेबुलबा कइ साधि लागइ हो
स्वामी सतमां महिनमां जब लागइं नइहरवा संदेश भेजा हो
अठमां महीना जब लागइ भिनसारे जिउ अकुलोनउ हो
नउमां महीना जब लागइ त थर–थर परान कांपे हो

यह गीत सगर्भा वधू के प्रथम अनुभव और नवमासों के अनुभवों को गाता है। पहले महीने में माथा ठनकता है, अर्थात् महसूस होता है, अनुभव होने लगता है। और दूसरे महीने में शरीर में सिहरन होने लगती है, प्रभाव पड़ने लगता है। तीसरे महीने में पैरों में पिड़लियों में दर्द होने लगता है, फटने जैसा दर्द होने लगता है। चौथे महीने में खटाई खाने की इच्छा होने लगती है, परन्तु पाँचवें महीने में मछली जैसी वृत्ति होने लगती है। गर्मी लगना, पसीना आना और छटपटाहट लगना प्रांरभ हो जाता है। जब सातवां महीना लगता है, तब मायके सन्देश चला जाता है और ससुराल तथा मायका दोनों पक्षों में पुत्रोत्सव की तैयारियाँ, कल्पनाएँ और योजनाएँ बनने लगती हैं। आठवें माह में सुबह जी मिचलाने अकुलाने लगता है। परन्तु नवें मास में प्रसव पीड़ा की स्मृति में प्रकम्पन होने लगता है। शरीर थर–थर कांपने लगता है। यह लोक का सच है। सारी स्त्रियों के मातृत्व की कथा है। उन्हें मातृत्व की पवित्र पदवी के लिए नौ महीनों

की तपस्या अकेले करनी होती है तथा इसी प्रकार की दशाओं से कमोबेश सबको गुजरना पड़ता है, इसका चित्रण भी एक गीत में नारियों को बदल दिया है।

पहिलइ पेट पहिल उठी पीर बहुआ बड़ी लेल्हरि हो
अब रमति गमति आवइ पीर मै केहिं गोहरावउं हो
सासु मोरी सोवति ओसरवा ननदि गज ओवरिउ हो
अब प्रभु सोवइं रंगी महलिया मै केहिं गोहराई हो
सासु कै दाविउं मैं अंगुरिया ननदि कइ छंगुरियउ हो
अब प्रभु जी कै दाबेउं पेंडुलिया जगाये नहिं जागइ बोलाए नहिं बोलइं हो
होत बिहान पौ फाटत ललना जनम भए हो
अब बाजइ लागीं अनन्द बंधइया गामइ रे सखि सोहरि हो
सासु त उठि हमइं गावति ननदि बजावत हो
अब प्रभुजी त उठे मुसुकात त पटना लुटउतें हो

यह गीत सलज्जा कुलवधू के प्रथमपुत्र प्रसव के प्रसंग का है। पहली बार पेट में पीड़ा उठती है। पहला ही अनुभव है। बहू बहुत सावधान सुन्दरी है। वह सोचती है कि धीरे–धीरे पेट की प्रसव वेदना बढ़ने लगी है, किसे आवाज देकर बुलावे, क्योंकि उसकी सास अन्तःपुर की चौपाल में सो रही है। ननद अटारी में सो रही है। रंगमहल में उसका पति सो रहा है। अब वह किसे और कैसे बुलाए? सास के पैर की उंगली दबा देती है। ननद की छोटी उंगली दबा देती है और अपने पति की पेडुंली पैर की दबाने लगती है, परन्तु कोई नहीं जग रहा है। बोलने पर कोई बोल भी नहीं रहा है। यही करते–करते सुबह हो गयी सूरज की लालिमा चारों ओर फैल गयी। घर में बालक का जन्म हो गया और आनन्द भरी बधाई बजने लगती है। सखियाँ सोहर गाने लगती है। सासु जी सोहर गाते हुए जगकर उठती हैं, ननद बजाते–बजाते उठती है, परन्तु पति मुस्कुराता हुआ जगता है और कपड़ों का दान लुटा रहा है।

यहाँ गीतों में पति के लिए स्वामी, हरि, प्रभुजी जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है। इससे भारतीय नारी के विवाहोपरान्त पति के प्रति आस्था की, श्रद्धा की पराकाष्ठा व्यंजित होती है। सामाजिक मर्यादाओं में वह प्रसन्न होता है और पट अर्थात् वस्त्र को बांटने में अपनी प्रसन्नता स्पष्ट करता है।

गोरेन मुख केरि धनियां देखत बड़ी सुन्दर हो
सुन्दरि चढ़ि गई है अटरिया त वेदनइ विआकुल हो
देवरा न होहु मोरे देवरा तुहिनि मोरा सब कुछ हो

देवरा तोहार भइया गए हैं कचहेरिया बोलाइ लिहे आवा हो
एतना जो सुनिनि रामचन्दा त बिरिआ उगिलि दिहिनि पशवा मिचिकि दिहिन हो
अब झपटि के चढ़े हइं अटरिया त धना केर मुख देखइं हो
जो तुम रहत भमरमा मधुर मुसुकान मां हो
फिरि फिरि दिहिनि सुपरिया त बिरिया लगाइनि हो
जियरा परा है मोर गाढ़ बेगाने होइके बइठे हो
छनिया जो होती छाइ चढ़उतेउं त मनई बोलवउतेउं हो
अब विधि केरि बांधी गठरिया करइ कर छूटइ हो

यह गीत प्रसव वेदना की अभिव्यक्ति विषयक ही है। गौर वर्ण के मुँह वाली पत्नी देखने में बहुत सुन्दर लग रही है। सुन्दरी अटारी में चढ़ गयी, प्रसव पीड़ा से बहुत व्याकुल हो रही थी। देवर से उसको सब कुछ कहती हुई आग्रह करती है कि तुम्हारे भैया कचेहरी यानी दरबार में है। उन्हें बुला कर लाओ। यह सुनते ही पति पान का बीड़ा उगल देता है, पाशा फेंक देता है, जल्दी–जल्दी अटारी में चढ़ जाता है और प्यारी पत्नी का मुँह देखने लगता है। तब वह कहने लगती है– तुम जब मेरे लिए भौरा जैसे बन गए थे, मीठे–मीठे मुस्कुराते रहते थे। बार–बार मैं तुम्हें सुपाड़ी डालकर बीड़ा लगाती थी। अब मेरे जी पर संकट पड़ा है तो दूसरे बनकर बैठे हो। पति कहता है कि ठाट, छपरा या छानी होती तो छाकर आदमियों को बुलाकर चढ़वा देता, यह तो ब्रह्मा की बांधी गठरी है, धीरे–धीरे ही छूटती है। विधाता के विधान में कोई मनुष्य कुछ नहीं कर सकता है।

यह गीत प्रसव वेदना की उत्कटता में सगर्भा द्वारा किया गया कथन है। उसे ज्ञात है कि उसकी पीड़ा को सहन करने में कोई भी सहभागी नहीं हो सकता है, परन्तु सुख के समय की बातें याद करना और दुःख की अनुभूति को प्रकट करना भी सहज स्वभाव है।

धना झिटका न लम्बे–लम्बे केश अंगनमां मां लोरइं ओसरवा मां लोरइं हो।
अपनी माया जो होतीं त पीरा हरि लेतीं दरद हरि लेतीं हो।
अब प्रभु जी की माया निरमोहिया त हड़कि झड़कि बोलइं हो
अपनी चाची जो होतीं त पीरा हरि लेतीं हो
अब प्रभुजी के चाची निरमोहिया त हड़कि झड़कि बोलइ हो
अपनी भाभी जो होती तो पीरा हरि लेती हो
अब प्रभुजी की भाभी निरमोहिया हड़कि झड़कि बोलइं हो

प्रसव वेदना से तड़पती सगर्भा की मनोदशा का वर्णन यहाँ किया गया है। लम्बे–लम्बे बाल खुले हुए है, पीड़ा के कारण वे इधर–उधर होकर गिरे जा रहे हैं। तब किसी ने कह दिया– बहू के लम्बे–लम्बे बाल फटकारने से आँगन में बिखरे हैं तब प्रसव पीड़ातुर बहू ने कहा कि यदि अपनी माँ होती तो पीड़ा दूर कर देती। मेरे स्वामी अर्थात् पति की माता यानी मेरी सासुजी निर्मोही हैं, वे दुतकारते हुए– झटकारते हुए बोलती हैं। मेरी पीड़ा और बढ़ जाती है, यही इनकी चाची की दशा है। मेरी चाची तो दर्द निवारण कर देती, पर ये तो झिड़की देकर बोलती हैं। इस समय तो दर्द निवारण कर देती, पर ये तो झिड़की देकर बोलती हैं। इस समय अपनी भाभी होती तो भी मेरी पीड़ा दूर कर देती, इनकी भाभी भी उसी प्रकार निर्मोही हैं, वह भी हड़काती हुई– झुंझलाती हुई बात करती हैं।

प्रसव वेदना का अद्भुत प्रसंग होता है, जब ससुराल में रहने वाली नारी अकेली पाती है। उसके माता–पिता, भाई–भाभी, काका–काकी सभी तो मायके में रहते हैं। यह अकेली ससुराल में पति के भरोसे, पति के परिवार के भरोसे उसी के परिवार को बढ़ाने में समर्पित रहती है। परन्तु उसे असह्य पीड़ा के समय ससुराल में पर्याप्त सुविधा या ध्यान न दिए जाने के कारण उसे मायका याद आ जाता है। इन्हीं व्यवस्थाओं और प्रवृत्तियों ने औरत को प्रतिगाामी मुखरता हेतु शक्ति दे दी है। वह शिष्ट थी, परिवार ही उसका संसार था। वह अपना गोत्र, कुल, संस्कृति, समाज सब सप्तपदी के भरोसे छोड़कर आई। एक सिन्दूर के लिए और परमेश्वर की कल्पना कर ससुराल को ही पूजा घर मान लिया, फिर भी यह समाज द्वैत से अद्वैत बनने को झुठलाता रहा और उस पुजारिन स्त्री को अपनी आस्था की गोद में भी यह गीत गाना पड़ा है।

मोरो चन्द्र वदन अस धनियां त पीरन मरी जाइं हो
जाहु जाहु रे भले से महाराज त मइया का बुलाइ लिहे हो
धना कबहूं न दाबू मइया के गोड़ मइया मोरी न आएगी हो मोरो
जाउ जाउ रे भले से महाराज त चाची क बुलाइ लिहे हो
धना कबहूं न दाबू चाची के गोड़ चचिआ मोरि न अइहइं हो मोरो
जाउ जाउ रे भले से महाराज त जेठनी बोलाइ लावहु हो
धना कबहूं न मीजूं जेठनी के गोड़ जेठानी नहिं अइहइं हो मोरो
जाउ जाउ रे भले से महाराज त ननदी का बुलाइ लावहु हो
धना कबहूं न दाबू तूं ननदी के गोड़ ननदी नहिं अइहइं हो

नारी का, सौभाग्यवती का, सृष्टि के देवता का यह स्वरूप इस गीत में

दृष्टिगोचर हो रहा है, इसमें दम्पति के बीच की बातें हैं। ससुराल में प्रसवपूर्व वेदना वाली वधू चन्द्रवदनी होकर भी असहाय पाती है। उसका सर्वस्व प्राणाधार तो पति ही होता है। उस पीड़ा में कहने लगती है– महाराज सासु माँ को बुला दो। परन्तु पति कहने लगा कि तुमने कभी माँ के पैर नहीं दबाए, वह तुम्हारे कष्ट में कैसे आएगी। वह अपनी मदद की आशा पति से ही कर सकती है, फिर उसकी माँ से उसी के बल पर करती है, परन्तु उससे निराश होकर भी वह क्या करती। कहने लगी– चाची को बुला। दो पति ने फिर वही उत्तर दे दिया कि तुमने कभी चाची का पैर नहीं दबाया, वह नहीं आएगी। पुनः वह जेठानी को बुलाने हेतु कहती है, वहाँ भी पैर न दबाना कारण है और उसका नहीं आना निश्चित हो गया। अन्ततः वह ननद को बुलाने हेतु कहती है, परन्तु बहू ने उसके भी पैर नहीं दबाया, अस्तु वह भी नहीं आएगी।

यह गीत ससुराल में प्रसववेदना से मूर्छित उस नारी की दशा व्यक्त करती है जो ससुराल का कुल बढ़ाने हेतु ही पीड़ा सह रही है। उसकी त्रुटि यही है कि उसने सास, चाची, जेठानी और ननद के पैर नहीं दबाया है। यह लोक सत्य है। इस प्रवृत्ति के कारण ही बदलते सामाजिक संस्कारों में नारी मुखर होती जा रही है।

जीरा ऐसी पातरि कुसुम ऐसी सुन्दरि हो
अब मेरे सुन्दरि का पेट पिरान ओसरवा मां लोटइ हो
तुहिन मोरी ननदी तुहिनि मोरी सब कुछ हो
ननदी विरना का देतिउ बुलाइ जियरा मोरा व्याकुल हो
भइया त बइठे राजदरबरिया अउर खेलइं पांशा हो
भउजी लाज शरम केरि बातिउ त कइसे बोलाई हो
दहिने हांथे लै लेतिउं गेडुआ बाएनि हांथे बिड़िया हो
दूरि न ठाढ़े गोहराऊऔ सनकी से बोलाऊ हो
इतना जो दिखिनि हइ राजा मिचिकि दिहिनि पाशवा हो
उगिलि दिहिनि बिड़िआ हो
अब धाइ के घुसे गजओवरी कहहु धना हाल हो
दहिना अंग मोर कसकइ बाएंनि मोरा फड़कइ हो
स्वामी मरउं करिहंइयां के पीर दरद मोर बांटा हो
धना ब्रह्मा के बांधी मोटरिया करेनि करे छूटइ हो
जबत रहिउं स्वामी नीकसुख, जमरे होइके बइठे हो
स्वामी परिगे है ना छुए के गाढ़, दूसर होइ के चितए, तिसर होइ के चितए हो।
धना जब त खाए दोना भरि भरि मिठइया त कोउ नहिं जानिसि हो
धना परिगे है ना छुए के गाढ़, सगले शोर कीन्हिउं हो

प्रसव वेदना से पीड़िता नारी और उसके पति के मध्य वार्ता का लोकचित्र इस गीत में प्रस्तुत किया गया है। गीत नारी सौन्दर्य और उसमें भी प्रसववेदना से प्रारंभ होता है। जीरा के समान पतली और फूलों जैसी सुन्दरी चौपाल (ओसार) में लोटने लगती है। ननद को बुलाती है, उससे साग्रह कहती है कि मेरा जी व्याकुल हुआ जा रहा है, तुम अपने भइया को बुला दो। ननद ने कहा कि भइया राजदरबार में बैंठे हैं, चौपड़ (पाशा) खेल रहे हैं। भाभी अब लज्जा की बात है किस प्रकार बुआऊँ? भाभी उपाय बताती है, दाएं हाथ में एक लोटा ले लो और बाएं हाथ में बीड़ा ले लेना, दूर से ही खड़ी होकर आवाज देना और इशारे से बुला लेना। यह करने पर उसके पति ने देख लिया और तब पांशा फेंक दिया और पान का बीड़ा उगल दिया और दौड़कर सुन्दर कमरे में जो कि प्रसूति गृह बन जायेगा, उसमें घुस गए। पत्नी बोली कि मेरा बायां अंग कसक रहा है, पीड़ा बार–बार कर रहा है तथा बायां अंग फड़क रहा है, अर्थात् कंपकंपा रहा है। हे स्वामी! मैं कमर की पीड़ा से मरी जा रही हूँ, मेरी पीड़ा बाँट लो। पति समझाते हुए कहता है कि प्रिये! यह विधाता ने गाँठ बांधी है, साहस करने से ही छूट पाएगी। तब पत्नी पुनः कहने लगती है– स्वामी जब मैं ठीक ठाक थी; स्वस्थ थी; तब आप मेरे पास में ही बैठे रहते थे; सहभागी रहते थे, परन्तु आज ऐसा समय आ गया है कि छूने तक का संकट पड़ गया है, आप हमारे अपने हैं फिर भी दूसरे होकर, तीसरे होकर देख रहे हो। इस बात का वस्तुतः कोई उत्तर नहीं है फिर भी पति ने कहा कि– हे धन्य करने वाली धना! जब तुम ठीक थी, स्वस्थ थी, तब दोना भर कर मिठाइयाँ खाती रहती थी, घर में यह किसी को पता तक नहीं हो पाता था। आज ऐसा कष्ट पड़ा है जो न छूने से ही दूर होगा, तब सारे संसार में शोरगुल करते प्रचार कर रही हो।

मातृत्व की यही तपस्या है कि सम्वेदनाएँ तो सबका धर्म है, परन्तु माँ ही बच्चे के आने के पूर्व, माँ बनने के पूर्व, सृष्टि के पूर्व की वेदना सहन करती है। वह पीड़ा कठिन होती है, परन्तु उसकी निजी होती है, उसी के लिए होती है और इसी पीड़ा में छिपा रहता है मातृत्व। यही पीड़ा उसे पिता से दश गुना श्रेष्ठ बनाती है। इसी पीड़ा के गर्भ में सोहरगीत छिपे रहते हैं, बधाईयाँ समाहित रहती है, वंश छिपा रहता है, परिवार का भविष्य, पति का प्रतिरूप, घर का उत्तराधिकार, जीवन का श्री गणेश सब इसी पीड़ा से बनता है। प्रसव होते ही शिशु के रोने के शब्द में संभवतः माँ की पीड़ा का अहसास या प्रतिफल रहता है। इस गीत के सम्वाद में पत्नी की पीड़ा का अहसास या प्रतिफलन रहता है। इस गीत के सम्वाद में पत्नी की पीड़ा के कारण चिढ़न तो है, परन्तु यह दर्शन भी ध्वनित है कि सर्जना के पूर्व दर्द होता ही है और यह निजी होता है, उसका सर्वस्व पति भी उसमें सहभागिता नहीं कर सकता है।

अरे पनवां त खायउं एक सौ सुपरिया त दुइ सौ हो
पै न रचइ मोरा दाँत त एक खयर बिनु हो
लहंगा त पहिरेउं एक सौ औ लुंगरा त दुइ सौ हो
पै न मिटइ मोरी साधि त एक चुनरी बिनु हो
भइया त खेलायउं एक सौ त भतिजवा त दुइ सौ हो
पै न मिटइ मोरी साधि त एक लालन बिन हो

यह गीत भी पुत्र प्राप्ति की इच्छा की तीव्रता को प्रकट करने के लिए है, परन्तु ललना सुलभ स्वभाव से सीधे नहीं कह सकती है। गीत पहले पान–सुपाड़ी के व्यवहार से महत्त्व को रेखांकित करता है। कोई स्त्री विमर्श करती है कि सैकड़ों पान मैंने खा लिया, उससे भी अधिक सवा सौ सुपाड़ी भी खा ली, परन्तु हमारे दाँत बिना खदिर या खैर के रंगते नहीं, रचते नहीं है। इसी प्रकार सैकड़ों लहंगा पहन चुकी, इससे दो गुना लुंगड़ा भी पहन चुकी हूँ, परन्तु बिना अपने बेटे खिलाने के अपनी उत्कट पुत्रेच्छा पूरी नहीं हो पाती है।

नारी का नारीत्व पुत्र प्राप्ति से ही लगता है, सफल होता है, वह खाने पहनने के श्रृँगार में भी वैशिष्ट्य जानती है। उसे अपने जीवन का भी श्रृँगार मालुम है, अस्तु पुत्र वात्सल्य का स्वरूप इस गीत में प्रकट किया गया है। यह भाई–भतीजों से नहीं उसके स्वयं के पुत्र से ही पूरा हो पाता है।

चारिउ खूंटै के महलिया त चारो खूंटे दिया जलै हो
अब मोरे लेखे युग अंधियार त एक ललन बिना एक होरिल बिना हो
खांड चिरंउजी के भोजन त दूध के आचमन हो
अब मोरे लेखे पूरा है उपास त एक ललन बिना एक होरिला बिना हो
खैर सुपरिया के कतरन तक बिड़िया के रोचन हो
मोरे लेखे परा हइ त सूखा त एक ललन बिना हो
सेज सुफेदिया का दासन त तकिया के ओंढ़कन हो
अब मोरे लेखे परा हइ उदास त एक ललन बिना हो

इस गीत में विवाहिता वधू पुत्र की महिमा प्रकारान्तर से कहती है। उसे पुत्र के बिना सर्वत्र उदास, उजास, निराशा, अंधेरा ही दिखता है। ऐसे घर मे रहती है जिसका विस्तार महल जैसा है जो चौखुटा बना है; उस महल में चारों कोनों पर दीपक जलाए गए हैं। चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश दिख रहा है, परन्तु नई नवेली बहू की पुत्रहीनता से उसे सब अंधेरा सा ही लगता है। इस निवास में खांड़ और चिरौंजी भोजन में मिलता

है। दूध पर्याप्त मिलता है, परन्तु यह सब उसे नहीं रुचता है। कहती है कि एक पुत्र के बिना यह सब उपवास यानी बिना भोजन जैसा ही है। भोजन के बाद खैर–सुपारी से बना हुआ पान का बीड़ा मिलता है, जो मुख के स्वाद को रोचक और मुँख में रचकर लाल बना देता है, परन्तु पुत्र के न होने से बहू को सूखा अर्थात् नीरस जैसा ही लगता है। सोने के लिए सुन्दर शैय्या भी मिलती है, उसमें सफेद–सफेद बिछौना पड़ा है। सुन्दर तकिया भी सजाकर लगा दिए गए हैं, परन्तु पुत्र न होने से यह सब उदासी का ही कारण होता है, सुख का नहीं।

यह गीत यही प्रतिपादित करता है कि लोक जीवन में पुत्र प्राप्ति से बड़ा कोई सुख नहीं होता है। विशालकाय घर उसमें लगे हुए प्रकाशदीप, दूध–मिठाई के भोजन, मुख की विलासिता हेतु पान का बीड़ा, चमकता सफेद बिछौना की सेज या शैय्या उस पर टेका लगाने की तकिया यह सुखोपभोग में सहायक है, परन्तु यदि घर में पुत्र नहीं हुआ तो यह सब व्यर्थ है। जीवन में अंधेरा, उदासी और निराशा मिटाने हेतु पुत्र की प्राप्ति आवश्यक है।

सुनहु त सखिया सलेहर हिलि मिलि पानी भरइं हो
सखिया जमुना के निरमलु नीर त जल कइसे भरवइ हो
कोउ सखि हाथ मुंह धोवइं कोउ सखि घइला भरइं हो
कोउ सखि आपन दुःख रोवइं त रोइ के सुनावइं हो
धौं तोरे सासु ससुर दुःख धौ तोरा नैहर दूर हो
रामा धौं तोरा पिया परदेश काहेन दुःख रोवइं त रोइ के सुनावइं हो
लइ ले तू हमरा ललनमां अपन कइके राखू हो
नोनवा त मिलइ उधार त तेलबा वेसाहइं हो
सखिया कोखिया न मिलिहंइ उधार करम गुन होइहंइ हो।

अरे सुनो भाई! सखियाँ अपने समूह के साथ हिल–मिलकर जाती हैं और पानी भरने लगती हैं। इनमें से एक ने कहा कि सखी! जमुना जी का पानी निर्मल है, कैसे भरूँगी? कोई सखी हाथ मुँह धोती है, कोई घड़ा भरती है, कोई सखी अपना दुःख रोती है और रोकर सुनाती है। दूसरी ने पूछा– क्यों रोती है? सास दुःख देती है या ससुर दुःख देता है। क्या तुम्हारा मायका दूर है, जिससे तुम रो रही हो। अरे! क्या तुम्हारा पति विदेश गया है? पता नहीं किस दुःख से तुम रो रही हो। रो–रोकर दुःख सुना रही हो। जब पता चला कि यह बेटे के लिए रो रही है तो सहेली ने कह दिया कि तुम मेरा बेटा ले लो, इसे अपना बनाकर रखना। पुत्रहीना ने रोते हुए यही कहा कि नमक उधार

मिल जाता है, तेल खरीदने पर मिल जाता है, परन्तु– हे सखी! कोख कभी उधार नहीं मिलती है। लड़का तो अपने कर्मों के गुण से ही मिलता है।

यह गीत एक ऐसी नारी का चित्र प्रस्तुत करता है जो पुत्रहीना है, उसे सारा संसार बेकार लगता है। उसको गोद लिया बेटा भी नहीं चाहिए; वह अपने कर्मों के कारण रो रही है।

नील बरन घुनघुनमां घुनघुनमां हम लेबइ हो
धौं तोरे खेलइं भइया धौ रे भतिजवा हो
धौं तोरे खेलइं ललनवा, घुनघुनमां का करिहउं हो
कहेउ मोरे स्वामी बहुत कुछ, कहइउ न जानेउं हो
स्वामी मरतिउं कटरिया के मारि जियरा तजि देतिउं हो

गाँवों में आए दिन ऐसे प्रसंग होते रहते हैं। स्त्रियों को सन्तान पैदा करने की मशीन समझा जाता है। उनके मानवीय स्वभाव पर पुरुष वर्ग प्रहार करते देखा जाता है। लोक अनन्त है उसकी प्रवृत्तियाँ अनन्त है। एक–एक घटनाएँ गीतों मे बंध जाती हैं; उलझ जाती हैं, सुलझ जाती हैं और अपना संदेश– अपना वक्तव्य छोड़ देती हैं, पीढ़ियों के पृष्ठों को उकेर देती हैं। इस गीत में भी एक दम्पति का वाचिक चित्र दृष्टव्य है–बहू कहती है कि घुनघुना (एक खिलौना है), नीले रंग का लेने की मेरी प्रबल इच्छा है, वह मैं लूँगी। उसका पति कहने लगा कि घुनघुना क्या करोगी? तुम्हारे न तो छोटा भाई खेल रहा है न ही भतीजा खेल रहा है और न ही छोटा बेटा खेल रहा है। यह सुनकर घायल हुई पत्नी ने कहा कि मेरे पतिदेव आपने बहुत कुछ कह दिया, परन्तु कहते नहीं बना। मैं कटारी मार कर अपनी हत्या कर लेती, प्राण छोड़ देती, यह मुझे लगता है।

स्त्री के सन्तान न होना उसे मर जाने को या जीवन से निराश हो जाने को पर्याप्त होता है, परन्तु उसे अपने प्रियतम से साथ देने का भरोसा होता है। वह उसके सुख का ही नहीं, दुःख का भी साथी होता है, परन्तु जब उसी के मुँह से वह पुत्रहीनता का व्यंग्य सुनती है, इच्छा की पूर्ति न होने का कारण सुनती है, तब वह मर जाने हेतु व्यग्र हो जाती है। मरना ही उचित समझने लगती है। यह संततिहीन दाम्पत्य जीवन का एक उदाहरण मात्र है।

एक फूल फूलइ अजुधिया दूसर फूल मथुरा हो
अब तीजा फूल फूलइ हो काशी चउथ मोरे अंचरा हो

अंचला बिछाइ पइयां लगतेउं अरज कुछ करतेउं हो
कोहू का दिहे दुइ चारि कोहू का दस पांच हो
कोहू का राखे ललचाइ त एक लालन बिनु हो
अमवा त फरा है घउदबन अमिली झपकबन हो
एक तिरिया का रहे ललचाइ त एक लालन बिन हो

इस गीत में भी एक स्त्री का मन एक पुत्र के बिना ललचाता रहता है। यह संसार की अनेक सफल वस्तुओं, सपुष्प वृत्तियों को देखती है और अपने फूल—फल की चिन्ता करने लगती हैं। वह अपने लिए माँगती हैं; मन्नत करती है और अपना आँचल जो कि उसका सबकुछ है, मर्यादा है, पर्दा है और आवरण है, उसे ही बिछाकर प्रणाम करने लगती है।

गीत शुरू होता है फूल—फूलने से; वह ललना देखती है कि अयोध्या में पहला, मथुरा में दूसरा और काशी में तीसरा फूल—फूल रहा है और चौथा फूल उसके आंचल में यौवन के रूप में फूल चुका है। उत्साह भी है, उल्लास भी है और है अविस्मरणीय अवस्था। अपने आराध्य से आंचल बिछाकर स्वागत करती हुई याचना के स्वर मुखरित करती है; पैर पड़ती है, प्रार्थना करती है कि किसी के घर दो चार तो किसी के घर दस—पाँच लड़के आपने दे दिया है, परन्तु किसी को एक पुत्र के लिए भी ललचाते हो, तरसाते हो अर्थात् इच्छा नहीं पूरी करते हो। आम में घउदों से फल लग गए हैं, अर्थात् आम के एक फल के साथ अनेक फलों का गुच्छा लगा है। इमली भी एक साथ अनेक फलवाली हो गयी है, परन्तु स्त्री को फल नहीं देते, पुत्र के लिए ललचा रहे हो। यह न्याय नहीं है, प्रकृति का न्याय नहीं है। जहाँ—जहाँ फूल हुआ वहाँ फल दे दिया, परन्तु स्त्री के फूल का फल देने में तड़पाना ईश्वर का न्याय नहीं है। यही गीत का अभिप्राय है।

एक फूल फूला है काशी दूसरा बनारस हो
तीसरा फूल फूला मोरे अंगना चौथा मोरे अंचरा हो।
एक फूल जो मै पउतेउं त शिव का चढ़उतिउं हो
जोरि अंचल पइयां लगतेउं आंगन कुछ मंगतिउ हो।
कोहू का दिहे अब एक दुइ कोहू का दुइ चारि हो
कोहू का दिहे ललचाइ त एक ललना होरिल बिन हो।
अमवा त फरा है घउदबन इमली झपकबन हो
रामा तिरिया क रहे ललचाइ अपने करम गुन एक ललन बिन हो।

इस गीत में भी लोकललना देखती है कि कोई भी फूल फल में बदल जाता है, परन्तु ऐसा भी है कि एक के साथ अनेक फल भी मिलते हैं, परन्तु वह फल नहीं पा सकी है, यही भावना गीत बन जाती है। कोई स्त्री कहती है कि काशी में, बनारस में एक–एक फूल–फूले हैं। ये दोनों नगर एक ही है, परन्तु नाम पृथक्–पृथक् हैं। तीसरा फूल उसके आंगन में ही फूला है, चौथा फूल उसके ही आंचल में विद्यमान है। वह कल्पना करती है कि यदि उसे एक फूल मिल जाता, तो उसे यह शिव को चढ़ा देती। अंचल जोड़कर यानी फैलाकर पैर पड़ती और कुछ माँगन माँग लेती कि किसी को तो एक–दो देते हो, किसी को दो–चार बेटे दे देते हैं, परन्तु किसी को तो एक लड़के के बिना ही ललचाते रहते हो। उदाहरण में देखती है कि घौदा के घौदा (एक साथ कई आमों के फलों का समूह) आम फलते हैं और इमली भी झुण्ड की झुण्ड फल जाती हैं, परन्तु औरत को एक पुत्र रूपी फल के बिना ललचाते रहे हैं। क्या उसके कर्मों के गुण या फल से पुत्र का सुख नहीं मिल रहा है।

शिव को विद्या का देवता माना गया है, परन्तु शिव ही कल्याण के लिए प्रसिद्ध महादेव है। इसी से इन्हे भाग्य बदल देने, पुत्र देने और अलभ्य लाभ देने के लिए पूजा जाता है। रेवांचल की महिलाएँ भी प्रदोष या त्रयोदशी का व्रत करते हुए शिव की ही आराधना करती हैं, जिससे उन्हे पुत्र मिले। पुत्र का सुख मिले अथवा परिवार में दाम्पत्य सुख और अन्य विध सुख मिलता रहे।

स्वामी हो स्वामी मोरे स्वामी तुहिनि मोर सब कुछ हो
एक पेड़ अमवा लगउतिउं करह देखि लेतिउं हो
धनिया हो सुना मोरी धनियां तुहिनि मोरी सब कुछ हो
अब एक ठे ललना का जनितिउ सोहर सुनि लेतेउं हो
एतना सुनिनि जब धनिया भइ हां जलदी अनमन हो
अब दइ लिहिनि बजुर केमार पलंग बइठे रोमइं हो
विन्द्रावन के बढ़इया हकरि चले अउते हो
बढ़ई गढ़ि लउते हरी भरी डोलिया नइहर पहुंचउते हो
मचिअन बइठीं ह माया ओऊं हँसि बोलइं हो
बेटी एकठे ललन जो तुम जनतिउ सोहर सुनि लेतिउं हो
भीतरे से आई हंइ भउजी ओऊं हँसि बोलइं हो
ननंदी एक ललन जो तू जनतिउ सोहरि हम गाइत हो
तरी धरा मोतियन थारी उपर धरा नरिअर हो
अब उअतेइ के सुरुज मनावा बड़ा फल होई हो

इस गीत में सद्यः विवाहिता वधू की पुत्रकामना और परिवार की पुत्रकामना का अपने–अपने ढंग से निरूपण किया गया है। अपने पति को स्वामी के सम्बोधन से कहती है कि तुम्ही मेरे सर्वस्व हो। मैं एक पेड़ आम का लगाना चाहती हूँ और उसका कार्य अर्थात् फूल फल देखना चाहती हूँ। तब पति कहता है कि– हे धनिया! धन्य कर देने वाली तुम्ही मेरा अमूल्य धन हो, मेरी सबकुछ हो, यदि एक बालक पैदा कर देती तो मैं सोहर गीत सुन लेता। यह सुनते ही पत्नी पुत्राभाव से बेमन हो जाती है, वज्र के समान अपने शयनागार का दरवाजा बन्द कर लेती है और पलंग में बैठकर रोती रहती है। वृन्दावन के बढ़ई को बुलाती और पालकी डोला बनाने तथा उसी से मायके पहुँचाने का आग्रह कर बैठती है, परन्तु वहाँ भी मचिआ में बैठी माँ भी हँसकर कहने लगती है कि बेटी यदि तुम एक बालक पैदा कर देती तो मैं सोहरगीत सुन लेती। घर के भीतर से भाभी निकलती है और वह भी यही कहने लगती है कि– हे ननद! रानी यदि तुम बेटा पैदा करती तो मैं सोहर गा लेती। मोतियों से भरी थाली में नारियल रखकर उगते सूरज की आराधना कर लो, इसका बहुत फल मिलेगा।

यह गीत विवाहित से पुत्र की अपेक्षा का है। बहू भी यही चाहती है और देर होने पर वह बेमन हो जाती है। ससुराल और मायके दोनों जगह वह पुत्रेच्छा को सुनती है, साथ ही पुत्र प्राप्ति के लिए सूर्योपासना की राय भी दी जाती है।

स्वामी लगि रो कनइले मां फूल मनहिं मन बिहँसइ हो
तब राजा बोलावइं अपनी रनियां त जांघि बइठावइं हो
धना कउन कपड़ा तुम पहिनूं जउन मन भावइं हो
लहंगा त पहिरेउं सौ केर लुंगरा सवा सौ केर हो
स्वामी चोलिया न पहिरेउं झपाकेदार उहइ मन भावइं हो
राजा बोलावइं अपनी रनियां त जांघि बइठावइं हो
धना जउने गहनवां कइ साधि जउन मन भावइं हो
नथुनी त पहिनेउं सौ केर बेसरि सवा सौ केर हो
स्वामी झुलनी न पहिनेउं झुक्केदार उहइं मन भावइं हो
राजा बोलावइं अपनी रनियां त जांघि बइठावइं हो
रानी जउने ललनमां कै साधि जउन मन भावइं हो
भइया खेलायउं मै सौ सौ भतीजवा सवा सौ हो
कोरवा खेलायउं न बलकवा उहइ मन भावइं हो
स्वामी लगि गे कनइले मां फूल मनइ मन बिहँसइ हो

कोई रसभरी ललना अपने पति से कहने लगती है कि स्वामी जी कनइल के पेड़ में फूल लग गए हैं, यही उनकी पेड़ों की हँसी है, परन्तु उसे यह बिहँसना लगता है। ऐसा हास जो किसी हेतु से किया जाय, उसे बिहँसना (विशेष हँसना) कहा जाता है। अभिप्राय यही है कि कनइल के पेड़ में लगा हुआ फूल अब फलवान् होने को है, परन्तु उसकी यौवनावस्था ही उसके जीवन का पुष्प है, उसमें अभी किसी फल की अपेक्षा नहीं दिखती। तब उसके पति जिसे राजा के नाम से सम्बोधित किया गया है, अपनी पत्नी जो उनके जीवन की रानी (साम्राज्ञी) है, उसे बुला लेते हैं। जंघा में बैठा लेते हैं और उससे तीन प्रश्न पूछते हैं। पहले प्रश्न में कपड़े की इच्छा जानना चाहते है और स्त्री से उसके मनोनुकूल कपड़े की पृच्छा कर बैठते हैं। वह कहती है कि लहंगा सौ रूपये वाला और लुंगड़ा सवा सौ रूपये के मूल्य वाला तो वह पहन चुकी है। लहंगा–लुगरा के साथ वह आकर्षक चोली (वक्षवस्त्र) पहनना चाहती है। और कहती है कि चमकदार चोली ही उसे मन पसन्द लगती है। इस प्रकार सुनने के बाद दूसरा प्रश्न पुनः गहनों के लिए करता है कि किस आभूषण की इच्छा है? क्या मन को अच्छा लगता है? उत्तर देती है कि नथुनी (नाक का आभूषण) सौ रूपये की और बेसरि (नाक में लटकने वाली नथुनी) सवा सौ रूपये की मैंने पहन ली है, परन्तु झुलनी (कान में पहनी जाने वाली झूमक) चमकती हुई हमने अभी तक नहीं पहनी है। वही पहनने की मेरी इच्छा है, हमें अच्छी लगती है। पुनः तीसरी बार पूछता है कि तुम्हारे मन को अच्छा लगने वाला बालक कौन–कैसा है? उत्तर देती हुई नारी कहती है कि सैकड़ों भाइयों को मैंने गोदी में खिलाया है, खिलाने वाले भतीजों की संख्या सवा सौ है, परन्तु हमारी गोद में बालक नहीं है, हमें उसी बालक की इच्छा है।

यह गीत मुख्यतः स्त्रियों के मन में होने वाली पुत्र प्राप्ति की उद्दाम इच्छा पर केन्द्रित है, परन्तु लोकजीवन में पति–पत्नी के बीच में ऐसी बातें सीधी नहीं कही जाती हैं। वस्त्र और आभूषण से सजने–सजाने की प्रकृति वाली स्त्रियाँ अपने श्रृंगार के बाद पति से पुत्र की ही इच्छा करती हैं और यही गृहस्थ का, गृह का, विवाह का चरम फल है– 'शून्यमपुत्रस्य गृहम्' विवाह संस्कार विलास के लिए नहीं अपितु सन्तति के लिए, वंश चलाने के लिए होता है। पितृऋण से मुक्ति के लिए, पुन्नामक नरक से त्राण के लिए, कुल गोत्र के सातत्य के लिए पुत्र गृहस्थ का अभीष्ट है। इन्हीं लक्ष्यों को लोक नारियाँ गा–गाकर अपने पति को कनेर के फूल के बहाने कह देती हैं, समझता हुआ पति सजने–संवरने के प्रश्नों के माध्यम से लज्जालु पत्नी के अन्तस् की बात समझ लेता है कि कनेर के फूल का तो बहाना है। उसे अपनी गोद में अपनी कोख का ही बालक चाहिए ।

आधे तलउना मां नाग बइठे आंधे मां नागिन बइठी हो
अब आधा तलाउ मोरा सूना, त एक कमल बिना हो
आधे ओसरबा मां सासु बइठी, आधे ससुर बइठे हो
अब आधा ओसार मोरा सूना त एक देवर बिना हो
आधे अंगनमां मां जेठ बइठे आधे जेठानी बइठी हो
अब आधा आंगन मोरा सूना त एक ननद बिना हो
आधे पलंगियां मां स्वामी बइठे, आधे मे मैं बइठी हो
अब आधी पलंग मोरी सूनी त एक ललन बिना हो

अच्छे कुल की सुहागिनें अपने मन की बातों को सीधे नहीं कहना चाहती हैं। उदाहरणों के द्वारा पुत्र के होने की उपादेयता को प्रकट कर देती हैं। तालाब को उदाहरण देती हुई गाती है कि वह नाग आधे तालाब में बैठा रहता है, आधे में नागिन बैठी रहती है, परन्तु बिना कमल के फूल के उसकी शोभा नहीं बढ़ती है। तालाब सूना ही रहता है एक कमल बिना। ओसार या चौपाल में सासु और ससुर आधे–आधे में बैठे हों तो भी उनका लड़का अर्थात् बहू का देवर नहीं हो तो सब सूना–सूना ही रहता है, अच्छा नहीं लगता है। आंगन में आधे–आधे स्थानों पर बैठे जेठ और जेठानी तो अच्छे लगते ही है, परन्तु यदि बहू की ननद अर्थात् पति की बहन नहीं हो तो आँगन सजता नहीं है, सूना सा रहता है। परिवार की समग्रता को प्रकट करती हुई नववधू कहती है एक पलंग में आधा–आधा पति के साथ मैं भले बैठी रहूँ, परन्तु ललना के बिना; बेटा के बिना पलंग भी सूनी ही रहती है।

कंगना त आवा हइ बिकाय कंगना बड़ा सुन्दर हो
अब पिया हमरे कंगना कइ साधि कंगना हम लेबइ हो
धना तोहरी है सामरि बहियां कंगना नहिं सोहइ हो
एतना जो सुनि पाईं धनियां आय के दै लिहिनि बजुर केमार मनावै कैसे जाईं हो।
सोनरा तुहिनि मोरा सोनरा तुहिनि मोरा सब कुछ हो
सोनरा गढ़ि देते हांथे के कंगनमां त धना का मनउबइ हो
बरई तुहिनि मोर बरई तुहिनि मोरा सब कुछ हो
बरई दइ देते एक बीरा पान त धना का मनउबइ हो
धना तुहिनि मोरि धनिया तुहिनि मोरी सब कुछ हो
धना खोलि देतिउ बजुर केमार मनावइ तोहंका आयउं हो
कंगना त पहिरइ तोहंरइ माया अउर बहिनियां हो
अरे बिरिया त रचयं तोंहरे बालम हो

पति और पत्नी के मध्य होने वाले आग्रह और नकारने के बीच यह गीत पत्नी के रूठ जाने पर बन जाता है। कभी कंगन बिकने आता है और पति से पत्नी कहने लगती है कि बहुत सुन्दर कंगन बिकने आ गया है। हमारी प्रबल इच्छा कंगन पहनने की है। मैं कंगन लूँगी। पति कहने लगता है कि प्यारी तुम्हारी बाहें सांवली हैं और कंगन अच्छा नहीं लगेगा। इतना सुनते ही पत्नी ने वज्र जैसा दरवाजा लगाकर कमरे में बन्द हो जाती है। पति उसे प्रसन्न करने जाना चाहता है, उपाय सोचता है, सोनार को बुलाकर उसकी प्रशंसा करता है, कंगन बनाने का आग्रह भी करता है, जिससे वह पत्नी को प्रसन्न कर ले। बरई से एक बीरा पान देने का आग्रह करता है, जिससे वह अपनी पत्नी को अनुकूल कर सके। वह कंगन और पान का बीड़ा लेकर पत्नी के दरवाजे पर आग्रह करता है, तब रूठी पत्नी कहती है कि कंगन तो अपनी माँ जी और बहन जी को दे देना, और तुम्हारे अत्यन्त प्रियजन को बीड़ा पान का दे देना जिससे उनका मुख रंग जाये।

यह इच्छा न पूरी होने पर पत्नी का पति से रूठना उनकी एकाकी या व्यक्तिगत बाते हैं, जो इस गीत के माध्यम से प्रकाशित हो जाती हैं।

स्वामी त जाथइं बजरिया त धनियां अरुझ करै हो
स्वामी हमरे घुनघुनवा के साधि घुनघुनवा हम लेबइ हो
धना तुम जनम कइ बंझिनिया घुनघुनवा तूं का करबू हो
ना तोहरे भइया भतिजबा, ना कोरबा बालकबा हो
तूं ता जनम कइ बांझिनिया घुनघुनबा तूं का करबू हो
इतना जो सुनिनि हंइ धनियां त नैहर सिधारइं हो
अब द्वारे मां खड़ी हवइं माया त बिटिया से अरूझि करइं हो
बेटी हमरे अकेली हां बहुआ बांझिनि होइ जइ हँइ हो
इतना जो सुनिनि हंइ धनियां त बन का सिधारिनि हो
त बन मां रहत हंइ योगी त धना से अरुझि करइं हो
धना हमरे बन मां हरिअरि दूबि त दूबि सूखि जइहंइ हो
इतना जो सुनिनि हंइ धनियां त गंगा का सिधारइं हो
गंगा एक लहरि मोहि देतिउ बांझिनि डूबि जातिउं हो
इतना जो सुनिनि हंइ गंगा त धना से अरज करइं हो
धना कौन दुःख तुम्हइं भारी डूबिनि मरि जातिउ तू हो हो
गंगा कोखिया के दुःख हमें भारी डूबिनि मरि जाबइं हो
लै ले तू सोने के थारी थारी भरि मोतियां हो

धना उगतइ सूरज मनावहु सुरूज पइयां लागहु हो
धना ललना तोहरे होइहंइ होरिल तोंहरे होइहंइ हो
सोनेन के लइ लिहिनि थारी थारी भरिनि मोतिया हो
धना अगतइ के सुरूज मनाइनि सुरूज पइयां लागिनि हो
नौ रे महीना दस लागत ललना जनम भए होरिला जनम भए हो
अब बाजइ लागीं अनन्द बधइया गावइं सखि सोहरि हो।।

जब किसी अलबेली ललना का पति बाजार जाने लगता है, तब वह आग्रह करने लगती है कि पतिदेव मुझे घुनघुना की बहुत इच्छा हो रही है। मैं घुनघुना बाजा लूँगी। पति ने मर्म भरी बात कह दिया कि तुम जन्म से बंध्या हो, घुनघुना क्या करोगी, न कोई छोटा भाई है, न भतीजा है और न ही गोदी में कोई बालक ही है। घुनघुना छोटे–छोटे शिशुओं को खेलने का बाजा है, तुम क्या करोगी। बन्ध्याओं को घुनघुना से क्या प्रयोजन? यह सुनकर वधू को ससुराल छोड़ने की इच्छा हो गयी और वह मायके जा पहुँची।

जब बेटी माँ के घर गई तो माँ द्वार पर ही खड़ी मिल जाती है, उसे भीतर नहीं जाने देती है, हठ करके कहने लगती है कि बेटी हमारे घर एक ही बहू है, तुम्हारी छाया पड़ने से या सम्पर्क करने से वह भी बाँझ या बन्ध्या हो जायेगी। इतना सुनते ही बेटी मायके में भी नहीं रूकती, वनवासिनी हो जाती है। योगी वहाँ था। उसने भी कहा कि तुम बन्ध्या हो, अस्तु वन की हरी–भरी दूब तुम्हारे रहने से सूख जायेगी, यह बात सुनते ही वह गंगा के पास चली जाती है, गंगा से कहती है कि– हे गंगा मइया! मुझे एक ऐसी लहर दे देना जिसमें डूबकर जल समाधि ले लूँ बन्ध्या सुनकर गंगा ने उस स्त्री से कहा कि देवी तुम्हें कौन सा भारी दुःख है, तुम डूबकर मरी जा रही हो। सोने की थाल में मोती के दाने भर लो, उदय होते हुए सूर्य को प्रणाम करो। उनकी पादपूजा करो, तुम्हारे यहाँ अवश्य पुत्र होगा। सोने की थाल लिया, मोतियों से भर लिया, सूर्योदय काल के सूर्य को मनाया, पूजा किया और नौ महीने के बाद दसवें महीने में पुत्र का जन्म हो जाता है। आनन्द पूर्वक बधाइयाँ बजने लगती है और सभी सखियाँ सोहर गाने लगती हैं।

इस गीत द्वारा एक तरफ विवाहिता की पुत्र की प्रबल इच्छा घुनघुना के द्वारा प्रकट हुई है, परन्तु यह बात न समझकर घरवालों ने बन्ध्या होने की बात उठा दी। समाज का कटु सत्य सामने आ गया। ससुराल क्या मायके में माँ ने भी उसे अपमानित किया। वन में योगी ने भी प्रतिकूलता रखी। गंगा सबकी इच्छा पूरी करती है, वह मरण

की नहीं जीवन की नदी है। सूर्य की उपासना से ही पुत्र की प्राप्ति की सनातन परम्परा है। यहाँ भी पुत्रोत्पत्ति हुई है। प्रकाश के देवता की पूजा का सूतकान्त में लोकविधान भी है।

कारै पियर घुनघुनमां त हटिया बिकाइ आए हो
स्वामी हमही घुनघुनमां कइ साधि घुनघुनमां हम लेबइ हो
नहिं तोहरे भइया भतिजबा न कोरबा बालकवा हो
घुनघुनमां का तू करबू, घुनघुनमां कौन खेलइ हो
हंकरउ नगर केर पण्डित हंकरि बेगि लावा हो
रामा चन्दन डड़िया सजावा नइहर पहुंचावा हो
जातइ माया का भेंटवइ बैठतइ ओरहन देवइ हो
माया तिरिया जनम काहे दीन्हिउ बांझिनि कहवाइउ हो
जातइ काकी का भेटवइ बैठतइ ओरहन देवई हो
काकी ढेरिया जनम काहे दीन्हिउ बांझिनि कहवाइउ हो
जातइ भउजी का भेंटवइ बैठतइ ओरहन देवइ हो
ऐसन ननदी जो पाइउं बांझिनि कहवाइउ हो
बेटी तुहिनि मोरी बेटी तुहिनि मोरी सब कुछ हो
बेटी थार भरि लेहु तू मोतिया ऊपर धरा नरियर हो
बेटी उगतइ के सुरुज मनावा सुरुज पूत देइ हंइ हो
होत बिहान पह फाटत, लालन भए हइं त होरिल भए हंइ हो
अब बाजइ लागी आनन्द बधइया गावइं सखि सोहरि हो
हंकरउ नगर केर सोनरा हंकारि वेगि लावहुं हो
कहरा चन्दन डड़िया सजावा त धना का मनाइ लई हो
एक बन गए हंइ दूसर बन तिसरे वृन्दावन हो
रामा पैठि परे गज ओवरी त धना का मनावइं हो
धनियां तुहिनि मोरी धनियां तुहिनि मोरी सब कुछ हो
धनिया छोंड़ि देहु मन का विरोग घुनघुनमां तुम खेलहु हो
नहिं मोरे भइया भतीजवा न कोरबा ललनमां घुनघुनबा को खेलइ हो
घुनघुनवा त खेलइं तोहरी माया त बहिनिउ तुम्हारिउ हो
रामा और तो खेलइ पड़ोसिनि जउन भिरुहाइसि हो

यह गीत पति–पत्नी के बीच के उस प्रसंग का निरूपक है, जिसमें पति पुत्रहीनता के कारण व्यंग्यबाण का प्रयोग कर बैठता है और अन्ततः सूर्योपासना से उसे पुत्र की प्राप्ति हो जाती है, तब वह पति को भी तिरछी बातें कहती है।

बाजार हाट के काले–पीले रंग के घुनघुना बिकने के लिए आते हैं और एक स्त्री अपने पति से घुनघुना की प्रबल इच्छा के कारण लेने का आग्रह कर बैठती है। पति कहता है तुम्हारे कोई भाई–भतीजा भी नहीं है, गोदी में छोटा बालक भी नहीं है तब तुम घुनघुना का क्या करोगी, कौन खेलेगा? इस बात को सुनकर नगर गाँव के पण्डित को जल्दी ही बुलवाती है और पण्डित जी से सुदिन यानी यात्रा मुहूर्त पूछकर मायके जाने की योजना बनाती है। नगर के कहार को बुलाया गया और चन्दन की डड़िया तैयार की गयी साथ ही नैहर पहुँचाने का आग्रह किया। जाते ही माँ के गले लगूँगी, बैठते ही उलाहना दूँगी कि माँ स्त्री का जन्म क्यों दिया, मुझे बांझिन कहवाया। जाते ही काकी के गले लगूँगी, बैठते ही उलाहना दूँगी और यही कहूँगी कि औरत का जन्म काहे दिया, बांझ कहलाया। जाते ही भाभी को भेट दूँगी और बैठते ही उलाहना दूँगी कि ऐसी ननद पाई हो कि बांझिनि कहलवा रही है। सबने राय दिया कि बेटी तुम ही मेरी सब कुछ हो, तुम थाली में मोती भर लेना, उसके ऊपर नारियल रख लेना; उगने के समय का सूर्य पूजन करना, सूर्य ही पुत्र देंगे। इसके बाद गीत आगे बढ़ता है कि सूर्य उदय के पहले ही बड़े–बड़े सुबह ही बेटा हो गया, आनन्द हुआ, बधाई बजने लगी, सखियाँ सोहर गाने लगती हैं। पति ने कहा– नगर के सोनार को बुला लो, जल्दी बुला लो, और हे सुनार! सोने रूपे का घुनघुना बना दो, जिससे धर्मपत्नी को बुला लाऊँ। कहार को बुलाओ, कहार आया उसे कहा कि चन्दन की डड़िया तैयार करो और चलकर धर्मपत्नी को बुला लाऊँ। एक वन से दूसरे वन और तीसरे वन में गए जो वृन्दावन था या तुलसी का वन था। वहीं पत्नी थी। अटारी में चढ़ जाते है और पत्नी को समझाते मनाते है। हे भाग्यवान्! तुम्हीं मेरी सब कुछ हो, मन का विरोग अर्थात् विकार छोड़ दो और घुनघुना खेलो। उसने कहा– मेरे भाई–भतीजा नहीं है न ही गोदी में बेटा है; कौन घुनघुना खेलेगा। तुम्हारी माँ और बहने घुनघुना खेलेंगी और पड़ोसी भी खेलेंगी, जिन्होंने तुम्हें बहका दिया है।

गीत यहीं पूरा हो जाता है, पुत्र होने पर ही प्रायः सोहर गीत पूरे हो जाते हैं, परन्तु यहाँ पति के द्वारा किए गए अपमानजनक शब्दों का उत्तर उसी प्रकार के शब्दों से वधू ने दे दिया है।

चौकी तुहिनि मोरी चौकी तुहिनि मोरी सबकुछ हो
चौकी परिगइ फलाने राम के अंगना देखत नीक लागै सुनत नीक लागइ हो।
अब ओहीं चौकी मां बइठे फलाने राम जमरे दुलहिनि देई हो
भवने के बीच मां ललनमां देखत/सुनत नीक लागइ हो।

इस गीत में चौकी के लिए कहा गया है, क्योंकि उसमें पति–पत्नी और नवजात शिशु को लेकर बैठना सबको अच्छा लग रहा है। सद्यःप्रसूता कहती है चौकी ही मेरी सब कुछ है। यह चौकी जब आँगन में रख दी जाती है, तब इसकी शोभा और बढ़ जाती है, इसी चौकी में सद्यःपिता बनने वाले जब बैठते हैं और उनके बगल में वधू बैठती है। घर के बीच में जब शिशु होता है तो उसे देखना भी अच्छा लगता है और यह कथन सुनना भी अच्छा लगता है।

गंगा किनारे एक तिरिया–तिरिया दुःख रोवइ हो
गंगा–गंगा गोहरावइ गंगा नहीं बोलइ हो
गंगा एक बेर लहरि लइ अउतिउ मुकुत करि लेतिउं हो
धौ तोहरे सास ससुर दुःख धौ तोरा नैहर दूर बसइ हो
धौ तोरा प्रभु परदेश कउन दुःख रोवउ हो
ना मोरे सासु ससुर दुःख नाहीं नैहर दूर भए हो
ना मोरे प्रभु परदेश कोरबा दुःख परिगा हो
थारी भरि लइ लेहु मोतिया उपर धरो नारियल हो
उअतइ सुरूज मनावहु सुरूज लाल देइहीं हो
होत बिहान पउ फाटत ललना जनम भए होरिला जनम भए हो
बाजइ लागीं अनन्द बधइया गामइं सखि सोहर हो
हँकरउ नगर केर सोनरा हंकरि वेगि आवहु हो
गढ़ि लावा सोने केर कलशा त गंगा ले अउबइ हो

यह गीत गंगा के किनारे से प्रारंभ होता है! गंगा के किनारे एक स्त्री रोती हैं, गंगा–गंगा कहकर पुकार लगा रही है, परन्तु गंगा बोल नहीं रही है। कहती है कि हे गंगे! एक बार अपनी लहर ले आती तो मैं स्वयं को मुक्त कर लेती। तब गंगा ने स्त्री से पूछा कि तुम क्यों मरना चाहती हो? सास–ससुर से तुम्हे दुःख है कि मायका दूर है कि तुम्हारे स्वामी परदेश गए हैं, क्या दुःख है कि तुम रो रही हो? वह कहती है कि सास और ससुर का मुझे कोई दुःख नहीं है, मायका भी दूर नहीं है, स्वामी मेरे परदेश भी नहीं गए है, परन्तु हमारी गोदी में दुःख पड़ गया है। एक थाली में मोती भरने का गंगा ने आदेश दिया, उसी के ऊपर नारियल रखने को कहा और उदयकालीन सूर्य को मनाने, पूजने, प्रणाम करने हेतु कहा। वे सूर्य अवश्य पुत्र देंगे। अब गीत चुप हो जाता है और सुबह होते ही सूरज की किरणों से अंधेरा फटते–फटते बहू के बालक हो जाता है। सखियाँ सोहर गान करने लगती हैं, आनन्द भरी बधाइयां बजने लगती

हैं। बहू ने नगर के सुनार को बुलाने का आदेश दिया और उसे सोने का कलश बना लाने को कहा और उसी स्वर्ण कलश में गंगा को ले आने की बात भी कह दी।

यह गीत गंगा की उपासना और सूर्य की उपासना से पुत्र होने का चित्रण करता है। सूर्य प्रकाश का देवता है उसकी आराधना से घर में सूर्योदय हो जाता है, घर में प्रकाश फैल जाता है।

चलहु न सखिया सलेहरि जमुना नहाइ चली हो
अब जमुना के निरमल नीर कलश भरि लउबइ हो
कोउ सखि खड़ी हां कगारे त कोउ सखि जल भरइं हो
अब एक तिरिया रोवइ त कउने कारन गुन हो हो
धौ तोरा सासु ससुर दुःख धौ नैहर दूर बसइं हो
धौ तोरा पिया परदेश बसइ कौन कारन गुन हो
ना मोरा सासु ससुर दुःख नाही नइहर दूर बसइ हो
अब नाहीं मोरा पिया परदेश बसै कोखिया दुःख रोइत हो
जा हो तू तिरिया लौटि घर अपने ही लौटि घर हो
अब आठ महिनवां के बीते नवम मास लागत हो
अब ललना तोरे होई होरिल तोरे होई हो
अब आठ महीना के बीतत नवएं के लागत हो
ललना जनम भए होरिला जनम भए हो
बाजइ लागी अनन्द बधइयां गावइं सखि सोहरि हो

यह सोहर गीत भी नदी की कृपा से पुत्र की प्राप्ति का विवेचन करता है। आपस में सखियों ने जमुना से स्नान और कलश भर कर लाने का निश्चय किया। उनमें से कुछ किनारे में खड़ी थी, कुछ पानी भर रही थी, परन्तु एक सखि रो रही थी। उसका क्या कारण था, क्या उसे सास–ससुर से दुःख था या तो उसे मायका दूर होने का दुःख था, या तो उसका पति विदेश में था, कोई कारण तो था ही परन्तु न तो उसे सास–ससुर से कोई भी दुःख था, न ही मायका दूर था, न ही उसके पति बाहर थे। पर वह अपने कोख या कुक्षि के दुःख से रो रही थी। जमुना जी ने आशीष दे दिया कि– हे स्त्री! तुम अपने घर वापस चली जाओ, आठ महीने बीतने पर नवें मास में तुम्हारी कोख से बेटा पैदा होगा, यही हुआ भी। आठ मास बीतने पर नवें मास के लगते ही बेटा पैदा हो गया और आनन्द की बधाई बजने लगी। सभी सखियाँ सोहर गान करने लगती हैं।

बन्ध्या होने से अच्छा मर जाना है, यही समझकर यमुना में जल भरने और नहाने गई कोई स्त्री रोने लगती है, परन्तु उसका दुःख समझकर यमुना सूर्य पुत्री ने दुःख दूर होने का वरदान दे दिया। सूर्यपूजा से पुत्र की प्राप्ति तो लोक साहित्य में अनेकत्र वर्णित ही है, परन्तु सूर्यात्मजा की पूजा भी पुत्र का सुख देने वाली है। यही इस गीत का अभिप्राय है।

गंगा के निर्मल पानी चलो रे सखि जल भरि लावइं हो
राधा त ठाढ़ी ओनामइं कन्हइयां मोरे रोवइं हो
घर मां सासु ननंदिया अउर देवर जेठनियां हो
राधा घरे हैं कन्हैया जी के बच्चा कन्हैया कैसे रोवइं हो
बैरनि सासु ननंदिया औ देवर जेठानियां हो
राधा बैरी कन्हइया जी के बप्पा कन्हइया मोरे रोवइं हो
गगरी त धरिनि घिनउची और रसरी खूंटी पर हो
एजी लपकि के पलना झुलावा कन्हइया मोर नाहिन हो
फेंकि देवइ तेल फुलेल नयन केर कजरा हो
राजा फेंकि देवइ सोलह सिंगार ललन केरे कारन हो
कै लेहु तेल फुलेल नयन केरा कजरा हो
रनिया कै लेहु सोलह श्रृंगार ललन तोंहरे होइहइं हो

सखि को लेकर कोई स्त्री गंगा के निर्मल जल को भरने गई थी। राधा तो खड़ी होकर मिलने लगती है कहती है, कि मेरे कन्हैया रो रहे हैं। घर में सास, ननद, देवर जेठानी है, घर में ही कन्हैया के पिताजी हैं, फिर बेटा कैसे रोने लगा? वह कहने लगी– सास, ननद बैरी हैं, उसी प्रकार देवर और जेठानी भी हैं। राधा जी कन्हैया के पिता भी बैरी हैं, क्योंकि मेरा कान्हा रो रहा है। गगरी अर्थात् घड़ा घिनौची में रख दिया, रस्सी खूँटी पर टाँग दिया, जल्दी से पालना झुलाने को कहा, परन्तु कन्हैया उसमें नहीं थे। तेल–फुलेल फेंक दूँगी एक बेटे के लिए, तब उसके पति ने कहा–तेल–फुलेल कर लो, आँखों में काजल भी सजा लो, रानी सोलह श्रृँगार भी कर लो, तुम्हें लालन मिलेंगे।

ऐसा लगता है रोते हुए बालक को छुपा लिया गया था, जिससे स्त्री का वात्सल्य उमड़ने लगता है, तब उसके पति ने आश्वस्त कर दिया।

बिछुआ त बाजइ रूनाझुन बंसिया कहां रे बाजइ हो
राजा कउने ननद जी के भइया त बंसिया बजावइ हो
पशवा त खेलइं राजा बेल तरी अउर बमूर तरी हो

राजा तुम्हरी धना वेदन व्याकुल त तुम्ह ही बोलाइनि हो
पशवा त मिचिकिनि राजा बेल तरी और बमूर तरी हो
राजा पेलि पइठि गज ओवरी कहां धना वेदन हो
बाएं अंग राजा मोरा कसकइ दहिन अंग मसकइ हो
राजा मरतिउं पंजरिया के पीर त धकरिनि बोलावा हो
अगिला के घोड़वा कउन राम पीछे के कउन राम हो
भइया चला हो बुंदेलनी के देश जहां बसै धकरिन हो
पूंछे अरइन बरइन कुइयां पनिहारिन हो
राजा पूछइं शहरबा के लोगन कहां बसइ धकरिन हो
ऊंच नगर पुर पाटन आले बांस छाए हँइ हो
राजा द्वारे चन्दन बड़ा रूखवा जहां बसइं धकरिनि हो
को मोरी टटिआ उघारिसि बेंड़ा खरकाइसि हो
राजा कउने रजनी के पूत एतनी बेर आएसि हो
हम तोरि टटिआ उघारेन बेंड़ा खरकाएन हो
लोनी यह तो कउने राम के पूत एतनी राति आएं हो
जो तोंहरे होइहंइ होरिलवा त का हो लुटउबइ हो
जो तोंहरे होइहंइ ढेरिया त कउन रंग चूनरि हो
जो हमरे होइहंइ होरिलवा त सोनबा लुटउबै त रूपबा लुटउबइ हो
जो हमरे होइहंइ ढेरिया अवध रंग चूनरि हो
अगले के घोड़वा कउन राम पीछे के कउन राम हो
लोनी बीच के डड़िया सुधर लोनी चवंर चलत आवइ हो
जो मैं जनतिउं सुघर लोनी पसिनवा ढुरत आवइ हो

गीत का आरंभ मधुर ध्वनि को सुनने से होता है। बिछुआ की ध्वनि तो रूनझुन होती है, परन्तु यह बंशी की ध्वनि है, कहाँ बज रही है? वह करती है कि मेरी ननद का कौन सा भाई बंशी बजा रहा है। देखती है कि उसका पति बेल बबूल के पेड़ के नीचे पाशा खेल रहा है, अब उन्हें सन्देश पहुँचाती है कि उनकी पत्नी को प्रसव वेदना है, जिससे बुलवाया है। यह सुनकर उसका पति पाशा को उसी बेल बबूल के नीचे फेंक देता है और बड़े वेग से जहाँ पत्नी वेदनाकुल थी, उस कमरे में प्रवेश करता है।

पत्नी कहती है कि स्वामी मेरे पेट के बाएं भाग से कसक है और दाहिने भाग में तनाव जैसी पीड़ा है। पांजरि अर्थात् पसली की पीड़ा से मरी जा रही हूँ। आप शीघ्र धकरिन बुला दें; जो प्रसव कर्म में प्रवीण भी होती है और नालच्छेदन भी करती है। अब

घुड़सवारी करते हुए उसे बुलाने चल पड़ते हैं। बुंदेलियों के निवास के पास धकरिन रहती है, उसे बुलाने दो घुड़सवार चल पड़ते हैं। बरई की औरतों और पनिहारिनों से पूँछते–पूँछते नगर के लोगों से भी पूछा कि धकरिन कहाँ बसती है या रहती है। पता चला कि नगर में ऊँचाई पर पाटनपुर है ,जहाँ बाँसों से बना हुआ घर है, दरवाजे पर चन्दन का बड़ा पेड़ है। वहाँ जाकर प्रवेश द्वार की टटिया खोल देते हैं। (घासफूस और लकड़ी के प्रवेश को अस्थायी रूप से रोंकने हेतु बने हुए चौकोर गेट को ही टटिया कहा जाता है)। धकरिन पूंछ बैठती है कि यदि तुम्हारे यहाँ लड़का होगा तो क्या लुटाओगे, यदि लड़की होगी तो कैसी चुनरी दोगे। उत्तर देता है कि यदि बेटा पैदा हुआ तो सोना –चाँदी लुटाऊँगा और यदि बेटी होगी तो अयोध्या के रंग की पीली–पीली चुनरी दूँगा। अब आगे–पीछे घुड़सवार और बीच में लोनी की डड़िया चली आ रही है उस पर चँवर ढुर रहे हैं। लोनी पसीने से तार–बेतार हो रही है।

यह सुदीर्घ गीत है। इसमें न केवल प्रसव वेदना की सहानुभूति का ही उल्लेख हुआ है, बल्कि प्रसव हेतु लोना भी आई है। रेवांचल के गाँवों में लोग प्रसव वेदना में धकरिन को बुलाने जाते हैं, अब तो कहीं–कहीं धाय या परिचारिकाएँ भी आती हैं।

होत बिहान पउ फाटत ललना जनम भए होरिला जनम भए हो
अब बजइ लागीं अनन्द बधइया गावइं सखि सोहरि हो
इतने मां आईं सासुरानी हियां हुआं करइ लागीं खासखूस करइ लागी
देहु न बहुआ लोढ़ा सिलउटी पिपरिया पीसि देईं हो
जाहु न सासू लउटि घर लउटि अपने घर हो
मोर पिया देइहीं लोढ़वा सिलउटी पिपरिया पीसि पीवइ हो
इतने मां आईं जेठानी त हियां हुंआ करइ लागी खासखूस करइ लागी हो।
देहु न बहुआ गुड़औ सोठि सोंठउरा बांधि देईं हो
जाहु न जेठनी लउटि अपने लउटि घर हो
मोर पिया देइही गुड़वा औ सोंठि सोंठउरा बांधि खाबइ हो
इतने मां आईं देवरानी त हिआं हुआ करइ लागीं खासखूस करइ लागीं हो।
देहु न चावल तपेली बिलइया रांधि देईं हो
जाहु न जाहु लहुरी लउटि अपने घर हो
मोर पिया देइहीं चावल औ तपेली बिलुइया हम रांधि रखवइ हो
इतने मां आई ननंदि रानी हियां हुआं करइ लागी खासखूस करन लागी हो।
देहु न भउजी तेल और खोरवा हम काजल आंजि देईं हो

जाहु न जाहु बहिनी अपने घर लउटि अपने घर हो
पिया मोर देइहीं कटोरवा औ तेल काजलवा हम आंजि लेवइ हो

यह गीत एक ऐसे परिवार का चित्र प्रस्तुत करता है, जिसमें सगर्भा के प्रति परिवारजनों का व्यवहार अच्छा नहीं होने की सूचना मिलती है, परन्तु पुत्र होने के बाद सारा परिवार अपने–अपने नेग लेने के लिए, प्रसवकालीन कार्यों के लिए उत्साह दिखाने लगता है। गीत पुत्र जन्म की सूचना से ही आरंभ होता है। सुबह होते ही सूरज की किरणों से अन्धकार फटते–फटते बालक का जन्म हो जाता है और आनन्द के कारण बधाइयाँ बजने लगती हैं। बधाइयों के साथ ही सोहर गान होने लगता है। यह सब सुन कर सासु आ जाती है। इधर–उधर कुछ काम करने का दिखावा करने लगती है। आस–पास के लोगों से कुछ काना फूसी भी करने लगती है। बहू से बोलने लगती है कि बहूरानी लोढ़ा और सिलौटी हमें दे दो, पीपर पीस दूँ, परन्तु बहू ने टकासा जवाब दे दिया कि सासुरानी आप अपने घर लौट जायें मेरे पति लोढ़ा और सिल दे देंगे, साथ ही मैं पीपर पीस लूंगी और पीस कर पी भी लूँगी। इतने में ही जेठानी आ जाती है और वह भी कुछ न कुछ करने का अभिनय करने लगती है। आपस के लोगों से कानों कान खुसुर–फुसुर कुछ करने लगती है और बहू से कहने लगी कि बहूरानी गुड़ और सोंठ हमे दे दो। मैं गुड़ और सोंठ को पीस कर सोंठौरा (जच्चा को खाने हेतु निर्माण किए जाने वाला पौष्टिक मोदक) बना दूँगी। परन्तु बहू कहती है कि जेठानी जी आप अपने घर लौट जाए, मेरे प्रियतम आकर हमें सोंठ और गुड़ देंगे। और तब मैं सोठौरा बाँट लूंगी, मोदक बना लूँगी और खा भी लूँगी। इसके बाद देवरानी आती है और वह भी कुछ काम करने का दिखावा करने लगती है तथा आपस में खुसुर–फुसुर कुछ बात भी करने लगती है। अपनी जेठानी से चावल और तपेली माँगती है और बेलुई रांधने का, बनाने का प्रस्ताव रख देती है। बहू यह कहने लगती है कि हमारे पति हमें चावल और पतेली दे देंगे और मैं बिलुई पका लूँगी और खा भी लूँगी, आप अपने घर लौट जाइए। इसी समय ननद रानी आ जाती है। इधर–उधर कुछ काम का बहाना करने लगती है और खास खूस करने लगती है। भउजी से कहती है मुझे तेल और कटोरा दे दो, मैं काजल बना दूँगी और लाला के आँज भी दूँगी, परन्तु सद्यः प्रसवा ने कहा कि बहन जी आप अपने घर लौट कर चले जाओ। मेरे प्रियतम आएंगे हमें तेल कटोरा दे देंगे, तब हम काजल भी बना लेंगे और आँज भी लेगें।

यह गीत एक ऐसा चित्र खींचता है कि परिवार के लोगों में सामरस्य नहीं है। जच्चा का इस प्रकार नाराज होना कि जिनके नेग है, जिनसे काम होते हैं, वे सब उपस्थित होते तो हैं, परन्तु वह अस्वीकार कर देती है।

गोइयां मलिया लगाए फुलवार मैं नहिं जानउं कउने गुन हो
भितरे से निकली है सासु रानी हँसि–हँसि पूंछइ लागीं हो
बहुआ कउन कउन व्रत कीन्हिउ ललन बड़े सुन्दर होरिल बड़े सुन्दर हो
एकादशी रहिउं तै उपासी दुआदसी पारन हो
सासु बरत रहिउं तै इतवार मैं नहीं जानउ कउने गुन नहीं जानौ ओहीं गुन हो।
भितरे से निकली जेठानी रानी हँसि–हँसि पूंछइ लागी हो
लहुरी कउन कउन फल खाऊ ललन बड़े सुन्दर होरिल बड़े सुन्दर हो।
खाइउं त दाख दरीमन और सदाफल हो
फोरि–फोरि खाइउं नरियरवा मैं न जानउं ओंही गुन हो
भितरे से निकले है देवर राजा हँसि–हँसि पूंछइ लागें हो
भौजी केकरी सेजरिया तूं सूतू ललन बड़े सुन्दर हो
सेजिआ त सूतेउं आपन अपने हरी संग हो
देवरा सपनेउं न सूतेउं तुम्हारी मैं नही जानउं कौने गुन नहीं जानउं ओही गुन हो
भितरे से निकली ननद रानी हँसि–हँसि पूंछइं लागी हो
भौजी केकरि परिछहियां मूंड़ मीजिउ ललन बड़े सुन्दर हो
मूंड त मीजेन आपन अपने घिनउची तरे हो
ननदी ओहीं होइके निकले ननदोइया मैं नहीं जानू ओहीं गुन हो

कोई ललना अपनी सखी से पूछती है कि मुझे नहीं मालूम कि माली ने फुलवारी क्यों लगा दी है? महल के भीतर से सासू जी निकली और हँस–हँसकर पूछने लगती हैं कि बहूरानी ललना बड़ा सुन्दर पैदा हुआ है, कौन–कौन से व्रत उपवास किया था। बहू ने सासू से कहा कि बेटे के लिए मैंने ग्यारस का व्रत किया, द्वादशी को पारणा भी किया और मैंने रविवार का व्रत भी किया था, परन्तु नहीं जानती कि क्या कारण था? भीतर से जेठानी निकली और हँस–हँसकर उन्होंने भी पूछा कि बालक बहुत सुन्दर हुआ है। देवरानी जी कौन–कौन से फल तुमने खाया था। वह कहने लगी कि दाख भी खाया, अनार भी खाया सदैव फल ही खाया। नारियल तोड़–फोड़ कर खाया, परन्तु नहीं जान पा रही हूँ, क्या कारण रहा होगा? जब भीतर से देवर निकला तो वह भाभी से पूछने लगा कि भाभी किसकी सेज में तुम सोयी थी कि यह बालक बहुत सुन्दर हुआ है। देवर जी को कहती है कि अपनी ही शैय्या में सोयी थी, अपने ही स्वामी जी के साथ सोयी थी, कभी सपने में भी तुम्हारे साथ नहीं सोयी। नहीं समझ में आता है कि कारण क्या है बालक की सुन्दरता का। घर के भीतर से ननद रानी निकली और वे हँस–हँस कर पूछने लगी कि भाभी किसकी छाया सिर धोने के बाद पड़ी थी। ऋतु

स्नान के बाद किसकी छाया पड़ी। तब वह कहती है कि मैंने अपना सिर धोया ही और उसी समय ननदोई निकल पड़े थे। क्या मालूम उसी कारण तो बालक इतना सुन्दर नहीं हो गया है।

यह गीत सुन्दर बेटे का अनेक प्रकार से वर्णन भी करता है और तरह–तरह की लोक मान्यताओं को भी इंगित करता है। ग्यारस का व्रत करना, रविवार का व्रत करना पुत्र प्राप्ति का हेतु माना जाता है। दाख, दाड़िम (अनार) का खाना, सदा फलाहारी रहना, नारियल की गिरी खाना भी पुत्र के सौन्दर्य के लिए अभिवर्द्धक होता है। सगर्भा के कारणभूत व्यक्ति के सौन्दर्य का प्रभाव, ऋतु स्नान के बाद पड़ने वाली छाया का प्रभाव पुत्र या जातक के सौन्दर्य पर पड़ता है। यह गीत इन्हीं लोक भावनाओं को प्रचारित करता है।

बिन्द्रावन के बढ़इया बोलाए चले अउते हो
अब गढ़ि लउते लाली पलंगरिया घरइ पहुंचउते हो
केही चाही लाली पलंगरिया केही दूनउ मोरिला हो
अब केही चाही सुअना परेउना केही कठपुतरी हो
ललना का चाही पलंगरिआ ससुर दूनउ मोरिला हो
अब देवरा का सुअना परेउना ननद कठपुतरी हो
झूलइ लागी लाली पलंगरिया झूलइं दूनउ मोरिला हो
अब पढ़इ लागें सुअना परेउना चले अउते हो
अब घर–घर देते बोलउआ हमारे घरे सोहर हो
हंकरे नगर केरे नउआ बोलाए चले अउते हो
मोरे हरि जी का देत सन्देशबा सोहर सुनि आमइं हो

यह गीत बालक के होने के समय का आनन्द निरूपण करता है और जच्चा की भावना को प्रकट करता है। वह सोहर गान के द्वारा अपने पति को सूचित करना या सन्देश देना चाहती है। जच्चा कहती है कि वृन्दावन के बढ़ई को बुलाते और वह चला आता। वह सुन्दर छोटी पलंग पलना बनाकर ले आता, घर तक पहुँचा भी देता। पुनः प्रश्न होता है कि छोटी–छोटी पलना किसे चाहिए, दो–दो मौर किसे चाहिए, तोता और परेवा (शुक व कबूतर) किसे चाहिए, कौन कठपुतली चाहता है? बेटे को पलंग, ससुर को दो मयूर, देवर को तोता–परेवा चाहिए तथा ननद को कठपुतली चाहिए। पलना में बेटा झूलने लगता है। ससुर दोनों मयूरों को नचाता है, देवर के तोते–कबूतर पढ़ने लगते है और ननद की कठपुतली नाचने लगती है। वृन्दावन के बारी को बुलवाने की

जरूरत होती है, जो घर–घर बुलावा दे आता कि हमारे घर में सोहर हो रही है। नाई को बुला लाते जो हमारे स्वामी (पति) को सन्देश देता और वे भी सोहर गान सुनकर चले आते।

इस गीत में बच्चे के शिशुकालीन लालन–पालन की चिन्ता है। ननद, देवर, ससुर सभी बेटे के लालन–पालन में व्यस्त हो जाते हैं। नगर में बुलावा और सोहर के गीतों के स्वर की माधुरी से बच्चे का पिता भी आ जाता है।

डेहरी के ओट धना ठुनकइं त ठुनुन मुनुन करइं हो
हमरे तिलरिया कइ साध तिलरिया हम पहिरब हो
एक तो कारी कोइलिया त दुसरे छुछुन्दर हो
तुम ही तिलरिया कइ साध तिलरिया नहिं सोहइ हो
इतना बचन सुनि रानी त मनसा विरोग भईं हो
जियरा दुःखित भईं हो।।
राजा हम धना कारी कोइलिया तीलर नहीं सोहइ हो
हमरे पलंग नहिं बइठा सामर होइ जइहे हो
राजा होरिला दिहिनि भगवान् त तोहरें धरम गुन हो
अब पाएन रतन अमोल तिलरिया का करबइ हो

देहली के पीछे छिपकर बहू रूठती है, कुछ भुनभुनाती है और कहती है कि हमारी उत्कट इच्छा है कि मैं तीन कड़ियों वाली काञची या मेखला–करधनी पहन लूँ, परन्तु यह सुनकर उसका पति कहता है कि तुम रंग से काली कोयल जैसी हो, स्वभाव से छुछुन्दर जैसी हो, फिर भी तुम्हें तिलरी पहनना है। यह बात सुनते ही स्त्री रूठ जाती है, मन से दुःखी हो जाती है। मेरे राजा तुम्हें हम काली–काली कोयल लग रही हैं। हमें तिलरी नहीं अच्छी लगेगी। हमारे पलंग में न बैठना, नहीं तो काले पड़ जाओगे। राजा जी भगवान् ने हमें पुत्र दे दिया है, तुम्हारे ही कारण तुम्हारे ही धरम से यह बालक हो गया है। यह अमूल्य रत्न मिल गया है। हमें तिलरी की अब कोई जरूरत नहीं है।

ललना अपने पति से ही गहना आभूषण के लिए रूठती है, परन्तु उसके विपरीत हो जाने पर वे रूठी रहती हुई भी समझाती, सन्तोष या साहस कर लेती है। रंगों को लेकर सुन्दर–असुन्दर की बातें करके चिढ़ाना या रुष्ट करना भी स्वाभाविक प्रक्रिया है, जो कि उचित नहीं है, फिर भी ऐसा आज भी प्रचलन में पाया जाता है।

मचिअइं बइठी सुभद्रा त सुरूजै मनामइं हो
मोरे भइया के होइहै होरिलवा, बधइया लइके जाबइ हो

माघइ केरि दुइजिया त भउजी नहाइनि हो
अंचरा मां परिगा कनेर के फुलवा मनइ मुसुकानी हो
होत भोर भिनसारे भए हंइ ललनमा भए हैं होरिलबा हो
अब बाजइ लागीं अनन्द बधइया गामैं सखी सोहरि हो

इस गीत में ननद ने सूर्य से मन्नत की है। मचिया अर्थात् छोटे आसन में बैठी हुई ननद सुभद्रा ने सूर्य की पूजा की, प्रार्थना की और मनाया कि मेरे भाई के लड़का होगा तो बधाई लेकर मैं जाऊँगी। इसके बाद माघ महीने की द्वितीया को उसकी भाभी ने ऋतु स्नान किया और उनके अंचल में कनइल का पुष्प गिर पड़ा। परिणामतः वह मन में ही मुस्काने लगती हैं। यथासमय सुबह–सुबह भाभी के लालन अर्थात् पुत्र पैदा हो गया और आनन्द भरी बधाइयाँ बजायी जाने लगती हैं तथा सखियाँ सोहर का गान कराने लगती हैं।

इस गीत में ननद ने भौजाई के पुत्र हेतु प्रार्थना की है और उसकी प्रार्थना सुन ली गयी है। एक स्वस्थ परिवार की स्वस्थ परम्परा का दृढ़ीकरण इस गीत में प्रकाशित हुआ है। नाते–रिश्ते इसी प्रकार बढ़ते भी है और दृढ़ भी होते हैं। ननद के नेग तो होते ही हैं, इसके बाद बुआ/फूफू के नेग निरन्तर होते रहते हैं। पुत्र/पुत्री के जन्म से लेकर ननद या बच्चे की बुआ के नेग उसके विवाह पर्यन्त शुरू हो जाते हैं। इस प्रकार भाई का बढ़ता हुआ पारिवारिक हर्ष बहन के साथ ही पूरा हो जाता है। पहले बहन सम्पत्ति में हिस्सा भले न लेती रही हो, परन्तु मायके का कोई भी शुभ कार्य, मंगलकार्य उसके बिना पूरा नहीं होता था। उसे ससम्मान बुलाया जाना और उसकी मांग देकर उसे प्रसन्न करना प्रत्येक मायके वालों का कर्तव्य है।

कौन बन उपजी है नारियर कौन बन सुपरिया हो
अब कौन बन उपजी है हल्दी पियरिया रंगउतेंउ हो
ससुरे मां उपजी है नारियर ससुरे मां सुपरिया हो
अब ससुरे मां उपजी है हल्दी पियरिया रंगउबै हो
केखर आगे निकरबइ केखर आगे बइठउबइ हो
अब केखर आगे ललना खेलउबइ केखर संग बिहँसबइ हो
सासु के आगे निकरबइ सासु के आगे बइठउबइ हो
अब सइयां के आगे ललना खेलउबै देवर संग बिहँसबै हो

नववधू की लालशा पुत्र होने पर उसे लेकर निकलने की, बैठने की और खिलाने की है, परन्तु यह गीत प्रकृति की मांगलिक वस्तुओं से प्रश्नोत्तर रूप से शुरू होता है।

यह नारियल किस वन में पैदा हुआ तथा सुपाड़ी किस वन में पैदा होती है, साथ ही हल्दी कहाँ पैदा होती है, क्योंकि हल्दी से ही पियरी (पीली धोती) रंगी जाएगी। लोकचित्र में पुत्र ससुराल की देन ही होता है। ससुराल बिना नारियल, बिना सुपाड़ी और बिना पियरी नहीं मिलती है। सुपाड़ी रेवांचल में निमन्त्रण का प्रतीक है। नारियल सारे मागंलिक कार्यों में कभी अक्षत के साथ, कभी द्रव्य के साथ, कभी देव प्रसाद के रूप में स्वीकार किया जाता है। यही नारियल देवालयों में भक्तों की भावना का प्रतिनिधि बनकर देवों तक पहुँचता है। उन्हें अपने जल या गिरी के रूप में भक्त का संदेश देता है। उसी गरी या गिरी का एक टुकड़ा खाकर भक्त मान लेता है– भगवान की कृपा आत्मसात् हो चुकी है। यह नारियल, यह सुपाड़ी ससुराल से ही उपजती है, आती है और हल्दी भी, पीला कपड़ा भी, ससुराल से ही मिलता है। यह सब शुभ सूचक हैं। दूसरा प्रश्न बहू का है कि बेटा लेकर किसके सामने निकलूँगी। किसके सामने बैठाऊँगी और कहाँ खिलाऊगी? इसका भी उत्तर ससुराल ही है, सास के ही सामने बेटा ले जाऊँगी। उन्हीं के सामने बैठाऊँगी और पति के सामने खेलाऊँगी, बच्चे की बातों से विविध हास्य मैं अपने देवर के साथ करूँगी।

गाँव की बहुओं का यह सोचना उनकी लज्जा का आवरण है। आज भी वे मायके में बच्चों से परहेज सा करती हैं, ससुराल में भी सास, देवर और पति के सामने उन्मुक्त रूप से पुत्र सुख का प्रदर्शन कर सकती हैं।

कहना से आयी पिअरिया–पिअरिया लगी झालर हो
अब कहना से आए सेन्धौरा–सेन्धौरा भरा सेन्दुर हो
मैके से आई पियरिया–पियरिया लगी झालर हो
अब ससुरे से आए सेन्धौरा–सेन्धौरा भरा सेन्दुर हो
केखर आगे पहिरब पिअरिया–पिअरिया लगी झालर हो
अब केखे आगे पहिरब सेन्दुरवा सेन्धौरा भरा सेन्दुर हो
सासु आगे पहिरब पिअरिया–पिअरिया लगी झालर हो
अब सैंया आगे पहिरब सेन्दुरबा सेन्धौरा भरा सेन्दुर हो

लोक में प्रायः प्रश्नोत्तर द्वारा बात को सरलता से समझने–समझाने की परम्परा रहती है। इस गीत में पीली साड़ी और सिन्दूर दान की बात से शुरुआत होती है। पियरी (पीली धोती) कहाँ से आयी? इसमें झालर भी लगी हुई है, सेन्धौरा कहाँ से आए हैं? सेन्धौरा में सिन्दूर भरा हुआ है। पियरी तो मायके से आई है और सिन्दूरदान ससुराल से आया हुआ है। बहू सोचती है कि पियरी किसके आगे पहनेगी और सिन्दूर

किसके आगे लगाएगी जो कि सेन्धौरा में भरा हुआ है। सासु जी के आगे अर्थात् सामने पियरी पहन लूँगी और स्वामी अर्थात् पति के सामने सिन्दूर लगाऊँगी।

यह गीत बहू की सौभाग्यपरक भावनाओं को प्रकाशित करता है। पीला वस्त्र सौभाग्य का, निर्माण का, सृष्टि का, शुभ का प्रतीक है, परन्तु सिन्दूर सुहाग या सौभाग्य का निदर्शक है। बहुएँ ससुराल सुहाग के लिए ही जाती है, परन्तु उनका जाना शुभ हो, मंगलकारी हो, इसलिए पीले वस्त्रों में सजकर जाती है। सिन्दूर स्नेह का, प्रीति का, अनुराग का और सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। इसे सीमन्त में सजाने की लोक परम्परा है। इसी को लोकगीत द्वारा प्रकट किया गया है।

अंगना मां बोउबइ अनार त भितरे बादाम हो
अब खिड़की मां बोउबइ छोहाड़ा ता दर बिच नरियर हो
काहे मां सींचौ अनार त काहेनि बादाम हो
अब काहे मां सीचौ छोहाड़ा ता काहेनि नरियर हो
तमवा के गगरा में अनार ता जलवा बादाम हो
अब दुधवा मां सीचउं छोहाड़ा ता दर बिच नारियर हो
काहे मा तोडों अनार त काहे मां बादाम हो
अब काहे मां तोडौ छोहाड़ा ता दर बिच नरियर हो
डलिया मा तोडौं अनार ता सुपवा मां बादाम हो
अब अंचरा मां तोड़उं छोहाड़ा ता दौरी नरियर हो

प्रतीकों और व्यंजनाओं से भरी हुई गीतों में यह गीत भी उपलब्ध है। वधू की कल्पनाएँ प्रश्नोत्तर के रूप में गीतों का आकार ले रही है। वह गाती है घर के आँगन में अनार, अन्दर बादाम, खिड़की में छोहारा (खारक) तथा दरवाजे के पास ही नारियल को बोऊँगी। अनार, बादाम, छोहारा और नारियल को किससे सींचने का प्रश्न है। इसका उत्तर भी है– ताम्रकलश से अनार, पानी से बादाम, दूध से छोहारा और समीप के नारियल को सीचूँगी, अब इनके फलों को तोड़ने का क्रमशः प्रश्न है कि किस पात्र में तोड़ूँ, जिसके उत्तर में गीत कहता है– अनार डलिया अर्थात् टोकनी में, बादाम सूप में छोहारा आँचल में ही तोड़ लेंगे, परन्तु दौरी (बाँस पात्र) में नारियल तोड़कर रख लेंगे।

वस्तुतः सद्यः प्रसवा को जननोपरान्त पौष्टिक खाद्यों में इनकी गणना है। अस्तु नववधू प्रसवपूर्व चिन्ता कर इन वस्तुओं का पूर्व से ही प्रबंध कर लेना चाहती है।

तोरा बाप जतिया केर ऊंच दाइज भल दीन्हिसि हो
वदन तोरा दुइज के चांद पै कउने अरथ गुन हो
जाति के नीच सुमरिया त बदन घिनामन हो
ओखे आगे पीछे चलइं छउनमां देखत नीक लागइ हो

घर में आई बहू को पुत्र के अभाव में क्या–क्या नहीं सुनना पड़ता है। यह लोक जीवन का सत्य है। पढ़ाई–लिखाई, संस्कृति–सभ्यता, बडप्पन–चतुराई सब इन समस्याओं में उलझती हुई दिखती है। न केवल रेवांचल अपितु भारतीय संस्कृति में पुत्रमुख दर्शन ही पितृऋण से मोक्ष देता है। यहाँ सिद्धान्त, दर्शन, प्रबोधन, विवेक सब लोक से हार जाते हैं और यही लोकगीत कह देता है कि बहू का पिता जाति में वरिष्ठ उच्च ही था, दहेज भी पर्याप्त दिया था। नारी का मुँह द्वितीया की चाँद जैसा सुन्दर दर्शनीय और आकर्षक था, परन्तु किस काम का, किस अर्थ का और किस गुण का। सुअर नीच जाति का पशु है, मुख भी देखते घृणा लगती है। परन्तु उसके आगे–पीछे छोटे–छोटे बच्चे जब चलते हैं तो देखना सुन्दर लगता है, अच्छा लगता है।

सुअर जैसे गन्दे पशु भी पुत्रों से बच्चों से ही अच्छे लगने लगते हैं और चन्द्रमा जैसे सुन्दर मनुष्य भी पशु से गए– बीते हो जाते हैं, यदि पुत्रहीन रहते हैं। यही लोकगीत में प्रतिपाद्य है।

गंगा का दिखेउं त हिलोरत जमुना बिलोरत हो
तिरबेनिउ का दिखेउं त नहात कोरबा बालक लिहे हो
गंगा त आहीं मोरी बहिनी जमुना मोरी माया हो
तिरबेनी त आहीं मोरी भउजी कोरबा बालक लिहे हो
चलहुं त सखिया सहेलर देखन संग जावइ हो
तिरबेनी त आहीं मोरी भउजी कोरबा बालक लिहे हो
आगे आगे बजत बधइया पीछेन सखि सोहर हो
इतना जो दिखिनि है भउजी झपटि आगे आईं हो
धीरे–धीरे बजाउ रे बंधइया धीरेन सखी सोहरि हो
ननदी सुनि पइहै ललना हमार जागिनि रोवइं लगिहैं
उठिनि रोवइ लगिंहइं हो।

इस गीत में कोई ननद अपनी माँ, बहन और भाभी का एक साथ वर्णन करती है। गंगा उसकी बहन, यमुना उसकी माँ और त्रिवेणी उसकी भाभी है। गंगा हिलोर लेते प्रसन्न होते दिखती है, यमुना मथते हुए दिखती है और त्रिवेणी नहाती हुई दिखती है,

उसकी गोद में बालक भी है। तीनों क्रमशः उसकी बहन, माँ और भाभी हैं। सखियों को साथ लेकर कहती है कि सब लोग मिलकर चलें। गोदी में बालक लिए तिरबेनी भाभी को देखेंगे। आगे–आगे बधाव बजाते लोग चल रहे हैं और पीछे–पीछे सखियाँ सोहर गान की तान बिखेरती हुई चल रही हैं। यह देखकर भाभी बेग से चलकर आगे आ जाती है और कहने लगती है– बधाई धीरे–धीरे बजाओ, सोहर गीत भी धीरे–धीरे ही गाओ। ननद जी यदि मेरा सोया हुआ बालक सुन लेगा तो वह जग जायेगा, रोने लगेगा, उठ जायेगा और रोना शुरू कर देगा।

यहाँ पुत्र वात्सल्य में उल्लास को भी निश्चित करने का अवसर दिया गया है।

सीता धौं तोहरे सास ससुर दुःख धौ नैहर दुःख हो
धौ तोंहरे जिउ मा विरोग निन्दिया नहिं लागइ हो
ना मोरे सास ससुर दुःख ना नैहर दुःख हो
ना स्वामी जिया मां विरोग निंदरि नहिं लागइ हो
स्वामी तोहरइ होइगा विरोग निंदिया नहिं लागइ हो
सासु केरि तकेउं रसोइया ससुर जेउनरिया हो
अलग होइहंइ रउरे के भइया कइसे के रहबइ हो
हियां न रहि जाइत चली जाहु नइहर हो
सिकिया न डोलइ पवन बिन पुरइन जल बिन हो
नइया न खेवइ केवट बिन धनिया पुरुष बिन हो
मइया के हंइ छाति पीपर भउजी कहंइ वैरिनि हो
भइया निहारै मोरी भउहैं कइसे कइ रहबइ हो

सीता यहाँ प्रतीक के रूप में व्यवहृत हुई है। उसके पति ने पूछा कि सीता तुम्हें सास–ससुर का कोई दुःख है अथवा नैहर में कोई दुःख है, अथवा तुम्हारे मन में कोई विशेष रोग है, तुम्हे नींद नहीं आती है। उत्तर देती है कि मुझे सास–ससुर का कोई दुःख नहीं है, नैहर में भी कोई दुःख नहीं हैं, मेरे मन में भी कोई रोग नहीं है, परन्तु नींद नहीं लगती है। स्वामी जी आपका ही वियोग होगा, यह सोचकर नींद नहीं लग रही है। तुम्हारे जाने पर सासु की रसोई देखूँगी, ससुर की जेउनार देखूँगी, आपके भाई तो अलग हो जायेंगे, तब मैं कैसे अकेले रहूँगी। पति कहता है कि यहाँ नहीं रह सकी तो मायके चली जाना। हवा के बिना सींक भी नहीं हिलती, पानी के बिना पुरइनि अर्थात् कमल का पत्ता भी नहीं हिलता, केवट के बिना कोई नाव भी नहीं खेता है, और स्त्री–पुरुष के बिना नहीं रह पाती है। माँ छाती का पीपर कहती है, भाभी वैरी कहती है और भाई मेरी भौहों की ओर देखता है, ऐसी स्थिति में मैं कैसे रह पाऊँगी?

पत्नी की स्थिति पति के बाहर रहने पर क्या हो जाती है। यह चित्र और दशा निरूपित की गयी है।

अरी–अरी कारी कोइलिया नेवति दइ आवहु हो
कोइली अजु मोरा पहिला सगुन हइ नेवति दई आवहु हो
अरे घर नेउतेउं पर घर नेउतेउं और ससुर घर हो
कोइली एक नहिं नेउतेउं वीरन भइया जिनसे मैं रूठी हो
अरी–अरी सखिया सहेली मंगल जनि गाऊं हो
अरी सखि मोरा जिया बड़ा रे वियोग वीरन नहिं आए हो
छिन–छिन देखउं महलिया त छिन में अटरिया हो
अरी अब छिन–छिन में निरखूं मै बाट वीरन नहिं आए हो

जच्चा भाई से असन्तुष्ट है। वह अपने पहले शकुन में निमंत्रण देने हेतु कोयल से कहती है। उसे कहती है कि घर में नेउता देना। दूसरों के घर निमन्त्रण देना, ससुर के घर में निमंत्रण देना, परन्तु भाई को नेउता नहीं देना। यद्यपि यह कहती है– फिर भी भाई के लिए ही प्रतीक्षा करती रहती है। सखियों–सहेलियों से मंगल गीत न गाने की बात कहती है, भाई के न आने से वह बहुत दुःखी है। क्षण–क्षण में महल में देखती है, कभी अटारी में चढ़कर देखती है। कहती है– मैं प्रत्येक क्षण में भाई की बाट देख रही हूँ।

इस गीत में रूठी हुई बहन के मन में भाई के आने की ही चिन्ता है, उसके ही आने की प्रतीक्षा कर रही है। यहाँ भाई–बहन के स्नेह का उदाहरण प्रस्तुत है।

सगरा खनाए के बड़ा फल जो जल ओगरइ हो
अब गउआ पिअइं ठण्डा पानी त पुरइनि लहालह हो
बाग लगाए के बड़ाफल जो अमवा गौरइ हो
अब अमवा मां लगे हइं टिकोरा सुअना लागे गदरन हो
होरिला पजाने का बड़ा सुख जो घर संपति हो
अब द्वारे मां बइठे ससुर राजा पटना लुटावइं हो

इस गीत में पुत्रोत्पत्ति के सुख का वर्णन किया गया है, परन्तु इसकी शुरुआत पुण्यात्मक प्रसंगों से की गयी है। सागर अर्थात् बड़े तालाब का बावड़ी बनवाने या खोदवाने का पुण्य बहुत बड़ा होता है, परन्तु उसमें यदि पानी खूब रहे, तब फल मिलता है, क्योंकि गायें ठण्डा पानी पीती हैं और कमल के पत्ते विकसित होते हुए अच्छे लगते

है। आम की बाटिका लगाने का भी बहुत पुण्य मिलता है, यदि आमों में बौर लगे और बौर (फूल) टिकोरा अर्थात् कच्चे आमों में बदल जाय, इसे तोता कुतरते रहते हैं। इसी प्रकार घर में यदि धन होता है, तब बेटा पैदा होने पर बड़ा आनन्द होता है। बेटे के पितामह या जच्चा के ससुर दरवाजे पर बैठकर कपड़ों को लुटाते रहते है।

यहाँ परोपकार या दान के कारण फल लिखा है। गायें पानी पियें तो पुण्य, आम तोता खायें तो पुण्य, बेटा हो तो दान करें तो पुण्य मिलता है। बेटा होने पर भी यदि धन सम्पत्ति नहीं हुई तो दान नहीं किया जा सकता है और उसका आनन्द—उल्लास प्रकट करना, उत्सव मनाना संभव नहीं हो पाता है।

चन्दन केर एक बिरवा घिनउची तरि उपजइ हो
अब पान फुलेन ऐसा ललना आंगन मोरे सोहइ हो
ओनइ आई कारी बदरिया ओनइ जल बरसइ हो
अब बरसइ लागें बड़े—बड़े बूंदा छयल उठि भागइं हो
एक पाव धरिनि ओसरबा दुसर पांव मंझोटबा हो
धौ तै चोर चहरुआ धौ राजा के पहरूआ हो
अब धौ तू होरिलबा के बाप पलंग मोरि डोलइ हो
ना हम चोर चहरूआ न राजा के पहरूआ हो
हम तौ होरिलबा के बाप पलंग तोहरी डोलइ हो

पानी से भरे घड़े जहाँ रखे रहते हैं, उसे घिनउची कहते है। घिनौची के नीचे चन्दन का एक पेड़ उग आया था। उसी आँगन में फूल और पान जैसा कोमल बालक सुशोभित हो रहा है। काले—काले बादलों का समूह झुक आता है और बरसात करने लगता है। जब बड़े—बड़े बूंदों की बरसात होने लगती है, तब पति भाग उठता है। एक पैर ओसारे में दूसरा पैर घर के बीच के कमरे में तीसरा पैर अटारी पर रखा, तब पत्नी की पलंग हिलने—डुलने लगती हैं, वह पूछने लगती है कि क्या तुम चोर हो, क्या राजा के पहरेदार हो अथवा तुम बेटे के पिता हो। उत्तर आता है कि मैं न तो चोर हूँ, न ही राजा का पहरेदार हूँ, मैं तो तुम्हारे बेटे का पिता हूँ। पलंग में हूँ और इसी से तुम्हारी पलंग हिल—डुल रही है। पिता का बच्चे के प्रति प्रेम का वर्णन हुआ है।

बाजत आवइं दस बाजा त इन्दर बजावइं हो
अब नाचै फूफू सुभद्रा गावइं सखि सोहरि हो
काहे छुरउना (नारा) नारद छीनै ता काहे पहुड़ामैं हो
सोने छुरउना नारा छीनै खपर नहवामइं हो
अब रेशम पोछउंना राम पोछैं सिंहासन पहुड़ामैं हो

यह गीत श्रीराम जन्म का है। उनके लिए लोकगान का चित्र दर्शनीय है। वे अजन्मा हैं, परन्तु जन्म लेते हैं, देवों को सुख हुआ और उनके राजा इन्द्र ने दश प्रकार बाजा बजवाते हुए बधाई उत्सव मनाने का उपक्रम किया। सभी सखियाँ सोहर गीत गाने लगती हैं और बेटे की बुआ जिसे सुभद्रा के नाम से संबोधित किया गया है, वह नाचती है और नारा काटने के बाद कहाँ लिटाते हैं। उत्तर भी मिलता है कि सोने के छुरे से नारद जी नालच्छेद कर देते हैं। खप्पड़ में पानी भरकर नहलाते हैं। स्नान के बाद रेशम वस्त्र से श्रीराम को पोंछते है और सिंहासन में लिटा देते हैं।

इस गीत में जनम प्रसंग की क्रिया वर्णित है। पुत्र होने पर बधाईयाँ बजती हैं। सोहर गीतों से घर–आँगन गूँजने लगता है, नालच्छेदन होता है, बच्चा नहलाया जाता है और उसे रेशम से पोंछकर सूखे स्थान पर, पलंग पर लिटा दिया जाता है। इसी क्रिया का इस गीत में विवरण है। लोक स्वामी–देवलोक स्वामी बधाई उत्साह में देवर्षि नारद नालच्छेदन में सहायक होते हैं। सब घर की बहू–बेटियाँ ही करती हैं।

ससुरा दुआरे एक निमिया त लहर–लहर करै हो ।
सखिया तेहि पर बोलै एक कउआ त बोलिया सुहावनि हो।
की कौआ भइया ने भेजा कि हरि जी पठाएउहै हो ।
कौआ कउन सगुन लइके आएउ त बोलिया सुहावनि हो।
बहुआ न हि भइया ने भेजा न हरिजी पठाएउ हो।
सखिया आजु के नवएं महिनमां होरिलबा तोहरे होइहैं हो।
चुप रहा कउआ तू चुप रहा बैरिनिया न सुनइ हो।
कौआ! एक तो बिटिया हमारी कोख दुसरे पिया दारून हो।
अइसन कौआ जो पउतिउं त जांघ बइठउतिउं हो।
रामा सो नयन चोंच मढ़उतिउं त रुपेन पखनउं हो।

लोक प्रसिद्धि है कि घर के मुंडेर पर या आसपास यदि कौआ बोलता है तो कोई शुभ संकेत माना जाता है, कोई निमंत्रण या शुभ समाचार मिलता है। यह गीत इसी विमर्श में बन गया है। नारी ने गाना शुरू किया कि ससुर जी के द्वार पर एक नीम का पेड़ है जो हवा बहने पर लहराता रहता है और हे सखी! उसी के ऊपर एक कौआ बोल रहा है। इसको भाई ने भेजा है कि पति (हरि) ने भेजा है, इसकी बोली अच्छी लग रही है। पूछ उठती है कि कौआ तुम क्या शुभ संदेश लेकर आए हो? तब यह कौआ बोलने लगा कि न तो भइया ने भेजा है और न ही तुम्हारे पति ने भेजा है, रानी जी आज से नवें महीने में तुम्हारे पुत्र होगा। यह सुनकर स्त्री कहती है कि कौए तुम चुप रहो,

कोई बैरी औरत न सुन ले। एक तो हमारी कोख में कन्या और दूसरे पति कठोर स्वभाव के है। यह समाचार देने वाला कौआ इतना उसे अच्छा लगा कि कहती है कि ऐसे कौआ को मैं जंघा में बैठा लेती, रुपहले पंख करा देती और चोंच सोने से मढ़वा देती।

इस गीत में शुभ सूचना को भी शत्रुओं के भय से छिपाने की बात कही है, सबको ऐसा लगता है कि गर्भ में कन्या ही है, अस्तु कौआ ने जिस चोंच से भविष्य की सूचना दी उसे स्वर्णिम करना और जिन पंखों से उड़कर आया, उन्हें रुपहले कर देने की इच्छा लोक के उत्साह का परिणाम है।

एक सौ अमवा लगायउं सवाउसै जामुनि हो।
अब तबहूं न बगिया सोहावनि एक रे कोइलि बिना हो।
मइके मां मोरे पांच भइया औ सात भतिजवा हो।
अब तबहूं न नैहर सोहावन एक रे माया बिना हो।
गोदी मां लिहे निजभइया त औरउ भतिजवा हो।
अब तबहूं न गोदिया सुहावनि एक ललन बिन एक होरिल बिन हो।

यह गीत भी प्रकृति और परिवार के बहाने शुरू होता है, परन्तु वह पुत्र में ही आ के रूक जाता है। वधू कहती है कि मैंने एक सौ पेड़ आम के और सवा सौ पेड़ जामुन के लगा दिया, परन्तु तब भी बगीचा अच्छा नहीं लग रहा है, क्योंकि उसमें एक कोयल नहीं हैं। इसी प्रकार मायके में (मातृघर में) पाँच भाई हैं और उनके सात भतीजे हैं। सबके भरे–पूरे परिवार होने पर भी एक माँ के बिना अच्छा नहीं लग रहा है। मैंने गोदी में भाइयों को लिया, भतीजों को भी लिया और खिलाया, परन्तु हमारी गोदी तब भी अच्छी नहीं लगती थी, क्योंकि एक बालक हमारा नहीं था। स्त्रियों को सारा सुख, सारी समृद्धि, सारा परिवार भले हो, परन्तु एक बालक के बिना उन्हें सब कुछ निरर्थक और व्यर्थ लगता है।

चारि महीना तुलसी सेएउं कातिक दियना बारेउं हो।
तुलसी जब मोरे होइ है होरिलवा त पियरी चढ़उबै हो।
होत बिहान पौ फाटति होरिला जनम भए हो।
बहिनी बजइ लागी अनन्द बधइया गावइं सखि सोहर हो।
हंकरउं नगर के नउआ त हालि बेगि आवा हो।
नउआ रंगि रंगि पीसा हरदिया त तुलसी का पूजी हो।
निहुरि निहुरि तुलसी पूजइं घुमरि पइयां लागइं हो।

तुलसी जुग जुग बाढ़इ तोहरा नइहर कि जुग जुग सासुर हो।
तुलसी जुग जुग बढ़इ अहिवात कि हमहुं छुडावहुं हो।

यह गीत तुलसी की उपासना की बात कहता है। सधवा स्त्री कहती कि मैंने चार महीनों से तुलसी की सेवा की है। कार्तिक महीने में दीपक लगाया है। हे तुलसी जी! जब मेरे कोख से बालक होगा, तब मैं पियरी अर्थात् पीली साड़ी तुम्हे चढ़ाऊँगी। सुबह हुई, सूरज की किरणें फूटने लगती हैं और उसी समय बालक का जन्म हो जाता है, आनन्द उमड़ने लगा, बधावा बजने लगा; सारी सखियाँ सोहर गान करने में लग गयीं। नगर का नाई बुलाया गया, वह तुरन्त चला आया, उसे कहा गया कि रंग रंगीली हल्दी को नाऊ जी तैयार कर लो, जिससे तुलसी की पूजा कर लूँ। अब जननी झुक–झुककर तुलसी की पूजा करती है, घूम–घूम कर पैर पड़ती है। तुलसी कहती हैं कि तुम्हारा नैहर और ससुराल युगों–युगों तक बढ़ता रहे और तुम्हारा पति (सौभाग्य) युगों–युगों तक बढ़ता रहे, हमें भी सुख देती रहना।

इस गीत में वनस्पति तुलसी की पूजा से भी पुत्र की प्राप्ति का निरूपण किया गया है।

पानन सी धना पातर कुसुम ऐसी सुन्दर हो।
चढ़ गई रहस महलिया सोवइं सुख निंदिया हो।
दुअरा मां ठाढ़े हाँ ससुरा त बहुआ बोलइ लागे हो।
बहुआ कउन कउन फल खाए ललन बड़े सुन्दर होरिल बड़े सुन्दर हो।
खायों मैं दाख दरीमन और सदाफल हो।
रामा फोरि फोरि खायौं मै नरियर नहीं जानूं ओही गुन हो।
मचिया मां बैठी हां सासूरानी ओऊ हँसि बोलइ लागीं हो।
रामा बहुआ कउन कउन व्रत कीन्हिउ ललन बड़ा सुन्दर होरिल बड़ा सुन्दर हो।
व्रत एकादशी कीन्हिउं दुआदसी पारन हो।
विधि से रहेउं मै इतवार न जानू ओही गुन हो।
दुअरा माँ चढ़ि गई ननद रानी ओऊं हँसि बोलें/पूंछै लागीं हो।
भउजी कउन छयल चित डारेउ ललन/होरिल बड़ा सुन्दर हो।
एक बार सेएउं तोहरे भइया दुसर अपने देवरा हो।
रामा सपने में आए ननदोइया नहीं जानू उहइ गुन हो।

यह गीत बच्चे की सुन्दरता के लिए है, सुन्दरता का कारण अपने–अपने ढंग से परिवार के लोग पूछते हैं और सबसे जच्चा ने तदनुसार उत्तर दिया है। पान के समान

पतली वधू फूलों सी सुन्दर थी। यह अपने रासविलास के कक्ष में चढ़कर वहीं सुखपूर्वक सो रही है। दरवाजे में खड़े होकर ससुर ने पूछा कि बहू! तुमने कौन–कौन से फल खाया है? जिससे बालक बड़ा ही सुन्दर पैदा हुआ है। दाख, अनार, नारियल और ऋतुफल खाने की बात कहती हुए भी बहू ने सही कारण न जानना ही बताया। सासु ने भी हँसकर पूछा कि बहू कौन–कौन से व्रत लिया कि बेटा बड़ा सुन्दर हुआ है? बहू ने कहा कि एकादशी का व्रत, द्वादशी का पारणा और रविवार व्रत मैंने किया था, क्या मालुम इसी से सुन्दर बालक हुआ होगा। ननद भी दरवाजे में चढ़कर पूछती है कि किसका चित्त में ध्यान किया, जिससे बालक इतना सुन्दर हो गया। कहती है कि तुम्हारे भाई अर्थात् अपने पति की सेवा की, देवर की सेवा की और सपने में ननदोई आ गए थे। नहीं जानती क्या कारण था।

स्त्रियों द्वारा फलों का खान–पान, व्रतों की उपासना और पति की परायणता से ही सुन्दर सन्तति की प्राप्ति होती है। उपनिषदों में भी ऋतुस्नाताओं के लिए खाद्य एवं मनोदशा का प्रभाव भावी सन्तति में पड़ने का उल्लेख मिलता है।

जिन ससुरा मुखहूं न बोलइं नजरिया नहिं चितवइं हो।
तिन ससुरा पटना लुटावइं बहुआ गोहरामइं हो।
जिन सासू मुखहू न बोलइं गारिया घालइं हो।
तिन सासू पिअरी रंगावइं बहुआ गोहरामइं हो।
जिन जेठा मुखहूं न बोलइं नजरिया नहि चितवइं हो।
तिन जेठा डेउढ़ा छोंड़ावइं नजरिया भरि चितवइं हो।
जिन साहेब मुखहूं न बोलइं नजरिया नहिं चितवइं हो।
तिन साहेब छठिया पुजावइं रनिया गोहरामइं हो।

यह गीत बहू की पुत्रवती बनने के बाद की स्थिति का निरूपण करता है। पहले उसके घर के लोगों के व्यवहार में अकस्मात् परिवर्तन आ जाता है, यह मातृत्व का वरदान है।

ससुर पहले मुँह से नहीं बोलते थे, नजर से नहीं देखते थे, वे अब कपड़े लुटा रहे हैं? बहू–बहू कहकर बुला रहे हैं। जो सास कभी बोलती ही नहीं थी, गालियाँ देती थी, वही पीली धोती रंगा रही है, बहू–बहू कह रही है। जो जेठ जी पहले न बोलते थे, न देखते थे, वे नजरभर कर देखते हैं, अर्थात् देखते रहते हैं और देहली से बाहर बुला लेते है,, जो पति बोलते नहीं थे, देखते नहीं थे, वे साथ बैठकर षष्ठी पूजा कराते हैं और रानी–रानी कहकर पुकारते हैं।

यह परिवार की ग्रामीण परम्परा है। बहू का घर में सम्मान तभी बढ़ता है, जब वह पुत्रवती हो जाती है। उसका सम्बोधन बदल जाता है, उसके प्रति भाव बदल जाता है और उसका मातृत्व अब गरिमा मण्डित हो जाता है। इसी की विवेचना उक्त गीत कर रहा है।

एक तो अंगवा के पातरि दुसरे गरब चढ़ी हो।
अब अइसन ढींठ कन्हैया डेहरी चढ़ि बइठइं हो।
जाहु तू कान्हा अपने घर अपने वृन्दावन हो।
कान्हा उहइंन से पतिआ बचाए सुनइ हम अउबइ हो।
भला बउरानिउ तू धनिया भलिनि बात करि गई हो।
अब नित नित पतिआ बचउबै जिअरा बहलउबै हो।
सासु के कीन्हिउ तू सेवा ससुर पइयां लागिउं हो।
धनिया उअतइ के सुरूज मनाइउ हमहिं बिसराइउ हो।
सासु के करबइ सेवा ससुर पइयां लगबइ हो।
अब उगतइ के सुरूज मनउबै तोहइं बिसरउबै हो।
राति भर वंशिया बजाइनि भिनसारे भर बाजइ हो।
अब ऐसन धना नीक मोहि लागी सुनन नहिं आई हो।।

कोई सगर्भा स्त्री इस गीत के माध्यम से अपनी मानसिक अभिव्यक्ति कर रही है। वह दुबली पतली है सगर्भा भी है, परन्तु उसका कान्हा अर्थात् प्रियतम उसके कमरे की देहली में ही बैठा रहता है। वह उसे अपने वृन्दावन या कार्यक्षेत्र में जाने का आग्रह करती है, परन्तु पाती का आग्रह करती है, वह पाती सुनने का वचन देती है। प्रियतम कहता है– तुम पगला सी गयी हो, परन्तु अच्छी बात यह है कि रोज–रोज चिट्ठी पढ़–पढ़कर वियोगावस्था में जी बहलाने का नियम है। उसे कहता है कि तुम सास की सेवा करना, ससुर को प्रणाम करना और उगते हुए सूरज को पूजना, मन्नत करते रहना हमे भुलाने का प्रयास करना। वह भी कहती है कि सास की सेवा करूँगी। ससुर को रोज प्रणाम करूँगी। सूर्योदय से सूर्य को पूजती रहूँगी, इसी बहाने आपको भुलाने लगूँगी। प्रियतम ने सारी रात बंशी बजाया, पर सुनकर भी उसकी प्रियतमा नहीं आती है, उसकी वह प्रशंसा करता है।

यह गीत सगर्भा दशा में पत्नी को पति के दूर रहने पर भी उसके गुण–धर्म का चिन्तन पत्रों, संदेशों और वार्तालापों से करना चाहिए। कुलाचार के लिए सास–ससुर की सेवा करना और भावी शिशु के लिए सूर्य की पूजा उपासना करना अभीष्ट है। भावी

शिशु की देखभाल और भावी माँ के स्वास्थ्य, मनोदशा एवं उत्साह के लिए इन आचरणों का पालन करना अपेक्षित है। यह गीत बंशी बजाने के आकर्षण में न होने का संदेश भी देता है। सूर्योपासना से पुत्र की प्राप्ति तो होती ही है, वह पुत्र चारों दिशाओं में प्रकाशित होता है और सदा नियमबद्ध भी रहता है।

मचिअइ बइठी हां सासू त बहुआ अरूझि करै हो।
सासू तोहरे महलिया त गरमिउ गरम मोहिं लागइ हो।
बहुआ माया की होतिउ लोलारी त बाबुल की दुलारी हो।
बहुआ संगइ चमर बेनिया लउतिउ महल बेनिया घुमड़त हो।
नौ रे महीना दस लागत ललना जनम भए हो।
अब बाजइ लागीं अनन्द बधइया गावइं सखी सोहरि हो।
हंकरौ न नगर के नउआ हंकरि वेगि लावहु जल्दी चले आवहु हो।
नउआ रंगि रंगि बांटउ हरदुलिया रोचन पहुंचावहु हो।
बाबुल का दिहे तूं रोचनमां त माया से अरुझि किहे हो।
माया तोरी बेटी होरिला पजानी चमर बेनिया मांगइ हो।
चाचा का दिहे तूं रोचनमां चाची से अरुझि किहेउ हो।
चाचा तोरी बेटी होरिला पजानी चमर बेनिआ मांगइ हो।
भइआ का दिहे तूं रोचनमां भउजी से अरुझि किहे हो।
ननदी तोरी होरिला पजानी चमर बेनिया मांगइ हो।
अब ढूंढा पीड़ा महामह पियरी दहादह हो।
अब लीले लीले घोड़ेन वीरन भइया चमर बेनिया घुमड़इ हो।
कहंवा धराई सासु ढूंढा पीड़ा पिअरी दहादह हो।
कहंवा बैठाई वीरन भइया चमर बेनिया घुमड़इ हो।
अंगना धराबा बहुआ ढूंढा पीड़ा पियरी दहादह हो।
चौपरिया बैठाबा वीरन भइया महल बेनिया घुमड़इ हो।

यह गीत सास–बहू के संवाद से शुरू होता है। मचिआ में बैठी हुई सास से बहू ने हठ किया कि सास जी आपके महल में बहुत गर्मी पड़ रही है और इस समय सगर्भावस्था में मुझे और भी गर्मी लग रही है। सासू ने मार्मिक उत्तर दे दिया कि बहू तुम सास की लाड़ली, प्यारी और पिता की दुलारी वाली बेटी होती तो तुम साथ में चंवर और पंखा लेकर आती और यह पंखा महल में चारों ओर घुमड़ता रहता, अर्थात् चलता रहता। अब नौ महीने के बाद दसवें महीने में बेटा पैदा हो जाता है, आनन्द बढ़ जाता है, बधाईयाँ बजने लगती हैं, सखियाँ सोहर गाने लगती हैं। नगर के नाई को शीघ्रता

में बुलाया गया और उसे हल्दी से रंग–रंगकर पीले चावल अर्थात् रोचना बांटने हेतु आदेश दिया गया। सद्यः प्रसवा ने नाई को बुलाया और कहा कि मेरे पिता जी को रोचना बाँट देना तथा मेरी माँ से आग्रह करना वह हठ करना, बताना कि तुम्हारी बेटी के बेटा पैदा हुआ है और वह चंवर तथा व्यजन (पंखा) माँग रही है। इसी प्रकार चाचा जी को रोचना दे देना तथा चाची से आग्रह करना, हठ करना कि चाची तुम्हारी बेटी के पुत्र पैदा हुआ है, वह चंवर और पंखा मांग रही है। भाई को रोचना दे देना और भाभी से मेरा आग्रह (हठ) करना कि तुम्हारी ननद को पुत्र पैदा हुआ है, उसने चंवर और बेनिया (पंखा) माँगा है। इसके बाद गीत का दूसरा दृश्य प्रकट होता है, जच्चा के भइया ने पीड़ा (जच्चा को खाने हेतु दिए जाने वाले पौष्टिक मोदक) लदवाया और चंवर तथा पंखों को लिया, पहुँच गए बहन की ससुराल, साथ में पियरी (पीली धोती) भी ले गए। बहू ने मौका देख सासुजी से कहा कि नीले–नीले घोड़े भी ले आए। बहू ने मौका देख सासुजी से कहा कि नीले–नीले घोड़े में चढ़कर मेरा भइया आ गया है, चमर और बेनिया (पंखे) लाया है, महकते हुए पौष्टिक खाद्य पदार्थों और हल्दी इत्यादि से बने हुए मोदक भी लाया है, चमकती दमकती पीली धोती भी लाया है। उसे कहाँ बैठने के लिए कहें। उनके साथ चंवर व पंखे घुमड़ रहे हैं। सास ने कहा कि आँगन में पीड़ा रखवा लो और चमक–दमक वाली पियरी भी आँगन में ही, घरवालों भाई साहब को चौपाल में बैठा दो और पंखों को महल में चलवा दो, ताकि वे घुमड़ने लगे।

यह गीत सासू के व्यंग्य के छीटों से भरा हुआ है, परन्तु बहू के सपुत्रा होने की खुशी से मायके वालों ने पंखे, चमर, ढूंढा, पीड़ा, पीली साड़ी आदि भाई के साथ घोड़े भर भेज दिया। पारिवारिक सम्बन्धों की यही इयत्ता है कि बेटी के यहाँ कुछ भी उत्सव होने पर उसके मायके से यथाशक्ति भेंट ले जाने की परम्परा थी और दोनों परिवारों में सामंजस्य सदा रहा आता था, परन्तु आज विकृत होती परंपराओं ने वैयक्तिकता के नाम पर सबकुछ समाप्त कर दिया है।

माघइ केरि दुइजिआ त भउजी नहाइनि हो।
रामा परिगा कनइले के फूल मनइ मुसुकानी हो।
माया गनइ दस मास बहिनी दस अंगुरी हो।
भइया भउजी के दिन नगिचान त भउजी ले आवा हो।
सेवत रहेउं अटरिया सपन एक देखेउं हो।
माया जिन प्रभु घोड़े असवार डड़िया चन्दन केरी हो।
बेटी तुहिनि मोरी बेटी तुहिन मोरी सबकुछ हो।
बेटी खाय ले तू नरियर चिरउंजी त डड़िया चन्दन केरी हो।

एक बन नाकि दुसर बन तिसरे है वृन्दावन हो।
अब पइठि परे हैं गज ओवरी त माया निहारइ हो।
मचिअन बइठि हां सासू त लहुर–लहुर करइं हो।
बहुआ एक बेरी वेदना निवारा त लाला जनम होइहीं हो।
आपन माया जो होंती त वेदना हरि लेती हो।
रामा प्रभुजी कै माया निहठोहिलि त ललना ललना करै
त होरिल होरिल करै हो।

यह प्रसव वेदना का निरूपक गीत है। ननद का आत्मगत कथन है कि भाभी ने ऋतुकाल के बाद माघ की द्वितीया को स्नान किया था और देखा कि कनेर में फूल आ गए हैं, अर्थात् भाभी भी सगर्भा हो गयी है। वह मन में ही मुस्कुराने लगती है। माँ तो दस महीना गिन रही है, बहन दस उंगली गिन रही है। ननद अपनी भाभी को ले आने का आग्रह भइया से करती हैं। इसके बाद गीत मायके चला गया, बहू ने सपना देखा, जब वह अटारी में सो रही थी कि उसके स्वामी घोड़े में चढ़कर चन्दन की डड़िया लेकर आ गए हैं। पुनः गीत चुप सा है। उसकी माँ कहने लगी कि बेटी तुम्हीं मेरी सब कुछ हो। नारियल और चिरौंजी दाना खा लो। चन्दनवर्णी डड़िया तो आ ही गयी है। इसके बाद पुनः गीत यात्रा में आ गया है। एक दो वन के बाद तीसरे वन अर्थात् वृन्दावन में आ गए और सीधे अटारी में चले गए। माँ देख रही है। मचिया में बैठी है। लुहुर–लुहुर (दिखावा) करती है। बहू से कहती है कि एक बार पीड़ा सहन कर लो, बेटे का जन्म होगा। वह कहने लगी अपनी माँ जो होती तो पीड़ा दूर कर देती, स्वामी जी की माँ अर्थात् सासू कठोर है, केवल ललना–ललना की रट लगा रही है।

ऊँचे डगर कइ कुइंयां सुघर धना पानी भरइ हो।
अब घोड़वा चढ़े रजपुतवा त बोलिया बहुत करइं हो।
हो हइ घरे मां अति दारून पनियां का पठइनि हो।
अब जेठइ कइ दुपहरिया त पनियां भराइसि हो।
जेकरि धना तुम सुन्दरि ऊं प्रभु कहां गे हंइ हो।
अब जेठइ कइ दुपहरिया त पानी भराइनि हो।
ऐसन धना हम पाइत परम सुख पाइत हो।
अब धना अंखियां मां राखित छिपाए करेजबा मा जोगइत हो।

यह गीत नारी सौन्दर्य का निरूपण करता है। पानी के साधन गाँवों में कुँआ ही होते थे। सुन्दर आकर्षक ललना रास्ते में ऊँची जगत वाले कुँआ में पानी भरने जेठ की

तपती दोपहरी में गयी है। घोड़े में चढ़कर कोई राजपूत आता है। सुन्दरी ललना को पानी भरता देखता है, उसके अंग–प्रत्यंग के सौन्दर्य में रीझता है और कहने लगता है। घर में कौन कठोर हृदय का आदमी है जो पानी लाने के लिए भेजता है। जेठ माह की दोपहरी में सूरज का ताप सीमा पार करता है। उसमें पानी भरने के लिए कोमलांगी को भेज दिया है। पूछने लगता है कि सुन्दरी तुम इतनी सौन्दर्य वाली किसके घर की शोभा बढ़ाती हो। वे कहाँ गये है। तुम जिनकी हो, जेठ की दुपहरी में तुमसे पानी भरा रहे हैं। यदि मेरे भाग्य में इस प्रकार की सुन्दरी ललना होती तो मैं बहुत सुखी हो जाता, ललना को आँखों में छिपाकर रख लेता और हृदय में स्थान देकर बार–बार ध्यान दिए रहता।

यह गीत नारी सौन्दर्य में ही पूरा हो जाता है। सुकोमल, सुन्दर और सुकुमारी होने पर भी कठोर गर्मी में तपते हुए पानी भरने कुँआ में जाना हर पति को अच्छा नहीं लगता था, परन्तु परम्परा पूर्वक गृह पत्नी पानी के लिए पनघट में जाती ही थी। इस गीत में स्पष्ट नहीं होता है, पर पुरुष का परनारी के विषय में यह सोचना और गीत बन जाना कभी–कभी असंगत ही लगता है।

विन्द्रावन एक कुंइया सुघर धना पानी भरइं हो।
अब ओहनइं से आयो मुसाफिर त बोली ठिठोली करइ हो।
कहवां है तोहरा ओढ़कन कहां बनी बइठक हो।
अब कहां बना तोरा बरोठबा जहां हम चले आई हो।
कोठबन बनी मोरी ओढ़कन मंझोटबा मां बइठक हो।
उहंइ रहंइ लहुरा देवरबा कहां से तै अइहे हो।
कोठबा मां बनी तोरी बइठक मझोटवा मां ओढ़कन हो।
तोहरे लहुरा देवर मोरा भइया हुंअइ चले अउबै हो।
जस मोरे हरी के पनहिया तइसइ तोरे ओठबा हो।
तोही जइसा मनई जो पाइत त पनहीं ढोबाइत हो।
मचिअन बइठीं हं सासू बिहंसि करइं बतियां हो।
बहुआ को हरे तोर गियान विदेशिआ नहिं चीन्हेउ
बलमुआ नहि चीन्हिउ हो।।

यह गीत भी पूर्व गीत जैसे भाव का है। वृन्दावन के एक कुँआ में सुन्दर नारी पानी भर रही है। यह वृन्दावन ससुराल का सूचक है। पनघट में आनेवाला यात्री पनिहारिन से हास्य व्यंग्य में लग जता है, पूछ बैठता है कि– हे सुन्दरी! तुम कहाँ बैठती

हो, कहाँ रहती हो, कहाँ सोती हो? जहाँ मैं आ जाऊँ। तब वह कहती है कोठबा (प्रकोष्ठ या कमरा) में आराम करती हूँ। भीतरी कमरे मे बैठती हूँ और वही हमारा छोटा देवर भी रहता है, तुम कैसे आ पाओगे? परन्तु वह कहता है तुम्हारे कमरे की बैठक और भीतरी कमरे की आराम स्थली पर मैं आ जाऊँगा। वह चिढ़ती–चिढ़ाती कहने लगती है कि मेरे पति के जूते के समान तुम्हारे होंठ हैं, तुम्हारे जैसे आदमी से मैं पति के जूते ढोने का काम कराऊँगी। तब मचिया में बैठी हुई सासु ने कहा कि बहू तुम्हारा ज्ञान किसने नष्ट कर दिया है कि तुम विदेशी आदमी जो कि तुम्हारा ही पति है, इसको क्यों नहीं पहचान पा रही हो।

यह गीत भी घूँघट के अन्दर ही जीवन बिताने वाली उन औरतों की भावनाओं को मुखरित करता है, जो अपने परदेश से आए हुए पति के संवाद में अपने पातिव्रत्य की दृढ़ता का परिचय तो दे देती है, परन्तु पहचानने में भूल करती है। पहचानते ही गीत समाप्त हो जाता है।

चन्द्र झरोखा से चितवइ उन्हइ देई कहना लगाए बड़ी देर हो।
तोहरेनि जोग धना चुड़िया बेसाहेन उहंइ लगायअउ बड़ी देर धना मोरी हो।
तोहरेनि जोग धना चुनरी बेसाहत उहंइ लगायउं बड़ी देर धना मोरी हो।
तोहरेनि जोग धना चुड़िया बेसाहेन उहंइ लगाऊं बड़ी देर धना मोरी हो।

यह गीत दाम्पत्य स्नेह का एक चित्र उपस्थित करता है, जिसमें बहू अपने पति को खिड़कियों से देखती रहती है। और सोचती भी है कि इतनी देर कहाँ लगा रहे हैं। उसकी प्रतीक्षा की घड़िया प्रश्नों में बदल जाती हैं। आने पर पति यही कहता है कि तुम्हारे योग्य चूड़ियाँ लेने गया था, मिलने में देर लग रही थी, अस्तु आने में विलम्ब हो गया है। फिर पूछने पर कहता है कि तुम्हारे लिए ही चुनरी खरीदने लगा तो थोड़ी और देर हो गयी है। गीत इतना ही कहकर शान्त हो जाता है। स्त्री के सौभाग्य का प्रतीक वे चूड़ियाँ होती हैं और चुनरी भी। उसी सौभाग्य का उपलक्षण मानी जाती हैं। दोनों के लिए पति–पत्नी की चिन्ता करना यही स्वस्थ दाम्पत्य सम्बन्ध का प्रमाण है।

एक हाथ लिहे बहु गोबर दूसरे हांथ पानिउ हो।
सासू जउन ओवरिया बतावा तउन हम लीपी हो।
एतना जो सुनिसि ननदिया त माया समझावइं हो।
माया भउजी त बिटिया पजइहीं लिपावा घर बुसउल हो।
विदेशवा से आए हैं स्वामी त माया समझावइं हो।
माया तिरिया बहुत सुकुमार लिपावा गज ओवरिउ हो।

यह गीत भी ननद भाभी के कार्यों का उदाहरण प्रस्तुत करता है। बहू ने एक हाथ में गोबर लिया और दूसरे हाथ में पानी लिया। सास जी से पूछती है कि अटारी हमें बताओ, उसे हम लीप देंगे। यह ननद ने सुना और माँ को समझाने लगती है कि माँ भाभी तो बेटी पैदा करेगी तो उनके लिए बूसा घर ही लिपा दो। जब बाहर गाँव से उसके पति आते हैं तो माता को समझाने लगते हैं कि यह स्त्री बहुत सुकुमारी है, इसके लिए ऊँची अटारी को लिपायें।

इस गीत से पति और पत्नी के प्यार–दुलार का तो उदाहरण मिल ही जाता है, परन्तु यहाँ ननद की भाभी के प्रति चिढ़ाने की बात तो कम समझ में आती है। लड़की पैदा होती इसलिए उसके साथ दुर्व्यवहार करना ग्रामीण सोच को सूचित करता है। ये गीत उन चित्रों को प्रस्तुत करते हैं, जो गाँवों में घर–घर घटित होते हैं।

ननदी भउजी मिलि बइठइं त दुनउं होड़ा फांदी करइं हो।
हो ननदी जो मोरे होइहइं नन्दलाल कउन घर लिपउबू हो।
इतना जो सुनिनि हइ ननदिया त धाइ मायहि लागे हो।
माया बड़े हरबहबा कइ बेटी लीपहु घर बुसउल हो।
एतना जो सुनइ पिया साहेब माया समझावइं लागे हो।
माया बड़े हो राजन केरि बेटी लिपावा गज ओवरिउ हो।

ननद भाभी आपस में बैठी और पुत्रजन्म विषयक बातों में लग गयी और भाभी ने ननद से पूछ लिया कि बेटा होगा तो कौन सा घर प्रसव 'सोवर' के लिए लिपाओगी। दोनों परस्पर बढ़–चढ़कर बातें करती रही, तब ननद माता के पास चली जाती है तथा घर में काम करने वाले हलवाहे की बेटी से बुसउल अर्थात् भूसा रखने वाले घर को गोबर से लीपने के लिए कहने लगती है। इतनी बात सुनते ही पति ने माँ को समझाना शुरू कर दिया कि माँ बड़े राजा की बिटिया है, अस्तु भूसा घर की जगह अटारी लिपाना ठीक होगा।

यह गीत ननद–भाभी के हास–परिहास का दृश्य तो उपस्थित ही करता है, परन्तु प्रकारान्तर से पति द्वारा हस्तक्षेप का प्रसविनी की सुविधा का भी उल्लेख करता है। प्रसव गृह को रीवांचल में सोवरि कहते हैं। यहाँ लिपा घर ही होता है, यह दस दिन बाद पुनः लीपने–पोतने के बाद सबके प्रवेश के योग्य होता है। सोवर में 10–12 दिन तक सबका प्रवेश निषिद्ध रहता है। वहाँ जच्चा–बच्चा ही रहते हैं।

अंगना मां बोई हइ करइली रतिया कइसे बीतइ हो।
नई बहुआ के लगें दस मास पै कोउ नहिं जागइं हो।

सासू के दाबउं मैं पिंडुली ननदिया के छिंगुरी हो।
अब सइयइं जगाऊं परि पइंया बोलाए नहिं बोलइं हो।
होत मोर भिनसारे ललन मोरे होइगें होरिल मोरे होइगें हो
अब बाजइ लागीं अनन्द बधइया सोहर सखी गावइं हो।
सासू त आंही पिसनहारी ननद कुटन हारी हो।
अब पिया मोरे घास के छोलइया बोलाए नहीं बोलइं जगाए नहीं जागइं हो।

यह गीत पुत्र प्रसव की वेदना के क्षणों का है। सगर्भा नारी की दशा है कि उसके आँगन में करेली लगायी गयी है। रात शुरू हो गयी है। नई–नवेली बहू को दसवां महीना गर्भ से बीतने का है। पीड़ा से किंकर्तव्यविमूढ़ा बहू सोती हुई सास के पैर दबाती है, ननद की छोटी उंगली दबाती है और कभी पति के पैर पड़ते हुए जगाने लगती है, परन्तु ये कोई बुलाने पर भी नहीं बोल रहे है। सारी रात दर्द सहते–सहते सुबह होने लगती है। अन्तिम प्रहर में–भोर में ही ललन या शिशु का जन्म हो जाता है। आनन्द बधाई बनकर बजने लगता है। सोहर बनकर आनन्द सखियों से गाया जाने लगता है। सारा वातावरण मांगलिक वातावरण में तन्मय हो जाता है, चिढ़कर बहू के मुँह से गीत के बोल निकल पड़ते हैं। सासू जी तो आटा पीसना ही जानती है, ननद भी कूटना ही जानती है, पति को क्या कहूँ ये तो घास छीलना ही जानते हैं। ये लोग न बोलाने पर बोल रहे हैं और न ही जगाने पर जग रहे हैं।

यह गीत नववधू के प्रथम प्रसव की दशा का निरूपण करता है, पीड़ा जानकर वह सासु–ननद और अपने पति पर भरोसा करती हुई रात में जगाना चाहती है, पर वे सब सोते ही रहते है, न जगते है और न ही बोलते है। तब भी जब सखियाँ आनंद से भर जाती हैं, सोहर गाने लगती हैं और आनन्द भरी बधाइयाँ बजने लगती हैं। गाँव की लज्जाशील वधुएँ असह्य पीड़ा के समय भी इसी क्रम में व्यवहार करती हैं, जिसका स्वाभाविक चित्र यहाँ प्रस्तुत हुआ है।

पथरा केरी पथरइली एंगुर रंगढारी हो
अब ओहीं चढ़ि रामा दतून करै नउआ रोचना लाए हो
कहना के आहे तै नउआ कहां चले जइहइ हो
अब केखे भए हैं नन्दलाल रोचना लइके आए हो
गोकुल के हम नउआ अवधपुर आयन हो।
रानी रूकमिन के भए नन्दलाला रोचन लइके आएंन हो
मांग नउआ जउन मन भावइ तोरे जउन मनभावइ हो।
मुंह मांगा देवइ इनाम रोचन लइके आए हो

हंकरे नगर केर सोनरा तुरत चले अउते हो
अब गढ़ि लउते सोने रूपे चुरबा त नउअइ पहिरउते हो
रूपबा त मोरे बहुत हइं त सोनमा की ओरी चुअइं हो
मोही देते जो गांउ दुइगांव त मै जस गउतेउं हो
मांगे तै मंगना रे नउआ मांगना नहिं जाने हो
आधी मंगते अजुधिया के राज तुरत दइ देतेउं हो

यह गीत पुत्रोत्सव हेतु निमन्त्रण (रोचना) पाने पर होने वाले उत्साह का निरूपण करता है। पत्थर के बने हुए आसन जो की लाल रंग से रंगा हुआ है, उसमें श्रीराम जी बैठकर दातून (मुखारी) कर रहे हैं और उसी समय नाई रोचन (नेउता) लेकर आ जाता है। नाई से पूछते हैं कि तुम कहाँ के नाई, कहाँ जा रहे हो, किसके यहाँ नन्दलाल हुए हैं? जिसके लिए तुम रोचना लेकर आए हो। नाई कहता है कि मैं गोकुल का नाई हूँ। अयोध्या आया हूँ। रानी रूक्मिणी के नन्दलाल पैदा हुए हैं। उन्हीं का रोचना लेकर मैं आया हूँ। सूचना पाकर कहते हैं कि नाई जो माँगना हो मांग लो, मैं तुम्हें मुँहमांगा इनाम दूँगा, क्योंकि रोचना लेकर आए हो। नगर के सोनार को बुलाया कि जल्दी चले आओ, सोने रूपा का चूड़ा गढ़कर। बनाकर ले आना और उसे नाई को पहना दूँगा। नाई कहता है कि मेरे रूप अर्थात् चाँदी तो बहुत हैं, सोने की वर्षा हो रही है। परन्तु मुझे एक–दो गाँव दे देते तो मैं यश का गान करता रहता। तब नाई को कहा गया कि– अरे नाई! तुमने माँगा परन्तु माँगते ही नहीं बना। अयोध्या का आधा राज्य मांग लेते तो मैं तत्काल दे देता। यह गीत राम, नन्दलाल, गोकुल, अयोध्या, रूक्मिणी आदि नामों के प्रतीकों का वर्णन करता है। जन्म सुनकर दान इनाम देने की प्रथा है, पुत्र वंशवर्द्धक है, अस्तु उसके जन्म पर पुरस्कार देने की यह पुरानी प्रथा है।

जेठइ कइ दुपहरिया, सुघर धना पानी भरैं हो
घोड़िला चढ़े रजपुतवा त बोलिया बहुत करइं हो
धौं तोहरे सास ससुर दुःख धौं नैहर दुःख हो
धना धौ तोहरे पिया परदेश दुपहरी के पानी भरै हो
ना मोरे सासु ससुर दुःख नाहि नैहर दुःख हो
राजा ना मोरा पिया परदेश दुपहरी के पानी भरउं हो
ऐसनि धनियां जो पउंतेउं जांघि बइठउतेउं हो
अब खोलि खोलि बिरिआ चबउतेउं नयनरस रखतेउं हो
अपने हरिजी के पाय की पनहियां त सिर से ढोवउतिउं हो
कहमां है धना तोहरी उंचनियां कहंवा बइठनियां हो

ओसरबा हइ हमरी उठनियां मंझोटा बइठनियां हो
राजा रंग महल सोउनरियां उहंन कइसे अउबे हो
नौ सौ दियना जलत हइं पहरू लगत हइं हो
अब लहुरा देवर चौकीदार हुंअन कइसे अउबे हो
नौ सौ दियना बुझाइ देवइ, पहरू सोवाइ देवइ हो
धना लहुरा देवर संग भइया हुंअन हम अउबइ हो

जेठ का तपता हुआ महीना, आग बरसती हुई इस महीने की दोपहर, इसी तपती–तपाती दोपहरी में कोई सुन्दरी नारी पानी भरने के लिए जा रही है, जिसे देखकर कोई घुड़सवार राजपूत जैसा व्यक्ति बोली अर्थात् हँसी मजाक करने लगता है। हँसते–हँसते कहने लगता है– नहीं समझ में आता कि तुम्हारे ससुराल में सास और ससुर से दुःख मिल रहा है अथवा मायके में दुःख मिल रहा हैं अथवा क्या तुम्हारा पति परदेश गया है, क्योंकि कराल धूप से भरी दोपहरी में ही कुँआ से पानी भरने तुम्हारा सुन्दर शरीर आया है।

इसके उत्तर में वह ललना कहती है कि न तो मुझे सास से कोई दुःख है और न ही ससुर से ही कोई दुःख है। न तो मायके में कोई दुख है और न ही मेरा पति परदेश गया है, फिर भी मैं इस भरी दोपहरी में पानी भरने के लिए निकल आयी हूँ। उसकी सुन्दरता के सम्मान में घुड़सवार कहता है कि इतनी सुन्दरी नारी को यदि मैं पा जाता तो अपनी जंघा में बैठा लेता और पान के बीड़ों से स्वागत करता तथा आँखों में ही रखता अर्थात् अपने सामने ही रखता। इस बात का सुन्दरी स्त्री में प्रभाव नहीं पड़ता और पर पुरूष के इस प्रस्ताव का वह प्रतिरोध कर बैठती है और कहती है कि यदि मैं आप जैसे राजा को पा जाती तो उसे नौकर रख लेती और अपने हरि अर्थात् पति के पैर के जूते उससे लदवाती। यह सुनकर वह घुड़सवार पूछने लगता है कि हे सुन्दरी! तुम कहाँ बैठती हो और कहाँ उठती हो और कहाँ सोती हो; बता दो मैं वहीं आ जाऊँगा। इसके उत्तर में कहती है– ओसार अर्थात् घर के भीतरी हिस्से की चौपाल जहाँ प्रायः औरतें ही बैठती और अपने समय बिताती हैं। उसी ओसार में मैं उठती हूँ मंझोटा अर्थात् घर में प्रवेश करने पर मध्य या बीच में स्थित कमरे में मैं बैठती हूँ। रंगमहल अर्थात् शयनागार में मैं सोती हूँ। अब तुम वहाँ किस प्रकार से आ सकोगे, वहाँ तो नौ सौ दीपक जलते रहते हैं, पहरेदार लगे रहते हैं। छोटा देवर ही मेरा चौकीदार रहता है, तब तुम वहाँ किस प्रकार से आ सकोगे। घुड़सवार कहता है कि नौ सौ जलते दीपक बुझा दूँगा, सौ पहरेदारों को सुला दूँगा और हे प्रियतमें! तुम्हारा पहरेदार तो मेरा छोटा भाई है, उसे ही साथ लेकर मैं आ जाऊँगा।

गीत में स्त्री का पति ही घुड़सवारी करता है और राजपूत बनकर प्रीति परीक्षा के भाव से प्रश्नोत्तर करता है और पत्नी के वार्तालाप का आनन्द लेता रहता है। जब वह उसके देवर को अपना भाई बताता है, तब सारा रहस्य खुल जाता है। यद्यपि गीत में स्पष्ट नहीं है, परन्तु लगता है रेवांचल की नई–नवेली औरत जो घूंघट के अन्दर ही सब काम करती है। वेश बदलकर अपने ही पति को न पहचानती हुई अथवा सहेतु पहचानती हुई उसके प्रश्नों का रसपूर्ण उत्तर दे देती है। इससे दाम्पत्य की दृढ़ता, सरसता, प्रेम की एकनिष्ठता का प्रभाव ज्ञापित हो जाता है।

भमरा त चले हां विदेश का त धनियां से अरूझि करइं हो
धना कहां–कहां नेउता नेवत हम नेउतब हो
सासु के नेउते तूं मइके ननद जी के ससुरे हो
स्वामी एक ना तूं नेवते वीरन भइया जिनहिं पर रूठिउं हो
सासु के आईं हां मइके ननद जी के ससुरे हो
अब एक नहीं आए वीरन भइया जिनहि पर रूठेउं हो
अंगना त भरिगा गोतिन मां चौपरिया ननदि जी के हो
मोरे लेखे पराहइ उदास वीरन नहिं आएं हो
ननदी अब तुम न धरा छठिया–छठिया हम न पूजब, वीरन नहिं आए हो
लीले–लीले घोड़ा हिंहिनाने बखरी झुहनाने हो
अब दुलहिन देई का नथ फहराने वीरन भइया आएं हो
चलहु उठहु तुम ननदी छठिया तुम धरहु हो
स्वामी आए वीरन जी हमार छठिआ हम पूजब हो
कहंवा धराई सासु ढूंढा पीड़ा चुनरी दहादह हो
कहंवा बैठाई वीरन भइया चमर बेनियां घुमड़इ हो
अंगने धरावा बहुआ ढूंढा पीड़ा चुनरी दहादह हो
अब चौपरिया बैठावा वीरन भइया चमर बेनिया घुमड़इ हो

सौभाग्यवती को पुत्र हुआ है, उसके पति (भौरा) बाहर जाने को तैयार हुए और पत्नी से उलझते हैं कि मैं कहाँ–कहाँ निमंत्रण दूँ। पत्नी कहती है कि मेरी सासू के मायके अर्थात् ननिहाल में निमंत्रण देना और ननद जी के ससुराल में निमंत्रण दे देना। मैं अपने वीरन भाई से नाराज हूँ, उन्हें नेउता मत देना। सास के मायके से सब आ गए, ननद के ससुराल से सब आ गए, परन्तु भइया नहीं आए, जिन पर मैं रूठी हूँ। आँगन गोत्र के लोगों से भर गया, परन्तु मुझे सब उदासी ही है, क्योंकि भाई नहीं आए। ननद जी छठी मत बनाओ, मैं छठी नहीं पूजूँगी। इतने मे नीले–नीले रंग के घोड़ों के

हिनहिनाने (बोलने) की आवाज होने लगती है। पूरी बखरी अर्थात् चारों ओर बना हुआ घर झूलने लगता है या फहराने लगता है। कहती है– ननद जी चलो, उठो छठी बना दो, स्वामी जी (पति के लिए) हमारे भाई आ गए, अब हम छठी की पूजा करेंगें। सासू जी मायके का ढूँढा पीड़ा कहाँ रखवाऊँ, चुनरी चमक रही है, भाई को कहाँ बैठाएँ, बेनमा (व्यजन) और चमर घुमड़ रहें है, अर्थात् अधिकतर चल रहे हैं। सास ने कहा–बहू आँगन में पौष्टिक लड्डू रखवाओ, चुनरी रखवाओ, चौपाल में भाई को बैठाओ, चंवर चलवाओ।

यह गीत भाई–बहन के प्रेम का परिचायक है। वह निमंत्रण नहीं देने का कहती है, परन्तु बिना भाई के छठी नहीं पूजना चाहती है, उदास रहती है, भाई के आते ही षष्ठी में सब अनुकूल हो जाता है।

आधे ओसरबा में गोती बइठइं आधे मां गोतिनि बइठइं हो
मोरी छठिया रतुल नहीं होइ त एक ननद बिन हो
अरे–अरे लहुरा देवरबा मैं तोरी पइयां लागउं हो देवरा हो
घोड़वा पीठ असवार होउ त ननदी बोलाइ लावा हो
आई हंइ ननदि गोसाईं तू गौरी ठकुराइनि हो
ननदी हाली बेगि बइठा गजओवरी तुम छठी लिखहु हो
एक छठी लिखइं अंगन मां त दूसर ओसरबउ हो
अब तिसर लिखइं गजओवरी चउथ बहू अंचरे हो
अंगनमां कइ देखइं सब गोतिया ओसरबा कइ गोतिनिउ हो
अब गजओवरी क देखइं पिया साहब अंचरबा कइ होरिल हो

छठी के दिन गोती (गोत्र के लोग) और गोतिने (गोत्र की स्त्रियाँ) आधे–आधे ओसार अर्थात् आँगन की अन्तःपुर की चौपाल में बैठते हैं, परन्तु सद्यः प्रसवा को ननद के बिना छठी का रस या रंग उत्साह अच्छा नहीं लगता है। वह छोटे देवर को पाँव पड़कर कहती है कि घोड़े में चढ़कर जायें और ननद को बुलाकर ले आयें। ननद आ गयी है, उसे गौर वर्ण की ठकुराइन या मालकिन कहते हुए छठी का अंकन करने को निवेदन करती है। उसे अटारी में शीघ्र जाकर छठी लिखने हेतु आग्रह करती है। चार स्थलों पर छठी लिखने का अनुरोध करती है। पहली आँगन में, दूसरी ओसार में, तीसरी अटारी में और चौथी बहू के आंचल में। आँगन की छठी गोत्रजनों के लिए, ओसारे की गोत्र स्त्रियों के लिए, अटारी की प्रियतम पति के लिए और आंचल की छठी बेटा के देखने के लिए होगी।

षष्ठी की पूजा से शिशु की भौतिक एवं रहस्यमय बाधाएँ दूर होती हैं, अस्तु उसकी पूजा होती है। यह पूजा सूतक में ही होती है, क्योंकि यह छठे दिन मनाई जाती है। पुत्रोत्सव के नान्दीमुख श्राद्ध और जातकर्म संस्कार के बाद का पहला उत्सव होता है। तमाम धूम–धड़ाकों, गीतों–वाद्यों के साथ यह उत्सव मनाया जाता है।

को मोरे चदरा बेसाहै औ गउआ दुहावै हो
को मोरे खिरिया बनावै ललन के पशनिया हो
बाबा मोरे चादर बेसाहै औ गउआ दुहावै हो
आजी रानी खीर बनावैं ललन के पसनिया हो
को रे ललन बहलावै त को रे बइठावै हो
अब को मोरी खिरिया चिखावै ललन के पसनिया हो
बाबा जी ललन बहलावै त जांघि बइठावै हो
आजी रानी खीर चिखावैं त ललन के पसनिया हो

अन्नप्राशन संस्कार को पशनी के नाम से रेवांचल में जाना जाता है। घर में आयोजन पूर्वक खीर बनायी जाती है। देव पूजा होती है। इष्टमित्रों का भोजन होता है। इसमें पितामह अपनी गोदी में बालक को बैठाता है और दादी पहली बार पोता/पोती को खीर खिलाती है। इसमें भी लोकरागिनियाँ छिड़ती हैं और सोहरगीत गाये जाते हैं। यह खीर चावल का होता है। गीत पूछता है कि मेरे बेटे की पशनी में कौन चावल खरीदता है और कौन गायों से दूध दुहवाता है, फिर कौन खीर बनाता है? क्योंकि आज बेटे की पशनी है। उत्तर है कि बाबा जी चावल खरीदते हैं और वही गायों से दूध दुहवाते हैं और दादी जी खीर बनाती हैं। इस प्रकार पृच्छा है कि ललन अर्थात् बेटे को कौन बहलाता फुसलाता है और कौन बैठाता है और कौन खीर का स्पर्श कराता है। इस दिन बाबा या दादाजी बेटे को गोद में बैठाते हैं और बहलाते भी हैं। दादी जी बेटे को खीर मुँह में छुआती हैं, खिलाती हैं या चिखाती हैं इस प्रकार बेटे की पशनी हो जाती है।

'अन्नं वै ब्रह्म' 'अन्नं वै प्राणाः' अन्नं जनार्दनो देवो अन्नो भोक्ता जनार्दनः' इत्यादि कथनों सें निष्पन्न होता है कि जीवन में अन्न की महती भूमिका रहती है। पहली बार नवजात शिशु को खिलाया जाता है– उसमें दूध, मिठास और अक्षत का पाक बनाते है। गोदुग्ध के अन्यगुणों के बाद भी वह गोवंश का– गौ संस्कृति का प्रतीक है, पोषक है। अक्षत भी धरती का मान जीवन के लिये अक्षय अक्षत अवदान है, उसमें मिली हुई मिठास है खीर या पायस बनती है। पायसान्न से भोजनारंभ जीवन में भारतीय संस्कृति

के प्रतीक भारतीय नागरिक के जीवन को प्रेषित करें और मिठास बनाए रखें, यही भाव है।

छापक पेड़ छिउलिया त पतवन झापक हो
अरे रामा तेंहि तरी ठाढ़ी हिरनिया त मन अति अनमन हो
चरतइ चरत हरिनमां त हरिनी सें पूंछइ हों
हरिनी की तोर चरहा झुरान कि पानी बिन मुरझान हो
ना मोरा चरहा झुरान ना पानी बिन मुरझान हो
आज है रामा कै पसनिया ता तोही मारि डरिहइं हो
छोड़ा अजुधिया के राज नन्दन बन चलहु हो
भला बउरानी हरिनिया तोही को बउराइसि हो
मोरे रामा कै आज पसनिया त कइसे के भागउं हो
मासु केरि रचिही जेउनारि त खाल साधु देइही हो

छिउला अर्थात् पलाश का घने पत्तों वाला घनी छांह वाला पेड़ था, जिसके नीचे हरिणी उदास मन सें खड़ी थी। घास चरते हुए हरिण ने हरिणी से पूछा कि तुम्हारा चारागाह सूख गया क्या? अथवा पानी के बिना सूखने लगा है, परन्तु वह कहती है कि नहीं, न तो पानी के बिना सूखा है और न ही सूखा पड़ा है, बल्कि आज राम की पशनी है तो तुम्हे मार डालेंगे, अस्तु अयोध्या के राज्य को छोड़कर नन्दनवन चलो, जहाँ वध नहीं होंगे। हरिण समझाता है कि हरिणी तू भला पागल हो गयी है। आज हमारे राम की पशनी है, तब कैसे भागूं। मेरे माँस का भोजन बनेगा और खाल साधुओं को मृगछाला के रूप में दे देंगे ।

इस गीत में अयोध्या और राम का नाम लेकर अन्नप्राशन में माँस भोजन का प्रसंग लाकर न जाने किस लोक परम्परा का रक्षण किया गया है अथवा प्रतीक रूप में यह सब हुआ हैं। अन्नप्राशन षोडश संस्कारों में से एक है, उसमें मांस भोजन की परम्परा का उल्लेख असंगत लगता है, खीर से अन्नप्राशन की परम्परा की बात तो सारे रीवांचल में प्रचलित है, परन्तु यह गान अपने तरह का अलग ही है। हरिणी को दिया गया हरिण का उत्तर राष्ट्र भक्ति–स्वामि भक्ति का निरूपण करता है। वह अपने प्राण को संकट में जानकर भी भागना नहीं चाहता है। वह परोपकार के लिए मरना चाहता है। उसका माँस भोजन में लगेगा तथा इसकी मृगक्षाला साधु–सन्त ले लेंगे और उसमें पूजा उपासना करेंगे। इस प्रकार यह गीत जहाँ। मांस भोजन की लोकरीति को कहता है, वहीं विकृति का संदेश भी देता है परन्तु उत्तरार्द्ध में एक पशु के समर्पण का उदात्त

आदर्श भी प्रस्तुत करता है। लगता है राम एक बालक का, शिशु का प्रतीक है और अयोध्या उस क्षेत्र का प्रतीक हैं जहाँ पुत्रजन्म होता है। हरिणी–हरिण संवाद पशुओं की सांस्कृतिक कृतज्ञता और देशभक्ति का निदर्शक है। हरिणी की चिन्ता को भी हरिण अपने समर्पण के माध्यम से अनदेखा कर देता है।

मचिअइ बइठी हइ कौशिल्या रानी त हरिनी अरज करइ हो
रानी मसुआ त सीझइ रोसइया खलरिया हमही देतिउ हो
पेंड़वा से टंगतिउं खलरिया त हेरि फेरि देखतिउं हो
रानी मन समुझउंतिउं जनक हरिना जिअतइ हो
जाहु हरिनी घर अपने खलरिया न देवइ हो
हरिनी खलरी के मढ़उबइ खंजरिया त रामा मोर खेलइं हो
जब–जब बाजइ खंजरिया सबद सुनि अनकइ हो
हरिनी ठाढ़ी ढकुलिया के खाले त हरिना बिसूरइ हो

कौशल्या रानी आसन में बैठी हैं और हरिणी जाकर प्रार्थना करने लगती है कि रानी मेरे हरिण की मांस तो रसोई में पक रही है, परन्तु उसकी चमड़ी हमें दे दो। मैं उसे एक पेड़ पर लटका दूँगी और बराबर देखती रहूँगी, अपने मन को मैं समझा लेती कि मानो हरिण अभी जीवित ही है। कौशल्या ने कहा कि हरिणी तुम अपने घर चली जाओ, मैं खलरी, चमड़ी या मृगछाला नहीं दूँगी, क्योंकि उसी चमड़े की मैं खंजरी मढ़वा लूँगी और उसी से मेरे राम खेलेंगे। जब–जब वह खंजरी बजती है, तब–तब वह हरिणी आवाज सुनकर अनकती है, सुनने का प्रयास करती है। वह हरिणी ढेकुलिया ढेकुल वाले स्थान के नीचे खड़ी होकर अपने हरिण को बराबर देखने लगती है।

हरिण दाम्पत्य का आदर्श उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है। वह हरिणी कौशल्या जी से अपने हरिण की माँस नहीं, चमड़ा माँगती है परन्तु वह भी नहीं मिलता है। उसकी डफली बना ली जाती है, जिसे राम जी खेलते है, पर जब भी चमड़ी पीटकर बजाई जाती है, तब–तब वह हरिणी अनकती है, सुनने का उद्योग करती है, सुनना चाहती है।

सत्ताधीशों के हाथ में उनके बालकों के खेलने के लिए न जाने कितने पशुओं का जोड़ा टूट–फूट जाये, उन्हें अपने बालक का सुख चाहिए। पशुओं की माताएँ अपने स्नेह, आसक्ति और आकर्षण की आए दिन बलि देती रहती हैं। जब–जब कोई खंजरी बजती है, कोई ढोल बजता है, कोई चर्म निर्मित वाद्य बजता है, उसके पीछे कोई हरिण मरता है। कोई बकरा मरता है। न जाने कितनी हरिणियों और बकरियों की प्रीति, आसक्ति और समर्पण का अकाल अन्त हो जाता है। उनकी बिछुड़न की टीस, आह,

चीत्कार जितना भी चाहो शब्दों–ध्वनियों और तालों को जन्म देती है। न जाने कितनी राग–रागिनियाँ इनके सहारे अपने आकार को आयाम भी देती है और जनरंजन भी करती हैं।

धन्य–धन्य अयोध्या नगरी ता धन्य है राजा दशरथ हो
अब धन्य है कौशल्या तेरी गोद रमइया जनम लिहिनि हो
कहवां जनमें हैं राम कहन उठि सोहर हो
अब केखर घर बजत है बधइया कउन गावैं मंगल हो
रामा के संकरी भंवरिया बहुत नीक लागै हो
अब मुंहिया कमल जैसे सोहै भंवर जैसे गुंजइ हो
रामा के बड़ी बड़ी अंखियां काजल भल सोहइ हो
अब रामा के लुटुरी झलरिया बहुत नीक लागै हो

यह गीत राम के लिए, घर के भावी उत्तराधिकारी के लिए गाया गया है। अयोध्या नगरी धन्य हो गयी, राजा दशरथ भी धन्य हो गये, साथ ही कौशल्या की गोद भी धन्य हो गयी, क्योंकि इसमें राम का जन्म हुआ है। फिर प्रश्न होता है कि कहाँ राम का जन्म हुआ कहाँ सोहर गायी जाने लगी है? किसके घर में बधाई बजायी गयी है और कौन मंगल गीत का गान कर रहा है। श्रीराम की बालों की भंवरी छोटी–छोटी है, जो बहुत अच्छी लग रही हैं, गूंथने से कमल के समान अच्छी लग रही हैं। भौरों के समान गुनगुनाहट कर रही है। बड़ी आँखें श्रीराम जी की है, उनमें काजल सुन्दर लग रहा है, उनकी लुटुरी मुड़ी झालरें बहुत अच्छी लग रही हैं।

गीत झालर पर, उसके आकार पर, उसकी सजावट पर और उसके सौन्दर्य पर आकर रूक जाता है। इस सोहर गान को झालर मुड़वाने के समय पर गाये जाने की रीति क्षेत्र में आज भी प्रचलित है।

मोरि झालरि उरझइ मोरि झालरि सुरझइ मोर मुंह झांपइ झलरिया हो
दुअरा मां बइठे हैं बाबा फलाने राम नतिया अरज करै हो
मोरी झालरि माथे मां आवइ अंखियां छपामइ त झलरिया जग्य करा हो
घर मां न चाउर घरे मां न दार कइसे के झलरिया जग्ग करामंइ हो
आवइ दे वसन्त बहार त अनाज घर आई तब झलरिया जग्य कराउब हो
नतिया खांडिन गोहुंआ पिसाउब मइदा झेलबाउब हो
नाती नेउतब सब परिवार झलरिया जग्य रोपब हो।

दादा से पोता आग्रह करता है कि मेरी झालरि (सिर की जटाएँ) कभी उलझती है, कभी सुलझती है और कभी–कभी मुँह ढांक देती है। घर के बाहर के द्वार में बैठे हुए दादा जी से कहता है कि मेरी बढ़ी हुई केशराशि ललाट में आ जाती है, आँखों को ढंक देती है, हमारे बालों का यज्ञ कर दो। दादा जी कहते है कि तुम्हारे झालर के लिए यज्ञ करने में भोजन कराना पड़ेगा, अभी घर में न चावल है न ही दाल है, किस प्रकार से यह यज्ञ करा पाऊँगा। बेटा बसंत की बहारें आने दो, अन्न घर में आ जायेगा। बेटा खांडी भर अर्थात् क्विंटलों गेहूँ पिसाएँगे और मैंदा बनवा देंगे, सारे परिवार का निमंत्रण कर देंगे और तुम्हारे मुण्डन संस्कार का यज्ञ करा देंगे।

मुण्डन तीन वर्ष में होता है, तब तक बालक बोलने लगता है और वह दादा जी के पास जाकर सभी बातें भी करने लगता है। उसे भी अपने मुण्डन की अपेक्षा हो जाती है और वह इसे यज्ञ की संज्ञा देता है। गाँव–गाँव में सोत्साह मुण्डन और इस उपलक्ष्य में भोजन की परम्परा आज भी है। यही लोक है जो बालक के जन्म से लेकर होने वाले विविध संस्कारों के माध्यम से परिवार और सम्बन्धियों को बुलाता खिलाता–पिलाता रहता है, और धीरे–धीरे बालक भी अपने कुल परिवार की परम्पराओं में दीक्षित हो जाता है।

कहंवा उपजी है बेलियां त कहंवा चमेलियउ हो
त कहंवा उपजी है झलरिया–झलरिया बड़ी सुन्दर हो
खोरी मां उपजी है बेलिया त अंगना मां चमेलियउ हो
अब माया के उपजी झलरिया–झलरिया बड़ी सुन्दर हो
काहेन मां टोरेउं बेलिया त काहेन मां चमेलियउ हो
अब काहेन मां टोरेउं झलरिया–झलरिया बड़ी सुन्दर हो
डलिया मां टोरउं बेलिया औ सुपवा मां चमेलियउ हो
अब अंचला मां टोरउं झलरिया–झलरिया बड़ी सुन्दर हो

यह गीत भी प्रश्न से ही शुरू होता है। बेल अर्थात् लता और चमेली कहाँ पैदा हुई है और झालर (केशराशि) कहाँ से पैदा हुई, वह बड़ी ही सुन्दर लग रही है। खोरि अर्थात् गली में बेल पैदा हुई, आंगन में चमेली पैदा हुई, माँ के कारण झालर पैदा हुई है जो कि बहुत सुन्दर लग रही है। बेल को किस पात्र में तोडूँ, किस में चमेली तोडूँ तथा किसमें झालर को तोडूँ, क्योंकि यह झालर बड़ी ही सुन्दर लग रही हैं। टोकनी में बेल तोड़ लूँगी और सूप में चमेली तोड़ लूँगी और आंचल में झालर तोड़ लूँगी। यह झालर बहुत सुन्दर लग रही है।

जउन झलरिया आजी सेवइं ककइया लग झारइं हो
उहइ झलरिया नउआ मूंडइ ऊपर से नेग मांगइं हो
जइसइ समनमां के मेघवा उमहि जल बरसइ हो
ओइसइ मोरी आजी उमहइ उमहि नेग बरसइ हो

जिस झालर को दादी जी ने अभी तक तेल लगा–लगाकर बढ़ाया था। ककई–कंघी लेकर सुलझाया था, वही नाई आज मुण्डन किए दे रहा है और इसमें भी वह नेग मांगता है। जैसे सावन में मेघ उमड़कर पानी की बरसात करता है, उसी प्रकार दादी जी उमड़ कर नेग की वर्षा करती जा रही है।

जलभरौ रेशम की डोरि मोरी गोइयां।
रेशम की डोरि तबै नीक लागै, जब पातरि धनिया होय मोरी गोइयां।
पातरि धनिया तब नीक लागै, जब गोदी ललनमा होय मोरी गोइयां।
गोदी मे ललना तब नीक लागै जब लाला के फूफू होय, मोरी गोइयां।
काशी के मूंडन जब नीक लागै जब हांथे मां लोई होय, मोरी गोइयां।
हांथे के लोई तब नीक लागै जब लोई मां मोहर होय, मोरी गुइया।

यद्यपि इसी भाव का एक गीत कुँआ पूजने के समय गाया जाता है। परन्तु यह गीत मुण्डन के समय का है। रेशम की डोरी से पानी भर लूँगी। रेशम की डोरी तभी अच्छी लगेगी, जब पत्नी या बहू पतली होगी। दुबली पतली बहू की शोभा तभी बढ़ेगी, जब उसकी गोद में बेटा होगा। गोद में बेटा तभी अच्छा लगेगा, जब उसके बुआ (फूफू) होगी। परन्तु बेटे का मुण्डन काशी में होना तभी अच्छा लगेगा, जब हाथ मे लोई रखी गयी हो। परन्तु यह हाथ की लोई तभी अच्छी लगेगी, जब उसमें मोहर अर्थात् मुद्रा रखी हो। स्वर्णमुद्रा ही रेवांचल में मोहर कही जाती है।

छोटइ पेड़ कदम केर पतवन झापक हो
अब ओहीं तरि ठाढ़ी कौशल्या रानी इन्द्र मनावइं हो
इन्द्रकजली के बन जिन बरसे भीजइं रे
मोरे तीनउ जन भीजइं रे मोरे चारिउ जन हो।
केकरि भींजथी मटुकिया, केकरे सिर चन्दन हो
अब केकरि भींजथी चुनरिया, केकरे सिर झालरि हो
रामा के भींजथी मटुकिया लखन सिर चन्दन हो
अब सीता के भींजथी चुनरिया ललन सिर झालरि हो।

कदम्ब का एक छोटा सा पेड़ है, उसमें पत्तों की बहुलता से घना हो गया है। उसी के नीचे कौशल्याजी खड़ी हैं और इन्द्र से प्रार्थना कर रही हैं। हे इन्द्र! मेरे तीनों–चारों लोग कजली वन में गए है, इसलिए आप कजलीवन में वर्षा मत करना। गीत पुनः कहता है कि किसका मुकुट भींगने लगा है और किसके सिर का चन्दन भींगने लगा है, किसकी चुनरी भींग रही है और किसके सिर की झालरें भींग रही हैं। गीत में उत्तर छिपा है कि श्रीराम जी का मुकुट भींग रहा है, लक्ष्मण के सिर का चन्दन भींग रहा है और सीता की चुनरी भींग रही है। बेटे के सिर की झालर अर्थात् मुण्डन के पूर्व की केशराशि भींग रही है।

इस प्रकार गीत के द्वारा ध्यान केन्द्रित किया जाता है कि सिर की झालर केवल बच्चे की भीग रही है, अतः उसका मुण्डन संस्कार अपेक्षित है।

हंकरहु नगर के नउबा हंकरि बेगि आवहु हो
नउबा गढ़ि लाबा सोने के छुरबा करहु जग्गि मूंड़न हो
केकरि चुटकी खियानी चन्दनमां के रगड़त हो
अब केकरि मोती लर टूटई झलरिया के परछत हो
फूफा कइ चुटकी खियानी चन्दनमां के रगड़त हो
फूफू कइ मोती लर टूटी झलरिया के परछत हो
कउने सोमइया के होरिलवा त झलरी मंडरामइं हो
कउने फुफुउना झलरी उठामइं चउना लगामइं हो
झलरिया मंड़रामइ झलरिया सुरझामइं हों।
का पाएन झलरिया के पछोरत झलरिया के मंड़रावत हो
सोनेन के पाएन माला और अंगुठिया रूपेन के पाएन चुरबउ हो

गाँव–नगर के नाई को शीघ्र बुलाकर लाइए। नाऊ जी सोने का छूरा बनाकर लाओ, जिससे मुण्डन यज्ञ कर सको। चन्दन के रगड़ते, घिसते हुए किसकी चुटकी घिस गयी है, किसके मोती की लड़ें झालर से उलझकर टूट जाती हैं। फूफा की चुटकी चन्दन घिसते–घिसते घिस जाती है और फूफू की मोती की लड़ें झालरि के उलझने से टूट जाती हैं, अर्थात् बाल बड़े–बड़े हो गए हैं। कौन सी माता के बेटा है, जो झालर इधर–उधर मटका रहे हैं और कौन फूफू है जो झलरी उठा रही है और सिर में चाव या हल्दी लगा रही है। झालरि मंडराते अर्थात् फैलाते और समेटते हुए क्या पाया। सोने की माला और सोने की अंगूठी मिली, साथ ही चाँदी का चूड़ा या चुरबा भी मिल गया है।

मुण्डन संस्कार में फूफू पहली बार बालों को सम्हालती है, मुण्डन के बाद बड़े बालों को समेटती है, उन्हें रखती है। बालक के सिर पर हल्दी–चन्दन लेपती है और यह सब करने के बहाने उसे नेग दिया जाता है। इस गीत में इसी प्रक्रिया का वर्णन है। बड़ी हुई झालरों में उलझ कर टूटने वाले हारों की कथा कोई नवीन नहीं है। इस गीत में भी सोने की माला, अंगूठी, चाँदी का पैरों का चूड़ा दिए जाने का विवरण मिलता है।

केकरि अंगुरी खियानी चन्दनवा के रगड़त हो
अब केकरि मोती लर टूटी झलरिया के रोचत हो।
बाबू जी कै अंगुरी खियानी चन्दनवां के रगड़त हो।
अब बुआ केर मोती लर टूटी झलरिया के रोपत हो।
चाचा जी के अंगुरी खियानी चन्दनवां के रगड़त हो।
अब फूफू केर मोती लर टूटी झलरिया के रोपत हो।
भइया के अंगुरी खियानी चन्दनमां के रगड़त हो।
अब फूफू केर मोती लर टूटी झलरिया के रोपत हो।

यह गीत भी चन्दन रगड़ने के प्रश्न से आरम्भ होता है। चन्दन को रगड़ते–रगड़ते किसकी उंगली घिस गयी है, तथा बढ़े हुए बालों (झालर) को रोचते हुए किसकी मोती की लड़ें टूट गई हैं। पिता जी की उंगली चन्दन के रगड़ते–रगड़ते घिस गयी और बुआ जी की मोती की लड़े झालर के रोपते–रोपते टूटने लगी। चाचा भी चन्दन घिसते रहे। उंगली घिस गयी, फूफू की मोती के लड़े टूटी। इसी प्रकार भाई की उंगली घिसती रही। पिता, चाचा और भइया की उंगलिया चन्दन लगाने के लिए घिसते–घिसते घिस जाती हैं, परन्तु लड़ तो बुआजी की ही टूटती है। झालरि रोपने अर्थात् मुण्डन के बालों को समेटने–सहेजने का काम तो बुआ का ही है।

मोरे लालन के लुटुरी झलरिया बहुत नीक लागइ हो
गुहि देउं कमल अइसी पंखुड़ी भमर अइसी गुंजइ हो
ललना के छोटी–छोटी गोड़ली नेवरिया भल सोहइ हो
धरइं ठमकिअन पांव नेवरिया छन्नक बोलइ हो
मोरे ललना के बड़ी–बड़ी अंखियां काजल भरि सोहइं हो
आंजइ लागी फूफू सुभद्रा अंगुरिया नहिं डोलइ छिंगुरिया नहि डोलइ हो
मोरे ललना कइ छोटी–छोटी हंथुलिया चुरइया भल सोहइ हो

मुण्डन संस्कार में गाए जाने वाले सोहर गीतों में झालर और उसके मुंडने की प्रक्रिया का ही विशेष कर उल्लेख होता है। माँ गाती है कि मेरे बेटे की लुटुरी अर्थात्

गोल–गोल मुड़े हुए बालों वाली झालर बहुत अच्छी लग रही है, उसे मैं कमल की पंखुड़ी जैसे गूंथ देती हूँ। बेटा चलने लगा है, अतः उसके छोटे–छोटे पैरों में बंधा हुआ रूनझुन करने वाला आभूषण नेवरी सुन्दर लग रहा है। ठुमक कर पैर रखते हैं तो नेवरी छनछन बोलती है। बड़ी–बड़ी आँखों वाला बेटा है, उसकी आँखों में काजल अच्छा लग रहा है, लालन के काजल सुभद्रा फूफू आंजने लगती है, तो उंगली तक नहीं डोलती है, बेटे के छोटे–छोटे हाथ हैं, जिनमें पहना हुआ चूड़ा भी सुन्दर लग रहा है।

इस गीत में न केवल झालर बल्कि बेटे की आँखें काजल से युक्त हाथ चूड़े से सजे और पैर भी गहने से विभूषित वर्णन किए गए हैं।

ललना कइ लुटुरी झलरिया बहुत नींक लागइ हो
लाला गुहे हंइ कमल अइसे फूल भमर अइसे गुंजइ हो
ललना कइ बड़ी–बड़ी अंखियां काजल भला सोहइ हो
अब आँजइ लागी फूफू फलानी अंगुरिया नहि डोलइ हो
ललना चलत ठुमुकिअन चाल दूनउ जने देखवइ हो
ललना कै छोटी हंथुली छड़िया (चुरइया) भला सोहइ हो
ललना चलत मुधुरियन चाल दूनउ जन देखबइ हो
ललना के छोटे छोटे पांउ पैजनियां भला सोहइ हो
लाला चलत छुमुकिअन चाल दूनउ हो जने देखब हो
ललना की छोटी–छोटी पिडुली नेवरिया भलि सोहइ हो
अब धरइं ठुमुकिअन पांव नेबरिया छन्नक बोलइ हो
अब बपबा क देखि बिदुरायं दुतुलिया नीक लागइं हो

मुण्डन योग्य बालक के सौन्दर्य का ही वर्णन इस गीत में है, यह पहले से अधिक गीत है। इसमें गोल–गोल घुमावदार बालों को लुटुरे हुए बाल कहा जाता है। बालक के बाल वैसे ही हैं, वे बहुत सुन्दर लग रहे हैं, उन्हें कमल के फूलों जैसे गूंथ दिया है तो वे भौरों जैसे गूंजने लगे है। लालन की बड़ी–बड़ी आँखों में काजल अच्छा लगता है। जब बुआ काजल का अंजन लगाती है, तो अंगुली हिलती डुलती नहीं है। ठुमुक–ठुमुक कर जब बेटा चलता है, तब माँ–बाप दोनों लोग देखेंगे। छोटे–छोटे हाथों में बेटे के छड़ी या चूड़ों की शोभा बढ़ रही है। वह मधुरी चाल अर्थात् धीरे–धीरे चाल चलता है, तब माँ–पिता देखते हैं। छोटे–छोटे पैरों में पैजनिया सुन्दर लगती है, जब छुमुक–छुमुक चलता है, तो हम दोनों जन देखेंगे। बेटे की पिंडुली भी अभी छोटी–छोटी है। उसमें नेवरिया नामक गहना पहना दिया है जैसे ही ठुमक पर पाँव रखता है, वैसे ही

छन–छन की आवाज आती है। बेटा पिताजी को देखता है, मुस्कुराता है, तब दिखने वाले दाँत बहुत सुन्दर लगते हैं।

झलरिया मोरी उलुरू झलरिया मोरी झुलुरू हो
झलरिया सिर झुकइं लिलार अंगन मोरे झालर बिरवा हो
सभवा मां बइठे है बाबा फलाने राम गोदी बइठे नतिया अरज करइं हो
बब्बा झलरिया मोरी उलुरू झलरिया मोरी झुलुरू झलरिया सिर झुकइ लिलार हो
नतिया से बब्बा अरज सुनावइ लाग हो
सुना भइया आवइ देहु बसन्त बहार झलरिया हम देवइ मुड़ाय हो
फुफुआ जो अइहंइ मोहर पांच देवइ (2) झलरिया सिर देवइ मुड़ाय
सभवा मां बइठे है पितवा फलाने राम गोदी बइठे बेटा अरज करै लाग झलरिया.
पिता जी मोरी झलरी मुड़ाइ देउ हो
बेटा से पिता जी अरज करैं आवइ देउ बेटा वसन्त बहार (2) झलरिया ....
फुफुआ जो अइहंइ करणफूल देवइ हो, झलरी सिर देवइ मुड़ाइ
सभवा मां बैठे हैं काका फलाने राम ,बेटा अरज करै लाग झलरिया (3) हो
कक्का झलरी मोरी देहु मुड़ाय बेटा से कक्का अरज करै लाग सुना हो बेटा
बात हमार बेटा आवइ देउ बसन्त बहार झलरिया मुड़ाइ देवइ हो
फुफुआ जो अइहंइ जहर देइ देवइ, झलरिया सिर देवइ मुड़ाय

यह गीत भी मुण्डन का चित्र प्रकट करता है। बेटा दादा से कहता है– मेरी झालर उलर रही है, वह झुलुरू अर्थात् झूल रही है, वे तो झुककर ललाट को ढंक लेती हैं। मेरे आंगन में तो झालर का पेड़ है। सभा में दादा जी बैठे है, उनकी गोद में पोता बैठा है, वही कह रहा है मेरी झालर ऐसी हो गयी है। उड़ती है, झूलती है, झुकती है, ललाट को ढंकती है। पोते को दादा ने समझाया– बेटा वसन्त तो आने दो, मैं मुण्डन करा दूँगा, तुम्हारी बुआ आएगी उसे पांच मोहर दूँगा और मुण्डन करा दूँगा। इसी प्रकार पिता से आग्रह किया, वे भी कहते हैं– वसन्त में बुआ को करनफूल देकर मुण्डन करा दूँगा। फिर काका से भी आग्रह करता है वे भी वही वसन्त में मुंडन की बात कहते हैं। परन्तु फूफू को जहर देने की बात गीत में मिलती है। संभवतः बेटे से उपहास के लिए ऐसा कहा गया है। गाए जाने वाले क्षेत्र में गीतों के विश्लेषण के विषय में प्रायः सब मौन रहते हैं। ये भी श्रुति परम्परा से मिलते हैं, जिसमें न तो अर्थचिन्तन की परम्परा है और न ही गीतों के अर्थ के विषय में कभी सोचा जाता है। यही इनकी परम्परा है।

हँसि–हँसि पूंछइं फलाने राम
फूफू कउने गहनमां कै साधि झलरिया नेउछावरि हो
रांगा पीतल पहिरइ बानिनि और कलवारिनि हो
बेटा पिअर मोहरबा कइ साधि झलरिया नेउछावरि हो
हंसि बोलि पूंछइं उनहि राम
फूफू कउने कपड़वा कै साधि झलरिया नेउछावरिहो
लाल पीली पहिनइं बानिनि और कलवारिनि हो
सेत कपड़वा के साधि झलरिया नेउछावरि हो
हँसि बोलि कहइं फलानेराम फुफुआ सब हम देवइ हो
झलरिया नेउछावरि झलरिया नेउछावरि हो।

यह गीत केवल बुआ के नेग पर ही केन्द्रित है। हँसते हुए बेटा पूछता है– बुआ, झालर की नेवछावरि में कौन से गहना लेने की इच्छा है। बुआ कहती है– रांगा, पीतल, बनिया, कलार लोगों के पहनने के लिए होता है। मुझे तो बेटा पीली मोहर (स्वर्णमुद्रा) की नेवछावर में इच्छा है। फिर हँसकर पूछा कि बुआ जी कपड़े में क्या चाहती है, तो बुआ ने कहा– बेटा लाल पीला कपड़ा तो कलारिनें पहनती हैं, मुझे तो सफेद कपड़े की इच्छा है कि झालर में नेवछावरि यही मिले। तब बेटा हँसकर बोलता है कि फूफूजी मैं सब कुछ दूँगा, झालर की नेवछावरि में यही दूँगा।

इस गीत से मुण्डन में बुआ को मुँह मांगा नेग प्राप्त कर लेने की बात मिलती हैं।

गोरेन मुख केरि धनिया बिरह अति व्याकुल हो
पिया कहिगे तै चार महिनबा लउटि नहिं आए हो
अचरा के बनबा कागदबा नैन मसिआनी हो
अब लहुरा देवरबा कयथवा चिठिआ लिखि पठवा हो
फूल लीन्हे रोबइ मलिनिया पान बरइनि ढेरिया हो
अब गर धरे रोवइ पतुरिया कहां चलि दीन्हे हो
हम जाबइ अपने तो देशबा मनाए नहिं मनबइ हो
अब आई है धना कै हमरे चिठिया लउटाए नहिं लौटब हो
बरहे बरिस पिया बहुरे बरा तरी उतरे हो
अब पूंछइ लागे घरबा के भेद धना मोरी कहां गई हो
माया त दउरी पानी लइके बहिनी पीढ़ा लइके हो

अब धना दिहे बजुर केमार बोलाए नहिं बोलइ हो
पूत तोरी धनिया न मारेन न मारि के निकारेन हो
उआ त घर भितरे किमार बोलाए नहिं बोलइ हो
हंकरा नगर केर सोनरा हंकरि बेगिआबा हो
सोनरा गढ़ि लावा सोने रूपे गहना धना क मनाई हो
सास ससुर के लगनिया खेलइं पलंगरिया हो
लाला देखतइ भरइ किलकारी भवन सुख बरसइ हो
ललना के लुटुरी झलरिया आंखिनि भई मछरियाहो
पलंगरिया म उठत हिलोर भवन सुख बरसइहो

यह गीत भी अन्ततः मुण्डन के लिए ही परिणत होता है। गोरे–गोरे मुँह की बहू है, वह विरह से बहुत व्याकुल हो रही है, उसे दुःख है कि उसके प्रियतम ने चार महीने में आने के लिए कहा था, परंतु अभी तक लौटे नहीं है। आँचल को कागज बनाकर आँख को स्याही बना लें और छोटे देवर को चिट्ठी लिखने वाला कायस्थ (मुंशी जी) बनाकर चिट्ठी लिखा दो और पति को भेज दो। यह चिट्ठी जब उसे मिलती है, तबका वर्णन गीत में मिलता है कि मालिनि फूल लिए ही रोने लगती हैं। पान लिए हुए बरई की लड़की रोने लगती है, गला पकड़े हुए। गले लगकर गणिका (वेश्या) रोने लगती है और सब कहने लगती है कि आप कहाँ चले जा रहे हो। पति कहता है कि मैं तो अब अपने देश जाऊँगा, मनाने से मना करने से भी नहीं मानूँगा। हमारी प्रिया की चिट्ठी आ गयी है, अब मैं लौटाने पर भी नहीं लौटूँगा। इस प्रकार बारह वर्ष बीतने पर पति लौटकर आए और बरगद के नीचे आ गए। अपने घर का हाल पूछने लगते है कि मेरी पत्नी कहाँ गयी है। माता पीने का पानी लेकर दौड़ती है और बहन बैठने का पीढ़ा लेकर दौड़ पड़ती है। परंतु उसकी पत्नी वज्र सा दरवाजा लगा लेती है और बोलाने पर भी नहीं बोल रही है। माँ कहती है कि बेटा तुम्हारी प्रिया को न तो मारा न ही मार कर घर से निकाला है, वह तो घर के भीतर है। कमरे में किवाड़ लगाकर अन्दर है। बोलाने से भी नहीं बोल रही है। गाँव के सोनार को बुलाता है और कहता है कि सोनार तुम गहना गढ़कर लाओ, जिससे हम पत्नी मना लें, समझा लें, अनुकूल कर लें। वह देखता है कि सास और ससुर की प्रीति से कुछ दिन में बालक पलंग में खेल रहा है, बेटा देखते ही किलकारी भरने लगता है। घर में सुख की वर्षा होने लगती है। जल्दी ही बेटे की लुटुरी हुई झालरि हुई और आँखों तक मछली बन गयी। पलंग मे हिलोर उठने लगती है और घर में सुख बरसने लगता है।

यह गीत विरह वेदना, पत्र लेखन, पुनः पति का आना, पत्नी को मनाना, सास–ससुर की इच्छा से पुत्र का होना, पलंग में खेलना और झालरि आंखों तक आना क्रमशः वर्णन कर दिया है, जिससे घर में सुख की बरसात होने लगी है।

को मोरे जांघि बैठावइ त छेदन करावइ हो
को मोरे खरचइ दाम ललन केर छेदन हो
बाबा उनके जांघ बैठावइ त छेदन करावइं हो
आजी रानी खरचइं दाम त मोतिया पोहावइं हो
घरइ सोनरवा के हांथ छेदनमां करावइं हो
बाबा उनके सुजिया गढ़ावइं त मोतिया पोहावैं हो
आजी रानी टकवा उतारइं सोनरवा का देवइं हो

मनुष्यता की प्राप्ति के लिये 'नवैताः कर्णवेधान्ताः' अर्थात् कर्णवेध पर्यन्त नौ संस्कार किए जाते हैं। रेवांचल में कर्णवेध को कनछेदन के नाम से उल्लेख किया गया है। गीत इसी प्रश्न में शुरू हो जाता है कि बेटे का कर्णवेध कौन अपनी गोद में बैठाकर कराएगा, इसमे कौन खर्च करेगा? उत्तर में है कि इनके बाबा या दादा गोद में बैठायेंगे और कर्णवेध या कनछेदन कराएँगे। दादी खर्च करेंगी और मोती गुंथा कर्णभूषण पहनाएँगी। सोनार का हाथ पकड़कर छेदन कराएगी और दादीजी सूची बनवाकर मोती गुंथाकर पहनाएँगी। दादी टका अर्थात् पैसे को उतारकर नेवछावर करके सोनार को दान करेंगी।

को धौं सगरा खनावइं ता घाट बधावइं हो
केखे लगे हंइ कहार केहिआ नहवावइं हो
राजा दशरथ सगरा खनावइं त घाट बंधावइं हो
कौशल्या के लगे हंइ कहार रमइया नहवावइं हो
घर–घर फिरति नउनिया त गोतिनी बुलावइं हो
चलहु–चलहु सब सखिया रमइया जी के नहछू हो
कोउ डारै चुटकी मुदरिया त कोउ डारै आखत हो
कोउ डारै सकल पदारथ त भरि–भरि सूपन हो
माया डारइं चुटकी मुदरिया त सखी डारैं आखत हो
फूफू डारइं सकल पदारथ भरि–भरि सूपन हो

यह सोहर गीत नहछू के समय गाया जाता है। नहछू संभवतः नखच्छेद से बना होगा। सूतक जनम लेने का दस दिनों में समाप्त हो जाता है, उस दिन बालक को भी

स्नान करा देना, प्रसूता को स्नान तथा नखच्छेदन आदि कार्य होते है। गीत समुद्र खोदवाने से शुरू होता है। कौन सागर या समुद्र जो कि तालाब या बावड़ी का उपलक्षण लगता है, खोदवाता है, किसके कहार लगे हुए हैं और किसे स्नान कराते हैं। दशरथ राजा ने जलाशय बनवाया और घाट बंधवाया, कौशल्या के लगे हुए कहारों ने बालक श्रीराम को स्नान करवाया। घर–घर घूमती हुई नाइन गोत्रस्त्रियों को बुलाती है कि आज रामजी का नहछू है, सब लोग चलिए। कोई मुदरी या अंगूठी डालती है, कोई सूप में भरकर अनेकविध सामग्री डालती है, परन्तु गीत में स्पष्ट होता है कि माता अंगूठी डालती है, सखियाँ अक्षत डालती हैं, फूफू सूप मे भरकर सारे पदार्थ एक साथ ही डाल देती है।

गोतिने छठी में, बरहों मे, बरूआ में, विवाह में अनेक बार आती है। मंगल गीत गाती है, नहा कटाती हैं, महावर रचाती है और अक्षत या आखत आदि देती हैं।

कहवां है तुलसी तोर नैहर कहंवइ सासुर हो
तुलसी कउने बिरउना तर उपजिउ तउभजउ नरायन हो
गोकुल मां मोरा नइहर मथुरइ मां सासुर हो
रानी चंदन बिरउना तरी उपजिउं त भजउं नरायन हो
जो मै जनतिउ तुलसी सबतिया मोरी होबू हो
तुलसी झोटा धइ तोंहरी उखरतिउं त जमुनइ बहउतिउं हो
झोटा धरि मोरी उखरतिउं त जमुनइ बहउतिउं हो
रानी होइ जातिउं मै जल कै मछरिया जलइ बीच रहतिउं हो
रामजी जातें नहनवा चरन छुइ लेतिउं हो
जो मै जनतिउं तुलसिया सबति मोरी होबू हो
तुलसी झोटा धरि तोंहरी उखरतिउं त भरबा झोंकउतिउं हो
झोंटा धरि मोरी उखरतिउं त भरवा झोंकउतिउं हो
रानी होइ जातिउं ढुरहुर मोतिया राम गले लगतिउं हो
जे यह मंगल गावइं त गाइके सुनावै हो।
सुनायेउ केर फल पावइं हो।।

यह अद्‌भुत गीत सोहर गान होकर भी मंगल गान है। तुलसी को सपत्नी मानकर यह गीत है। कोई ललना पूँछती है कि तुलसी तुम्हारा मायका कहाँ है? ससुराल कहाँ है? तुलसी तुम कहाँ पैदा हुई? किस पेड़ के नीचे पैदा हुई कि नारायण का इस प्रकार भजन पूजन करने लगी हो। वह कहती है कि मेरा मायका गोकुल में

है, ससुराल मथुरा में है—चन्दन के पेड़ के नीचे पैदा हुई हूँ और नारायण की पूजा कर रही हूँ। संभवतः तुलसी की ऐसी भक्ति कि वह पति के सिर पर पत्ती बनकर चढ़ती है, उनके भक्तों के गले में माला बनी रहती है, हर घर आंगन में रहती है, पूजती है, पूजाती है, आरती दीपक कराती है और लोकस्त्रियों की पतियों पर ऐसी स्थिति नहीं होती है। यदि तुम सौत होती, ऐसा जानती तो तुम्हारा झोटा या बालों को पकड़कर उखाड़ लेती और यमुना जी में बहा देती तो मैं मछली बन जाती और पानी में ही रही आती, जब रामजी नहाने को जाते तो उनके पैर छू लेती। फिर कहती है कि झोंटा या चोटी उखाड़कर भार में भट्टी में डाल देती तब तुलसी ने कहा कि यदि मुझे आग में डाल देती तो में पानीदार मोती हो जाती और रामजी के गले का हार बनकर लग जाती। यह मंगलगान जो गाते हैं, गाकर सुनाते हैं, वे भी सुनाने का भी फल पा जाते हैं।

पतिव्रता का स्वरूप भी प्रकट हो रहा है और उसका परिणाम भी प्राप्त हो रहा है।

सोहर दादरा

सारे रेवांचल क्षेत्र में पुत्रोत्सव के प्रसंग में गाये जाने वाला मुख्य गीत सोहर है, परन्तु उसी प्रसंग के भावों को लेकर छोटे–छोटे गीतों की रचना भी मिलती है, जिन्हें कभी ननद को लेकर, कभी बच्चे की सुन्दरता को लेकर, कभी नवजात शिशु के विविध प्रसंगों को लेकर और कभी–कभी तो राम–कृष्ण के नाम से चरित्र से अंकित विषयों को लेकर दादरा ताल में छः मात्रा के ताल में गीत गाए जाते हैं। कभी–कभी उत्साह पूर्वक उसी प्रकार के गीतों के धुन, थाप पर नृत्य भी किए जाते हैं।

सोहर गीत जहाँ ज्यादा पारंपरिक हैं, इन्हें लोकगीत गायन में निष्णात महिलाएँ ही गा सकती हैं। वहीं सोहर दादरा या 'सोहर ददरा' के गीतों को सामान्य स्त्रियाँ–बच्चियाँ भी गाने में सुविधा सरलता का अनुभव करती है। ननद और भाभी के नोंक–झोक इन गीतों में भी सदा सुरक्षित रहता है। नेग मांगना लेना–देना आदि भी इन गीतों का सहज विषय रहता है। सोहर गान में तो ढोलक बजाना बहुत सरल भले न हो, परन्तु इन गीतों में ढोलकें सजती हैं और सारा घर आँगन शिशु लीला, शिशु जीवन, शिशु प्रकृति एवं ननद भाभी के व्यवहारों, नेगों, मन्नतों में गीत बनकर झनझना उठता है। ऐसा लगता है कि स़द्यः प्रसूता की सारी प्रसववेदना इन गीतों, उल्लासों में भूल जाती है। उसके माँ बनने का सारा उत्साह गीतों की धुनों थिरकनों में घुल जाता है। और उसे याद रहता है– बेटा, कुलांकुर अपना सुरक्षित भविष्य जीवन भर की मन्नतें, आकांक्षाएँ, अपेक्षाएं और विवाह का परमपुण्य फल सन्तान सुख या लोक का प्रतिस्पन्द इन्हीं गीतों में गुनगुनाता रहता है। उमंग उड़ेलती रहती है, उत्साह बढ़ता रहता है और कालिदास आदि कवियों की 'धन्यास्तदृरजसा मलिनीभवन्ति' प्रवर्तितो दीप इव प्रदीपात्'

आदि सत्यापित हो जाते है। दो गोत्र, दो शरीर, दो भाव, दो विचार, दो संस्कृति वस्तुतः आज ही एक हो जाती है। पुत्र में दोनों की आनन्दग्रन्थि अनुक्षण एकत्व का संदेश देती रहती है। दम्पतियों का स्नेह जब पुत्र बनकर प्रकट होता है। तब सारा घर–आँगन, परिवार–परिसर, गोती–भाई, सजन–स्वजन बधाई देने आते हैं, परन्तु कुलवन्ती सुहागिनें सोहर ददरा में अपना आनन्द प्रकटती हैं, बांटती हैं, बढ़ाती है, और आत्मविभोर भी होती हैं।

हमरे हुए नन्दलाल हो चली आना ननन्दिया।
पैदल न आना ननंदी गाड़ी से आना, गाड़ी के आगे लारी, लारी के आगे बाजा,
बाजा के आगे साजन–साजन के आगे चली आना ननन्दिया। हमरे.................
लकड़ी का पलना न लाना ननंदिया चन्दन के
हमरे रिवाज हो चली आना ननंदिया, हमरे...
पीतल का गहना न लाना ननन्दिया सोने का हमरे रिवाज हो, चली..............
खादी का कपडा न लाना ननंदिया रेशम का हमरे रिवाज हो, चली..............
लड़का और बच्चा न लाना ननंदिया हमरा तोरा व्यवहार हो, चली................
लेनी औ देनी की आशा न करना खाली मेरा व्यवहार हो, चली...................

कोई भाभी गीत में ननद को आने का न्योता देती है कि हमारे यहाँ नन्दलाल पैदा हो गए है, ननदजी चली आना। परन्तु पैदल न आते हुए गाड़ी से आना और गाड़ी के आगे लारी लाना, लारी के आगे बाजा लाना, बाजा के आगे साजन और साजन के आगे–आगे स्वयं ननद जी चली आना। पलना लकड़ी का नहीं ले आना, क्योंकि हमारे यहाँ तो चन्दन के पालने की परम्परा है। इसी प्रकार जब आना तब गहने लाना, परन्तु पीतल के गहने मत लाना। हमारे यहाँ सोने के गहने लाने की परम्परा है। कपड़ा भी खादी का मत लाना हमारे यहाँ रेशम के कपड़े लाने का नियम हैं। लड़का बच्चा मत लाना, हमारा और तुम्हारा ही व्यवहार रहेगा। लेन–देन की आशा भी नहीं करना, मेरा व्यवहार ही पर्याप्त रहेगा।?

यह गीत ननद को चिढ़ाने के लिए बना है। बेटे की सूचना भी है और ननद को सब लाने की सूचना दे देकर चिढ़ाया भी गया है। यह वह सुख की घड़ी है, जब ननद को मायके में मान–सम्मान से पूछा बुलाया जाता हैं। उसे नेग दिया जाता है और वह मायके की इस दृष्टि से, कुल के अंकुर की प्राप्ति से स्वयं आनन्द विभोर होती है। नेग भी लाती है, नेग भी लेती है। यही तो भारत वर्ष की संस्कृति की उदात्तता है कि नेगों के बहाने, घर–परिवार संबंध सब एक रहता है, परस्पर संगठित रहता है। सुख–दुःख में सहभागी बना रहता है। पारिवारिक दृढता, सम्बन्धों की मजबूती इन्हीं अवसरों, प्रसंगों, नेगों–रिवाजों से बढ़ती है। इसी को हास्य व्यंग्य में यह गीत प्रकट कर रहा है।

ननद मोरी आ गई लेके बधइया।
पहली बधइया बागबिच बाजइ बाबू के जिया कहराने। जिया मोरी आ गई।
दूसरी बधइया दुआरे बीच बाजइ भइया के जिया कहराने। बहिन मोरी...........
तिसरी बधइया ओसारे बीच बाजइ माया के जिया कहराने। धिया मोरी..........
चउथी बधइया आंगन बीच बाजइ भाभी के जियरा डेराने। ननद मोरी.............
पांचवी बधइया एं गलियन मां बाजइ सखियन के जिया हुलसाने। सखी.....

यह गीत भी बधाई के रूप में है। भाभी कहती है कि मेरी ननद बधाई लेकर आ गयी। पहली बधाई मैं बगीचों बजवा दी, जिसे सुनकर पिताजी का अन्तर्मन कहर उठा, उल्लास से भर गया। फिर दूसरी बार यही बधाई घर के दरवाजे पर बजाई गई, जिसे सुनकर भाई का अन्तर्मन प्रफुल्लित हो गया। तीसरी बार यह बधाई अन्तःपुरीय चौपाल में बजी, जिसे माँ ने सुना और उसका भी मन उत्कण्ठा से भर गया। यह बधाई चौथी बार आँगन से बजायी जाती है, जिसे सुनकर भाभी का अन्तर्मन बहुत खुश होने लगता है। फिर पाँचवी बार यह बधाई गलियों में बजती है और सुन–सुनकर सखियों के मन में उल्लास भर जाता है।

भाभी की ससुराल ही तो ननद का मायका होता है। बेटे का जन्म हर भारतीय घर में आनन्द उल्लास की बरसात कर देता है। बधाई बाजे–गाजे से गीत नाद से होती है। बगीचों में घर के मुखिया रहते हैं, घर के बाहरी द्वार पर भाई रहता है, घर के आँगन के अन्तःपुर में बहिरंग भाग में माँ रहती है, आँगन में भाभी मिलती है और गलियों–गलियों में सखी–सहेलियाँ रहती है। यह बधाई का वाद्य घरों–आँगनों, गली कूचों, बाग–बगीचों में बजता हुआ सर्वत्र पुत्रोत्सव की सूचना भी देता है। मंगलानुशंसा भी करता है। विदा होकर दूसरे परिवार में जाने वाली बेटी अपने मायके से जुड़ी है, वह उल्लास में उत्साहपूर्वक नाचते–गाते भाई के पुत्रोत्सव पर आकर संबंध को और सुदृढ़ करने का मानो उपक्रम करती है, यही भारतीय परिवारों का वैशिष्ट्य है।

कंगना मांगइ ननदी लाल की बधाई।
ये तों कंगना मोरे मइके से लाई रूपैया ले लो ननदी लाल की बधाई।
ये तों रूपया मोरे ससुर की कमाई अठन्नी लेलो ननदी लाल की बधाई।
ये तों अठन्नी मोरे जेठ की कमाई चवन्नी लेलो ननदी लाल की बधाई।
ये तों चवन्नी मोरे देवर की कमाई दो अन्नी लेलो ननदी लाल की बधाई।
ये तों दुअन्नी मोरे राजा की कमाई इकन्नी लेलो ननदी लाल की बधाई।
ये तों इकन्नी है मोरी कमाई कुतक्का (ठेंगा) लेलो ननदी लाल की बधाई।
यो है ठेंगा मेरी खुद की कमाई दुइ डण्डा लैले ननदी लाल की बधाई।।

बधाई लेकर आयी हुई ननद का नेग होता है। कभी वह माँगती है और कभी उसे बिन माँगे भी मिल जाता है। परन्तु नेग माँगने पर मिलना एक रोमांचकारी–उत्साहदायी स्मृति है। इस गीत में ननद नेग मांगती है, परन्तु भौजाई उसे मसखरी करती हुई नकारती रहती है।

मेरे बेटे की बधाई में ननद कंगन माँग रही है। पर यह कंगन मैं अपने मायके से लाई हूँ, इसलिए ननदजी रुपया ही बधाई का नेग ले लो। फिर बताती है कि यह मेरे ससुर जी की कमाई का कंगन है अतः आठ आने ही नेग ले लो। परन्तु अठन्नी में जेठ की कमाई संपत्ति है, अतः चवन्नी (चार आना) ही नेग ले लो। फिर कहती है कि ये चवन्नी भी मेरे देवर की कमाई है। इसलिए ननद जी दो आना (दुअन्नी) ही ले लो नेग में। परन्तु कहने लगी कि मेरे पति की कमाई दो आने (दुअन्नी) है, इससे इकन्नी ही नेग लेलो। फिर कहा कि यह इकन्नी मेरी कमाई है, इससे अब तो ठेंगा ही ले लो। फिर बोली ये ठेंगा भी मेरी स्वयं की कमाई है, अतः दो डण्डा ही लाला की बधाई में नेग के रूप में ले लो ।

इस प्रकार कंगन तो दूर रहा, भाभी उसे कुछ भी नहीं देने का कहती है। इस गीत में ननद भाभी का हास्य व्यंग्य प्रतिफलित हो रहा है। ननद भाभी से कंगन का नेग माँगती है, परन्तु वह नकारती है। ननद के माता पिता भाई सबको वह सास–ससुर, देवर और पति कहकर अपना लेती है और कहती है कि यह सब उनकी कमाई है, मैं नहीं दूँगी। ये सब ननद के ही थे, पर भाभी के आने पर पराए हो गए। क्या वह कन्या दान के बाद ममता की भेंट चढ़ गयी। यह नेग ही तो उसे जोड़कर रखता है, परन्तु भाभी इसी का आनन्द ले रही है।

आई हाय ननंदी मांगइ सोने का कंगना।
बाहर से आवें ससुर समझावें, दे दो बहूरानी सोनेन का कंगना। हाय ननदी....
बाहर से आवें जेठ समझावें, दे दो बहूरानी सोनेन का कंगना। हाय ननदी......
बाहर से आवें देवर समझावें, दे दो बहूरानी सोनेन का कंगना। हाय ननदी.....
बाहर से आवें पड़ोसिन समझावें, दे दो बहूरानी सोनेन का कंगना। हाय ननदी.
कंगना उतारि आंगन मां फेको ले, जाओ ननद रानी सोने का कंगना। हाय ननदी.
जुग–जुग जिऐं मोरा वीरना भतीजवा, बार–बार आवइ तोरे अंगना। हाय ननदी.

यह गीत इस प्रकार भी प्रचलित है –

मांगै ननद बाई कंगना मचली मोरे अंगना।
आंगन में ठाढ़े ससुर समझावै, दे दो बहूरानी कंगना। मचली........ मांगै........
आंगन में ठाढ़े जेठ समझावै, दे दो बहूरानी कंगना। मचली........ मांगै........
आंगन में ठाढ़े देवर समझावै, दे दो भाभी रानी कंगना। मचली........ मांगै.....
पलंगा मां बइठे पिया समझावै, दे दो धना मोरी कंगना। मचली........ मांगै....
कंगन उतारि भाभी अंगना मां फेंकिन, ले लो ननंद रानी कंगना। मचली...... मांगै.
कंगना उठाइ ननदी हांथों में पहिना, जुग–जुग जियै मोरा ललना। मंचली ..मांगै.

यह गीत भी ननद के कंगन माँगने और भाभी के न देने के बीच बढ़ता रहता है। भाभी को भी गहने से बहुत मोह है। वह कहती है कि ननद रानी मचल रही हैं और सोने का कंगन माँग रही हैं। ससुर, जेठ, देवर, पति, पडोसी सब ने बहू को समझाया कि सोने का कंगन बेटे के उत्सव में ननद को दे दो। गुस्से में आकर भाभी कंगन उतार लेती है और आँगन में फेंक देती है; कहती है कि ननद जी कँगन ले लो। ननद वह कंगन पहन लेती है और कहती है– मेरा भाई भतीजा युगों–युगों तक जीता रहे। आँगन में देवर, जेठ, ससुर ने समझाया, परन्तु जब पलंग में बैठकर पति ने भी समझाया, तब रूठती हुई जननी सद्यः प्रसवा ने कंगन फेंककर दे दिया। यहाँ यह समझ में आता है कि माँ बनने का सुख तो है ही परन्तु कंगन के प्रति भी ममत्व कम नहीं है। अस्तु वह कंगन नहीं देना चाहती है। जब उसे घर के सभी लोग पुत्रोत्सव के प्रसंग में ननद का मांगा हुआ कंगन देने को कहते हैं, तब वह अनिच्छा से कंगन फेंकती हैं।

ले लूंगी भाभी कंगना लालन के हुए में।
कंगना–कंगना क्या कहती ननदी मैके का है मेरो कंगना, मैं कंगन न दूंगी। लालन.
जब तक भाभी कंगना न दोगी मैं छूने न दूंगी ललना। लालन......................
ललना ललना क्या कहती री ननंदी मै छूने न दूंगी पलना। लालन................
द्वार से आए भइया समझावैं दे दो रानी बहन को कंगना। लालन.........

लोक जीवन में समाज एवं परिवार बसता है। परिवार की संजीदगी, अभिवृद्धि, उल्लास, सक्रियता बनी रहे, यही लोक की अपेक्षा रहती है। घर व्यक्तियों से नहीं उनके परस्पर संबंधों से गतिशील रहता है। इसमें महती भूमिका स्त्री जाति की ही रहती है। वह दो घरों के बीच की सेतु बनती है। वह बहन–बेटी किसी घर की रहती है और बहू–सास दूसरे घर में हो जाती है। उसका मातृत्व तो घर निष्पादन में अहम् भूमिका स्पष्ट ही करता है। ननद ने भाभी के बेटा होने पर अपना नेग कंगन माँग लिया। वहीं भाभी कहती है कि मैं कंगन नहीं दूँगी। वह कहती है कि यह कंगन मेरे

मायके का है, नहीं दूँगी। ननद ने कहा कि जब तक कंगना नहीं दोगी, तब तक मैं लालन (बेटा) को छूने नहीं दूँगी। तब उसने कहा कि ननद जी तुम लालन की क्या बात कहती हूँ, मैं तुम्हें पलना भी नहीं छूने दूँगी, जिसमें लालन पड़ा रहता है। इसी समय भाई बाहर से आ जाते हैं, वह पत्नी को समझाता है कि बहन को कंगना दे दो। बहन का हठ कंगन लेने का ही तो बना।

यहाँ गीत द्वारा भाई–बहन के उदात्त सम्बन्ध को ननद भाभी के नेग या लेन–देन के माध्यम से जीवन्त रखने का यत्न किया जाता है।

ए जी आ गयी ननंदिया हमार पिया जी मोरे नहीं घर में।
सासु जो आवें चेरूआ चढ़ावें मांगै अपना नेग (2)
सासू दै देवइ नथुनी तुम्हार पिया जी मोरे नहीं घर में। ए जी आ........
जेठी जो आवै लड्डू बंधावैं मांगै अपना नेग (2)
जेठी दै देवइ झुमकी तुम्हार पिया जी मोरे नहीं घर में।। ए जी आ...........
छोटी जो आवैं थाली सजावै मांगइं अपना नेग। (2)
छोटी दै देवइ हरवा तुम्हार पिया मोरे नहीं घर में ।। ए जी आ...................
ननदी जो आवैं सोवरी पुतावै मांगै अपना नेग (2)
ननदी दै देवइ चुनरी उतारि पिया मोरे नहीं घर मे।। ए जी आ ....

यह गीत भी पुत्रोत्सव में जच्चा द्वारा अनेक प्रकार के नेगों की भरमार की स्थिति का वर्णन किया गया है। बहू कहती है कि– अरे! मेरी ननद तो आ गयी है, पर मेरे घर में पति ही नहीं हैं। सास जी चरूआ बनाने आएगी, अपना नेग मागेंगी। पर मेरे तो पति ही घर में नहीं है। हे सासुजी! मैं तुम्हारे नेग में नथुनी दे दूँगी, परन्तु अभी पति बाहर है। जेठानी जी लड्डू बंधवाने आएँगी और नेग मांगती हैं उसे भी कहती है कि जेठानी जी मैं तुम्हारे नेग में झुमकी दे दूँगी, पर अभी तो पति घर में नहीं हैं। देवरानी भी थाली सजाकर खाना देने को आएँगी। उसका नेग मांगेंगी, उसे भी मैं हार उतार कर तो दे दूँगी। परन्तु प्रियतम अभी घर पर नहीं है। सोवर अर्थात् प्रसूति गृह की पुताई करने को ननदजी आएँगी और अपना नेग मांगेगी, ननद को भी चुनरी उतार कर दे दूँगी, परन्तु अभी तो मेरे पति ही घर पर नहीं है।

बेटा होने पर बहू से सास, ननद, जेठानी, देवरानी सब कुछ न कुछ नेग लेना चाहती हैं। पति घर पर नहीं होने की बात कहकर बहू सास को नथुनी, जेठानी को झुमका, देवरानी को गले का हार और ननद को चुनरी देने का वायदा कर लेती है। इस प्रकार घर में पुत्रोत्सव में पारिवारिक दान उत्साह–उल्लास का वातावरण निर्माण करता है।

अंगनमां मां खेलइ राजा मेरो ललना। अगनमां...............
सास जो आई पिपरी पीसन को वही बेदीं राजा वही बेंदी सास रानी को देना।
जेठी जो आई लडुआ बांधन को वही झूमक राजा वही झूमक जेठी रानी को देना।
लहुरी जो आई बेलुई रांधन को वही हरवा
राजा वही हरवा लहुरी रानी को देना। अगनमां..........
ननदी जो आई छठिया धरन को वही कंगना
राजा वही कंगना ननदी रानी को देना। अगनमां......

यह गीत भी बेटे के जन्म के बाद उत्सव के रूप में आरंभ होता है। पत्नी–पति से कहती है कि– हे राजा जी! आँगन में मेरा प्यारा ललना अर्थात् बेटा खेल रहा है और यदि सास जी पीपर पीसने को आएँगी तो बेंदी उन्हें दे देना। यदि लड्डू बांधने को जेठानी जी आएँगी तो उन्हें झुमका दे देना। देवरानी भी बेलुई अर्थात् हल्दी–भात बनाकर खिलाने आएगी तो उसे हार दे देना। ननद रानी छठी रखने को आएँगी तो उसे भी कंगन दे देना।

प्रायः ये सभी गीत मिलते–जुलते ही रहते है। लोक धुनों में आंशिक परिवर्तन के साथ इन्हें गाया जाता है। बहू को सौभाग्य देने वाली, पति देने वाली उसकी सास होती है और उसकी वही उत्तराधिकारिणी होती है। अतः उससे सौमनस्य रखने के लिए सास को नेग निश्चित किया जाता है। बहू की जेठानी उसे निर्देश देने या कुल रीतियों परम्पराओं का अनुवर्तन करने के लिए होती है, उसके साथ ही गृहस्थी को आगे चलाना होता है, इसके लिए भी झुमका का नेग दिए जाने की बात गीत में मिलती है। सास पीपर पीसती है तो जेठानी लड्डू बंधाती है। रसोई में भात हल्दी के साथ तैयार करके देवरानी देती है और वह बहू के साथ सदा रहकर घर के कामों में हाथ बंटाती है। अतः उसका भी नेग द्वार के रूप में निश्चित कर दिया गया है। अब घर–घर में ननद जो कि इसी घर की होती है, परन्तु विवाह के बाद दूसरे घर में गयी है, उसका भी नेग होता है, जिससे दोनों घर जुड़ें रहे, परस्पर विकास की चिन्ता करते रहें, अतः उसे भी कंगना का नेग दिया गया है।

अंगनमां मां खेलइं गोरी तेरो ललना।
सासु जो अइहंइ पिपरी पीसन को सासुरानी को देना राजा वही बेंदी।
जेठी जो अइहै लड्डू बांधन को जेठी रानी को देना राजा वही कुण्डल।।
छोटी जो अइहै बिलुई रांधन को छोटी रानी को देना यही गजरें।
ननदी जो अइहंइ छठिया धरन को ननदी रानी को देना वही कंगना।।

इस प्रकार का गीत भी मिलता है, जिससे थोड़ा परिवर्तन है, कथ्य सब वही है। इसमें पति–पत्नी से कहता है कि– हे गौर वर्णी! तुम्हारा बेटा आँगन में खेल रहा है। अब वह कहता है कि सास, जेठानी, देवरानी और तुम्हारी ननद आएंगी तो उन्हें नेग देना। पूर्व के गीत में प्रसूता ने पति को यही बात कही थी। ये गीत श्रुति परम्परा या वाचिक परम्परा के होते हैं, अतः इस प्रकार के शब्दान्तर, पदान्तर या कहीं–कहीं वाक्यान्तर भी प्राप्त हो ही जाते हैं।

विवाह का आनन्द उत्सव दो व्यक्तियों के मिलन का या द्वैत के अद्वैत होने का तो होता ही हैं, वह स्नेह के अनुबन्ध की तीव्रता का क्रमिक विकास होता है। वह 'अद्वैतं सुख दुःखयोः' होकर भी सर्वावस्था में एकरस होता है। यह वासना का नहीं पवित्र काम का हेतु होता है। 'धर्माविरूद्ध काम' की स्थिति दम्पतियों के स्नेहाश्रय की परिणति आनन्द ग्रंथि के रूप में होती है। वही सन्तति होकर मातृ एवं पितृ दोनों कुलों का पोषण, तोषण एवं प्रकाशन भी करती है। यहाँ अनेक परिवारों के जागतिक संबंधों की परिणति में एक परिवार बनता है, गृह संस्कृति बनती है। सासु की जन्मभूमि किसी दूसरे घर की होती है, जेठानी का जन्म परिवार भी दूसरा घर होता है, देवरानी का जन्म परिवार कोई तीसरा घर होता है। ननद का विवाहित परिवार कोई चौथा घर होता है और जब यह बेटा अर्थात् एक दम्पति के स्नेह का प्रतीक या स्वरूप प्रकट होता है, तब ये चारों घर और इन चारों घरों का सहभाव, स्नेहभाव, वर्धिष्णु भाव और मंगल भाव एकाकार हो जाता है, तब किसी बेटे का जन्मोत्सव सफल होता है।

गुलाब जैसन फूल हमें राम दिहे ललना।
सोवरी पोतन कहं ननद रानी अइहै, नजर लगि जई हो राम दिहे ललना।
पिपरी पीसन कहं सास रानी अइहै नजर लगि जैहैं राम दिहे ललना। गुलाब..
पीड़ा बांधन कहं जेठीरानी अइहै नजर लगि जैहैं राम दिहे ललना। गुलाब.......
बिलुई बंधन कहं देवरानी मोरी अइहै नजर लगि जइहैं राम दिहे ललना। गुलाब

स्त्री जब जननी या माँ बनती है, तब उसकी एक ओर उदारता बढ़ जाती है, दूसरी ओर अपने बालक के प्रति उसकी स्वास्थ्य चिन्ता भी बढ़ जाती है। गीत माँ की भावना को प्रकट करता है कि गुलाब के फूल के समान ही बेटा हमें मिला है, जो भी इस उत्सव में सक्रिय सहभागिता करेंगे, उन्हें बालक दिखाने से कहीं नजर न लग जाए। नजर लगने की पीड़ा से वह इतनी भयग्रस्त है कि परिवार के लोगों पर भी उसे वही शंका की भावना है। कहती है सोवर अर्थात् प्रसूति गृह की पुताई करने ननद जी आएँगी, कहीं उनकी नजर बेटे को न लग जाय। पीपर पीसने के लिए सास रानी

आएँगी और गुलाब के फूल जैसे बेटे को नजर लग जायेगी। जेठानी जी भी पीड़ा (लड्डू) बांधने के लिए आएंगी, तब भी नजर लग जायेगी। हल्दी भात बनाने के लिए मेरी देवरानी आएगी, उसकी नजर लग जायेगी।

इस गीत में माँ की ममता इस प्रकार बढ़ी हुई है कि वह घर के लोगों को बच्चे देखने पर नजर लग जाने की बातें करने लगती है। छोटे–छोटे बच्चों को गाँवों में उनकी माताएँ इसी भय से राई–नमक उतार कर आग में डालती रहती हैं, जिससे नजर लगने का संकट समाप्त हो जाता है।

लालन घुनघुनमां नहि खेलै न जाने नजर किसकी लगी है।
सासू जी आई ओऊं खेलाइ गयीं बाहर से कोई नहीं आई। न जाने ......लालन.
जेठी जी आई ओऊं खेलाइ गयीं बाहर से कोई नहीं आई। न जाने ......लालन.
लहुरी जो आई ओऊं खेलाइ गयीं बाहर से कोई नहीं आई। न जाने ......लालन.
ननंदी जो आई ओऊं खेलाइ गयीं बाहर से कोई नहीं आई। न जाने ......लालन.

यह गीत भी सद्यः प्रसूता की पुत्रमोह से उत्पन्न शंका में बन गया है। उसका बेटा आज घुनघुना नहीं खेल रहा है, अस्तु उसे लगने लगा है कि उसे नजर लग गई है। दीठ या डींठ लग गयी है, दृष्टि दोष हो गया है। यह भी कहती है कि घर से बाहर का कोई व्यक्ति नहीं आया है। परन्तु सास जी आईं थी, बेटे को खिलाकर गयी है, जेठानी जी आयी थी, वे भी खिलाकर गयी हैं, देवरानी भी आकर बच्चे को खिलाकर गयी है तथा ननद भी बेटे को खिलाकर यहाँ से गयी है। सभी घर के ही लोग थे बाहरी कोई नहीं आया है। परन्तु बच्चे का आज घुनघुना नहीं खेलना किसी की नजर लग जाने का ही कारण हो गया। गीत में माँ की अन्तर्वेदना पुत्र के प्रति प्रकट हुई है। माँ अपने बेटे के न खेलने पर दुःख से भर जाती है और उसके अनेक कारण खोजने और सोचने लगती है। उसके वात्सल्य की; ममत्व की; पतली डोर सदा भयभीत रहती है कि बेटा कहीं या अस्वस्थ न हो जाए।

रात काहे रोए ललनमां सकारे घुनघुनमां मंगउबै।
ससुरे मां होतिउं सासू से कहतिउं अम्मा से कहत लजानेउं ।। सकारे..रात...
ससुरे मां होतिउं जेठी से कहतिउं चाची से कहत लजानेउं ।। सकारे....रात....
ससुरे मां होतिउं छोटी से कहतिउं भाभी से कहत लजानेउं ।। सकारे.....रात...
ससुरे मां होतिउं त ननंदी से कहतिउं बहना से कहत लजानेउं ।। सकार...रात.
ससुरे मां होतिउं देवरा से कहतिउं भइया से कहत लजानेउं ।। सकारे.....रात.

कोई माँ इसलिए परेशान हो रही है कि उसका बेटा रात में रो रहा है। उसे ऐसा लग रहा है कि यदि घुनघुना होता तो बेटा रात में नहीं रोता। बस इसी वितर्क को लेकर

गीत बन जाता है। कहती है– बेटा तुम रात में काहे रो रहे हो, मैं सुबह होते ही तुम्हारे लिए घुनघुना मंगा दूँगी। पुनः सोचती है और कहती है कि मैं इस समय मायके में हूँ यदि ससुराल में होती तो सासुजी से कह देती। परन्तु माँ से कैसे कहूँगी, लज्जा आ रही है। वह बहू तो घुनघुना लेने नहीं जा सकती, अस्तु चिन्ता कर रही है। ससुराल में तो जेठानी जी से कह कर मंगा लेती, परन्तु यहाँ अब चाची से कहने में लाज लगती है। फिर ससुराल में होने पर देवरानी से कह देती, परन्तु यहाँ भाभी से कहने में लाज लगती है। वहाँ ननद से कह देती, परन्तु यहाँ बहन से कहने में लाज लग रही है। यदि ससुराल में होती तो देवर से भी कह सकती थी, परन्तु यहाँ भइया से कहना लज्जा का विषय है।

यह गीत ग्रामीण अंचल की सद्यः प्रसवा स्त्रियों की समस्या का निरूपण करता है। मायके में प्रायः लड़कियाँ अपने बेटों अथवा ससुरालपक्ष के विषय में कुछ कहने में लज्जाशील होती हैं, परन्तु ससुराल में सास, जेठानी, देवरानी, ननद अथवा देवर में से किसी को भी अपनी समस्या बेटे के लिए आवश्यक वस्तुओं के विषय में कहकर मांग सकती है। इसी भाव से अनुप्राणित यह गीत बन गया है, क्योंकि यह एक नहीं अनेक प्रसूताओं का प्रतीक है, अतः लोक गीत बन गया है।

एक तारा गिरा आंगन में मेरा लाला रोवइ मधुवन में।
सासु जो आवइं चरूआ बनावैं सासु का अरमान मोरे मन में।
जेठी जो आवइं लड़्डू बंधावै जेठी का अरमान मोरे मन में।
लहुरी जो आवइं लड़्डू सजावै लहुरी का अरमान मोरे मन में।
ननंदी जो आवइं छठिया धरावैं ननंदी का अरमान मोरे मन में।

इस गीत की शुरुआत एक तारे के गिरने से होती है। किंवदन्ती है कि तारों का गिरना जीव का कहीं देह धारण करना है। एक चमकता हुआ तारा आँगन में गिरता है और बेटा मधुबन में रोने लगता है। बेटा या कोई भी जातक पैदा होते ही रोता है। इसके बाद सास आती है, चरूआ बनाती है और उसे कुछ नेग दिया जाता है। इसके लिए जच्चा कहती है कि सासु का अरमान या इच्छा मेरे मन में हैं। इसी प्रकार जेठानी लड्डू (प्रसवकालीन मोदक) बनाने आती है, देवरानी थाल सजाती है भोजन की और ननद छठी धरती है, अर्थात् बनाती है और इन सबका जेठानी–देवरानी और ननद का भी अरमान बहू के मन में है, अर्थात् इनकी इच्छा के अनुरूप उन्हें नेग दिया जायेगा।

हजारों लुटाइ देवइ एहिं अंगने मां।
पिपरी पिसन को सासु का बोलउबै तिलरिया उतारि देवइ एहिं अंगने मां।

समके न बंटिहै अरूरू दुरूर बंटिहै तिलरिया छड़ाइ लेवइ एहिं अंगने मां।
लड्डू बंधन का जेठी का बोलउबै हरवा उतारि देवइ एहिं अंगने मां।
समके न बंधिहै उट्टा छुट्टा बंधिहंइ हरबा छुड़ाइ लेवइ एहिं अंगने मां।
बेलुई रांधन को लहुरी का बोलउबै झुमकी उतारि देवइ एहिं अंगने मां।
समके न रंधिहंइ अच्चा कच्चा रंधिहंइ झुमकी छड़ाइ लेवइ एहिं अंगने मां।
सोवरी पोतन को ननद का बोलउबै कंगना उतारि देवइ एहिं अंगने मां।
सम के न पोतिही इट्टा चिट्टा पोतिहीं कंगना छंड़ाइ लेवइ एहि अंगने मां।'

यह गीत उस प्रसूता की भावना है, जो थोड़ा कड़क मिजाज है। कहती है कि बेटा हुआ है, इसी आँगन में जहाँ वह अपनी बाल्यावस्था गुजारेगा, हजारों मुद्राएँ मैं लुटा दूँगी। मैं अपनी सासुजी को पीपर पीसने के लिए बुलाऊँगी और तीन लड़ों का हार उतारकर उन्हें इसी आँगन में दे दूँगी। परन्तु यदि ठीक से नहीं पीसेगी तो मैं तिलरी भी छुड़ा लूँगी। मैं जेठानी जी को पौष्टिक या जच्चा के लड्डू बांधने के लिए बुलाऊँगी और उन्हें गले का हार उतार कर इसी आँगन में दे दूँगी। परन्तु यदि लड्डू ठीक से नही बाँधेंगी। छुट्टा या दुरदुरा बाँधेंगी तो मैं हार उनसे भी छुड़ा लूँगी। देवरानी को भी बेलुई पकाने के लिए बोलूँगी और हल्दी भात यदि कच्चा बनाएँगी तो उनको भी बेलुई के नेग में दी गयी झुमकी मैं छुड़ा लूँगी। ननद को मैं सोवर (प्रसूति गृह) पोतने के लिए बुलाऊँगी और उन्हें भी इसी आँगन में कंगन उतार कर दे दूँगी। परन्तु यदि ठीक से पुताई न किया इधर–उधर छोड़ दिया तो वह कंगन भी मैं छुड़ा लूँगी।

यह जच्चा सब नेग तो देना चाहती है, परन्तु जिसके लिए नेग दिया जा रहा है, वह काम भी अच्छी तरह कराना चाहती है।

मोरे अंगना में चन्दा की पहली किरन,
अपनी दादी की गोदी में खेलै ललन।
उनके आजा के अरमान पूरे हुए।
मोरे अंगना में चन्दा की पहली किरन,
बड़ी माता की गोदी में खेलैं ललन।
उनके दाऊ के अरमान पूरे हुए।
मोरे अंगना में चन्दा की पहली किरन,
अपनी चाची की गोदी में खेलैं ललन।
उनके चाचा के अरमान पूरे हुए।
मोरे अंगना में चन्दा की पहली किरन,

अपनी फूफा की गोदी में खेलैं ललन।
उनके फूफा के अरमान पूरे हुए। मोरे अंगना ....

पुत्र का घर में पैदा होना घर गाँव में गरीबी–अमीरी सबमें सुखदायक होता है, क्योंकि दाम्पत्य जीवन या विवाह का यही चरम फल भी है। गीत कहता है कि अपनी दादी की गोद में जब नवजात शिशु खेलने लगता है, तब लगता है कि अपने आँगन में चन्द्र की प्रथम किरण उतर आयी है। और बेटे के दादी की इच्छा भी पूरी हो जाती है। बड़ी माँ की गोद में जब बालक खेलता है, तब उसके ताऊ जी या दाऊ जी की इच्छा पूरी होती है और चन्द्र की प्रथम किरण का अवतरण लगने लगता है। चाची की गोद में खेलने से चाचा के अरमान पूरे हो जाते हैं, इसी प्रकार फूफा की गोद में बेटे के खेलने से फूफा के अरमान पूरे होते है।

गोदी में खेलने वाले बेटे से वात्सल्य पुष्ट होता है और मनुष्य के पुनर्जन्म का प्रमाण तो बाल जीवन ही है। बालक सदा वृद्धों का अतीत होता है। इसी से वे उसे निर्माण की पंक्ति का लेख बांचते और सुनाते भी रहते हैं।

घनी अमरइया कोइल कहां बोलइ रे।
सासु मांगइं लहंगा ननंद मांगइ लुगरा
सइयां मांगइ पागा रंगाइ कहां पाई रे।
सासु मांगइं खटिया ननंद मांगइ मचिया
सइयां मांगइ माचा बिनाइ कहां पाई रे।
सासु मांगइं आमा ननंद मांगइ अमिली
सइयां मांगइ निब्बू रसीला कहां पाऊं रे।
सासु मांगइं ककना ननंद मांगइ पहुंची
सइयां मांगइ गजड़ा गुहाइ कहां पाऊं रे।

पुत्र पैदा होने के बाद सब लोग उत्साह और उल्लास में कुछ न कुछ माँगने लगते हैं। अमराई में सघन वृक्ष लगे है। वहाँ कोयल की कूक सुनाई पड़ती है। बहू कहती है कि कोयल कहाँ बोल रही है, आम का बगीचा बहुत घना होने से दिख नहीं रही है। सास जी लहंगा मांगती है, ननदजी लुंगरा माँगती है, परन्तु मेरे स्वामी जी पागा माँगते हैं, इन्हें हम कहाँ से रंगा कर दें। पुनः सासुजी खटिया, ननदजी मचिया और पतिदेव माचा (बडी खाट) माँग रहे हैं, मैं कहाँ से बुनाकर यह सब दूँगी। सासु आम माँगती है, ननद तो इमली मांग रही है परन्तु पति नींबू मांगते हैं, यह सब रस भरे मैं कहाँ से लाऊँ। सासजी कंगना मांगती है, ननद जी पहुँची माँगती हैं, परन्तु स्वामी जी गजरा माँगते हैं, इन्हें कहाँ से गुंथवा कर मैं दे पाऊँगी।

पुत्रोत्सव में जच्चा (जननी) से सब लोग कुछ न कुछ माँगते ही रहते हैं, वह कहाँ से सबको सन्तुष्ट करे। यही भाव इस गीत में बिम्बित हुआ है।

धन्य गोरी तेरो भाग महलिया में लाला भए हैं।
जाय कहो तुम बारी ससुर सों द्वारे में मोती लुटावै।
कन्हैया लाल भुइं मां पड़े हैं।
जाय कहो तुम बारी जेठ सों द्वारे में रुपैया लुटावै।
कन्हैया लाल भुइं मां पड़े हैं।
जाय कहो तुम बारी देवर सो द्वारे में झूला झुलावै।
कन्हैया लाल भुइं मां पड़े है।
जाय कहो तुम बारी नन्दोई से द्वारे बंधावा बजावै।
कन्हैया लाल भुइं मां पड़े हैं।

गौराजी तुम धन्य भाग्य वाली हो, तुम्हारे भाग्य से महल में बेटा पैदा हुआ है। कन्हैया लाल पैदा होकर भूमि में पड़े हैं। ससुर जी से जाकर कह दो कि दरवाजे पर मोती लुटा दें। यह बेटे के जन्म की बात जेठ जी से कह दो कि द्वार पर रुपया लुटा दें। यह समाचार देवर को भी दे दो, कि वे द्वार पर आकर झूला–झुला दें। नन्दोई जी से पुत्र जन्म का समाचार दे दो जिससे वे बधावा बजवा दें। पुत्र के पैदा होने के समाचार से ससुर, जेठ, देवर और ननदोई सभी को प्रसन्नता होती है और वे सभी उत्साह प्रदर्शन हेतु कुछ न कुछ करते हैं। सर्वाधिक सुखी जननी होती है और वह चाहती है कि उसके सुख में, उल्लास में पूरा घर सहयोगी हो जाय। इसी से वह किसी से मोती लुटाने, किसी को रुपया लुटाने किसी से झूला झुलाने और किसी से बधावा बजाने का आग्रह करती है, क्योंकि ये ही कार्य पुत्रोत्सव में उल्लास द्योतक भी है और हर्षवर्धक भी हैं।

धन्य धरती धन्य भाग बिहारी लाल भुइंयां डरे है।
जाइ कहि दइयो मोरे बारे ससुर से द्वारे पै बसनी कटावैं।
जाइ कहि दीन्हे मोरे बारे जेठ से द्वारे पै हांथी नचावैं।
जाइ कहि दीन्हे मोरे बारे सासु से द्वारे पै घोड़ा नचावैं।
जाइ कहि दीन्हे मोरे बारे देवरा से द्वारे पै ढोल बजावैं।
बिहारी लाल ....

बेटा भूमि में पड़े हैं और यही देखकर गीत बन जाता है कि धरती भी धन्य हो जाती है और भाग्य भी धन्य हो जाता है। जब कोई बालक धूलि से खेलता है, धरती से जुड़ता है कालिदास ने भी कहा है– 'धन्यास्तदघ्रजसा कलुषी भवन्ति'। बेटे की माँ

ने गाया कि मेरे ससुर जी से जाकर कह दें कि अपने दरवाजे पर बसनी अर्थात् प्राचीन काल का रुपया रखने का वस्त्र जिसे कमर में बांध लिया जाता था। फिर कहती है कि बिहारीलाल अर्थात् बेटा धरती के पुत्र हुए हैं, अतः जेठनी को कह दें कि दरवाजे पर हाथियों की नाच करा दें। सासुजी से कहें कि वे दरवाजे पर घोड़ों का नृत्य करा दें, क्योंकि बेटा पैदा हुआ है। देवर जी से कहें कि वह दरवाजे पर ढोल–ढमाका बजा दें।

इस गीत में पुत्रोत्सव की अभिव्यक्ति हुई है। इसमें भी आनन्दोल्लास से भरी जननी ने ससुर से रुपया लुटाने, जेठ से द्वार पर हाथी नचवाने, सास से घोड़ा नाच कराने तथा देवर से ढोल बजाने का आग्रह किया है। इन्हीं कार्यों से पुत्रोत्सव प्रदर्शित होता है।

मैं हौ अकेली राजा सबइ न लुटाइ दिहे।
सोवरी पोतन का ननदी का बोलाइ लिहे
ओऊं आमइं न मोरे बहिनी का बुलाइ लिहे। मैं हो..
पिपरी पिसन का ससुइया का बोलाइ लिहे
ओऊं न आवैं मोरी माया क बोलाइ लिहे। मैं हौ..
पीड़ा बांधन क जेठानी क बोलाइ लिहे
ओऊं न आमैं मोरी भउजी क बोलाइ लिहे। मैं हौ..
पछितिया बोलै क देवरा बोलाय लिहे
ओऊं न आमैं मोरे भइया क बोलाइ लिहे। मैं हौ ....

सद्यः प्रसूता अकेली ही गृहस्वामिनी है। वह व्यवस्था की चिन्ता में अपने पति को समझाने लगती है। इसी भावभूमि का गीत बन गया है। स्वामी मैं तो अकेली ही हूँ, सब कुछ मत लुटा देना। क्योंकि पुत्रोत्सव हेतु सभी अपेक्षा रखते हैं। प्रसूति गृह की पुताई करने के लिए ननद को बुला लेना, पर वे न आयें तो मेरी बहन को ही बुलवा लेना। पीपर पीसने के लिए सास जी को ही बुलवाना है, परन्तु यदि वे न आयें तो मेरी माँ अर्थात् अपनी सास को बुला लेना। इसी प्रकार वह कहती है कि पीड़ा बांधने के लिए जेठानी को बुलवा लेना, परन्तु यदि वे न आएँ तो मेरी भाभी को मायके से बुलवा लेना। पछीति बोलना छठी या बरहों को होता है और यह देवर करता है, इसका नेग भी लेता है। वह समझाती है कि पछीति बोलने के लिए देवर को बुलवा लेना, परन्तु यदि वे न आएँ तो मेरे भाई को बुला लेना।

यह गीत क्रान्तिकारी परिवर्तन की सूचना देता है और उसका नेतृत्व स्त्री ही कर

रही है। परम्पराओं के पालन में यदि कोई समस्या हो तो उसे तोड़कर उसके मायके के लोगों को बुलवाना एक विद्रोह है। यह परम्पराएँ तो सामाजिक सामंजस्य, पारिवारिक सामरस्य और पुत्र प्राप्ति के समेकित उत्सव की दृष्टि से प्रचलित हुई होंगी। किन्ही कारणों या वैयक्तिक अहंकार की तुष्टि–पुष्टि के लिए कुलागत सामाजिक परम्पराओं को तोड़ देना वर्तमान भारत के उत्तराधिकारियों के लिए उपयुक्त नहीं है।

कड़वी लागे लाल पिपरी मैं नहीं पिऊं।
सासु न अइहइं हमार का करिहंइ
सासु का नेग मोरी अम्मा करइं लाल पिपरी मैं नहीं पिऊं। कड़वी..........
जेठनी न अइहंइ हमार का करिहंइ
जेठनी का नेग मेरी भाभी करइं लाल पिपरी मैं नहीं पिऊं। कड़वी ....
ननदी न अइहैं हमार का करिहंइ
ननदी का नेग मेरी बहना को देना लाल पिपरी मैं नहीं पिऊं। कड़वी........
देवरा न अइहै हमार का करिहैं देवरा का नेग
मेरे भइया करैं लाल पिपरी मैं नहीं पिऊं। कड़वीं.....
सखिया न अइहै हमार का करिहैं सखियों का नेग
मेरे आजा करैं लाल पिपरी मैं नहीं पिऊं। कड़वी........

सद्यः प्रसूता को स्तन्यवर्धक काला पीपल पीसकर दूध के साथ पिलाया जाता है, इससे शैत्यनिरोध भी होता है। परन्तु वह बहुत कड़वी होती है। कोई प्रसूता पीपर न पीने के लिए कह रही है, परन्तु इससे होने वाले परिणाम का उसके पास निदान है। यही विषय गीत में ढल गया है।

लालजी कड़वी लगती है, इसलिए मैं पीपर नही पिऊँगी। यदि सास जी नहीं आएँगी, तो उनका काम या नेग मेरी माँ कर देगी। परन्तु मैं पीपर नहीं पिऊँगी। यदि जेठानी नहीं आएँगी, तो भी हमारा क्या करेंगी, उनका नेग या काम भी हमारी भाभी कर लेगी, पर मैं पीपर नहीं पिऊँगी। इसी प्रकार ननद जी नहीं आएँगी तो मेरा क्या कर लेंगी। ननद का नेग या कार्य मेरी बहन को देना परन्तु मैं पीपर नहीं पिऊँगी। देवर जी भी नहीं आएँगे तो हमारा क्या कर लेंगे, देवर का नेग या काम तो हमारे भइया कर लेंगे, पर मैं पीपर नहीं पिऊँगी। सखियाँ नहीं आएँगी तो भी हमारा क्या कर लेंगी। सखियों का नेग मेरे आजा जी कर लेंगे, परन्तु मैं पीपर नहीं पिऊँगी। क्योंकि वह कड़वी लगती है।

यह गीत भी परिवर्तन का द्योतक है। जच्चा को किसी की परवाह नहीं है, उसके पास ससुराल वालों के स्थान पर मायके वालों का विकल्प है। यह राय केवल इसलिए दे रही है, क्योंकि वह कड़वी पीपर पीने की परम्परा का पालन नहीं करना चाहती है।

पीरा तो सहूंगी मैं अकेली पिया के लाल कैसे कहेंगे।
आवा न सासुजी तकथ चढ़ि बइठा सासु हमार झगड़ा पटावा । पिया के ....
चाहे बहू मारा चाहे गरिआवा लाल तो लाल के कहैगे।
तुम्हारा लाल कोई न कहेगा। पिया.............
आवा जेठानी पलंग चढ़ि बइठा जेठी हमरा झगड़ा पटावा, पिया के लाल कैसे कहेंगे।
चाहे लहुरी मारा चाहे गरिआवा लाल तो देवरा के कहेंगे,
तुम्हारा लाल कोई न कहेगा। पीड़ा ....
आवा देवरानी मचिआ चढ़ि बइठा लहुरी
हमरा झगड़ा पटावा। पिया के लाल ....
चाहे जेठरी मारा चाहे गरिआवा लाल तो जेठ के कहेंगे
तुम्हारा लाल कोई न कहेगा।
आवा ननदी बगल मोरे बइठा ननद मोरा झगड़ा पटावा। पिया के ....
चाहे भाभी मारा चाहे गरिआवा लाल तो भइया के कहेंगे
तुम्हारा लाल कोई न कहेगा।

यह गीत एक तर्क प्रधान गीत को प्रस्तुत करता है, इसमें बच्चे की माँ का तर्क है कि प्रसवपीड़ा मैं अकेले ही सहनकर रही हूँ, तब यह पति का बेटा कैसे हो जाएगा? इसमें प्रसववेदना के सहन करने को ही प्रमुखता दे दी गयी है। इस समस्या को वह परिवार की स्त्रियों के बीच रखती है। सर्वप्रथम सासु को तखत पर बैठाती है और कहती है कि मैं पीड़ा सहूँगी और यह बेटा भी हमारा है, पति का नहीं रहेगा। परन्तु यह प्रश्न सासु ने सुनकर भी स्वयं भुक्तभोगिनी होने पर भी यही उत्तर दिया कि बहू तुम गाली भले ही दो हमें, भले ही मारो पर दुनिया तो तुम्हारे पति का ही बेटा कहेगी। यही प्रश्न जेठानी को पलंग में बैठा कर किया, उसने भी देवर का बेटा ही कहे जाने की बात की। फिर देवरानी को मचिआ में बैठाकर यही पूँछती है, वह भी जेठ के ही पुत्र कहलाने की बात कहती है। ननद को बगल में बैठाती है और यही प्रश्न पूछा, परन्तु उत्तर वही था कि बेटा तो भइया का ही कहा जायेगा।

लोक प्रश्न है कि पति–पत्नी बेटे के लिए समान उत्तरदायी होते हैं परन्तु प्रसववेदना में पति की कोई भी भूमिका नहीं रहती है। संभवतः इसी से शास्त्रों में कहा

ह–ै 'पितुर्दशगुणा माता गौरवेणातिरिच्यते'। माता, पिता से दशगुना बड़ी होती है। प्रसव की पीड़ा के लिए अन्यान्य कथनों को भी देखा जा सकता है'– न हि बन्ध्या विजानाति गुर्वीं प्रसववेदनाम्' अथवा बाँझ कि जान प्रसव के पीरा' आदि।

ठाढ़ी सिया पछिताइ के लवकुश वन में हुए है।
वन में जो होती सासु हमारी लेती मैं पिपरी पिसाय के। लवकुश बन में हुए है।
वन में जो होतीं जेठी हमारी लेती मैं लड्डू बंधाय के। लवकुश ....
वन में जो होती बहुरिया हमारी लेती मैं बिलुई रंधाय के। कि लवकुश.............
वन में जो होती ननदी हमारी लेती मैं छठिया धराय के। कि लवकुश ....
वन में जो होते देवरा हमारे लेती मैं वंशी वजवाय के। कि लवकुश ....

सीता खड़ी–खड़ी पछतावा कर रही हैं कि लव–कुश का जन्म वन में हुआ है और कल्पनाएँ करने लगती है कि यदि वन में अपनी सास जी होती तो मैं उनसे पीपर पिसा ही लेती, जेठानी होती तो लड्डू बंधा लेती, देवरानी होती हो हल्दी भात बनवा लेती। ननद होती तो छठी रखवा लेती और देवर होते तो उनसे बाँसुरी बजवा ही लेती।

सीता उस नारी का उपलक्षण मात्र है, जिसके प्रसवकाल में सास–जेठानी वगैरह नहीं है, परन्तु उसका रूपक लोक जीवन में सीता और लव–कुश से बांध दिया गया है। लोक गीत में इसका उत्तर नहीं मिलता कि सीता की जेठानी कौन थी, इसी से उपलक्षण ही मान लेना ठीक रहेगा।

सीता जी के वन में लाल हुए हैं वहाँ लाल का कहइया कोई नहीं।
यहाँ सास नहीं वहाँ अम्मा नहीं पिपरी का पिसइया कोई नहीं।
यहां जेठी नहीं वहां चाची नहीं लड्डू का बंधइया कोई नहीं।
यहां भाभी नहीं वहां छोटी नहीं बिलुई का रंधइया कोई नहीं।
यहां लहुरी नहीं वहां ननदी नहीं सोवर का पोतइया कोई नहीं।
यहां देवर नहीं वहां भइया नहीं झूला का झुलइया कोई नहीं।

यह भी एक ऐसा दृश्य हैं, जिसमें वनवासिनी सीता को प्रसव हुआ परन्तु। वहाँ पुत्रजन्म के बाद होने वाली सामाजिक रीतियों का अनुवर्तन कैसे होता? यह लोकगीत की चिन्ता है। वन में सीता जी के बेटे हुए है, परन्तु वहाँ लाल कहने वाला कोई नहीं है। न तो सास है, न ही माँ है, तब पीपर कौन पीसेगा, अर्थात् कोई नहीं है। न जेठानी है और न ही चाची है, तब लड्डू भी बांधने वाला कोई नहीं है। न तो भाभी है, न हीं देवरानी है, तब तो हल्दी भात बनाने देने वाला भी कोई नहीं है। न तो देवरानी है और

न ही ननद है, तब सोवर (प्रसूतिगृह) को लीपने–पोतने वाला भी कोई नहीं है। न देवर है न ही भइया है फिर झूला भी झुलाने वाला कोई नहीं है। सुख एवं दुःख के प्रसंगों में ही अपने निजी संबंधों की याद होती है। लोक रीतियों के परिपालन में लोक संबंध ा ही सदा स्मरण भी रहते हैं और सम्पन्न भी किए कराए जाते हैं। इन्हीं संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए उत्सव के क्षणों में सबके नेग बना दिए गए हैं।

बच्चे के पैदा होने पर लाल या लाला का सम्बोधन उसे किया जाता है। पीपर पीसकर जच्चा को दूध के साथ दी जाती है, उसके लिए पौष्टिक आहार मोदक बनाए जाते हैं, परन्तु लड्डू बांधने में अहं भूमिका जेठानी या चाची की होती है। पीपर माँ या सास ही पीसती है। हल्दी और भात भोजन में दिया जाता है, जिसे बिलुई रांधना कहते हैं। यह देवरानी या भाभी ही करती है। प्रसूति गृह का लीपना–पोतना ननद या देवरानी ही करती है। साथ ही बच्चे को झूला में झुलाने का काम भाई या देवर करते हैं। इनके न रहने पर यह सब कैसे होगा।

गलियन–गलियन फिरै मनिहारिन लै लेउ री कोउ लाल को खिलौना।
अपने महल में यशोदा रानी बोलीं दे जाओ तुम ललन को खिलौना। गलियन.
आओ मनिहारिन बैठो आँगन में का तुम लाई ललन को खिलौना। गलियन..
छोटी सी बांसुरी दे दो लाल को प्यारा लागइ यह ही खिलौना। गलियन ....
थाल भरि मोती यशोदा लाईं खुश होकर दै दीन्हेउ खिलौना। गलियन...........
जुग–जुग जिअइं यशोदा तेरो ललना फिर लाऊंगी लालन का खिलौना । गलियन

यशोदा जी के लाला हुआ है और उसी समय कोई मनिहारिन अर्थात् चूड़ी आदि बेचने वाली गलियों में घूमती हुई आवाज लगाती है कि कोई अपने बेटे को खिलौना ले लो। तब अपने महल से ही यशोदा रानी आवाज लगा देती है कि मनिहारिन तुम मेरे बेटे के लिए खिलौना देती जाओ। आओ, आँगन में बैठ जाओ। खिलौने में क्या–क्या लाई हो, तुम बेटे को छोटी सी बाँसुरी दे दो, मेरे लाल को यही खिलौना अच्छा लगता है। बदले में यशोदा जी एक थाल भरकर मोती ले आती है, तब वह प्रसन्न होकर खिलौना दे देती है। मनिहारिन कहती है कि यशोदा तेरा बेटा युगों–युगों तक जीता रहे, मैं फिर से तुम्हारे बेटे के लिए खिलौना लेकर आऊँगी।

यह गीत भी वात्सल्य से भरा हुआ है। बेटे के मोह में खिलौना पाकर मूल्य नहीं किया बल्कि थाली भर कर मोती दे देती है, यही माँ की ममता है। मोती पाकर मनिहारिन भी बेटे को युगों–युगों तक जीते रहने की मनौती करती है। बाल क्रीड़ा के लिए खिलौनों की आवश्यकता होती है। उसी का इस गीत में निरूपण किया गया है।

जेलखानों में देवकी लाला हुए कंसों से बचाना गजब हो गया।
मैं तो सासु बोलाई सासु आई नहीं उनका पिपरी पिसाना गजब हो गया।
मैं तो जेठी बुलाई जेठी आई नहीं उनका लड्डू बंधाना गजब हो गया।
मैं तो लहुरी बुलाई लहुरी आई नहीं उनका बिलुई रंधाना गजब हो गया।
मैं तो देवर बुलाई देवर आए नहीं उनका बंशी बजाना गजब हो गया।

यह गीत भी देवकी के पुत्र पैदा होने की बात से लोक जीवन में प्रचालित विधियों का विवरण देता है। देवकी जी के बेटा हुआ है वह कारागृह में पैदा हुआ, परन्तु उसे कंस से बचा लेना आश्चर्यजनक होगा। मैंने सासुजी को बुलाया, परन्तु वे नहीं आयी फिर भी उन्होंने पीपर पीसकर दिया, यही आश्चर्य है। जेठानी को बुलाया तो वे भी नहीं आई परन्तु उन्होने लड्डू बंधा दिया, ये भी आश्चर्य है। मैंने देवरानी को जब बुलाया तब वह नहीं आई और अब हल्दी भात तैयार कर दिया जो कि आश्चर्यजनक है। देवर को बुलवाया तो वह नहीं आता है, परन्तु बंशी बजाने आ गया, यह भी एक आश्चर्य ही है। इस लोक गीत में पुत्रजन्म के समय सारी क्रियाओं को सम्पन्न करने हेतु सम्बंधित लोग आ जाते है, परन्तु उसके अतिरिक्त यदि बुलाया जाता है तो वे लोग नहीं आते हैं। यह लोकगीत पारम्परिक नहीं भी लगता है, परन्तु इन दिनों रेवांचल में प्रायः गैर पारम्परिक एवं फिल्मी गानों की तर्ज पर अनेक गीत गाए जाने लगे हैं।

इस गीत में परिवार के लोगों को नहीं आना तो सूचित होता है, परन्तु उनके द्वारा पुत्रोत्सव या पुत्रजन्म पर किए जाने वाले कार्यों का उल्लेख किया गया है।

गोदी होगा रे ललनमां कैसे सफरी।
सास जो आई पिपरी पिसन को मांगे अपना नेग,
नेग के बदले ठेंगा दिखा दो पिया गए परदेश, चाभी लैगा रे सजनमां कैसे सफरी.
जेठी जो आई लड्डू बांधन को मांगे अपना नेग,
नेग के बदले ठेंगा दिखा दो पिया गए परदेश, चाभी लैगा रे सजनमां कैसे सफरी.
लहुरी जो आई बेलुई रांधन को मांगे अपना नेग,
नेग के बदले ठेंगा दिखा दो पिया गए परदेश, चाभी लैगा रे सजनमां कैसे सफरी.
ननदी जो आई सोवर पोतन को मांगे अपना नेग,
नेग के बदले ठेंगा दिखा दो पिया गए परदेश, चाभी लैगा रे सजनमां कैसे सफरी.

यह गीत भी पारंपरिक नहीं है, परन्तु हास्य गीत के रूप में आजकल ऐसे गीत भी गाँव–गाँव में प्रचलित हो चुके हैं। सद्यः प्रसूता माँ प्रसन्न है कि उसकी गोदी में बेटा

खेल रहा है। परन्तु सास यदि पीपर पीसकर नेग मांगती है तो उसे ठेंगा दिखाने या न देने की बात करती है और कहती है पति उसके परदेश चले गए है चाभी (कुंजी) साथ में लेकर गए हैं। इसी प्रकार जेठानी लड्डू बांधने, देवरानी बेलुई अर्थात् हल्दी भात बनाने और ननद सोवर यानी प्रसूतिगृह लीपने आएगी। और उन्हें नेग मांगने पर ठेंगा दिखाना है और सबको पति का बाहर जाना, कुंजी साथ ले जाना कहकर मनाकर देना है। इसमें पारम्परिक गीतों का कथ्य तो है, परन्तु धुन में अन्तर है। लोकरीतियों का उल्लेख तो है, परन्तु सकारात्मकता नहीं है, काम तो करवाना ही है परन्तु नेग की परम्परा को ही ठेंगा दिखाने का गीत है और बहाना करना है कि पति परदेश में है, चाभी भी उन्ही के पास है। इस प्रकार यह हास्यगीत प्रतिफलित होता है।

कना बूसी कै डलिया छितरिया छीता छवानिया ओढ़निया हो लाल।
ससुर दुआरे चन्दन के बिरवा ओहीं मां दुसरी लगउबइ हो लाल।
ननदी बंधउबइ ननदोइया बंधउबैअउ ननदी के बिरना हो लाल।
ऊपर से चार चपका लगबउबइ अउ करबइ उनखर दुरगत हो लाल।
अइसन जो जनतेउं भउजी सबके मन ते अउतेउं हो लाल।
सौ लइ आएंउ पचासउ न पायउं कउने गइलि होइ जावइ हो लाल।

यह भी हास्य गीत है। किसी ननद की भाभी को लड़का हुआ है। उसमें सम्मिलित होने आई है, तब यह गीत भाभी की तरफ से है। कना अर्थात् चावल के ऊपर से निकालने वाला कण तथा बूसी अर्थात् धान के चावल निकलने पर बचने वाला छिलका की डलिया अर्थात् टोकनी और फटी–टूटी ओढ़नी लेकर आई हुई ननद को कहती है कि मेरे ससुर के दरवाजे पर चन्दन का पेड़ है, उसमें रस्सी लगवा दूँगी और ननद तथा ननदोई दोनों को ननद के भाई से ही बंधवा दूँगी और ऊपर से चार–चार बेंत की मार लगवा दूंगी और उनकी दुर्गति कर डालूँगी। ननद कहती है कि भाभी यदि मुझे इस प्रकार मालुम होता तो मैं सबके बुलाने पर ही आती, अपने आप नहीं आती। यहाँ तो सौ का समान लाई हूँ, पर पचास का भी नहीं पा रही हूँ, बड़ी बेइज्जती हो रही है, अब किस रास्ते से वापस जाऊँगी।

यह गीत भी हस्य गीत ही लगता है। ननद–नन्दोई को बंधवाना, पिटवाना, कुछ न देना रेवांचल में हँसी का ही विषय हो सकता है। ननद जी की चिन्ता है कि वह अब ससुराल किस मार्ग से जायेंगी, क्योंकि सबको यही लग रहा होगा कि मायके के पुत्रोत्सव में गई है तो विदाई ही लेकर आ रही होगी। सभी मार्ग हमारे लिए बन्द हो गए।

कमर मोरी दर–दर गयी हां हां रे।
तनिक पिया सासू बुला दो हां हां रे।
चलहु–चलहु मोरी माया त तोहरा बोलउआ आए हो
त हमरे महलिया कुछ शोर त तोहरा बोलउआ आए हो
जाहु न जाहु लउटि बेटा अपने लउटि घर हो
बेटा ओइं आहीं धनियां तोहार झगड़ा मोसे कीन्हिनि हो, कमर मोरी ....
तनिक पिया जेठनी बोला दो रे हां हां रे।
चलहु–चलहु मोरि भउजी त तोहरा बोलउआ आए हो
त हमरे महलिया कहुं शोर त तुम्हरो बुलउआ आए हो
जाहु न जाहु लउटि देवरा अपने लउटि घर हो
बेटा ओइं आहीं धनियां तोहार गारी मोहिं दीन्हिन हो, कमर मोरी ....
तनिक पिया लहुरी बोलाय दो हां हां रे
चलहु–चलहु मोरी लहुरी त तुम्हरेउ बोलउआ आए हो
त हमरे महलिया कुछ शोर त तुम्हारे बुलौआ आए हो
जाहु न जाहु लउटि जेठा अपने लउटि घर हो
जेठा ओंइं आही धनियां तोहार अलग हमइ कीन्हिनि हो, कमर मोरी ....
तनिक पिया ननदी बोलाय दो हां हां रे
चलहु–चलहु मोरी बहिनी त तोहरेउ बुलौआ आवा हो
त हमरे महलिया कुछ शोर त तुम्हरी बुलौआ आए हो
जाहु न जाहु लउटि भइया अपने लउटि घर हो
भइया ओइ आही धनियां तोहारि गालिया हमही दीन्हिन
झगड़ा हमसे कीन्हिन हो हो (2) कमर मोरी ....

कोई सगर्भा प्रसव वेदना से आकुल है। अपने पति से कहती है कि मेरी कमर पीड़ा से टूटी जा रही है, पिया जी सासु को बुला दो। वह माँ से कहती है कि मेरे निवास में कुछ शोरगुल हो रहा है आपको बुलाने आया हूँ, तब वह माँ बोली कि बेटा अपने घर लौट जाओ, वही तुम्हारी पत्नी है जिसने झगड़ा किया था। तब वह जेठानी को बुलाने को कहती है। वह भाभी को बुलाने गया, वह भी सगर्भा द्वारा गाली देने की बात कहकर देवर को लौटा देती है। तब देवरानी को बुलवाती है तब देवरानी अपने जेठ से कहती है कि वही है जो हमें अलग कर दिया है, अतः लौट जाओ। तब ननद को बुलाने को कहती है, भाई ने बहन को बुलाने का कहा और उसने भी कहा कि भाई लौट जाओ क्योंकि भाभी वही है जिसने हमें गाली दिया और झगड़ा भी किया था।

यह गीत प्रसवपीड़ा में मदद मांगने की योजना का है। सास, जेठानी, देवरानी और ननद ने क्रमशः झगड़ा करने, गाली देने, घर से अलग करने और गाली झगड़ा दोनों करने का स्मरण कराकर उसके पति को वापस कर देती है। यह लोकजीवन का ही सत्य है कि लड़ाई झगड़ा का बदला संकट के समय या मदद मांगने के समय लिया जाता है या बातें सुना दी जाती है।

भगवान् ने ये दिखाया मेरे गोदी में लालन आया।
मैंने सासू को बुलवाया मेरी सासू नहीं आई।
मेरी माता को कर दो इशारा मेरी गोदी में लालन आया। भगवान् ....
मैंने जेठी को बुलवाया मेरी जेठी नही आई।
मेरी चाची को कर दो इशारा मेरी गोदी में लालन आया। भगवान् .....
मैंने लहुरी को बुलवाया मेरी लहुरी नही आई।
मेरी भाभी को कर दो इशारा मेरी गोदी में लालन आया । भगवान् .....
मैंने ननदी को बुलवाया मेरी ननदी नहीं आई।
मेरी बहन को कर दो इशारा मेरी गोदी में लालन आया। भगवान्......

इस गीत में भी ससुराल पक्ष के लोगों को बेटे पैदा होने पर बुलाया जाता है और वे नहीं आते है, अस्तु लगता है पहले से ही मायके के लोगों की सांठ—गांठ रहती है और इशारा या संकेत करने मात्र से मायके के लोग आ जाते हैं। गीत कहता है कि भगवान् की यह कृपा है कि मेरी गोदी में बेटा आ गया है। मैंने सासु को बुलवाया परन्तु वे नहीं आई, तो मेरी माँ को संकेत कर दो कि मेरी गोदी में बेटा आ गया है। मैंने जेठानी को बेटे के होने पर बुलवाया, पर वे भी नहीं आई, अस्तु मेरी चाची को सूचना देकर बुला लें। देवरानी को भी मैंने संकेत कर दिया, परन्तु वे नहीं आयी, अस्तु मेरी भाभी को सूचना दे दो, वे आ जायेंगी। ननद को भी बुलवाया, परन्तु वे नहीं आयी। इसलिए मेरी बहन को संकेत कर दो कि मेरे बेटा हुआ है। वह आ जायेंगी। यह जच्चा गीत प्रकट करता है कि सास के स्थान पर माँ, जेठानी के स्थान पर चाची, देवरानी के स्थान पर भाभी और ननद के स्थान पर बहन को बुलाने का प्रस्ताव किया गया है। लोक संस्कृति में ऐसा नही होता है, परन्तु यह गीत कुछ आधुनिकता से भरा हुआ है। स्त्री की प्रधानता वाले घरों में ऐसा आचरण यदि होता है तो भी घर टूटने का ही यह संकेत माना जा सकता है।

झुला दे भइया पालना
काहेन के तोरा बना पालना काहेन लागे डोर, काहेन लागे फूंदना। झुला ....

चन्दन काठ का बना पालना रेशम लागी डोर, मोतिन लागे फूंदना। झुला ....
कोया झूलै कोया झुलावै कोया खींचै डोर, कोया मुंख चूमना। झुला.............
कान्हा झूलै नन्द झुलावै ललिता खींचइं डोर, यशोदा मुख चूमना। झुला ....
कौन गुजरिया के नजर लगी है नहीं पी रहा है दूध, मचलि रहे लालना। झुला
राई नोन यशोदा उतारै पियन लागे दूध, खेलन लागे लालना। झुला ....

यह श्री कृष्ण के शिशु काल का दोला गीत है। माँ पलना झुला दो। तुम्हारा पलना काहे का बना है, उसमें डोरी और फूंदा किसके लगे हैं। चन्दन की लकड़ी का पलना बना है, रेशम की डोरी है और मोती के फूंदा लगे हुए हैं। कौन झूलता है, कौन झुलाता है और रस्सी कौन खींच रहा है? बेटा का मुख कौन चूमता है? कन्हैया झूल रहे हैं, नन्दजी झुला रहे हैं, ललिता जी डोरी खींच रहीं है, यशोदा जी बेटे का मुख चूमती हैं। पता नहीं किसकी नजर लग रही है, बेटा दूध नहीं पी रहा है और मचलता जा रहा है। यशोदा जी राई–नमक कन्हैया के शरीर में उतार रही हैं और वे भी दूध पीने लगे और खेलने लगते हैं।

यह गीत पालना गीत है। पालने विषयक जानकारी प्रश्नोत्तरमय गीत से हो जाती है। इसी प्रकार झूलना, झुलाना और चुम्बन लेने का प्रश्नोत्तर मिलता है। दूध न पीने पर नजर लगने का अनुमान कर राई नोन उतारने का दीठ (दृष्टि या नजर) झाड़ने का चलन आज भी गाँव–गाँव में घरों–घरों में, पाया जाता है।

जल भरइं हिलोरि–हिलोरि रेशम की डोरियां।
रेशम की डोरी तब नीक लागइ जब सोने घइलना होइ।। रेशम जल........
सोनेन घइलना तब नीक लागइ जब रूपेन गोड़रिया होइ।। रेशम जल........
रूपेन गोड़रिया तब नीक लागइ जब पातरि धनिया होइ।। रेशम जल........
पतरि धनियां तब नीक लागइ जब गोदी ललनमां होइ।। रेशम जल........
गोदी ललनां तब नीक लागइ जब फूफू कुमारी होइ।। रेशम जल........

कुँआ पूजन या जल पूजन सद्यः प्रसूता द्वारा किया जाता है। उस समय का गीत है कि हिलोरे लेकर रेशम की डोरी से पानी भरती जा रही है, परन्तु रेशम की डोरी से पानी भरना तब अच्छा लगता है, जब सोने का घड़ा होगा। परन्तु सोने का घड़ा तब अच्छा लगेगा, जब चाँदी की गोड़री या रखने की कुण्डलिनी होवें। परन्तु चाँदी की गोड़री तब अच्छी लगती है, जब पानी भरने वाली पतले शरीर की स्त्री होगी। परन्तु पतले शरीर की छरहरी नारी तभी अच्छी लगती है, जब उसके गोद में बेटा (ललना) होगा। गोदी में बेटा तभी अच्छा लगता है, जब उसकी बुआ पास में होगी।

यह जल पूजन का गीत है। प्रसव के बाद अशौच समाप्ति पर कुँआ पूजना या जलपूजन की परम्परा है। पंचतत्त्वों की पूजा कर ऐसा लगता है प्रकृति को देवता बनाकर उनकी कृतज्ञता का ज्ञापन किया जाता है। रेशम की डोरी से सोने का घड़ा पानी से भर लाना और उसे चाँदी की गोड़री या आसन में रखकर ले चलना और दुबली पतली जननी गोद में बेटे को लेकर चलती है, तब सुशोभित होती है और बुआ के होने पर और अच्छी लगती है।

लाल मोरि गघरी उतारा हमारे गले मोहन माला।
कोया ले आवइं साला दुसाला कोया ले आवै मशाला। हमारे........लाल..........
जेठा ले आवइं साला दुसाला देवरा ले आवैं मशाला। हमारे ....लाल.........

कुँआ पूजने के बाद पानी का कलश भरकर ले आती हुई सद्यः प्रसूता माँ गाती है कि बेटे मेरी गगरी अर्थात् घड़ा उतार लो, क्योंकि मेरे गले में मोहन माला पड़ा हुआ है। कौन शाल वस्त्र और दुशाला लेकर और कौन मशाल ले आ रहा है। जेठ जी शाल और दुशाला लेकर आते है तथा देवर हमारे मशाल लेकर आते हैं।

यह गीत माँ बनने के सम्मान की भी सूचना है। जल पूजन के बाद घड़े में जल भरकर ले आती हुई माँ गाती है कि मेरे गले में मोहनमाला पड़ी हुई है, अस्तु मुझे घड़े को सिर से उतारने की समस्या है। परन्तु इस आवाहन में बड़े लोग तो वस्त्र आदि से सम्मान करते हैं तो देवर दीपक यानी मशाल दिखाता है, जिससे असुविधा न हो सके।

लाल मोरी गघरी उतारा हमारे गले मोतिन माला।
कहवां गए है मोरे सइयां गोसइंया कहां गए है मोरे लाला । हमारे............
एक हाथ मोरी गघरी उतारा दूजे से घुंघटा संभालो। हमारे ....
एक हाथ मोरी गघरी उतारा दूसरे से चुनरी संभालो। हमारे ....
एक हाथ मोरी गघरी उतारा दुसरे से ललना संभालो। हमारे............

यह गीत भी अत्यन्त प्रसिद्ध है। कुँआ पूजनकर लौटती हुई सुहागिनें और सद्यः माताएँ यही गीत गाती हुई आती हैं। मेरे स्वामी (पति) कहाँ गए हैं और मेरे लाला कहाँ गए हैं। एक हाथ में मेरी गागर है अर्थात् घड़े को उतार लो और दूसरे हाथ से घूँघट संभाल रही हूँ। मेरा घड़ा जिससे एक हाथ लगा है उसे उतार लो, दूसरे से चुनरी संभाल रही हूँ। वही एक हाथ गागर में लगा है तथा दूसरा हाथ बेटे को संभालने में लगा है। इसलिए उसकी अपेक्षा है कि कलश को देवर उतार लो, इस कलश की उतराई का भी लोक में नेग प्रचलित है।

इस गीत में बेटा पैदा होने से जननी को असुविधा हो रही है। उसने जल/वरुण देवता की पूजा कर ली है और एक घड़े में जल भर रही है। उसे अपना बेटा भी सम्हालना है साथ ही कुल परम्परा की भी रक्षा करनी है। वह घूँघट भी सम्हाल रही है, घड़ा भी सम्हाले हुए है, चूनर भी सम्हाल रही है और बेटा भी लिए हुए है। वह पति को और देवर को अपना घड़ा उतारने के लिए आवाहन करती है और उन्हें यही समझा रही है कि वह घूँघट, चुनरी और बेटा एक साथ सम्हाल रही है। उसे घड़ा भी सम्हालना है, अतः उसे उतारने में मदद माँगती है।

खेलत राम मैं छोड़ आयौ हो तुलसा के दुआरे।
तामे के गगरा गरम धरौं पानी सफरत राम मैं छोड़ आयउँ हो।
तुलसा...खेलते....पीली अंगौछी पीले रंग धोती खैचत राम मैं छोड़ि आयउँ हो।
तुलसा...खेलते........
पेड़ा जलेबी मगज के लड्डू जेंवत राम मैं छोड़ि आयउं हो।
तुलसा...खेलते........
फूलन चुनि–चुनि सेजा लगायउं पौढ़त राम मैं छोड़ि आयउं हो।
तुलसा...खेलते...

द्वार पर तुलसी जी का पेड़ लगा हुआ है, वे ही घर–आँगन की रक्षा करती हैं। वही घर की अहर्निश क्रियाओं की साक्षी भी है। गीत में कोई स्त्री कहने लगती है कि मैं अपने राम को खेलता हुआ छोड़कर आई हूँ, वहाँ तुलसा जी ही दरवाजे पर थी। ताँबे के घड़े में गरम पानी निकालकर रख आयी थी, नहाते हुए, राम जी को मैं छोड़कर आई थी। तुलसीजी के द्वार पर पीले रंग की अंगौछी, गमछा या उत्तरीय वस्त्र और पीले रंग की धोती पहनते हुए ही श्रीराम को मैं छोड़कर आई थी। मगज के लड्डू, जलेबी और पेड़े खाते हुए मैं राम जी को छोड़कर आ गयी थी। फूलों का चयन करती हुई मैं सेज (शय्या) लगा चुकी थी, उसमें लेटते हुए राम को छोड़कर मैं आई थी।

यह गीत उसे अपने राम के विषय में ध्यान रखने की जानकारी देता है। उसके राम वात्सल्य के स्नेह के और ममत्व के प्रतीक हैं। उसका स्थान, वस्त्र भोजन, शयन सब कुछ माँ के ध्यान में है।

ऊपर बदरा घहराय हो तरी गोरी पानी का निकली।
जाइ कहो मोरे राजा ससुर से दुआरे मां कुँअना खोदावे।
तौ गोरी धना पानी का निकली। ऊपर बदरा..........
जाइ कहो मोरे राजा जेठ से कुंअना मां जगत बंधावैं। तौ गोरी ...ऊपर.........

जाइ कहो मोरे बारे देवर से रेशम रसरी मंगावै। तौ गोरी ....ऊपर........
जाइ कहो मोरे राजा बलम से सोने के घइला मंगावै। तौ गोरी.........ऊपर ....

किसी वधू को पुत्र पैदा हुआ है। वह बरहों के बाद कुँआ पूजने यानी जल/वरुण पूजने जा रही है और ऊपर बादलों की गर्जना हो रही है। तब वह गाने लगती है कि ऊपर आकाश में बादल घर–घराने लगे है और नीचे गौर वर्णी बहू पानी के लिए जा रही है। कहती है कि मेरे ससुर जी से जाकर कह दो कि द्वार पर ही कुँआ खोदवा दें, जिससे पानी लाने में असुविधा न हो सके। मेरे जेठ जी से जाकर कह दो कि कुँआ में जगत बंधवा दें, अर्थात् कूप के ऊपर पानी आदि भरने हेतु स्थान बनवा दें। अरे! मेरे देवर जी से जाकर कह दो कि वे रेशम की रस्सी मंगवा दें, जिससे पानी भरते समय हाथ में अधिक कष्ट न हो। अन्ततः वह अपने पति के लिए भी कहती है कि जाकर उनसे कह देना कि सोने का घड़ा मंगा देंवे, जिससे पानी भरने में सुविधा हो सके।

यह गीत माता की गरिमा का ही है, वह पुत्रवती हो गयी है और उसे पानी भरने के लिए जाना पड़ेगा, तब वह अपने परिवार से अपेक्षा कर बैठती है। ससुर, ज्येष्ठ, देवर और पति सबको अपनी अपेक्षा कह देती है। कुँआ बनवाना उसमें जगत या ऊपर की भूमि को समतल बनवाना, पानी भरने हेतु रस्सी की व्यवस्था और सोने का घड़ा सब आवश्यक है, तब कुँआ पूजा होगी, पानी पूजा जाएगा। यह पानी ही तो जीवन है और इसके बिना ससुर, जेठ, देवर, पति पुत्र सब नहीं रह सकेंगे और इस पानी की जिम्मेदारी अब पुत्रवती वधू को मिली है।

घूमत मथुरै जाऊं हो काशी मां बोरौं घइलना।
जाइ कहो मोरे राजा ससुर से द्वारे मां कुइयां खनावैं हो। काशी मा..........
जाइ कहो मोरे राजा जेठ से द्वारे मां कुइयां खनावइं हो। काशी मां..........
जाइ कहो मोरे राजा देवर से द्वारे मां कुइयां खनावै हो। काशी मां..........

मैं घूमते–घूमते मथुरा जाऊँगी और काशी में घड़ा भरकर लाऊँगी। अरे! मेरे ससुर से जाकर कह दो कि दरवाजे में ही कुँआ खोदवा दें। यही बात जेठ और देवर से भी वह कहलाती है कि दरवाजे के पास ही कुँआ खुदवाने की योजना बना ले जिससे मथुरा, काशी पानी लेने न जाना पड़े।

घड़ा भर पानी लेने के लिए काशी जाना पड़ता है, गंगाजल लाना पड़ता है। मथुरा तो घूमने के लिए ही है। परन्तु काशी से जीवन जल गंगाजल लाते है, परन्तु यही जीवन गंगाजल घर में कुँआ में मिल जाता है, अस्तु बहू कहती है, गाती है कि ससुर

जी, जेठजी और देवरजी से कहना कि घर में ही दरवाजे पर कुँआ बनवा दें। कारण यही है कि पानी तो निरन्तर आवश्यक है।

जल कैसे भरौं जमुना गहरी (2)
ठाढ़े भरौ राजा राम देखत हैं बैठे भरौं भीगैं चुनरी। जल कैसे ....
धीरे चलौं घर बालक रोवै चांड़े चलौं छलकैं गगरी। जल कैसे ....

समस्या यह है कि जमुना जी में गहरा जल है, परन्तु गोपी को पानी भरना है वह कैसे भरकर लाये, यही गीत बन गया है। कहती है कि खड़े–खड़े भरूँगी तो राजा राम देख रहे हैं, परन्तु बैठकर भरूँगी तो चुनरी भींग जाएगी। धीरे–धीरे चलूँगी तो मेरा बेटा रोने लगेगा और तेज–तेज चलूँगी तो घड़े का पानी छलक कर गिर जाएगा।

पानी नदी से भरने जाती हुई लड़कियों की यही समस्याएँ होती हैं। उसे पानी भरने की समस्या है कि उसे कहीं उनका राजा न देख ले, परन्तु यह भी चिन्ता है कि चुनरी गीली न हो जाय। घड़ा ले चलने की समस्या है कि बालक घर में भूखा है और धीरे–धीरे जायेंगी तो बेटा रोता रहेगा, परन्तु शीघ्रता से चलने पर गागर या घड़ा छलक जाएगा। यह समस्या पुत्रवती या माँ बनने पर ही हो गयी है।

इसके भी केन्द्र में बेटा है जो अभी हुआ है, उसी की सेवा में पानी भी आवश्यक है और उसका न रोना भी आवश्यक है।

धीरे चलो राधा प्यारी गागर छलकै ना तुम्हारी।
कउने बरन तोहरे घइला गघरिया कउने बरन पनिहारी। गागर...............
सोने बरन मोरा घइला गघरिया रूपे बरन पनिहारी । गागर......................

अरे राधा जी! धीरे–धीरे रास्ते में चलो, जिससे तुम्हारी गागर छलकने न लगे। किस रंग की तुम्हारी गघरी है, किस रंग की पानी भरने वाली पनिहारी है। घड़ा गगरी तो सोने के रंग का है और पानी भरने वाली चाँदी के रंग की है।

राधा की गगरी अर्थात् पानी भरे घड़े की दशा का गीत है। जल पूरित घड़े को लेकर चलती हुई राधा से आग्रह है कि वह धीरे–धीरे चले। वह घड़ा और पनिहारिन अर्थात् पानी भरकर लाने वाली कैसी है। घड़ा सोने के रंग का है और पनिहारिन रूप यानी चाँदी के रंग की है।

यशोदा जायो ललना मैं वेदन में सुनि आई।
मैं वेदन में सुनि आई पुरानन में सुनि आई।

मथुरा में लालन जनम लिए है गोकुल में झूलै पलना, मैं वेदन ......
लै वसुदेव चले गोकुल का मारग दै दिया जमुना, मैं वेदन.........
काहेन केरा बना है पालना काहे के लगे फुंदना, मैं वेदन.
चन्दन काठ को बना है पालना रेशम के लागे फुंदना, मैं वेदन.............

पुत्रोत्सव की धूम–धाम में गाए जान वाले गीतों में कभी राम कभी कृष्ण का जन्म प्रसंग उमड़ता है। इसमें श्रीकृष्ण जन्म के संदर्भ में गीत बनाया गया है। गीत द्वारा गायिका कहती है कि मैंने वेदों में सुना है कि यशोदा ने लाला (पुत्र) पैदा किया है। पुराणों में भी यही सुना है। बेटे का जन्म तो मथुरा में हुआ, परन्तु गोकुल में पालने पर झुलाया गया। उन्हें लेकर वसुदेव जी जब गोकुल के लिए जा रहे थे, तब यमुना जी में बाढ़ थी फिर भी उन्होंने जाने के लिए मार्ग दे दिया था। पालने का निर्माण किससे किया गया है और फुंदना या बन्धन किसका लगाया गया है। चंदन की लकड़ी का पालना बना है और रेशम के धागे का बन्धन लगाया गया है।

बधइया बाजइ आंगने में।
मुदित मगन मन तीनिउ रानी सगुन मनावहिं मनहि मनै में। बधइया.....
राजा दशरथ रतन लुटावत नचइया नाचइं आंगने में। बधइया ....
राम जनम को कौतुक देखत बीती रजनी बाजने में। बधइया...........

अयोध्या नगर के राजघराने में बधाई आंगन में बजाई जा रही है। तीनों रानियाँ मन ही मन प्रसन्न और आत्मविभोर हो रहीं है और मन ही मन में सगुन शुभ मना रही है। राजा दशरथ जी रत्नों की लूट करा रहे हैं और नाचने वाले आँगन में नाच कर रहे हैं। श्रीराम जी के जन्म के उत्सव का कौतूहल देखते–देखते रात बाजा बजाते सुनते ही बीती जा रही है।

श्रीराम जन्म के उत्सव में सारी रात गाने बजाने में ही बीत जाती है। यही गीत का प्रतिपाद्य है।

बाजत अनंद बधइया हो रामा अवध नगरिया।
भौमवार मधुमास मनोहर योग नखत सुखदइया।
घर–घर सखियां मंगल गावइं प्रकट भए रघुरइया।
प्रमुदित सुर दुन्दुभी बजावहिं शान्ति पढ़ै मुनिरइया।
बाजत झांझ मृदंग ढोल डफ नाचत लोग लुगइया।

अयोध्या नगरी में आनन्द की बधाई बज रही है। बसंत ऋतु का चैत्र महीना मन को आकर्षित करने वाला है। मंगलवार का दिन है नक्षत्र और योग सब सुख देने वाले है। सखियाँ प्रत्येक घरों में मंगलगीत गीत गाए जा रही हैं। रघुराई अर्थात् श्रीराम प्रकट हो चुके हैं। देवलोक में सभी देवता प्रसन्न हो–होकर नगाड़े बजा रहे है और यहाँ मुनि लोग शान्ति मन्त्रों का पाठ किए जा रहे हैं। सभी लोग नाच रहे हैं और उल्लास में झांझ, मृदंग, ढोल और डफ बाजे बज रहे हैं। यह बधाई गीत भी श्रीराम के जन्मोत्सव का बिम्ब प्रस्तुत कर देता है।

लाल दशरथ के कब बड़े होइहइं।
ईं चारों भइया खेलन कब जइहइं हमारे घर ओरहन कब लै अइहैं।
छोटे–छोटे पाएन मां पहिरें पैजनियां अपने आप घर कब चले अइहैं।
चोवा चन्दन और अरगजा अपने हांथ रोरी कब दइ लेइहैं।
माखन मिश्री दूध बतासा अपने हांथ भोजन कब करि लेइहैं।

इस बधाई गीत में दशरथ के पुत्रों को बड़े हो जाने की इच्छा अपेक्षा प्रकटित हुई है। दशरथ के बेटे कब बड़े–बड़े हो जायेंगे। ये चारों भाई राम–लक्षण भरत–शत्रुघ्न कब खेलने जायेंगे और हमारे घर पर उलाहना लेकर कब आएंगे। अपने छोटे–छोटे पैरों में पैजनिया (घुँघुरू) पहने हुए स्वयं घर कब चले आएंगे। अपने हाथों से चोवा, चन्दन और अरगजा कब लगाएंगे, साथ ही रोली कब लगा लेंगे। माखन–मिसरी, दूध और बतासे का भोजन स्वयं अपने हाथों से कब तक में ये करने लगेंगे। यद्यपि यह बधाई गीत जैसा स्पष्ट तो नहीं है, परन्तु बच्चों के बढ़ने की कल्पना करता हुआ यह गीत भी वर्धापन मूलक ही है।

आए हइं रामलखन भइया अवध में बाजे बधइया।
सुन्दर कलश सजे घर–घर में तोरण द्वार लगइया।
ताल मृदंग झांझ डफ बाजे नाचे लोग लुगइया।
वीथी सकल सुगन्ध सिंचाई गजमणि चौक पुरइया।

राम और लक्ष्मण दोनों भाई यहाँ आए हुए हैं और अयोध्या में बधाई बजाई जा रही है। घरों–घरों में सुन्दर कलश सजाए गए है और दरवाजों पर तोरण सजाए गए है। मृदंग, डफ, झांझ सब ताल में बजाए जा रहे है और नर नारी नृत्य कर रहे हैं। सारी गलियाँ सुगन्ध से सींच दी गयी है और गजमुक्ता से चौके (अष्टदल कमल) बना दी गयी है। अयोध्या में ही बधाई बज रही है, परन्तु सारे घरों में सजावट कर दी गयी है। बाजे बज रहे है, गलियाँ सुगन्धित जल से सींच दी गयी है, चौक बना दी गयी है।

तोरण, कलश सजा दिए गए है। ये राम जीवन की अयोध्या में आते हैं और जन मन में बधाई बजवाते हैं।

बजत बधाई भाई आज अवध मां।
के–के भए है भरत ललना के–के भए हैं राजा राम अवध मां । बजत......
कैकेयी के भए हंइ भरत ललना कौशल्या के भए राजा राम अवध मां। बजत.
राजा दशरथ पटना लुटावइं देत हैं विप्रन का दान अवध मां। बजत.....

भाई आज अयोध्या में बधाई बज रही है। भरत जी किसके यहाँ पैदा हुए हैं और रामजी अयोध्या में किसके यहाँ हुए हैं। माता कैकेयी के भरत बेटा पैदा हुए हैं और राम राजा माता कौशल्या के पैदा हुए है। इस उत्सव प्रसंग में राजा दशरथ कपड़े लुटा रहे है और अयोध्या में वे ब्राह्मणों को दान दे रहे हैं।

इस बधाई में केवल भरत और राम के विषय में पृच्छा की गयी है और तदनुसार राजा दशरथ की उदारता का विवेचन मिल जाता है।

बधइया बाजइ आंगने में।
चन्द्रमुखी मृगनैनी अवध की लोटत लालन आंगने में।
प्रेमभरी प्रमदा गण नाचत नूपुर बांधे पायने में।
नेवछावरि श्रीरामलला जू की नहिं कोउ लाजत मांगने में।
रामललाजू की भरतललाजू की लखनललाजू की।
लखनललाजू की शत्रुहन ललाजू की नहिं कोउ लाजत मांगने में।
सिया अली यह कौतुक देखत बीती रजनी जागने में। बधैया .....

सिया अली जी का यह पद अवध के उत्सव का निरूपण करता है। आँगन में बधाई बज रही है। अयोध्या की मृगनैनियां और चन्द्रमुखियां प्रेम से भरी हुई है, मतवाली हो गयी है और पैरों में नूपुर बांध लिया है। लाला आँगन में लोट–पोट रहे हैं। सब नाच रहीं है, जा रही हैं और रामजी की न्योछावर मांग रही हैं। कोई लजाती नहीं है, भरतलाल, लखनलाल और शत्रुघ्नलाल जी की न्योछावर मांगते कोई भी नहीं लजा रही है। सारी रात जागते–जागते आनन्द मनाते–मनाते ही बीत जाती है।

अंगना में बजत बधइयां बाजै हो बधइया यशोदा जी के द्वारे।
रार करै पानी में हिलोरैं खेलइ का मांगइ जुन्हैया। यशोदा जी...
तुम जनि सोच करौ मनमोहन चांद लाइ कै मैया। यशोदा जी...
गोरे नन्द यशोदा गोरी तुम मोहन काहे कारे। यशोदा जी ....

यशोदा मैया के द्वार के प्रांगण में बधाई बजाई जा रही है। कन्हैया झगड़ता है, पानी में लहरें पैदा करता है और खेलने के लिए चन्द्रमा की मांग करता है। मनमोहन जी तुम चिन्ता मत करो मैया चन्द्रमा लाकर देंगी ही। नन्द जी गौर वर्ण के हैं, यशोदा जी भी गोरी है, परन्तु कैसे काले हो गए हो। सपरिहास यह बधाई गीत है, इसमें लीला का भी वर्णन मिल जाता है।

ब्रज में बजति बधाई लाल हम सुनि कै आए।
हरी–हरी दूबे नउनिया लाई बाई तुमने खबर कहां पाई। लाल ....
बन्दनवार मलिनिया लाई अरे हां बाई तुमने खबर कहां पाई। लाल.....
कुंभा कलश कहारिन लाई बाई तुमने खबर कहां पाई। लाल..........
बारह जोड़ी बजत नगाड़े सोलह सौ शहनाई। लाल ....
रानी जसुमति के बेटा जाए उपजे कुमर कन्हाई। लाल..........

बेटे होने की बधाई ब्रज में बज रही है, जिसे हम सुनकर यहाँ आ गए हैं। हरी भरी दूब नाइन लेकर आई है, परन्तु यह खबर तुमने कहाँ से पाई है। मालिन तो बन्दनवार लेकर आई है, परन्तु यह समाचार उसे कहाँ से मिला है। कलश भर कर कहारिन भी ले आयी है, परन्तु उससे भी यही प्रश्न है कि खबर कैसे मिली। सोलह सौ शहनाई बज रही है, बारह जोड़ी नगाड़े बजने लगे हैं, यह बधाई के बाजे ही सूचना देते हैं कि रानी यशोदा ने बेटा पैदा किया है, कन्हैया पैदा हुए हैं।

बधाई के बाजे सुनते ही सभी दौड़े–दौड़े चले आ रहे हैं। सबका उत्साह, उल्लास भरा हुआ है, यहाँ जन्म के आनन्द में समाहित होता जा रहा है।

नन्द घर बजत बधइया लाल हम सुनि कै आई।
मथुरा में हरि जनम लिया है गोकुल बजत बधाई।। लाल हम.......
देवकी ने जाए यशोदा खिलाए नन्दजू के लाल कहाई।। लाल हम....
सोरा गऊ के गोबर मंगायउं कंचन कलश धराई।। लाल हम ....
चन्दन पाट धराए यशोदा चौमुही दियना जलाई।। लाल हम ....
हीरा मोती लुटावइं यशोदा मनमोहन कण्ठ लगाई।। लाल हम....

कोई गोपी कह रही है कि नन्द बाबा के घर में बधाई बज रही है। बेटा हुआ है, यही सुनकर हम आई है। मथुरा में कन्हैया ने जन्म लिया है और बधाई गोकुल में बज रही है। देवकी ने पैदा किया परन्तु यशोदा ने खेल खिलाया और वे नन्द बाबा के बेटे कहे गए हैं। गाय का गोबर मंगाकर आँगन लिपा दिया और सोने का कलश भरा

दिया। यशोदा जी ने चन्दन का बना पीढ़ा (काष्ठासन) रखवा दिया और दीपक में चारों बातियाँ जला दी गयी। यशोदा जी हीरा और मोती का दान देती है लुटा रही हैं, और बार–बार कृष्ण कन्हैया को गले से लगाती जा रही हैं। यह गीत वृत्तांत भी कहता है, चित्त भी हरता है और दृश्य भी वर्णन कर देता है।

सजनी नागर नन्दा शरद को चन्दा।
कमल नयन घुंघराली अलकै घुंघराली अलकें क्रीट मुकुट की कोने झलकैं।
बलि–बलि जावें मुनिवृन्दा शरद को चन्दा। सजनी नागर ....
पूरन ब्रह्म सकल घट वासी वृन्दावन के ओ सुख राशी।.....
गिरिधर आनन्द कन्दा शरद को चन्दा।। सजनी नागर.......
मोर मुकुट पीताम्बर वारो गोपिन प्राणनयन को तारो।
माधव परमानन्दा शरद को चन्दा।। सजनी ....
रस के भरे दोउ नयन कटोरे करत चहत हंइ चोंट चकोरे।
गुंजत मन मकरन्दा शरद को चन्दा।। सजनी ....

सखियाँ आपस में बात करती हैं कि– अरी सखी! नन्द बाबा का बेटा शरद ऋतु की चन्द्रमा के समान सुन्दर और निर्मल है। कमल जैसे सुन्दर आँखें है, घुंघराले उनके बाल हैं, और सिर पर बंधे मुकुट की कोने (किनारे या छोर) झलक रही है, चमक रही है। उन्हें देखकर अनेक मुनिगण बलि जा रहे है, समर्पित हो जाते है या मुग्ध हो जाते हैं। ये तो सब जन–जन में रहने वाले पूर्ण ब्रह्म ही हैं। यही वृन्दावन के सुखों के समूह हैं। ये ही गोवर्द्धन को धारण करने वाले हैं। यही आनन्द की मूर्ति हैं, शरदचन्द्र भी है। मोरपंख का मुकुट पहने हुए पीले कपड़े धारण किए हुए और गोपियों के प्राण जैसे साथ ही नेत्रों के तारे ये ही हैं। यही माधव लक्ष्मीपति परमानन्द मूर्ति भी हैं। दोनों नेत्रों में रस ही भरा हैं। आनन्द पूरित हैं। वे जहाँ देखते हैं, वही चोट करते हुए चकोर बना देते हैं। जिस पर दृष्टि पड़ी वह चकोर बन जाता है और वे तो चन्द्रमा हैं ही, मन रूपी भौरा गुनगुनाने लगता है, उसके ये ही मकरन्द या परागरस है।

यह गीत भगवान् श्रीकृष्ण परक है। उनके सौन्दर्य का निरूपक है।

जनम लिहिन है कन्हाई हमारे घरे बाजै बधाई।
खुलिगे जेल चले गोकुल का जमुना चली उतराई।
माता यशोदा पलना झुलावैं शोभा बरनि न जाई।
रानी यशोदा सोना लुटावैं मैंने लुटाई मिठाई।
ढोल मंजीरा नगाड़ा बाजै और बजै शहनाई।
लै–लै थाल सखिन लै आई गावइ मंगल चार।

आज कन्हैया ने जन्म ले लिया है और हमारे घर में बधाई बजाई जा रही है। उनके जन्म होते ही जेल खुल गए और गोकुल के लिए चल पड़े हैं, यमुना जी में बाढ़ आ गयी है। माँ यशोदा पालना झुला रही है। जिसकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता है। यशोदा रानी सोना लुटा रही हैं और हम लोग भी मिठाई लुटा रहे है। ढोलक, मंजीरे, नगाड़े बजाए जा रहे हैं और शहनाई भी बजाई जा रही है। सखियाँ थाली सजा–सजाकर मंगल गीतों का गान करती जा रही हैं। यह गीत भी कन्हैया श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव से अनुप्राणित है। उत्सवकालीन दृश्य का विवेचन है।

नन्द जी के द्वारे बाजइ बधइया।
यशोदा के घर प्रभु जी आए खुशी भए लोग लुगइया।। नन्दजी ...
घर–घर में मंगल सब गावें नाचै ता–ता थइया।। नन्दजी ....
झांझ मृंदग सारंगी बाजइ–बाजइ ढोल शहनइया।। नन्दजी...
कहैं हरि भक्त प्रकटे जगतारन तीनहु लोक रचइया।। नन्दजी ...

नन्द बाबा के द्वार पर बधाइयाँ बजायी जा रही हैं। यशोदा माँ के घर प्रभुजी आए है इससे सभी नर–नारी खुश हो गए है। सब लोग घर–घर में मंगल गान गा रहे हैं और ता–ता थैया के ताल में नाच रहे हैं। झांझ, मृदंग, सारंगी, ढोल और शहनाइयाँ बजाई जा रही हैं। हरिभक्त कहते हैं कि संसार को तारने वाले और तीनों लोकों का निर्माण करने वाले भगवान् प्रकट हुए हैं, उनकी बधाई बज रही है। इस बधाई गीत में भी श्रीकृष्ण का जन्मकालीन चित्रण है।

आज घर जनमें यशोदा के ललना।
मारे किलकारी मुरारी कन्हैया मइया यशोमति झुलाय रही पलना।
तोतली बोलिया यशोदा सिखावैं नन्द जी सिखावै कन्हैया का चलना।
साबित बोलिया न मुँह से निकालैं आवै मोहन का हरदम मचलना।
कहै हरिभक्त अस रूप धरि आए उनसे जगत मां न केहू केर तुलना।

आज यशोदा के घर ललना (बेटे) का जन्म हुआ है। मुरारी कन्हैया किलकारी मारते जा रहे है और यशोदा जी पलना में उन्हें झुलाती जा रही हैं। यशोदा जी उन्हें तोतली भाषा में बोलना सिखाती हैं और नन्दबाबा कन्हैया को चलना सिखा रहे हैं। कन्हैया भी पूरी बोली मुँह से नहीं निकालते हैं। प्रायः वे मचलते रहते हैं। हरिभक्त का कहना है कि ऐसा रूप धारण कर आए हैं कि उनसे संसार में किसी की तुलना नहीं की जा सकती। यह बालकृष्ण का दृश्य है, जिससे यह गीत बना है।

बधावा हमरे आज छम–छम बाजइ।
हमरे ससुर जी ढोलक लै आए सासूरानी आज छम–छम नाचै। बधावा..
हमरे जेठा जी सारंगी लै आए जेठानी रानी आज हिस्सा मांगै। बधावा..
हमरे देवरा जी नगरिया लै आए देवरानी मोरी आज चौका बर्तन मांगै। बधावा
हमरे ननदोई आज अपने से नाचै ननद रानी आज सोवर पोतै। बधावा.

घर–परिवार में पुत्र का पैदा होना जहाँ वंश की वृद्धि करता हैं वहीं पितृऋण से भी मुक्त करता है। यह ऐसा उत्सव का क्षण होता है, जब ससुराल और मायके दोनों ओर उत्साह भर जाता है। गीत गाए जाने लगते हैं और घर–घर बुलावा भेजा जाता है। बधाइयाँ बजने लगती हैं और बधाई के गीत भी गाए जाने लगते हैं। ये बधाई गीत या तो श्रीराम या श्रीकृष्ण के जन्म को याद कराते रहते हैं अथवा घर–परिवार और नाते–रिश्तों को पुनः स्मृत और नवीन कर देते हैं।

किसी रिमही बाला के बेटा हुआ है और वही गा रही है कि हमारे यहाँ आज छम–छम की आवाज के साथ बधाई बज रही है। ससुर जी ढोलक लेकर बजाने आ जाते हैं और सासु जी छम–छम कर नाचने लगती हैं। जेठ जी सारंगी लेकर तो आ जाते हैं, परन्तु जेठानी हिस्सा बांट की कहने लगती है। देवर जी तो नगरिया बजाने लगते हैं, परन्तु देवरानी चौका बर्तन का हिस्सा मांगने लगती है। वहीं ननदोई स्वयं नाचने लगते हैं और ननद सोवर पोतने लगती है।

यह गीत लोक स्वभाव का निरूपण करने लगता है और इतने उत्साह उमंग को देखकर जेठानी, देवरानी दोनों में कल्मष भाव पैदा हो जाता है। और वे अपने को इससे पृथक् करने का प्रयास करती हैं। बधाई बजने का अर्थ है भावी उत्तराधिकारी आ गया है यह देख सास तो नाच रही हैं, परन्तु जेठानी–देवरानी को संकेत मिलता है कि वे अब अपना संसार पृथक् सोचने लगेंगी।

जुग जुग जियइं हो ललनमां हम घरै जई।
जइसै बढ़ै गंगा जमुना के पानी ओइसै बढ़इ हो ललनमां । हम घरै....
जइसै तेज चन्दा सूरज के होत है तइसै बढ़इ तोर ललनमां। हम .....
बड़ी उमरिया होय ललना कइ नाम करइ सगले जहन मां। हम ..

गीत कहता है कि बेटा युगों–युगों तक जीता रहे और हम घर जायें। जैसे गंगा और यमुना में पानी बढ़ता रहता है, वैसे ही बेटा बढ़ता रहे और हम घर जाते रहें। तुम्हारा बेटा सूर्य और चन्द्रमा के तेज के समान बढ़ता रहे और हम भी घर जाते रहें।

बेटे की उम्र बहुत बड़ी हो और सारे संसार में अपना नाम करें, यश को बढ़ाता रहे, यही मेरी कामना है।

इसमें गंगा यमुना के जल, सूरज चाँद के प्रकाश की तुलना करते हुए बेटे के बढ़ने की कल्पना की गयी है और सारे संसार में कीर्ति के व्याप्त हो जाने की कामना भी की गयी है। मंगलानुशंसा परक यह गीत है। गंगा और यमुना हिमालय से निकलती है और उनका जल क्रमशः बढ़ता जाता है। अनेक तीर्थों की पवित्रता को धारण करता हुआ तीर्थराज प्रयाग का अभिषेक करता हुआ समुद्र में समर्पित हो जाता है, समुद्र हो जाता है। सूरज ऊष्मा, तेज और प्रकाश तथा चन्द्रमा शील, शोभा और प्रकाश के लिए सदा स्मृत, वन्दनीय और पूज्य बने रहते है, इन्हीं से वृद्धि सागर की गंभीरता, तेज, शील, ऊष्मा, प्रकाश, शोभा से उपमित करता हुआ गीत बधाई देता है।

बधावा लाई ननदी सुनो मोरी गुइयां।
कहां से लाई सोंठ कहां से लाई पीड़ां। बधावा ......
नैहर से लाई सोंठ नैहर से लाई पीड़ां। बधावा.......
कौन खाएं सोंठ औ कौन खाएं पीड़ां। बधावा ....
जच्चा खाएं सोंठ और जच्चा खाए पीड़ां। बधावा.......

गीत में सखियों का संवाद वर्णित हुआ है। मेरी सखी सुनो, मेरी ननद बधाई लेकर आ गयी है। वह सोंठ और पीड़ा (पौष्टिक लड्डू) कहाँ से लेकर आई है। मायके से ही सोंठ और वहीं से पौष्टिक लड्डू लेकर आई है। यह सोंठ और पौष्टिक लड्डू कौन खायेंगे। सद्यः प्रसूता ही सोंठ खायेगी और वही पौष्टिक लड्डू खायेगी।

यहाँ एक सखी बता रही है और दूसरी उसका उत्तर दे रही है। इसमें प्रसूता की प्रसन्नता का यही विषय है कि सभी खाद्य सामग्री उसके मायके से आई है और उसी के खाने के लिए आई है। बधाई के साथ जच्चा के लिए पौष्टिक मोदक बनाए जाते हैं, खिलाये जाते है, इसी का वर्णन हुआ है।

अनन्दै भई एहि नगरी हो आज अनन्दै भई।
जुग–जुग जिएं बाबा फलानेराम जिनकर बसाई यही बखरी हो । आज..
जुग–जुग जिएं चाचा फलानेराम जिनकर बसाई यही बखरी हो । आज..
जुग–जुग जिएं भइया फलानेराम जिनकर बसाई यही बखरी हो । आज.
जुग–जुग जिएं लहुरा फलानेराम जिनकर बसाई यही बखरी हो । आज.

आज इस नगरी में आनन्द हो गया, भाई आनन्द हो गया है। बाबा अर्थात्

पितामाह युगों–युगों तक जीते रहें, जिनके द्वारा यह विशालभवन बनवाया गया है। इसी प्रकार चाचा जी, भइया जी और देवर जी युगों–युगों तक जीते रहें, जिन लोगों ने मिलकर यह बखरी अर्थात् विशाल भवन बनवाया है।

गाँवों में विशालकाय भवन को बखरी कहा जाता है, परन्तु उसका उत्तराधिकारी जब बालक पैदा होता है, तब उस बखरी के प्रत्येक स्थान–स्थान पर आनन्द मनाया जाता है। यह गीत उनके दीर्घजीवन की कामना करता है जिनकी बनवायी बखरी में नवप्रकाश अथवा नवजात पैदा हुआ है।

बाजी रे बाजी बधइया बड़ी भोर कौशल्या घर रामा भए।
सासु जो अइहैं पिपरी पीसन को मांगे अपना नेग,
देवइ दइ देवइ मैं वेदिया उतारि कौशल्या घर राम भए।
जेठी तो आवइं पीड़ां बंधन को मांगइं अपना नेग
देवइ दइ देवइ मै हरवा उतारि कौशल्या घर रामा भए।
लहुरी जो आवइं चरूआ चढ़न को मांगइं अपना नेग
देवइ दइ देवइ मैं कंगना उतारि कौशल्या घर रामा भए।

बड़े सुबह अर्थात् उषःकाल में ही बधाई बजने लगती है, क्योंकि कौशल्या के घर में राम जी जन्म लिए हैं। सासु जी पीपर पीसने के लिए आयेंगी और अपना नेग मांगती हैं। मैं नेग में बेंदी उतार कर दे दूँगी कि राम जी कौशल्या के घर हुए हैं। यदि जेठानी जी पीड़ा बांधने के लिए आयेंगी और अपना नेग मांगेंगी, तो मैं अपना हार ही उतार कर दे दूँगी। क्योंकि कौशल्या के घर राम जी हुए है। देवरानी जी यदि चरूआ बनाने को आएंगी और अपना नेग मांगेगी, तो अपना कंगन उतार कर मैं उन्हें भी दे दूँगी। क्योंकि कौशल्या के श्रीरामजी हो गए हैं।

पुत्रोत्पत्ति के समय बड़े भोर ही बधाई बजने लगती है। उस आनन्द में दान–पुण्य का भी उल्लास होता है। सास का पीपल पीसकर देना, जेठानी का पीड़ा बांधना, देवरानी का चरू बनाकर देना, परिवार में होता है। बहू अर्थात् जननी माँ सबको उत्साह में, उल्लास में दान करती है। सास को बेंदी देने, जेठानी को हार देने और देवरानी को कंगन उतार कर देने का विवरण गीत में किया जाता है।

अवध में जनमे राम सलोना।
बन्दनवारैं बंधी दरवाजे कलश धरें दोउ कोना। अवध ....
रानी कौशिल्या ने बेटा जायो राजा दशरथ को छौना। अवध ....

रानी कौशिल्या ने कपड़े लुटाए राजा दशरथ ने सोना। अवध........
हीरा मोती जड़े पलना में नजर लगे ना टोना । अवध........

सांवरे सलोने रंग वाले श्रीराम अयोध्या में जन्म लिए हैं। दरवाजे में बन्दनवारें बंध गयी हैं और दोनों कोनों में कलश रखे हुए हैं। रानी कौशल्या ने बेटा पैदा किया है जो कि राजा दशरथ का छौना अर्थात् बेटा है। रानी कौशल्या ने कपड़े लुटा दिए है और राजा दशरथ ने सोना लुटा दिया हैं पालना में हीरा, मोती दोनों जुड़े हुए है, कहीं उनमें नजर न लग जायें, कहीं टोना न लग जाए।

यह बधाई गीत उत्सव का वर्णन करता है। वन्दनवारों से घर सजाया जाता है, कलश भरे जाते हैं, कपड़ों का दान किया जाता है, सोना भी दान करते है। पलना बेटे को दिया जाता है, जिसमें हीरा–मोती जड़े रहते हैं। ऐसी व्यवस्था की जाती है, जिसमें बेटे को नजर न लग सके।

जनमें है रामा अवध चलो सजनी।
ढेकरिन तो नेग मांगइ नारा की छिनौहीं।
कौशल्या की चीर मांगइ लाल की नहौहीं। जनमें है रामा........
सासु तो नेग मांगइ चेरूआ की चढ़ौहीं।
कौशल्या की बेसर मांगै चेरूआ की चढ़ौहीं।
जनमें है रामा अवध चलो सजनी।
जेठानी तो नेग मांगइ लड्डू की बधौहीं।
कौशल्या की तिलरी मांगइ लाल की खिलौहीं। जनमें है रामा...
लहुरी तो नेग मांगइ बिलुई की रंधौही।
कौशल्या के कंगन मांगइ पलंगा के बिछौहीं। जनमें है रामा.....
ननदी तो नेग मांगै सोवरि की पोतौहीं।
कौशल्या की पायल मांगै काजल की अंजौहीं। जनमें है रामा....
देवर तो नेग मांगै बंशी की बजौहीं।
हथवा के कंगना मांगै कलश की उतरौहीं। जनमें है रामा....

सखियों की परस्पर चर्चा में गीत बनता है। सखी! अयोध्या में राम का जनम हुआ है, चलो वहीं चलते है। ढेकरिन बेटे के नारा काटने का और उसे पहली बार नहलाने का नेग कौशल्या की साड़ी मांग रही है। सास जी तो बाँह पकड़ने का नेग कौशल्या की नथुनी मांग रही है। राम जन्म हुआ है अस्तु– हे सखी! अयोध्या चलते हैं। जेठानी भी लड्डू बांधने का नेग मांगती है, कौशल्या की तिलरी अर्थात् तीन लड़ों

वाला हार बेटे को खेलाने का नेग मांगती है। देवरानी हल्दी भात (बेलुई) को बनाने का नेग मांगती है, पलंग बिछाने का नेग वह कौशल्या का कंगना चाहती है। ननद जी सोवर प्रसूति गृह पोतने (पुताई करने) का नेग और बेटे के काजल आंजने का नेग कौशल्या जी का पायल माँगती है। देवर जी बंशी के बजाने और कलश (घड़े) के उतारने का नेग भी हाथ का कँगन मांगते है। राम के जनम पर चलो अयोध्या चलते हैं। यह गीत भी जन्म समय के होने वाले कार्यों के प्रसन्नता पूर्वक दिए जाने वाले नेगों का वर्णन करता है।

जनम लिहिनि रघुरइया अवधपुर बाजी बधइया।
का हइ नाम पिता का उनके का है नाम उनकी मइया। अवधपुर....
दशरथ नाम पिता का उनके कौशल्या उनकी मइया। अवधपुर......
धनि रे अयोध्या धनि राजा दशरथ धनि रे कौशल्या मइया। अवध ....
सुमन वृष्टि तहं नभ ते होई अस्तुति करइं मुनि रइया।।

श्री रघुराई ने जन्म लिया और अयोध्या पुरी में बधाई बजने लगी है। अरे! उनके पिता और माता का क्या नाम है। उनके पिता तो दशरथ महाराज है और माता उनकी कौशल्या जी हैं। धन्य है अयोध्या, धन्य है राजा दशरथ और धन्य है माता कौशल्या। आकाश से फूलों की वर्षा हो रही है और मुनि लोग स्तुति करने लगे हैं।

यह बधाई का पद श्रीराम जन्म के महत्त्व को प्रकाशित करने का ही उपक्रम करता है। हर्षातिरेक से लोग बधाई बजाते हैं और गाते हुए कहते हैं कि राम जी ने जन्म ले लिया है। उनके माता–पिता का नाम बताते हैं। इनके जन्म से अयोध्या धन्य हो जाती है और दशरथ धन्य हो गये हैं। साथ ही कौशल्या माता भी धन्य है। इनके जन्म से आकाश से वर्षा होती है, सारे मुनियों ने वन्दना भी की है।

चला चली अवध नगरिया जनमें हैं रघुराई।
कौन महीना कौने दिन जनमें कौन पाख में आई।। चला....
कौने घड़ी वा शुभदिन आए कौने चली के माई। चला .....
नखत पुनर्वसु चैत के नवमी सुकुल दुपहरिया आई। चला ....
जनमें रघुबर या धरती मां जन मां खुशी समाई। चला......
भरत हंइ जनमी कैकयी रानी दूनउं सुमित्रा माई। चला....
रानी कौशल्या की गोद जुड़ानी रघुबर जनमें है माई। चला.....
कौन लुटावइं धन मन सोना काहे के दान करावैं। चला.....
काहे घर घर बजइ बधइया काहे बीन बजावैं। चला....

राजा लुटावे धन मन सोना गउअन के दान करावैं। चला....
राम जन्म की बजत बधइया घर घर बीन बजावैं। चला...

सखियाँ परस्पर बातें करती हैं और कहने लगती हैं कि चलो भाई अयोध्या नगरी चलते हैं, वहाँ राम जी जनम ले चुके हैं। पृच्छा है कि कौन सा महीना था, कौन सा दिन था और कौन सा पक्ष था। क्या शुभदिन था, कैसी शुभ घड़ी थी। इसी का उत्तर है कि उस समय नक्षत्र पुनर्वसु था, महीना चैत्र का था, शुक्लपक्ष की नवमी तिथि थी, समय दोपहर का आ गया था, तभी इस धरती में राम जी ने जन्म लिया। संसार में खुशियाँ छा गयी। कैकंयी रानी ने भरत को जनम दिया और दोनों भाई लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न को सुमित्रा माता ने जन्म दिया। रानी कौशल्या जी की गोद शान्ति पूर्ण हो गयी, क्योंकि राम जी ने जन्म लिया। अब कौन सोना की लूट करा रहा है और किस–किस का दान करा रहा है। घर–घर में बधाई क्यों बज रही है और बीन क्यों बज रहे है। राजा दशरथ धन और मन इच्छित सोना लुटा रहे हैं। गायों का दान भी करा रहे हैं। राम जी के जन्म की बधाई बज रही है, इसलिए घर–घर बीन बजाई जा रही है।

सखियों की आपस की बातों में श्रीराम के जन्म प्रसंग के अनेक विध प्रश्नोत्तरों को गीत में संकलित किया गया है।

बाजत अवध अनन्द बधाई।
चैत्र शुक्ल नवमी तिथि मंगल मध्य दिवस प्रकटे रघुराई। बाजत....
बरनि न जाय सुकृत दशरथ के कौशल्या के भाग बड़ाई। बाजत....
भूषण बसन रतन बहु मोलन हरषि अवधपुर कीन्ह लुटाई। बाजत...
सुन्दरि मंगल गावत घर–घर परमानन्द महा छवि छाई। बाजत....
श्याम वदन सब अंग मनोहर अनुपम सुत कौशल्या जाई। बाजत....

अयोध्या में आनन्द के कारण बधाई के बाजे बज रहे हैं। चैत के महीने के शुक्ल पक्ष की नौमी तिथि मंगलवार की दोपहर में राम जी प्रकट हुए थे। दशरथ के सत्कर्म वर्णन करने योग्य नहीं है और कौशल्या जी के भाग्य का बड़प्पन कौन वर्णन करे? दोनों बड़े ही भाग्यवान् है। आभूषण (गहने), कपड़े, बहुमूल्य रत्न प्रसन्न हो–होकर अयोध्या में लुटा दिया था। सुन्दर रूपवती औरते घर–घर मंगलगान गाती रहती हैं। सब स्थानों पर परमानन्द हो रहा है और महती शोभा चारो ओर बढ़ रही है। श्यामल रंग वाला सारे अंग जिसके मन को चुराते हों, इस प्रकार का अनुपमेय पुत्र माँ कौशल्या ने पैदा किया है। इसलिए आनन्द की बधाई अयोध्या में बज रही है।

अयोध्या में जन्मोत्सव का उल्लास चारों ओर फैला हुआ है, बधाइयाँ बज रही है। अन्न, वस्त्र, आभूषण एवं धन की लूट मचायी गयी है। सब लोगों ने नवजात शिशु को देखा और उसकी प्रशंसा कर रहे हैं।

वन्दनवार कहां लइ जाती।
नगर अयोध्या में लाला भए हैं रामा महीपत के नाती, उहइं लइ जाती।।
राजा दशरथ के पुत्र भए हैं रघुकुल वंश उजार दए बातीं, उहइं लइ जाती।
रानी कौशिल्या की कोख जुड़ानी राजा दशरथ की छाती, उहइं ... वन्दन..
सब सखियन को दान दिया है फूली नहीं समाती। उहइं ... वन्दन

अयोध्या की कोई स्त्री बन्दनवार लेकर जा रही थी। वह कहाँ ले जा रही है, यही जिज्ञासा गीत बना देती है। यह गीत इसी प्रश्न के उत्तर में पूरा हो जाता है। अयोध्या नगरी में लाला (बेटा) हुआ है जो राजा का नाती है, वही यह बन्दनवार लेकर जा रही हूँ। राजा दशरथ के पुत्र हुए हैं। रघुवंशी लोगों के कुल को प्रकाशित कर दिया हैं, वहीं बन्दनवार ले जा रही हूँ। पुत्र न होने से स्थिति ठीक नहीं थी, अब राजा दशरथ की छाती ठण्डी पड़ गयी और रानी कौशल्या की कोख (कुक्षि) भी शीतल हो गयी है। इन्होंने सारी सखियों को इतना दान कर दिया है कि वे प्रसन्तता में फूली–फूली फिर रही हैं।

यह गीत भी अयोध्या में राम जन्मोत्सव का एक चित्र प्रस्तुत कर रहा है।

आज की बधाई राजा दशरथ राय के।
गंगा फूले यमुना फूले यह सुख पाइके।
अयोध्या में सरयू फूली राम को नहलाय के।
रामा फूले श्यामा फूले यह सुख पाइके।
अयोध्या में दशरथ फूले दरशन कराय के।
चम्पा फूले चमेली फूले यह सुख पाइ के।
बागों में वो जुही फूली राम को चढ़ाइ के।
कैकयी फूली सुमित्रा फूली यह सुख पाइ के।
महलों में कौशल्या फूली राम जी को जाय के।
ब्रह्मा फूले विष्णु फूले यह सुख पाइके।
पर्वत में शिवशंकर फूले डमरू बजाइ के।
नर भी फूले नारी फूले यह सुख पाइ के।
कुटिया में सब साधू फूले शंख बजाइ के।

श्रीराम का अयोध्या में जन्म हुआ है। चारों ओर से आनन्द की बधाइयाँ आने लगीं है। आज की बधाई राजा दशरथ राय को दी जाती है। यह सुख पाकर गंगा जी और यमुना जी दोनों प्रसन्न हुई, परन्तु श्रीराम को स्नान कराने पर सरयू जी अयोध्या में अत्यन्त प्रसन्न होती हैं। राम जन्म का सुख पाकर राम और श्याम सब आनन्दित हो रहे है, परन्तु दशरथ जी को अयोध्या में श्रीराम के दरशन कराने का सौभाग्य मिलता है, अस्तु वे अति प्रसन्न हैं। चम्पा और चमेली तो अत्यन्त प्रसन्न हो ही रही हैं, परन्तु जूही तो इसलिए खुश हो रही है कि उसके फूल श्रीरामजी पर चढ़ रहे हैं। कैकेयी और सुमित्रा तो पुत्रोत्सव में प्रसन्न हो रही है, परन्तु श्रीराम को जन्म देकर कौशल्या जी विशेष प्रसन्न हो गयी हैं। इस जन्मोत्सव में ब्रह्मा और विष्णु तो प्रसन्न हो ही रहे हैं। शिवजी तो इसलिए खुश हो रहे हैं कि उन्हें डमरू बजाने का आनन्द मिला है। पर्वत में शिव प्रसन्न हो रहे हैं, परन्तु इस सुख में पुरुष–स्त्री सभी प्रसन्न हो रहे हैं। कुटिया में सारे साधु जन शंखध्वनि करते हुए प्रसन्न हो रहे हैं।

यह गीत श्रीरामजन्मोत्सव के समय सबकी प्रसन्नता का निरूपण करता है।

नृपति घर बाजत अनन्द बधइया।
रानी कौशल्या के लाल भयो री सुन्दर रघुबर छइया।
जे जैसे तैसे उठि धावहिं पुर के लोग लुगइया।
राजा लुटामइं राज धन सोनमां रानी लुटावैं गइया।
बाजत तबल मृदंग झाँझ डफ गावइं गीत गवइया।
तुलसिदास बलि जाउं चरण की लेती मातु बलइया।

राजा के घर में आनन्द भरी बधाई बज रही है। रानी कौशल्या के बेटा हुआ है, बड़ा ही सुन्दर है, रघुवंश में श्रेष्ठ है, छोटा सा है। नगर के लोग–लुगाई अर्थात् नर–नारी जो जहाँ सुनते हैं, उठकर दौड़ें चले आ रहे हैं। राजा दशरथ हाथी, धन, सोना सब लुटा रहे हैं और रानी गायें लुटा रही हैं, अर्थात् बिना मांगे ही दान किए जा रही है। तबल, मृदंग, झांझ और डफ बाजे बजाए जा रहे हैं और गायक लोग गीत गातें जा रहे हैं। तुलसीदास जी कह रहे हैं कि उनके चरणों में बलि–बलि जाऊँ। माँ बार–बार इनकी बलैया अर्थात् ध्यानपूर्वक देख रही है। यह गीत भी राम जन्म के उल्लास का निरूपण करता हुआ है।

व्रतबन्ध

रेवांचल में व्रतबन्ध या बरुआ के नाम से सभी ब्राह्मण समाज में किया जाने वाला यह संस्कार है, जिससे द्विजत्व की प्राप्ति होती है। सामान्यतया यह संस्कार आठ वर्ष से प्रारंभ हो जाता है, परन्तु इसे अधिकाधिक सोलह वर्ष तक कर ही लेने का विधान है। कुछ तो व्यय के बहाने और कुछ संस्कार की प्रवृत्ति के क्षरण के कारण यह संस्कार अब इस वयोमान में नहीं किया जाता है फिर भी अधिसंख्य घरों में यह आज भी यथासमय किया जा रहा है। यह संस्कार आध्यात्मिक या सांस्कारिक रूप से दूसरा जन्म ही कहा जाता है। कर्णरन्ध्र से गायत्री मन्त्र को अन्तराकाश में प्रविष्ट कराने की विधि ही द्विजत्व की बोधिका है। इस संस्कार को रेवांचल में बड़े उत्साह और समारोहपूर्वक मनाया जाता है, परन्तु इसमें आठ ब्राह्मणों को यज्ञोपवीत का दान और उन्हें भोजन कराना, सह भोजन कराना प्रचलित है। इसके साथ ही उपनयन विधि प्रारंभ हो जाती है और उसी मण्डप में वेदारंभ एवं समावर्तन भी सम्पन्न होता है। इनकी क्रियाओं की मात्र औपचारिकताएँ ही अब बची हुई हैं। इन तीनों संस्कारों को समवेत रूप से व्रतबन्ध के नाम से लोक परिचिति है।

इस संस्कार के पूर्व भी मटिमंगरा, मड़वा, मातृकापूजन आदि सब होता है, सबके गीत गाए जाते है, परन्तु मटिमंगरा आदि क्रियाओं में गाए जाने वाले गीतों को विवाह प्रकरण में लिखा गया है। यहाँ 'बरुआगीत' और उसी से सम्बन्धित बरुआ रिसाई के गीतों का ही संकलन किया गया है–

खेतबा बोवामइ ओनहिराम जहां उपजइ गजमोती हो, हीरा मोती लेबइ हो।
मोतिया का अरझे दुलेरुआ अजा हम लेबई गजमोती हो। हीरा ....

आजा धइ झकझोरइं आजी हिरदय लगामइ हो।
आवा ललन मोर कनियां लाला हम देबइ गजमोती हो। हीरा ....
मोतिया का विरझै दुलेरुआ माया हीरा मोती लेबइ हो।
बाबू उनके धइ झकझोरइं माया हिरदयं लगावइं हो।
आवा ललन मोरी कनियां मैं हीरा मोती देइहंउं हो।
मोतिया का बिरुझे दुल्हेरुआ आजी हीरा मोती लेबइ हो।
चाचा उनके धइ झकझोरइं चाची हिरदय लगावइं हो।
आवा ललन मोरी कनियां मैं हीरा मोती देइहौं हो।
मोतिया का विरुझै दुलेरूआ आजी हीरा मोती लेबइ हो।

गीत की शुरुआत खेती से होती है, परन्तु खेत ऐसा बोया जाता है, जहाँ गजमुक्ता पैदा होती है, हीरा–मोती पैदा होता है। दुल्हेरुआ अर्थात् संस्कार्य बालक हठ करता है कि दादा जी मैं तो हीरा–मोती ही लूँगा। आजा अर्थात् दादाजी डांटते हैं, परन्तु दादी हृदय से लगा लेती है। कहती है बेटा मेरी गोद में आओ। मैं तुम्हें हीरा–मोती दे दूँगी। इसी प्रकार बालक माँ से हठ करता है कि हीरा–मोती लूँगा। पिताजी फटकारते हैं, परन्तु माँ हृदय से लगा लेती है, कहती है बेटा मेरी गोदी में आ जाओं। मैं हीरा मोती दूँगी। चाचा भी हठ करते हुए बालक को डांटते हैं, परन्तु चाची हृदय लगाती है, हीरा–मोती देने को भी कहती है। इस प्रकार यह गीत बालक के हठ का है। माँ, दादी और चाची बेटे को रत्न देने को कहती है, पर दादा–पिता और चाचा उसे डांटने–फटकारने लगते हैं।

बेटा अब इतना समझ गया है कि वह खेत के उपजे हीरा–मोती को लेना चाहता है। खेत में बोयी जाने वाले खेती, धान्य या कृषि ही बहुमूल्य है। उसे घर का उत्तराधिकारी लेना चाहता है, परन्तु पिता उसे व्रतबन्ध में दीक्षित करेगा, उसे विद्या में दीक्षित कर देगा और एक विद्वान् बनाएग,ा जबकि वह रत्नों से, धन से आकर्षित हो रहा है। माँ उसे धन देना चाहती है, उसे हीरा–मोती दे देना चाहती है। व्रतबन्ध द्वारा वह ज्ञान की उपासना, व्रत का संकल्प, जीवन के चरम लक्ष्य के लिये समुद्यत हो जाता है।

जउने बन सिकिया न डोलइं कोइली न बोलइ।
तउने बन गए हइं दुल्हेरुआ हेरइं मृगछाला हो।
हेरे मिरगा नहि पामइं बनइ बन भटकइं हो।
घाम लागइ सिर घाम पांयन लागइ भूभुरि हो।
अरे–अरे बपवा फलानेराम बपवइ छत्र तनावा हो।

सुना हो चाचा फलानेराम ऊंचे छत्र तनावा हो।
सुना हो दादा फलानेराम ऊंचे छत्र तनावा हो।
सुना हो आजा फलानेराम गलियन छत्र तनावा हो।

ऐसे बन में मृगछाला ढूँढने बेटे का पिता गया है, जहाँ सींक (तृण) भी नहीं हिलती–डुलती है। कोयल भी वहाँ नहीं बोलती है। वन में ही भटकते रहते हैं और ढूँढकर भी हरिण नहीं मिल रहा है। सिर में तेज धूप लग रही है। पैरों को धूप से तपी गरमागरम धूल (भूभुर) जला रही है। अरे पिताजी! छत्र या छाता ऊपर लगवा दो, चाचाजी ऊँचा छाता लगवा दो। दादाजी, पितामहजी गली–गली छाता लगवा दो; जिससे सिर पैर का जलना बन्द हो जाय।

यह गीत संकेतित करता है कि व्रतबन्ध में बटु को–माणवक को ब्रह्मचारी बनना होता है और मृगचर्म के बिना वह कभी ब्रह्मचारी नहीं बन पाता है। मृगछाला लेने बालक के पिता, पितामह जाते हैं। वन में जलने वाली धूप है और पैर जलने लगता है, वह वन जो सुनसान होने से वहाँ निर्भय हरिण मिल जाना संभावित है।

जउने बन सिंकिया न डोलइ वन पक्षी न बोलइं।
ओहीं बन होइके आजा फलानेराम हेरइं मृगछाला।
हँसि–हँसि पूंछइ हिरनिया का करबे मृगछाला।
हमरे दुल्हेरुआ हैं नतिआ उनहिन के बरुआ हो।

जिस वन में घास की सींक भी हवा से नहीं डोल रही हो, वनवासी पक्षी जहाँ कलरव नहीं कर रहे हों, उसी वन में बेटे के दादाजी गए हैं और मृगछाला ढूँढ रहे हैं। हिरणी हँसती–हँसती पूछने लगती है कि भइया मृगछाला क्या करोगे? तब दादा ने बताया कि हमारे नाती ब्रह्मचारी बने हैं, उन्हीं का बरुआ अर्थात् यज्ञोपवीत से संस्कार करना है।

यह एक प्रासंगिक स्थिति है, जब यज्ञोपवीत संस्कार में पितामाह मृगचर्म की चिन्ता करता था। ब्रह्मचारी ऐणेयाजिन धारण कर वेदाध्ययन करता था, परन्तु अब यह उसके हिरण के मारे मृगचर्म कहाँ मिल सकेगा? यह दृश्य एक संवेदना को भी प्रकट करता है।

अरे–अरे कातिक कुँअरवा चइत कबइ लगिहइं हो।
कबइ आजा जइहीं बजरिया कपड़ा लइ अइहीं हो। (जनेऊ)
कबइ आजी रंगिहीं पिअरिया बरत कबइ होइही हो। (बरुआ)

अरे–अरे माया के दुल्हेरुआ चइत कबइ लगिहंइ हो।
कबइ बापू जइहैं बजरिया कपड़ा/जनेउ लइअइहैं हो।
कबइ माया रंगिही पिअरिया बरत/बरुआ कबइ होइही हो।

बेटे का बरुआ करना है, परन्तु यह बसन्त ऋतु में ही करना सुखद रहता है, अस्तु गीत कहता है कि– अरे! अभी तो क्वांर (आश्विन) और कार्तिक का महीना ही लगा है, पता नहीं चैत्र का महीना कब तक आएगा, क्योंकि तब मेरा व्रतबन्ध होगा। मेरे दादा जी कब बाजार जाएंगे और जनेऊ कपड़ा लेकर आएंगे और दादी जी कब पिअरी रंगेगी, अर्थात् धोती पीली हल्दी से कब रंग देगी और कब मेरा व्रतबंध (बरूआ) होगा। अरे माँ के बेटे! चैत कब लगेगा, पिताजी कब बाजार जाएंगे और जनेऊ कपड़ा लाएंगे, साथ ही माँ जी कब पीली धोती रंगेगी और कब बरुआ या व्रतबन्ध होगा।

इस गीत में चैत महीने में व्रतबन्ध की प्रतीक्षा तो की ही गयी है, परन्तु पीली धोती, यज्ञोपवीत की भी साथ ही चिन्ता की गयी है। चैत्र माह में अन्य कोई शुभ कार्य नहीं होते हैं, परन्तु यज्ञोपवीत के लिए शुभ माना जाता है। मीन के सूर्य गुरू के घर (धनु और मीन) में रहने पर अन्य शुभ कार्य तो नहीं होते हैं, परन्तु व्रत का आरंभ किया जाता है। यज्ञोपवीत संस्कार की तैयारी छह महीने पूर्व से ही की जाती है।

ऊँचे ओसरवा नवाघर जहाँ खम्भा कुंदेर के भाए हंइ हो।
ओहीं ओढंकी है उनकी माया सुना पिया साहेब हो।
पांच बरिस केर दुलेरुआ बरुआ कै डारित हो।
लागी त घिउ गुर गोहुंआ बम्हना केर भोजन बरूआ मा कुछ लागी है हो।
मैरे मां गोहुंआ बोवउबै कछरवा मा रहिला हो।
पाँच बरिस केर दुल्हेरुआ बरुआ कइ डारब हो।
काशी के पण्डित बोलउबै सुदिन बनबउबै हो।
काशी के मलिया बोलबउबइ त पंचरतनी बनबउबइ हो।
काशी के सोनरा बोलबउबइ त जामा सियबउबइ हो।
काशी के लोहरा बोलबउबइ त कंगना बनबउबइ हो।
पाँच बरिस के दुल्हेरुआ बरुआ कइ लेबइ हो।
काशी के बढ़ई बोलबउबै त खड़ाऊं बनबउबै हो।
पाँच बरिस के दुल्हेरुआ बरुआ कइ लेवइ हो।
पाँच बरिस के रमइया बरुआ भल सोहइ हो।

कुन्देर के खंभों का नया घर बना है, जिसमें ओसार अर्थात् अन्तःपुरीय चौपाल ऊँची बनी हुई है। उसी ओसार में बेटे की माँ टिकी बैठी है और अपने पति से कहती

है कि हे प्रियतम! सुनो, बेटा पाँच वर्ष का हो गया है, अब इसका बरुआ अर्थात् यज्ञोपवीत संस्कार कर डालते हैं। घी, गुड़, गेहूँ लगेगा और ब्राह्मण भोजन कराना होगा। मैर अर्थात् काली मिट्टी वाले खेतों में गेहूँ की बोनी करा देंगे। साथ ही कछार भूमि में चने की खेती कर लेंगे और बरुआ कर लेते हैं। काशी के पण्डित बुला लेंगे, सुदिन या मुहूर्त निकलवा लेंगे। काशी से माली बुला लेंगे उसी से मौरी बनवा लेंगे। काशी का ही सोनार बुलवा लेंगे और पंचरत्न का आभूषण बनवाएंगे। वहीं का दर्जी बुला लेंगे और जामा की सिलाई करा लेंगे। काशी का लोहार आएगा और कंगना बनवा लेंगे। काशी से ही बढ़ई बुलवा कर खड़ाऊं (पादुका) बनवा लेंगे। पाँच वर्ष का बेटा है; उसका बरुआ करना ही अच्छा लगेगा। यह गीत बरुआ का चित्र प्रस्तुत करता है। माँ बरुआ के लिए आग्रह कर रही है। पाँचवे वर्ष ही संस्कार की चिन्ता करने लगती है। काशी विद्या का केन्द्र है। वहीं उपनयन वेदारंभ होता था। यहाँ पर ब्राह्मण भोजन, खड़ाऊँ, मौरी, पंचरतनी सबका उल्लेख कर संस्कार का स्वरूप प्रकट करने का प्रयास हुआ है।

ऊंचे ओसरबा नवइ घर जहां खम्ब कुंदेरिउ हो
ओहीं ओढ़कि हां आजी त नतिया से अरज करइ हो।
आठ बरिस का ललनमा त बरुआ कइ डारहु हो।
तकथा बइठ हां ओनहिराम त धना से अरज करइ हो।
नहि घर गोहुंआ न चाउर बरुआ कइसे होइहइं हो।
मैरे मां गोहुंआ बोवउवइ कछरबन लहिलउ हो न।
काशी से कंदुआ बोलउबइ नान्ही बुंदिया छनउबइ हो न।
काशी से पंडित जो अइहीं अच्छे–अच्छे वेद सुनइहीं हो न।

कुंदेर के खम्भों से बने हुए नए घर में ऊँचा ओसार बना हुआ है, उसी में दादी टेका लगा कर बैठी हुई है और नाती (पोते) को देखकर उससे कहने लगती है। पति से अर्थात् बेटे के दादा जी से कहती है कि बेटा आठ वर्ष का हो गया है, उसका बरुआ कर डालिए। तकत या लकड़ी की चारपाई पर बैठे दादाजी अपनी पत्नी से कहते हैं कि घर में न तो गेहूँ है और न ही चावल है, तब बरुआ किस प्रकार से हो सकेगा। मैर अर्थात् काली मिट्टी के खेतों में गेहूँ की बोनी करा दूँगा और नदी के कछार के खेत में चना की बोवनी करा देंगे और काशी से हलवाई बुला लेंगे। बूंदी छोटी–छोटी बनवा लेंवेगे और काशी से ही पंडितों को बुलवाएंगे जो कि अच्छी तरह से वेदपाठ सुना देंगे।

यह गीत आठ वर्ष में बरुआ की सूचना देता है। साथ ही ब्राह्मण भोजन के लिए गेहूँ और चावल का उल्लेख करता है। मिष्ठान्न की आवश्यकता का भी उल्लेख हुआ है। वेदारंभ में वैदिक पण्डितों की आवश्यकता और उनकी उपलब्धता का भी निरूपण किया गया है। विद्या केन्द्र काशी होने से वेदज्ञ पण्डितों को काशी से ही बुलवाने का वर्णन किया गया है। रेवांचल का ब्राह्मण वर्ग बरुआ या व्रतबन्ध संस्कार को अत्यन्त उत्साह और उल्लास से करता है। यह गायत्री की उपासना प्रारंभ करने का; वैदिक विद्या के श्रीगणेश करने का संस्कार है, इसमें वटु या माणवक या ब्रह्मचारी बनाया जाता है। दुःखद है कि इस परम्परा का भी क्रमशः ह्रास होने लगा है और अब प्रौढ़ों का यज्ञोपवीत रश्म अदायगी के लिए होने लगा है।

हरे–हरे पर्वत सुअना नेउत दइ आवउ हो।
गांव के नांउ न जानेउं ठाकुर नहिं चीन्हेउं हो।
गांव के नां अयोध्या ठाकुर राजा दशरथ हो। हरे–हरे ...
पहिला नेउत राजा दशरथ दुसर कौशिलिआ रानी।
तिसरा नेउत रामचन्द्र तौ तीनउ दल आवइं हो। हरे–हरे...

व्रतबन्ध करने की योजना बनते ही निमंत्रण देने के लिए पर्वत में रहने वाले हरे–हरे रंग के तोता को कहा गया। उसने कहा कि न गाँव का नाम जानता हूँ, न ही ठाकुर को पहचानता हूँ। तब उसे बताया गया कि गाँव का नाम अयोध्या है, ठाकुर राजा दशरथ हैं और प्रथम निमंत्रण राजा दशरथ को देना, दूसरा निमंत्रण रानी कौशल्या को दे देना, तीसरा निमंत्रण रामचन्द्र जी को देना, जिससे तीनों लोक निमंत्रण में आ जायें।

तोता को कोई रोक–टोक नहीं करता। वह गाँव–गाँव की अमराई में जाता है। हर पेड़ के फल में अमृत भरता है, वह तो पढ़ाओ तो पढ़ लेता है, रट लेता है और तोता रटन्त की प्रसिद्धि पा जाता है। बरुआ में वेदारम्भ है। श्रुतियों को सुनकर ही पढ़ा रटा जाता है, अस्तु इसका निमंत्रण देने हरा तोता ही जाता है। उसे समझाना पड़ता है कि अयोध्या जाना, राम जी वहीं रहते है, दशरथ राजा है, रानी कौशल्या हैं। अभिप्राय यही है कि यह निमंत्रण व्यक्तिशः नहीं है परिवारशः है। माता–पिता और बेटा तीनों को निमंत्रण दिया जाता है। तीनों के आने से ही व्रतबन्ध की साक्षी में एक परिवार सामने रह पाएगा।

अरे–अरे करन सुगनमा नेवत पहुंचावहु हो।
पहिलइ नैउतबा ननदिया दूसर ननदोइयउ हो।

तीसरा नेवतवा भैननमा सबइ मोर आवइ हो।
अस गज गहिनी ननदिया नेवत नहिं आवइ हो।

इस गीत में निमंत्रण देने का वर्णन किया गया है। करन तोता को सम्बोधित करके कहा गया है कि– हे करण तोते! कृपया निमंत्रण पहले ननद को फिर ननदोई को और तब भांजों को दे आना और आग्रह करना कि वे सब हमारे ही हैं, सभी निमंत्रण पर अवश्य आयें। ननद ऐसी गम्भीर बनी हुई है कि वह निमंत्रण देने पर भी नहीं आ रही है।

भारतीय परिवार व्यवस्था में बहन का स्थान सर्वोच्च है। विवाह होने के बाद ससुराल में जाने के बाद भी उसकी ममता, उसका स्नेहाकर्षण सम्बन्धों की दृढ़ता और पारिवारिक सामरस्य यथावत् बना रहे, एतदर्थ प्रत्येक शुभकार्य में नेगों की परम्परा रेवांचल के घर–परिवारों में आज भी विद्यमान है। ननद से ही ननदोई और उन्हीं में भांजा (भागिनेय) का महत्त्व है। रिमहों के यहाँ भांजे को सर्वाधिक पवित्र और पूज्य माना जाता है, वह बहन का प्रतिनिधि भी है, उत्तराधिकारी भी है।

गंगा जमुना बीच आंतर बीच पेड़ कदम केर हो।
ओहीं तर बइठ पंडितवा ऊंत कातइ जनेइयउ हो ना।
हँसि–हँसि पूंछइ पंडितवा जनेउ का करबइ हो।
हमरे ब्रह्मचारी ओनहि राम जनेइया उनका चाही हो।

इस गीत में यज्ञोपवीत को केन्द्र में रखा गया है। गंगा और यमुना के बीच के क्षेत्र में कहीं कदम्ब का पेड़ लगा हुआ है और उसी कदम्ब के पेड़ के नीचे या छाया में पंडित जी बैठे हैं। वे सूत की कताई कर रहे हैं, यज्ञोपवीत के लिए सूत की कताई कर रहे हैं। हँसते–हँसते पंडित जी से जिज्ञासु ने पूछ लिया कि यह जनेऊ क्या करोगे। इसके साथ ही सापेक्ष प्रसंग जोड़ता है कि हमारे घर में फलाने राम ब्रह्मचारी हैं, उन्हें यज्ञोपवीत की जरूरत है।

यह गीत पण्डित के यज्ञोपवीत बनाने की बात उजागर करता है। पेड़ के नीचे सूत कातने के बाद ही जनेऊ बनेगी, यह ब्रह्मचारी के लिए जनेऊ बन रही है। इसमें यज्ञोपवीत की ही महिमा का अंकन किया गया है।

ऊंच ओसरबा नबइघर जहां खम्भ कुंदेरिउ हो।
ओही ओढ़कि बइठी आजी ऊता भीख संभारइं हो।
ठुमुकि–ठुमुकि पगुढारइं ऊंता मड़ए पहुंचि गई हो।
एक पग ढारइं ओसरबा त दूसर अंगनबउ हो।

कुन्देरे हुए खम्भों का नया घर बनाया गया है, जिसमें ऊँचाई पर ओसार बना है। उसी में टेका लेकर दादी जी बैठी हैं और ब्रह्मचारी के लिए भिक्षापात्र तैयार कर रही हैं। सम्हाल–सम्हाल कर पैर रखती हुईः वे मण्डप में पहुँच जाती हैं। एक पैर ओसारे में रखती हैं तो दूसरा पैर आँगन में रखती है। वहीं मण्डप है, ब्रह्मचारी है, वहीं भिक्षापात्र ब्रह्मचारी को देना हैं।

यह गीत बरुआ में भिक्षापात्र पर केन्द्रित है। ब्रह्मचारी बालक के लिए भिक्षान्न देने को बहुत पुनीत कार्य रेवांचल में माना जाता है। सारा गाँव, सगे–सम्बन्धी इकट्ठा होते हैं और यज्ञोपवीत, मृगचर्म, मेखला धारी गायत्री मन्त्र पाने वाले सद्यःब्रह्मचारी को भीख डालने हेतु भीड़ लग जाती है। घर के लोग, सम्बन्धी लोग, परिचित लोग क्रमशः भिक्षा दान करते हैं। चूंकि गृहस्थ का यह माणवक अब कहीं बाहर पढ़ने नहीं जाने पाता है, अस्तु यह भिक्षान्न आचार्य, पूज्य संबंधी और यथा नियम लोग लेते हैं। दादी की उपस्थिति में यज्ञोपवीत और आनन्दवर्द्धक होता है। ऊँचा बना बड़ा घर, जिसमें लगे खम्भे, जहाँ दादी ने वृद्धता के कारण टेका लिया है और वे भिक्षा हेतु वस्तुएँ सजा रही हैं। घर से निकलकर क्रमशः चौपाल और आँगन के बाद मण्डप में आ जाती हैं। यही गीत गाते हुए सभी कहना चाहते हैं।

व्रतबन्ध के पूर्व मातृका पूजन की परम्परा है, उस समय अनेक प्रकार के गीत गाए जाते हैं।

आज कइ विधिया सबइ कोउ पायैं हो।
तखत बइठे राजा दशरथ हुलसैं हो
हुलसि–हुलसि राजा पटना लुटावैं हो।
मचिअइ बइठी कौशल्या रानी हुलसै हो,
हुलसि–हुलसि कौशल्या रानी आरती उतारै हो।
अवधपुरी कै सब सखियां हुलसइं हो
हुलसि–हुलसि सखियां मंगल गावइं हो।
विन्द्रहि बन के मेघा जो हुलसइं हुलसि–हुलसि जल बरसइं हो।

आज निमंत्रण पूजा की विधि मनायी जा रही है, इसका फल सब लोग प्राप्त करें। तखत या काष्ठ निर्मित चारपाई में राजा दशरथ जी बैठे हैं, हर्षित है और प्रसन्न हो होकर राजा कपड़ों की लूट करा रहे हैं। मचिया में बैठी हुई कौशिल्या रानी प्रसन्न हो रही हैं और वे खुश हो–होकर सबकी आरती उतारती जा रही हैं। अयोध्या की सारी सखियाँ प्रमुदित हो रहीं है, वे सखियाँ खुश हो–हो कर मंगलगीत का गान कर रहीं हैं। यदि वृन्दावन के बादल खुश होंगे, तो प्रसन्न होकर पानी बरसेगा।

घर का स्वामी, स्वामिनी, सखियाँ सबके आनन्द की विवेचना है। गृह के उत्सव में सबकी सहभागिता होती है।

माघै बरुआ रे संहिचल बैसखवा मां पहुंचे
बीचै मां परी रे महानदी ठाढ़े बरुआ पुकारै।
सुना हो आजा राजा दशरथ नैया लइके आवा
ना मोरे नाव नेवरिया ना मोरे नइया के खेवइया।
तोहरे बरूआ के साथ पइर दह आवा
घाम लागइ सिर घाम पाये भुंभुरी लगत है।
सुना हो अजवा फलाने राम ऊंचे छत्र तनावा हो।

लोक गीत लोकदृश्यों के साक्षी तो होते हैं और कभी–कभी अभिप्राय की दृष्टि से असमंजस की स्थिति भी निर्मित कर देते है। माघ में बरूआ होना था, परन्तु वह वैशाख में अब होगा। मानवीकरण करते हुए बरुआ के लिए कहा गया है कि वह माघ से चलता हुआ वैशाख में पहुँच गया। जहाँ बीच मार्ग में महानदी पड़ती है, तब बरुआ पुकारता है कि अरे आजा (पितामह) राजा दशरथ जी! नदी में बाढ़ आ गयी है; नौका लेकर आ जाओ। दशरथ जी कहते हैं कि न तो मेरे पास नाव है और न ही नाव चलाने वाला ही है। बेटा तुम्हारा बरुआ है उसी के साथ तैरते हुए नदी पार कर लो। इसी प्रकार धूप होने पर भावी ब्रह्मचारी कहता है कि सिर में धूप और पैर में तपती हुई धूल (भूभुर) जला रही है, अतः हे दादाजी! ऊपर छाता लगवा दो, जिससे पैर में भी ताप न लगे और सिर पर भी धूप न लगे।

यह बरुआ का संकल्प ही पार लगाता है और माघ से वैशाख तक में धूप तेज हो जाती है, तब ब्रह्मचारी को धूप की तपन कष्टदायक हो जाती है।

कजली के बन एक नरियर–नरियर कौने गुन हरिअर।
धौं मेघा बरसिगें नहि मोही सींचै रे मलिनियां।
नहिं मेघा बरसिगें आज फलानेराम के बरुआ ऊंता दुधवा सिंचावै।
धरमी हैं उनके अजबा फलानेराम उनहि गुन हरिअर हो।
धरमी है उनके बपबा फलानेराम नरियल उन्हहि गुन हरिअर हो।
धरमी है उनके काका फलानेराम नरियर उनहि गुन हरियर हो।

नारियल की व्रतबन्ध में आवश्यकता होती है, इसके लिए यह गीत बन गया है। कजलीवन में एक नारियल का पेड़ हरा–भरा है, उसी की जिज्ञासा होती है कि या तो बादलों की वर्षा हुई होगी अथवा मालिन ने सिंचाई की होगी। परन्तु इसकी हरियाली

का दूसरा ही रहस्य है। आज मेघ बरसे नहीं हैं, मालिन ने भी नहीं सींचा है, बल्कि आज अमुक के यहाँ बरुआ है और उन्होंने दूध से नारियल सींचा है। बेटे के दादाजी धार्मिक हैं, उनके पुण्य से नारियल हरा–भरा हैं। उनके पिता जी भी धार्मिक है, उनके कारण और उनके चाचा भी धार्मिक है, उनके भी कारण से यह नारियल हरा–भरा है।

नारियल का पेड़ हरा–भरा होने का मतलब है, धर्माराधना का फल। मेघ के बरसने से नहीं, दूध से सींचने से नहीं, बल्कि धर्माचरण के कारण यज्ञोवपीत करने वाले घर के वन में नारियल हरा–भरा है।

कइसे मनाऊं मोर लाला निकरि गएं।
दूधवा मैं देइहौ खीरिआ मैं देइहौं–देइहौं मिठाई के ढेर। मोर लाला....
आजा बिसूरैं आजी बिसूरइं लउटा ललनमां कनियां मोरे बइठा।। मोर...
हम मानब तोहरी बात, महुआ मंगउबै आमा मंगउबैं खबाउब जामुन केर गूंछ।। मोर.
खांडिन गोंहुआ पिसउबै रंधउबै पूरी के ढेर
लउटा ललनमां माया मनावइ, माया मनावैं आजी मनावैं
काकी खवावै छप्पन भोग मोर लाला निकरि गए।। कइसे...

व्रतबन्ध की समावर्तन विधि में बालक को मण्डप से बाहर ले जाते हैं, वह नाराज हो गया ऐसा प्रचलन है। उसे लोकरीति के अनुसार मामा या अन्य कोई बुलाने/मनाने जाता है। कुछ नेग लेकर वह लौट आता है। इस समय के गीतों में बालक को मनाने के विवरण मिलते हैं।

मेरा लाला या बेटा निकल गया, उसे किस प्रकार मना लूँ। दूध दूँगी, खीर खिलाऊँगी, अनेक मिष्ठान्न भी दूँगी, बेटा लौट कर घर आ जाओ। दादा देखते हैं, दादी देखती है कि बेटा लौट आओ, मेरी गोद में बैठ जाओ। बेटा तुम्हारी बातें भी मान लें। महुआ मंगाएगें, आम भी मंगाएंगे और जामुन के गुच्छे भी खिला देंगे। खांड़ी भर गेहूँ का आटा बनवा लेंगे और बहुत सी पूड़ी बनवा देंगे। बेटा घर लौट आओ तुम्हारी माँ मना रही है, दादी मना रही है। चाची छप्पन प्रकार का भोग बनाकर तुम्हे सन्तुष्ट करेगी, लौट कर आ जाओ।

घर से बाहर जाने वाला बालक ब्रह्मचारी है। वह खाद्य पदार्थों के आकर्षण से वापस आ सकता है। दूध, खीर, मीठा आदि उसके लिए खाद्य का लोभ दिया गया है। दादा–दादी खड़े–खड़े देख रहे हैं, वे उसे आम–जामुन–महुआ आदि फलों को देकर सन्तुष्ट करने का भी लोभ दे रहे हैं। गेहूँ के आटे से पूड़ी बनाने और ब्राह्मण भोजन

कराने माँ, दादी, काकी आदि छप्पन प्रकार के भोजन से उसका स्वागत करेंगी, ऐसा आश्वासन दे रही हैं। यह गृहस्थी के प्रति आकर्षण पैदा करने का उपक्रम माना है।

जइहे बेटा काशी बनारस वेद पढ़ि अइहें हो।
काहे का जैहे बेटा काशी बनारस तुम्हरे आजा है पंडित हो।
आपन दाम खरचिहैं तुमहीं पण्डित बनइहैं हो।
जावैं माता काशी बनारस वेद पढ़ि अउबै हो।
काहे का जाबे बेटा काशी बनारस तुम्हरे बापू पंडित हो।
आपन दाम खरचिहैं तुमहीं पण्डित बनइहैं हो।
जावैं चाची काशी बनारस वेद पढ़ि अउबै हो।
काहे का जाबे बेटा काशी बनारस तुम्हारे चाचा पंडित हो।
आपन दाम खरचिहैं तुमहीं पंडित बनइहै हो।

माणवक या बरुआ किया जाने वाला बालक जब पढ़ने के लिए बनारस जाने हेतु तैयार हो जाता है, उस समय उसे रोकने के लिए मामा जाता है। इसी अवसर पर गीत बनते हैं। बेटा काशी जाएगा और वेद पढ़कर आएगा, परन्तु गीत कहता है कि बेटा क्यों बनारस जाएगा। उसके दादा तो स्वयं पण्डित हैं। वे अपना धन खर्च करेंगे और तुम्हें पण्डित बनाएँगे। बेटा माँ से कहता है कि माता जी मैं तो काशी बनारस जाऊँगा और वेद पढ़कर आऊँगा, परन्तु दादी भी कहती हैं कि बेटा तुम्हारे बापू जी पंडित हैं, तुम्हें सब पढ़ा देंगे, क्यों काशी जा रहे हो। चाची से भी यही बात वह कहता है, परन्तु चाची भी चाचा को पंडित कहती हुई उसे यहीं पढ़ने की बात कहती हैं।

बरुआ रिसाई बनारस पढ़ने जाने के लिए ही होती है और बटुक को यहीं पढ़ने का कहकर रोंक लिया जाता है।

भीखि दे हो माता असीस हौ तो जग भिखिअरिया हौं हो।
काशी हम जाबइ बनारस हम जाबइ पोथीपढ़ि के अउबइ हो।
या भिखिअरिया के कारण हौं तो फिरब बनारस हो।
अमवा के नइयां लाला करहा अमिलिया के नइयां लाला झउंडा।
दुबिआ अइसे छछला कमल अइसे फूला भमर अइसे गुंजा हो।

ब्रह्मचारी बनने के बाद बेटा पहली भिक्षा माँ से मांगता है– 'भवति भिक्षां देहिं' कहता है। यही गीत भी प्रकट करता है कि माँ मुझे भिक्षा दो। मुझे आशीर्वाद दो। मैं तो अब जगभिक्षुक हो गया हूँ। मैं भिक्षावृत्ति से पेट पालन करता हुआ काशी पढ़ने के

लिए जा रहा हूँ, पढ़कर आ जाऊँगा। बनारस में भिक्षुक बनकर– ब्रह्मचारी बनकर ही घूमता रहूँगा। माँ आशीर्वाद देती हुई कहती है– बेटा तुम आम के समान पल्लवित होते रहो और इमली के बड़े पेड़ के समान हृष्ट–पुष्ट हो जाओ, दूर्वा के समान चारों ओर फैल जाओ और कमल के समान फूलते, प्रसन्न होते रहो तथा प्रसन्नता से भौंरे जैसे गुनगुनाते रहो।

बेटे को आशीर्वाद के लिए आम को कहा, क्योंकि यह आम पाँच वर्ष में ही फल देने लगता है। इमली का पेड़ प्रायः बड़ा और भरा हुआ होता है, इससे स्वास्थ्य की कामना की है। दूर्वा अमर है वह धरती की गोद में सदा सब ऋतुओं में फैलती है। वह सदा हरी–भरी रहती है। कमल सारे जल संसार की प्रसन्नता को सूचित करता है, परन्तु उसे देखकर भौंरा गुनगुनाता है। अर्थात् उसके बेटे की प्रसन्नता और वृद्धि को देखकर दूसरे भी आनंदित हो गुंजार करते रहें।

राम रिसाने जाइ हो मनाए नहिं मानइं।
राम के माथे मुकुट भल सोहइ देखा चन्दन तिलक लिलार। मनाए....
राम के तन पीताम्बर सोहइ देखा गले वैजन्ती माल। मनाए...
राम के पउआ खड़ाऊं सोहइ देखा पग नूपुर झंकार। मनाए....

यह गीत भी बरुआ में बालक के रिसाने की रीति में गाया जाता है। राम जी रूठकर ब्रह्मचारी बने चले जा रहे हैं। वे मनाने पर भी नहीं मान रहे हैं। श्रीराम के सिर पर मुकुट अच्छा लग रहा है और उनके ललाट में चन्दन का तिलक लगा हुआ है। श्रीराम के शरीर में पीताम्बर धारण किया हुआ है। गले में वैजयन्ती की माला पहनी हुई है। श्रीराम के पाँव में खड़ाऊँ है, जो सुशोभित हो रही है और पैर नूपुर जैसे झंकृत हो रहे हैं।

यह बरुआ का वह दृश्य है, जब बालक बनारस पढ़ने के लिए जाने का ढोंग करता है और उसे लोग गीत गाते हुए बुलाने चले जाते हैं। प्रायः मामा उसे समझाकर वापस लाता है। कुछ नेग देकर वापस लाता है।

बहुरिन आवा ललनमां हो परदेश न जाउ।
बिनती करै उनकी दादी औ चाची परदेशइ न जाउ।
बिनती करैं उनकी माया औ बहिनी परदेशइ न जाउ।
खाय क मांगइ पेड़ा मिठइया, मुंह पोंछइ क मांगइ अंगुछिया हो, परदेशइ न जाउ।
घूंटइ क मांगइं सोने केर गेडुंआ चढ़इ का नीला बछेडुआ हो, परदेशइ न जाउ।

खाइ के देवइ पेड़ा मिठइया, मुंह पोछइ का अंगौछी हो, परदेशइ न जाउ।
घूंटइ क देवइ सोनेन केर गेंडुआ, चढ़इ का नीला बछेड़वा हो, परदेशइ न जाउ।
रचइ का माँगै खैर सुपरिया मुंह पोछइं का अंगुछिया हो, परदेशइ न जाउ।

यह भी बरुआ रिसाई का गीत है। गीत कहता है कि बेटा परदेश न जाओ। बेटे की दादी, चाची, माँ और बहन विनम्र निवेदन कर रही हैं कि लौट आओ। बाहर मत जाओ। खाने को वह पेड़ा और मिठाई मांगता है, मुँह पोछने के लिए अंगोछा या अंगवस्त्र मांगता है, सोने के लोटे में पानी पीने को मांगता है और सवारी करने के लिए नीले रंग का छोटा घोड़ा मांगता है। वे कहती हैं कि मैं खाने में पेड़ा, मिठाई दूँगी, मुँह पोछने के लिए अंगौछी भी दूँगी। पानी पीने के लिए सोने का लोटा या जल पात्र दूँगी। सवारी करने के लिए नीले बछेड़ा अर्थात् अश्व शावक को दूँगी। मुँह रचने के लिए खैर सुपाड़ी मांगते हैं, वह भी उन्हें दूँगी, परन्तु आग्रह है कि परदेश न जाए।

बटुक को सारी सुविधाएँ देने का वायदा करते हुए इस गीत के माध्यम से बाहर जाने से रोंका जाता है। इसमें कम आयु में घर से न जाने देने हेतु ममत्व का ही प्रदर्शन किया जाता है।

राम रिसाने जायं हो मनाए नहि मानइं।
राम मनावइं दुइ रे गए हंइ, एक आजा एक आजी हो। मनाए नहि मानइं
राम मनावइं दुइ रे गए हंइ एक पापा एक मम्मी हो। मनाए.........
राम मनावइं दुइ रे गए हंइ एक मामा एक मामी हो। मनाए..........

बरुआ रिसाई में गाया जाने वाला यह गीत है। राम जी रूठकर चले जा रहे हैं। मनाने पर, समझाने पर भी नहीं मान रहे हैं। उन्हें मनाने दादा और दादी गए हैं, परन्तु वे नहीं मान रहे हैं। इसी प्रकार उन्हें मनाने मामा–मामी भी गए हैं, परन्तु वे नहीं मान रहे हैं।

ब्रह्मचारी जब रूठता है तो उसे समझाने के लिए दादा–दादी, माता–पिता अथवा मामा–मामी आते है और वह वापस आ जाता है।

तिलक

विवाह स्थिर होने के पूर्व वाग्दान से प्रांरभ हुआ यह क्रम वर वरण का होता है, जिसमें कन्या पक्ष के लोग वस्त्र, यज्ञोपवीत आदि के द्वारा कन्या के लिए वर का वरण कर लेते हैं। यह प्रथम मांगलिक कार्य हैं, जिसके बाद विवाह का औपचारिक शुभारंभ हो जाता है। प्रायः वर के घर आकर कन्यापक्ष के लोग तिलक का मुहूर्त सम्पन्न करते हैं। इसमें कन्या का भाई अथवा किसी ब्राह्मण के द्वारा भी यह क्रिया सम्पन्न की जाती है। इन दिनों तिलक या फलदान को कतिपय समाज में दहेज से जोड़ दिया गया है और इसे प्रतिष्ठा का विषय बना दिया गया है।

नाई, पण्डित, कन्या का भाई और समाज के लोग बड़ी थाल में फल, वस्त्र यज्ञोपवीत, अक्षत सब लाते हैं, तिलक के बाद लग्न पत्रिका बनाई जाती है। तिलक ले आने वालों का बड़ा सम्मान किया जाता है। इसी प्रसंग में गीत प्रांरभ होने लगता है कि आज मेरे आँगन में आनन्द के रंग की वर्षा हो रही है।

सो आज मोरे अंगने मां रंग बरसत है।
सो रंग बरसत है गुलाल उड़त है सो आज मोरे बन्ना को तिलक चढ़त है। सो आजु...
सो बारे बनाजी के मौरें भी सोहैं सो कलंगिन बिच मोरा जिय ललचत है। सो आजु...
सो बारे बनाजी के चन्दन भी सोहैं सो रोरिन बिच मोरा जिय ललचत है। सो आजु..
सो बारे बनाजी के कुण्डल भी सोहैं सो झुमकिन बिच मोरा जिय ललचत है। सो आजु..
सो बारे बनाजी के जामा भी सोहैं सो फेंटन बिच मोरा जिय ललचत है। सो आजु...
सो बारे बनाजी के घड़ियां भी सोहैं सो चैनन बिच मोरा जिय ललचत है। सो आजु...
सो बारे बनाजी के जूता भी सोहैं सो मोजन बिच मोरा जिय ललचत है। सो आजु...

आज मेरे आँगन में आनन्द हो गया है, रंग और गुलाल की वर्षा हो रही है। मेरे बेटे का तिलक चढ़ाया जा रहा है। बन्ना के सिर में मौरे हैं उनमें कलंगी है, जिसमें मेरा जी ललचा रहा है। माथे में चन्दन लगा है। रोली में और आकर्षण है। कानों में कुण्डल सजा है। उसकी झुमकियाँ और सुन्दर लग रही है। बन्ना जी के जामा भी सुन्दर लग रहा है। उसमें फेटा सुन्दर लग रहा है, घड़ी अच्छी लग रही है, उसकी चैन में अधिक आकर्षण बना हुआ है। जूता भी सुन्दर लग रहा है। उसके मोजों के बीच में तो और शोभा बढ़ रही है। इस गीत में वर की सजावट का वर्णन है।

यह कन्यापक्ष के द्वारा वर को वरण करने का प्रसंग होता है, उसके बाद यथाशीघ्र विवाह संस्कार सम्पन्न हो जाता है। गीत यहाँ से शुरू होता है।

मोर दुलरा मांगइं सगरा तिलक माही
बाबा कहइं सुनउ मोरे भइया।
दादी कहइं सुन बेटा मोरी बिनती।
अनमोल बिटिया।
तोहई समरपब तू सागर कउन बिसात,
सोना देवइ रूपा देवइ मोहर देवइ हजार रे।
काहे रिसाने मोर दुलरा मोती देवइ हजार रे।
एक न देवइ सगरा हो दुलेरूआ पन्थी आवइं हांथ पांउ धोमइं
गउआ पिअइं जल नीर मइया।
इया सगरा हमरे गांव के नाक रे
मोरे दुलरा मांगइ सगरा तिलक मांही।

दहेज से ही गीत बन गया है। मेरा प्यारा दूल्हा तिलक में सागर मांग रहा है, अर्थात् बड़ा जलाशय मांग रहा है। बाबा जी और दादी जी दोनों कहती है– मेरे बेटे? सुनो, मेरी बिनती है कि अनमोल बेटी मैं तुम्हें सौंप दूँगी, तब सागर क्या चीज है। सोना दूँगी, चाँदी दूँगी, हजारों मोहर या मुद्राएँ दूँगी। रूठो मत, मैं हजार मोती भी दूँगी। सागर नहीं दूँगी, क्योंकि राहगीर पथिक हाथ–पांव धोते हैं, थकान मिटाते हैं, गायें पानी पीती हैं। यह सागर तालाब हमारे गाँव की मर्यादा है, इसको छोड़कर सब दूँगी।

इस गीत में वर के रूठने का भी विवरण है। जलाशय की मांग करना उचित नहीं है क्योंकि वह एक के लिए नही सारे गाँव के लिए है। पशुओं, पक्षियों, मनुष्यों सबके लिए तालाब का उपयोग किया जाता है। कन्या अनमोल है। उसके दान का महत्त्व है, सोना, चाँदी, मोती आदि तो कन्या दान के साथ दिया जाना हो सकता है, परन्तु सार्वजनिक हित की वस्तुओं का मांगना अनुचित है।

पाँच मोहरि कइ सुपरिया मंगायेउं देउतन नेवति पठाएउं।
पहिल नेवति दीन्हेउं गया के गजाधर दूसर अयोधिया केर राम।
तिसर नेवति दीन्हेउं उहइ जगजननी मोरी जग्गि पूरन होइ।
काहे चढ़ि आमइं गया के गजाधर काहे अजोधिया के राम।
काहे चढ़ि आमइं उहइ जग जननी मोरी जग्गि पूरन होइ।
हांथी चढ़ि आमइं गया के गजाधर घोड़ा चढ़ि आमइं श्रीराम।
रथ चढ़ि आमइं उहइ जगजननी मोर जज्ञ पूरन होइ।
गायउं धरती रे गायउं माता सब देउतन केर नाम।
तोहरे सरन बुढ़ि मइया मै जग्ग रोपेउं जग्ग सफल होइ जाय।
तोहरे शरण शिवशंकर मोर जग्गि सफल होइ जाइ।

पाँच मोहर या मुद्राओं की सुपाड़ी मंगाया और देवों को निमंत्रण भेज दिया। प्रथम निमंत्रण गया के गदाधर भगवान् को दिया, दूसरा निमंत्रण अयोध्या के श्रीराम जी को दिया। तीसरा निमंत्रण जगदम्बा को दिया और प्रार्थना की कि मेरा यज्ञ पूरा कर देना। मेरे यज्ञ को पूरा करने के लिए गया के गदाधर किस वाहन से आएँगे, अयोध्यापति राम किस वाहन से आएंगें और जगदम्बा किस वाहन से आएँगी। गया के गदाधर हाथी में चढ़कर आएँगे, श्रीराम जी घोड़े में चढ़कर आएँगे, परन्तु जगदम्बा माँ रथ में चढ़कर यज्ञ में आएँगी। धरती को गाया, माताओं को गाया, सभी देवताओं का नाम लेकर गाया, परन्तु माँ वृद्धा मैं तुम्हारे शरण हूँ, तुम्हारे भरोसे ही यज्ञ कर रहा हूँ। कृपा कर यज्ञ पूरा करें। प्रभु शिवशंकर जी तुम्हारे शरणागत हूँ, हमारी यज्ञ पूरी हो जाए, यही प्रार्थना है।

विवाह रूपी यज्ञ की सफलता के लिए देवताओं को इस गीत के माध्यम से निमंत्रण दिया गया है। सबसे यही मांग की गयी है कि वे निमंत्रित होकर आएँ और यज्ञ पूरा कर दें।

पाँच मोहरि कै सुपरिया मंगाएउं दीन्हेउ बम्हन के हांथ।।
नाऊ औ पंडित तूं बड़े सोची जहां पठाई तहां जाउ।
बाप कहा बेटी देस विआहबइ पितिया कहै गुजरात।
भइया फलाने राम अस मन बोलइं तिलक बड़हरेन जाइ।
इतना जो सुनिनि हंइ अजबा फलाने राम मनहिं उठे रिसिआइ।
बड़हर–बड़हर ना करा नतिया बड़हर हइ बड़ि दूर।
ओहीं बड़हरिया का दइआ न पुजिहीं बिचि जइही मगज हमार।

का हो देबे पूत नग्रके पठइत का हो दुआरे के चार।
का हो देबे पूत माझ मड़उना का हो कोहबरेन जात।
हथिनी त देवइ बाबा नग्र के पठइत घोड़वा दुआरे के चार।
एक लाख देबइ माझ मड़उना मोहरि कोहबरेन जात।

पाँच रुपये (मुद्राओं) में सुपाड़ी मंगाया और ब्राह्मण के हाथ में दे दिया। कहा कि नाऊ और पंडित तुम दोनों बड़े ही समझदार हो। जहाँ भेज रहा हूँ, वहाँ चले जाओ। पिताजी कहते हैं कि बिटिया को अपने देश में ही विवाह कर देंगे, परन्तु चाचा कहते हैं कि इसे गुजरात में विवाह करेंगे। भाई ऐसा कहते है कि उसका विवाह बड़हर में करेंगे और अब तिलक बड़हर (बिहार) ही जायेगा। यह सुनकर दादा नाराज हो उठे। कहा कि नाती बड़हर–बड़हर रट मत लगाओ, वह बहुत दूर है। उस बड़हर के लिए दहेज भी पूरा नहीं होगा। हमारी बुद्धि भी बिक जायेगी। बेटा नकद क्या दोगे, द्वार पूजन में क्या दोगे, मण्डप में क्या दोगे और कोहबर का नेग क्या देओगे। नकद में तो हथिनी भेंट करेंगे और द्वार पूजन में घोड़ा, भेंट करेंगे। मण्डप के नीचे एक लाख रूपये देंगे और कोहबर में स्वर्णमुद्रा देंगे।

यहाँ बिटिया का विवाह गुजरात अथवा बड़हर (बिहार) में करने का प्रसंग है। नकद दहेज में हथिनी, द्वार पूजा में घोड़ा, मण्डप में एक लाख और कोहबर में स्वर्णमुद्रा देने हेतु गीत में विवरण मिलता है।

बोलिया त बोलइं एक हारिल सुगना हो बोलि बगइचा मां जाइ।
बोलिया त बोलइं दुलहे ओनहिं राम बोलि चउक बन जाइ।
बोलिया सुनत उनके राजा खुशी भए आजी के जियरा जुड़ान।

विवाह होने वाले लड़के को वर कहा जाता है, उसका आदर; सम्मान; स्नेह सब लोक विश्रुत होता है। परिवार के लिए उससे बात करना अच्छा लगता है। इसी बात को उस छोटे से गीत में प्रकट किया गया है। हरे–हरे रंग का तोता बहुत आकर्षक वाणी बोलता है और बोल–बोल कर बगीचे में चला जाता है। इसी प्रकार प्यारी बोली बोलकर दूल्हा जी चौक में चले जाते हैं। उनकी बोली सुनकर राजा जी प्रसन्न हो जाते हैं और दादी को बहुत दिनों से उत्सुकता थी। वह यह आवाज सुनकर प्रसन्न हो जाती है। उसका चित्त शीतल हो जाता है।

कहंमइ के तुम विप्र हो ब्राह्मण कहंमइ ढारेउ पाउ।
कहंमइ के रजबा चिठिया लिखि भेजइ केकर तिलक चढ़ाउ।

जनकपुरी के विप्र और बाम्हन ढारेउ अयोध्या मां पाउ।
राजा जनक जी चिठिया लिखि भेजइं राम के तिलक चढ़ाउ।
कइ लाख आए है थारी औ कपड़ा कइ लाख कपिला कलोरि।
कइ लाख आई हवै कांधे कइ जनेइया हो राम तिलक चढ़ि जाय।

यह गीत भी तिलक पर ही केन्द्रित है। ब्राह्मण देवता के द्वारा प्रायः तिलक भेजने की परम्परा है। प्रश्न से गीत प्रांरभ होता है कि– हे ब्राह्मण! कहाँ के हो और कहाँ पधार या पैर रख रहे हो। कहाँ के राजा ने चिट्ठी लिखकर भेजा है और किसका तिलक चढ़ाना है। गीत में ही उत्तर मिलता है– ब्राह्मण देवता जनकपुरी के हैं, वहाँ से अयोध्या में आ रहे हैं। राजा जनक जी ने पत्र लिखकर भेजा है और राम जी के तिलक चढ़ाना है। तिलक में कितने लाख रूपया आया है, कितनी थालियाँ है, कपड़ा कितना है, कितने लाख कपिला गाएँ, कलोरियाँ अर्थात् तरुण गाय हैं। कांधे में पहनी जाने वाली जनेऊ कितने लाख है, जिनसे श्रीराम का तिलक चढ़ाया जायेगा। इसमें तिलकोत्सव की वस्तुओं का भी उल्लेख किया गया है।

इस गीत में वर का सौन्दर्य वर्णन किया गया है।

मोरे लाला सोनमा के नांई निकहा रूपया के नांई चमकइ।
कमल अइसन कोमर दिया के अंजोर कस दमकइ सुपरिया अइसे ठुहरइ आयं।
एतना तिलक है कांकर पाथर अउ पहिरइया का जोग।
इतना तिलक मोरे मनहि न भावइ बस रामा रहिहंय कुमार।
इतनी बतियां सुनिन रनिया के भइया त दइ दिहिनि तिलक पटोर।
असिया मने केर राजा थरिया मंगाइनि नौ हो मने के सिंगार।
लाख रूपैया राजा रोंक लइ आएं रामा के तिलक चढ़ाइ।
हँसि बेगि अंगना लिपावा कौशिल्या रानी गजमोती चौक पुराय।
सोने के कलशा अंगनमां धरावा उमा के तिलक चढ़ाउ।

तिलक के प्रसंग में आने वाली वस्तुओं पर केन्द्रित गीत मिलते हैं। यह गीत भी बेटे की प्रशंसा करता है कि बेटा सोने जैसा सुन्दर है, चाँदी जैसी चमक है, कमल के जैसी कोमलता है और प्रकाश के समान दमकता है। सुपाड़ी जैसा ठोस है। ऐसे बेटे के लिए इतना तिलक तो कंकर पत्थर के समान लगता है। यह पहनने वाले का संयोग है। यह तिलक हमें अच्छा नहीं लगता है। इससे अब हमारे राम तो कुमार ही रहे आएँगे। यह बात बेटी का भइया सुन लेता है, तब वह तिलक का विवरण दे देता हैं। वह अस्सी मन (40 सेर का एक मन) की थाली मंगाता है और नौ मन का श्रृँगार मांग

लेता है। नगद एक लाख रूपया लेकर आते हैं और रामजी का तिलक चढ़ा देते हैं। गीत कहता है कि कौशल्या जी अब हँसकर आँगन लिपा दो और गजमुक्ता से चौक पूरी करा दो। अंगना में सोने का कलश रखा दो और रामजी का तिलक चढ़ा दो।

यह वर्णन दहेज का वर्णन करता है जो कि आज के समाज में कोढ़ बनकर रह गया है। पूर्व के गीत में ऊपर की दो पंक्तियाँ छोड़कर शेष गीत एक जैसा ही मिलता है–

धरम मनावा नारी अपने माया जी केर जेहिं कोखि लिहे अवतार।
धरम मनावा पूत अपने मायाजी केर जेहिं कोखि लिहे अवतार।
इतना तिलक हवै कांकर पाथर अरु पहिरइया के बोझ।
इतना तिलक मोहिं मनइ न भावइ बरु राम रहिहीं कुमार।
असिआ मने केर राजा थरिआ मंगाइन नौ हो मने के जनेउ।
लाख रूपैया राजा रोंक ले आएं राम का तिलक चढ़ाइ।
हाली वेगि अंगना लिपावा कौशल्या रानी गजमोती चौक पुराय।
सोने के कलश अंगनवा मां धरावा राम केर तिलक चढ़ाइ।

गीत में पहले दादी द्वारा वर को शिक्षा दी गयी है कि बेटा धर्म तो उनका मनाओ, जिस माँ के पेट से तुम्हें अवतार मिला है। इतना तिलक तो कंकर–पत्थर जैसा है, पहिनने वाले के लिए भी बोझा रहेगा। यह तिलक तो मुझे मन में भी अच्छा नहीं लग रहा है। भले हमारा बेटा राम अविवाहित रह जाये। तब राजा ने थाली अस्सी मन (40 सेर) की मंगाई और जनेउ कपड़ा सब नौ मन तौल का मंगा लिया। वे राजा तो लाख रूपया नगद लेकर आए और राम जी का तिलक चढ़ाने लगे। कौशल्या रानी जल्दी–जल्दी आँगन गोबर से लिपवा लो और गजमुक्ता से चौक भी बनवा लो। स्वर्णकलश आँगन में रखवा दो और श्रीराम का तिलक चढ़वा लो।

गंगा जमुना के तीरे खड़ा हइ एक बिरवा।
त तेहि तर ठाढ़े सुजन त हरख गुन करइ।
सीता केर विआह रचावा बिटिया सयानी भई।
तिलक चढ़ावइं हरख गुन गामइं हो।
कहंबइ तिलक चढ़ाया मोरे बाबू बेरिया बिलम नहिं लाग।
पाँच परग जिमिया नगर अजुध्या दुइ बर राजकुमार।
उहंनइ तिलक चढ़ाया मोरे बाबू बेरिया बिलम नहिं लाग।

का देखि मोर बाबा आसन मारेन का देखि रहे हां लुभाइ।
का देखि बाबू हमहीं विआहे भलि मति मरी है तोहार।
घर देखि मोरी बेटी आसन मारेन धन देखि रहेउं लोभाइ।
बर देखि बेटी तोहइं बिआहेन काहे मति मरी हमार।
मचिया बैठि माया ककरी बेसाहइं ना जानै तीतऔ मीठ।
नगर बइठ बेटी हम बर ढूढ़ेन नहि जानी करम तोहार।

गंगा और यमुना के किनारे एक पेड़ खड़ा है, उसी के नीचे सज्जन खड़े होकर बार–बार सोचने लगते हैं। पत्नी कहती है– सीता जी का विवाह अब कर दो। वह सयानी हो गयी हैं। सब तिलक चढ़ाते और प्रसन्नता पूर्वक गुणगान करते रहते हैं। बेटी का तिलक जल्दी कहाँ चढ़ाकर आ गए, ऐसा पूछती है। उत्तर में पाँच पग में अयोध्या और राजकुमार बताया जाता है। पुनः दादा से पूछती है कि क्या देखकर हठ किया और लोभ में आ गए। बाबूजी की मति मारी गई थी क्या? क्या देखकर विवाह किया। घर देखकर आग्रह किया, धन का लोभ हुआ और वर (लड़का) देखकर विवाह किया, अब मेरी मति कहाँ नष्ट हुई। मचिया में बैठकर तुम्हारी माँ ककड़ी खरीदती है, तीता –मीठा नहीं जानती है। हमने नगर में प्रवेश कर विवाह योग्य लड़का खोज निकाला, आगे तुम्हारा भाग्य है, उसे मैं नहीं जानता।

यही गीत ऊपर की तीन पंक्ति छोड़कर भी गाया जाता है।

मटिमंगरा

केखर मटिया डलामन कि फूटै हरियर दूबल हो।
अजवा फलानेराम के मटिया डलावन फूटै हरिअर दूबल हो।
केखर छूटें हैं घोड़िला चलै हरियर दूबल हो।
छूटे है राम जी के घोड़िला चरयं हरिअर दूबल हो।

मृत्तिका मांगल्य को लोक भाषा में मटिमंगरा या खलमिट्टी कहा जाता है। नये विवाह या उपनयन संस्कार अर्थात् दीर्घमण्डन में केवल वेदी ही नहीं बनती अपितु पूरा घर मिट्टी से छपाया जाता है, चूल्हा आदि मिट्टी से बनाए जाते हैं। मिट्टी धरती माँ का ही रूप है। किसी भी शुभ कार्य में मृत्तिका पूजा के स्थान पर भूमि पूजा की कर्मकाण्डीय व्यवस्था है, परन्तु व्रतबन्ध इत्यादि में पवित्र स्थान की मिट्टी लाने के लिए पुरोहित पहले गणपत्यादि पूजन करता है, तदनन्तर मिट्टी की पूजा करता है। यह समन्त्रक भी होती है और लोकमन्त्रक भी होती है। लोकमन्त्र ही लोकगान हैं, इनमें

उत्सव की बातें भी हैं और लोक जीवन की बाते भी है। गीत उठता है कि किसकी मिट्टी डलवाने से हरी–हरी दूर्वा फूटती है, अर्थात् फैलती है। दादा फलाने राम की मिट्टी डलवाने से हरी–हरी दूर्वा फूटती है, फुटकती है या अंकुरित होती है। अब किसके घोड़ा छोड़ दिए गए हैं, जो हरी–भरी दूब चर रहे हैं। रामजी के घोड़े छोड़े गए हैं, जो हरी–भरी दूब चर रहे हैं।

मागर माटी राम की चलो देखन चलिए।
नगर बुलौआ दे गई नाइन शुभ घड़ी शुभ काम की। चलो.....
कंचन थारी सजाओ सखि प्यारी ज्योति जलाओ सुबह शाम की। चलो........
प्यारे–यारे बनरा गाओ सखि प्यारी निकला मुहूरत राम की। चलो ....
माता कौशल्या के आंखों के तारे नही है फिकर किसी काम की। चलो ....

सखियाँ परस्पर बातें कर रही हैं कि राम जी के विवाह के पूर्व मटिमंगरा हो रहा है; चलो सब मिलकर देखने चलते हैं। नाइन आई थी और सारे नगर में बुलावा देकर गयी है, शुभ घड़ी और शुभ काम का निमन्त्रण देकर गयी है। सखी सोने की थाली सजा लो और सुबह–शाम की ज्योत जला दो। सुन्दर बन्ना गीत गाती रहो राम जी का मुहूर्त निकल आया है। ये राम जी तो माँ कौशल्या के आँखों के तारे है, प्यारे हैं। किसी काम की अब चिन्ता नहीं करना है।

यह लोकगीत पारम्परिक नहीं जान पड़ता है फिर भी रामजी के मटिमंगरा का सुन्दर भाव इसमें व्यंजित हुआ है।

करबा के ऊपर दुइ बिछुआ दइया–दइया हो लाल।
जे खोदे ओखे चाबिस बिछुआ दइया–दइया हो लाल।
ओखर भाई उतारइ दुइ बिछुआ दइया–दइया हो लाल।
करबा के ऊपर दुइ बिछुआ दइया–दइया हो लाल।

माटी खोदते समय हँसी मजाक के भावों से भरी हुई गीतें गायी जाती हैं। करबा के ऊपर दो बिच्छू दिख रहे हैं, जो मिट्टी खोदता है उससे बिच्छू काट खाता है। अरे भइया! उसी का भाई बिच्छू का डंक या जहर उतारता है। यही आश्चर्य है।

माटी दलामल होइ हरिअरिन दुबिआ हो।
छुटि है फलानेराम के घोड़ा दुबिआ चरि लेइहीं हो।

मिट्टी खोदने के बाद दलदल हो जाती है और दूब हरी–हरी होती है। जब फलानेराम के घोड़ा छूट जायेगा तब सारी दूब चर लेंगे।

लछिमन लिहे बान रामा हरिनिया मारइं।
पहली हरिनिया बागा बिच मारिनि फुलबन की ओट। रामा हरि..........

राम जी हरिणी को मार रहे थे और लक्ष्मण जी बाण लिए आ रहे थे। पहली बार हरिणी बगीचा में मार दिया। फूलों के वन की आड़ में हरिणी मारी गयी।

शिवपूजन के गलिया बताए चला।
काहे मां बेलपत्र काहे मां अक्षत केकरे मथवा चढ़उबै बताए चला।
थाली मां बेलपत्र थाली मां आखत शिव के मथवा चढ़उवै बताए चला।

शिव पूजा किधर होगी। वह रास्ता बताते चलो; बेलपत्र किसमें है और अक्षत किसमें है। साथ ही किसके मस्तक में चढ़ाएँगे, बताते चलना। थाली में बेलपत्र रखा है, थाली में ही अक्षत रखा है। शिव जी के मस्तक में चढ़ा देंगे, यही बताते चलें।

तेलिया के तेल महंग भए बाबा को तेलिया घर जाइ।
फूफू पियारी फलाने देई ओई तेलिया घर जायं।
तेलिया बेटउना है अड़ियल लिहिसि फुफुइआ चढ़ाइ।
बनिया केर हल्दी महंग भए बाबा को बनिया घर जाइ।
काकी पिआरी फलानी देई ओई बनिया घर जायं।
बनिया बेटउना है अड़ियल लिहिसि तरजुआ चढ़ाइ।
कुंअना केर दूब महंग भई को रे ले आवइ हो।
दुलहे की बहिनी सोहागिन दूब लइ आवइ हो।
को रे कुमारी बोलाइ त तेल चढ़ावइ हो।
बेटी कइ भउजी सोहागिन कुंआरी घर लाए हो।
सब की कुंआरी बोलावइं तौ तेल चढ़ावइ हो।
दुबिया चुनि–चुनि दिहिनि असीस रे बाढ़इ फलानेराम लाख बरीस रे।
अस रे बाढ़इ जस धरती केर धान रे अइसइ उअइ जस सूरज चाँद रे।

विवाह के पूर्व तेल चढ़ाने की परम्परा रेवांचल में है। कुमारी कन्याएँ हल्दी–दूब और तेल लेकर वधू अथवा वर को चढ़ाती हैं। उस समय लोक गाता है, तेल चढ़ता है। तेली का तेल महंगा हो गया है, कौन लेने जायेगा। प्यारी बुआ तेली के घर जाती है और हठीला तेली का बेटा फूफू से तेल की कीमत चढ़ी या बढ़ी हुई लेता है। बनिया के यहाँ हल्दी भी महंगी हो गयी है, कौन लेने जायेगा। प्यारी काकी जी बनिया के यहाँ गई। वहाँ भी बनिया का बेटा तराजू में तौल कर हल्दी दे रहा है। अब कुँआ में होने

वाली दूब भी महंगी हो गयी है, कौन ले आये। दूल्हा की सौभाग्यवती बहन दूब ले आती है। अब कुमारी लड़कियाँ बोलायें और तेल चढ़वा लें। बिटिया की सौभाग्यवती भाभी कुमारियों को घर ले आती है, सब की कुमारी बेटियों को बुलाया और वे ही तेल चढ़ा रही हैं। दूब चुन—चुन कर सब आशीर्वाद देती है कि अमुक राम लाखों वर्ष तक बढ़ते रहें। धरती में जैसी धान बढ़ती है, वैसे ही बढ़ते रहें। साथ ही सूरज और चाँद के समान इनका उदय या उन्नति हो, जिससे सारे भूमण्डल में प्रकाश ही प्रकाश व्याप्त हो जाय।

तेलिया के तेल महंग भए बनिया कइ हरदिउ हो।
के तेलिया घर जाइ त तेल लइ आबइ हो।
के बनिया घर जाइ त हरदी लइ आबइ हो।
दुलहे कै माया गईं तेलिया घर जाजो त तेल चढ़ाई हइ हो।
ओहिं बनिया घर जाइ त हरदी लइ आबइ हो।

यह गीत तेल और हल्दी की उपलब्धता पर है, क्योंकि इन दोनों के बिना तेल नहीं चढ़ाया जा सकता है। तेली के यहाँ का तेल महंगा हो गया और बनिया के यहाँ की हल्दी भी महंगी हो गयी है। अब तेली के घर कौन जाकर तेल ले आए। इसी प्रकार बनिया के घर कौन जाए और कौन हल्दी लेकर आए। दूल्हे की माताजी तेली के घर जाती हैं और तेल लेकर आती है, जो तेल चढ़ाया जायेगा। वही बनिया के घर जाती है और हल्दी भी लेकर आती हैं, क्योंकि हल्दी और तेल चढ़ाया जाना है।

इस गीत में हल्दी और तेल चढ़ाने के लिए तेली और वणिक् (बनिया) के घर क्रमशः तेल और हल्दी की गाँठ लेने माँ जाती है, तब यह शुभ कार्य सम्पन्न हो पाता है।

नाइन रानी तुमहीं मोर नाउन तिलिया के तेल ले आवा मोरी नाउन।
हमरे फलाने देइया अति सुकुमारी तिलिया के झार सहन नहीं आई।
नाउन रानी तुमहीं मोरी नाउन तिलिया के तेल ले आवा मोरी नाउन।
हल्दी के गांठ ले आवा मोरी नाउन हमरी फलानी देइया अति सुकुमारी।
हल्दी के झार सहिन नहि जाई नाउन रानी तुमहीं मोर नाउन।
तिलिया के तेल ले आवा मोरी नाउन दुबिया के पेड़ ले आवा मोरी नाउन।
हमरे फलाने देइया अति सुकुमारी दुबिया के झार सहिन नहिं जाई।
नाउन रानी तुम्हीं मोर नाउन तिलिया के तेल ले आवा मोरी नाउन।

यह गीत भी तेल चढ़ाने के समय ही गाया जाता है। इसमें भी तीन वस्तुओं की अपेक्षा की गयी है। तिल का तेल, हल्दी की गाँठ और दूर्वा के अंकुर। नाइन को

सत्कार, स्नेह पूर्वक कहा जाता है कि वही नाइन ही सबकुछ है, तिल का तेल लेकर आ जाय, अपनी कुमारी बेटी बहुत सुकुमारी है। उनसे तिल के तेल की झार यानी तीव्रगन्ध सहन नहीं हो सकेगी। इसी प्रकार– हे नाइन! हल्दी ले आओ, मेरी कुमारी बिटिया अत्यन्त सुकुमारी है। उससे इसकी भी तीखी गन्ध सहन नहीं हो सकेगी। इसी प्रकार नाउन रानी तुम्हीं दूब भी ले आओ, दूब की झार भी तीखी होने से मेरी बहुत सुकुमारी, बिटिया से सहन नहीं हो पाएगी। इस प्रकार नाइन द्वारा तेल, हल्दी और दूब को चयन या इकट्ठा करा लिया जाता है।

दूर्वा पोर–पोर से अंकुरित होती है। जमीन पर उसका सदा विस्तार होता रहता है। इसी के समान वंश बढ़ता रहे। तेल स्नेह का प्रतीक है, अर्थात् इस शुभ कार्य के द्वारा वंश में– परिवार में स्नेह बढ़ता रहे। हल्दी शुभ का– कल्याण का प्रतीक है, अस्तु अपेक्षा है कि हल्दी के समान परिवार में सदा शुभ होता रहे।

हरे–हरे पर्वत सुअना नेउत दइ आवा हो।
पहिले तो नेउते राजा दशरथ दूसरे कौशल्या रानी
उनहीं के गोदिया रमइया जू है उइं तो तीनों दल आवइं हो। हरे–हरे...
दूसरे त नेउते शिवशंकर दूसरे गौरा रानी।
उनहीं के गोदिया गणेश जू है उइं त तीनउ दल आवइं हो। हरे–हरे ...
तिसरे तो नेउते वासुदेव दुसरे देवकी।
उनहीं के गोदिया कन्हैया जू हैं।
उइं तो तीनउ दल आवइं हो। हरे–हरे ...

पर्वत के हरे–हरे रंग के तोते से निवेदन है कि तोते तुम निमंत्रण देकर आ जाओ और तब उसे निर्देश मिलता है कि पहला निमंत्रण राजा दशरथ को देना, दूसरा निमंत्रण कौशल्या रानी को देना और उन्हीं की गोद में श्रीराम जी हैं, कहना वे तीनों दल बनाकर आ जाँय। दूसरा निमंत्रण प्रथम शंकर जी के यहाँ देना, उन्हीं में दूसरा नेउता गौरा पार्वती को दे देना और उन्हीं की गोद में श्रीगणेश जी हैं, उनके सहित तीनों लोग एक दल में आ जायेंगे। तीसरे निमन्त्रण में पहले वासुदेव जी को दे देना, फिर दूसरे देवकी जी को दे देना, उन्हीं की गोदी में कन्हैया जी हैं। उन्हें भी नेउता देकर कहना तीसरे दल में वे तीनों लोग आएँ।

इस प्रकार श्रीराम, श्रीगणेश और श्रीकृष्ण को यह निमन्त्रण उनके माता–पिता के साथ दे दिया गया है।

कंकन भंजाई

कंकन भांजने की विधि विवाह एवं व्रतबन्ध के समय की जाती है। इसमें वटु वर या वधू को आसन में बैठाकर उसके ऊपर पीले कपड़े की चाँदनी बनाकर लोग खड़े होते हैं और बुआ, फूफा, जीजी या जीजा कोई सूत लेकर चारों तरफ फैलाता है। बाद में यही सूत वर–वधू या वटु के हाथ की कलाई में बांधा जाता है।

एकउ तागा न टूटै चटी चट होइ।
कोहरवा के जनमें हां एकउ तागा न टूटइ।

यह कंकन भांजना नहछू के समय का है। उस समय के गीत हँसी–मजाक के ही होते है। कंकन के लिए सूत फैलाने बांधने वाले को गाया गया गीत होता है। औरतें कहती हैं कि एक भी तागा न ही टूटने पाए, चट्–चट् भले होता रहे। यदि ऐसा होता तो पता चलता है कि कुम्हार के यहाँ भाँजने वाला पैदा हुआ है।

जोलहा कातइ सूत जोलहिनी लै–लै आवइ रे।
जोलहा के जनमें है मान त कंकन भंजइउ न जानइं रे।
एकउ ताग न टूटइ जोलहबा के जनमेउ हो।
एकउ ताग न टूटइ जोलहबा के मेहरि हो।
डोमरा के जनमें हैं मान त कंकन भंजइउ न जानइं रे।
कहंरा के जनमें हैं मान त कंकन भंजइउ न जानै रे।
बनियां के जनमें है मान तौ कंकन भंजइउ न जानै रे।
पठान के जनमें है मान तौ कंकन भंजइउ न जानै रे।

मानदान वह व्यक्ति है, जिसका उस घर मे विवाह हुआ है। उसे कहा जाता है कि वह जुलाहा के पैदा हुआ है और जुलाहिन सूत लेकर आती है। जुलाहा सूत कात रहा है। कभी उसे डोम, कंहार, बनिया, पठान आदि के यहाँ जनम लेने को बार–बार कहा जाता है।

कपड़ा पहिराई

बोलावहु री ओहीं मलिया छोकड़वा गजरा ले आवै मोरे लाल का।
लाल के गुलाल का वंशा रूपन का मन मथुरा जी के लाल का।

बोलावहु री ओहीं दरजी छोकड़वा का कपड़ा ले आवइ मोरे लाल का।
लाल के गुलाल का वंशारूपन का मन मथुरा जी के लाल का।
बोलावहु री ओहीं सोनरा छोकड़वा का हरवा ले आवइ मोरे लाल का।
बोलावहु री ओहीं पटवा छोकड़वा का मौरे ले आवइ मोरे लाल का। लाल के..
बोलावहु री ओहीं बनिया छोकड़वा का जामा ले आवइ मोरे लाल का। लाल के.

चाहे व्रतबन्ध में वस्त्र परिधान का समय हो अथवा विवाह में दूल्हा के सजने का प्रसंग हो, यह गीत वस्त्र पहनने का ही है। अरे! माली के बेटे को बुलाओ, वह मेरे बेटे के लिए गजरा लेकर आ जाये। जो बेटा लाल–गुलाल जैसा रंगवाला है, सुन्दर वंश का, सुन्दर रूप का है और उसका मन मथुरा जैसा पवित्र है, जहाँ श्रीकृष्ण निवास करते हैं। दर्जी के लड़के को बुलाइए वह मेरे लाल का कपड़ा ले आये। उस सुनार के लड़के को बुला लो, जो मेरे बेटे के लिए हार ले आएगा। फिर पटवा के बेटे को मौर ले आने के लिए, बनिया के लड़के को जामा लाने के लिए गाया जाता है। एक दूल्हा को सजाने के लिए समाज के अनेकानेक लोगों की आवश्यकता पड़ती है। उन सबके द्वारा– उनके श्रम के द्वारा– उनके स्नेह के द्वारा ही दूल्हा सजता है और इस प्रकार सामाजिक सहभाव से ही विवाह पूरा होता है।

यह विवाह एक सामाजिक सहभाव का प्रसंग है। समाज के अनेक प्रकार के लोगों का सहयोग लेने पर ही इसकी सम्पन्नता सामाजिक समरसता का भी उदाहरण है।

कौ धौं दरा खनै को धौं बेदरा खनै को
धौ बांटै हरदुलिया मड़ए के शुभ करै हो
आजा उनके दरा खनै ओई बेदरा खनै आजी
उनकी बांटै हरदुलिया त मड़ए क शुभ करै हो
बाबू उनके दरा खनै ओई बेदरा खनैं मम्मी
उनकी बांटै हरदुलिया त मड़ए क शुम करै हो
चाचा उनके दरा खनै ओई बेदरा खनै चाची
उनकी बांटै हरदुलिया त मड़ए क शुभ करै हो
भइया उनके दरा खनै ओई बेदरा खनै भाभी
उनकी बांटै हरदुलिया त मड़ए का शुभ करै हो

पता नहीं कौन सही स्थान खोद रहा है और कौन सही स्थान नहीं खोद रहा है और न जाने कौन हल्दी बांटकर मण्डप में शुभ कर रहा है। उनके दादा जी स्थान

में खोदते हैं। वे ही अनुपयुक्त स्थान में गड्ढा खोद रहे हैं। उनकी पत्नी अर्थात् दादी जी हल्दी बांट रही हैं और मण्डप में शुभ कर रही हैं। इसी प्रकार उनके पिता जी सही गलत जगह गड्ढा खोद रहे हैं। उनकी माँ हल्दी बांट रही हैं, मण्डप में शुभ कर रही हैं। यही चाचा और चाची तथा भाई और भाभी भी कहते हैं परिवार के पुरुष वर्ग मण्डप बनाने के लिए, खम्भा गाड़ने के लिए गड्ढा खोदते हैं, परन्तु उनकी पत्नियाँ हल्दी बांट रही हैं, मण्डप को शुभ कर रही है।

इस गीत में दो बातों की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है। एक तो खम्भे के लिए गड्ढा खोदने का, दूसरा हल्दी बाँटने का। यह मण्डप का मांगलिक कार्य मृत्तिका मांगल्य (मटिमंगरा) के बाद होता है। मिट्टी की पूजा करके वनस्पतियों की पूजा का प्रसंग मण्डप में होता है। वनस्पतियों को लाकर मण्डप की रचना कर देना और उनकी पूजा करना मण्डप का मगंलविधान होता है। घर के लोग भी इस मंगल कार्य में सहभागिता प्राप्त करते हैं, उनके नाम भी यहाँ लिए जा रहे हैं। विवाहादि मंगल प्रसंग पारिवारिक एवं सामाजिक उत्सव जैसे ही होते हैं। भारतीय संस्कारों का यही वैशिष्ट्य है कि वे व्यक्तिनिष्ठ होकर भी समाजनिष्ठ होते है। समाज की परख घर के बड़े बूढ़ों की पहचान इन कामों में की जाती है। यह भी संस्कार का ही एक अंग है। पारिवारिक दृढ़ता और सामाजिक संघटन तथा सामरस्य ही संस्कारों का प्रमुख लक्ष्य होता है।

धन्य भाग इहिं अंगना हो जहां मण्डप पड़त है।
काहेन के चारिउ खम्भा हो जहां मण्डप पड़त है।
काहेन के चारिउ कमरी हो जहां मण्डप पड़त है।
सोनेन के चारिउ खम्भा हो जहां मण्डप पड़त है।
रूपेन के चारिउ कमरी हो जहां मण्डप पड़त है। धन्य भाग ....
कौन छैल गड़बइया हो जहां मण्डप पड़त है।
राजा दशरथ छैल गड़बइया हो जहां मण्डप पड़त है। धन्य भाग ...

यह प्रांगण धन्य है, जहाँ मण्डप बनाया जा रहा है। किसके चार खम्भे बनाए गए हैं। इसी प्रकार चारों कमटी काहे की है। चारों खम्भा सोने के बने हुए हैं, जहाँ मण्डप बनाया जा रहा है। चारों कमटी चाँदी की बनी है, जहाँ मण्डप बन रहा है। कौन खम्भा गाड़ रहे हैं, जहाँ मण्डप बन रहा है। दशरथ जी खम्भा गाड़ रहे हैं।

चलो सखि देखय चली कहाँ मण्डप पड़त है।
काहेन केरी थूनी रे काहेन केरी कमटी।
सरई पेड़ की थूनी रे बांसन की कमटी। चलो सखि..

कउने गांव की थूनी रे कहंना केर कमटी।
अमुक गांव की थूनी रे, अमुकै की कमटी। चलो सखि...

इस गीत में भी सखियाँ परस्पर कहती हैं कि जहाँ मण्डप पड़ रहा है या बनाया जा रहा है, उसे देखने चलते है। फिर वही प्रश्न है, कि थूनी अर्थात् खम्मा किसके हैं, कमटी किसकी हैं। उत्तर में सरई की थूनी है और बासों की कमटी लगी है। यह खम्भा किस गाँव का है और कमटी किस गाँव की है। गाँव का नाम लेकर गीत बनाती है कि इस गाँव की थूनी है और इस गाँव की ही कमटी है।

इन गीतों में भी सम्मानार्थ उनका भी नाम आता है जो यह मंगल कार्य करने में लगे हुए है। उस गाँव का नाम उस वनस्पति का नाम भी लिया गया है, जिनसे मण्डप की रचना हो रही है।

सेमी के मड़वा झाला रे, अरहर के पाती।
कहंना केरी कमटी रे कहना कै थून्ही।
कहंना केर डरइया रे अरहर कै पाती।
विन्द्रावन के कमटी रे गोकुला की थून्ही
फलाने गांव के डरबैया रे, अरहर के पाती।

यह भी मण्डप गीत है, मण्डप में सभी की बेल छायी हुई है। उसी में अरहर की पाती ऊपर छा दी गयी है। कमटी कहाँ से और खंभा कहाँ से लायी गयी है और कौन मण्डप निर्माण में लगा हुआ है। वृन्दावन की कमटी है और गोकुल से खंभे लाए गए हैं, अमुक गाँव से मण्डप बनाने वाले आए हैं और अरहर के पेड़ की पत्तियाँ मण्डप को छवाई करने में लग रही है।

प्रायः मण्डप गीत लगभग एक जैसे ही मिलते हैं। एक और गीत इस प्रकार है—

चलो सखिदेखन चलिए रे, जहां माड़ा परत है
माड़ा परत है मड़वा परत है।
कहंना केरी थूनी रे कहंना की कमटी
कौन छैल डरबैया रे जहां माड़ा परत है। चलो.
गोकुल केरी थूनी रे मथुरा केरी कमटी,
कृष्ण छैल डरवैया रे जहां माड़ा परत है। चलो
कृष्ण छैल डरवैया हो जहां माड़ा पड़त है। चलो सखि......
गाड़ा मड़उहा मड़वा हो जहां माड़ा पड़त है। चलो....

इस गीत में भी सखियों ने मण्डप निर्माण करने वाले स्थान पर मण्डप देखने के लिए इच्छा प्रकट की है। वही प्रश्न कि खंभा कहाँ का, कमटी कहाँ की, कौन मड़वा बना रहा है। खंभे गोकुल के, कमटी मथुरा की और श्रीकृष्ण मण्डप बनाने वाले हैं। यही इस गीत का भाव है।

उक्त गीतों में भी मण्डप में उपयोग की जाने वाली वनस्पतियों का उल्लेख किया गया है। कहाँ से लायी गयी है, उनका मण्डप रचना में कौन उपयोग कर रहा है, यह भी वर्णन किया जा रहा है।

चलो सखि देखन चलिए रे जहां माड़ा परत है।
काहेन के थूनी काहेन केर खंभा कौन छैल डरवइया रे। जहां माड़ा ..
चन्दन के थूनी चन्दन के खंभा फलाने छैल डरवइया रे। जहां...
कहवां की थूनी कहां केर चन्दन काहेन अंगना लिपइयो रे। जहां ...
वन की थूनी बगीचा केर चन्दन गोबर अंगना लिपइयो रे। जहां ..
काहे के गोबर से लीपउं अंगना कितना अंगना लिपइयो रे । जहां...
सुरभिन गाय के गोबर से लीपउं चारउ खूंट अंगना लिपइयो रे। जहां ..
काहे के पत्ता से मड़वा छवइयो रे काहेन चौक पुरइयो रे। जहां ...
पान के पत्ता से मड़वा छवइयो मोतियन चौक पुरइयो रे। जहां...

इसमें भी परस्पर सखियों का आलाप है। वे कहती हैं कि सखी! जहाँ मण्डप बनाया जा रहा है, उसे चलो देखने चलते है। वहाँ खंभे किसके हैं, थूनी किसकी है और कौन रसिक यह मण्डप बना रहा है। चन्दन की थूनी और चन्दन का ही खंभा है और किसी का नाम जोड़कर गीत कहता है कि अमुक मण्डप बनाने वाले हैं। पुनः प्रश्न है कि थूनी कहाँ से आई, खंभा भी कहाँ से आए, आँगन किससे लिपाया गया है। वन से थूनी लायी गयी है; चन्दन बगीचे से लाया गया है और गोबर से आँगन लिपाना है। सुरहिन गाय के गोबर से आँगन लिपाना है और खूंट अर्थात् पूरा आँगन लिपवाना है। मण्डप में छवाई में किसके पत्ते लगेंगे और चौक किससे बनायी जायेगी। पान के पत्तों से मण्डपाच्छादन हो जाएगा और मोतियों से चौक पूरी जायेगी।

यह गीत भी मण्डप में आवश्यक खम्भा, थूनी, आँगन, गोबर से लीपना, चौक पूरना, पत्तों से छवाई कराना प्रक्रिया का निर्देश करता है।

चलो सखि देखन चलिए रे जहां माड़ा परत है।
कुम्हरा के बालक तैं मोरे भइया अच्छे–अच्छे कलसा धराए रे। जहां माड़ा परत है।

बढ़ई के बालक तैं मोरे भइयां अच्छे–अच्छे खंभा लगैयो रे। जहां... चलो.....
मलिया के बालक तै मोरे भइयां अच्छी–अच्छी मउरी लगाए रे। जहां ... चलो.
दरजी के बालक तै मोरे भइया अच्छे–अच्छे जामा ले आयो रे। जहां ..चलो.
लोहरा के बालक तै मोरे भइया अच्छे–अच्छे कंगन ले आवहु रे। जहां ..चलो..

यह गीत भी सखियों की जिज्ञासा से ही प्रांरभ होता है, परन्तु उसमें उन सभी विषयों का उल्लेख है, मण्डप में जिनकी आवश्यकता होती है। मण्डप सजने के बाद वहाँ कलश, खंभा, मौरी, जामा और कंगना सब लगते हैं। गीत अपने ढंग से वर्णन करता है। अरी सखी! जहाँ मण्डप बनाया जा रहा है, वहाँ देखने चलते हैं। कुम्हार के बेटे को कहती है, तुम मेरे भाई हो। अच्छे–अच्छे कलश मण्डप के नीचे रखवा देना। बढ़ई के बेटे तुम्ही मेरे भाई हो, अच्छे खंभों को मण्डप में लगाना। माली के बालक तुम भी मेरे भाई हो, अच्छी–अच्छी मौर बनाकर दे देना। दरजी के बालक तुम भी मेरे भाई हो, सुन्दर जामा लेकर आना। लोहार के बालक भी भाई ही है, भइया अच्छा–अच्छा कंकन/कंगन लेकर आना।

ये सभी वस्तुएँ विवाह में आवश्यक रूप से उपयोग में आती हैं। विवाह में भारतीय समाज के नाई, कुम्हार, बढ़ई, लोहार, माली, दरजी सब मिलकर सहयोग करते हैं, तभी विवाह हो पाता है। सामाजिक समरसता का यह उदाहरण दिनोदिन घटता जा रहा है।

मड़वा छामइ बाबा छामइ दुलेरूआ के बाप।
मड़वा परे हंइ अरइन बरइन खम्मन के लागी पांत।
भतवा रंधाइ बाबा पगरा उठवाइन बरा कै ओवरी पराय।
घिउ केर मढ़लिया मड़वे तरि धराइन दिहिन ओहिन तरी सबका बोरी।
गोहूं पिसामइ रोटी बनामइं लगिगा कुहूंजुआ केर ढूह ।
को–को खाइस को–को पाइस मड़वा के खाले बाम्हन खाइन।
पउनी खाइन परजा खाइन–खाइन सलगे नात भइया के होई बिआह।

मण्डप छवाई दूल्हे के दादा जी और पिताजी कर रहे हैं, अनेक खंभों की पंक्ति लगी है और अरई, पतले बाँस या लकड़ी से मण्डपाच्छादन कर दिया गया। भात इतना बनवाया गया कि दीवाल सी खड़ी हो गयी। (5–6 फीट की दीवाल, घर के सीमांकन के लिए बनायी जाती है; उसे पगरा कहा जाता है) बरा या बड़ा उड़द या मूंग की दाल का बनाया जाता है और बड़ा की मानो अटारी बना दी गयी। घी की मेढुली अर्थात् छोटा घर जैसा बना दिया और उसी में सबको डुबा दिया। गेहूँ पिसवा कर रोटी बनवा दिया, ऐसा लगा मानो केहेंजुआ पर्वत का ढूहा या ढेर लग गया है। यह सब भोजन कौन–कौन खाते हैं और कौन–कौन पाते हैं। मण्डप के नीचे ब्राह्मण भोजन होता है,

जो दान पाने वाले हैं– वे खाते है, जो सेवा करने वाले है, वे खाते है और सभी रिश्ते–नाते वाले खाते हैं, क्योंकि भाई का विवाह होने वाला है।

मण्डप के नीचे भोजन करने का नियम है, जिसका वर्णन इस मण्डप गीत में किया गया है। घर–परिवार, सगे–संबंधी, ब्राह्मण, काम करने वाले, काम आने वाले सभी लोगों का भोजन मण्डप के नीचे होता है। यह मण्डप जिसमें सारे कुल देवता, पितृगण, ऋषिगण और सभी देवताओं का आवाहन किया जाता है। गोत्र व परिवार की दृश्यादृश्य सारी पीढ़ी प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से वहाँ उपस्थित रहते है। सबका सह भोजन मण्डप की शोभा है।

अनइल बन से कनइल मंगावै वृन्दावन से बाँस।
पान के अरग दइके मड़वा छवाइनि मोतिअन चौक पुराइ।
ऊपर के अरग दइके लाले परेउना खाले रानी रनिवास।
केकर आहीं दुनउ लाल परेउना केकर रानी रनिवास।
फलाने राम के आहीं दूनौ लाल परेउना दुलहिन देई करै रानी निवास।

नए–नए वन से कनेर मंगाते हैं। वृन्दावन से बाँस मंगाते हैं और पान के पत्ते बिछाते हुए मण्डप छवा दिया जाता है। मोतियों से चौक बना दी जाती है, उसके ऊपर दोनों लाल परेबा अर्थात् कबूतर उड़ने लगते हैं और नीचे रानी का निवास अर्थात् रनिवास है। ये दोनों लाल कबूतर किसके हैं और रानी कौन रनिवास में है। बेटों के पिताजी का नाम लेते हुए कहा जाता है कि अमुक राम के दोनों लाल कबूतर अर्थात् तेज तर्रार बालक हैं तथा उसी की दुल्हन/पत्नी/वधू ही रनिवास में रह रही है।

मण्डप के गीतों में प्रायः एक जैसी बातें ही मिलती हैं। मण्डप में लगने वाली सामग्री बाँस, कमटी, थूनी बन्धन, पत्ता आदि का वर्णन तो स्वाभाविक ही है, परन्तु कुछ गीतों में मण्डप के नीचे क्या क्या–कार्य होते हैं, यह भी वर्णन कर दिया जाता है। ये लोक परम्परा की वाचिकता में ही क्रमशः पाए जाते हैं। मुख से मुख में जाते हुए ये गीत आगे–पीछे की पंक्तियों में बदलते रहते हैं। कहीं–कहीं विषयवस्तु में भी आंशिक परिवर्तन हो जाता है, स्थान भेद वाली बानी के भेद से इनमें थोड़ा बहुत अन्तर मिलने लगता है, परन्तु ये लोक साक्षी ही बने रहते हैं।

अनइल बन केर कनइल मंगाइनि वृन्दावन से बाँस।
ओहीं के मोरे बाबा मड़वा छवाइनि धरम के राखिनि दुआर।
वेदी जे पारिनि औ परतोरिनि छाइनि हरिअर बांस।

ओही चढ़ि बइठे बेटी के बाबा पूजहि शालिकराम।
भतवा रांधइ बाबा पगरा उठाइनि बरवा के ओवरी पराय।
घिउ केर मिढुलिया मड़ए तर धराए दिहिनि तिहिं बराबोरि।

किसी अनदेखे वन से कनेर को मंगाया। वृन्दावन से बाँस मंगा लिया। मेरे दादाजी ने उसी का मण्डप बनवा दिया और उसमें धर्म का दरवाजा बनवा दिया। उसके नीचे वेदी बनवाया, उसे सजाया, हरे–हरे बाँस छवाई में लगा दिया। बिटिया के दादा जी उसी मण्डप के नीचे वेदी में बैठ जाते हैं और अपने शालिग्राम की पूजा करते हैं। बाबा ने भात बनवाया, इतना भात बनवाया कि पगरा (आधी दीवाल) जैसा बन गया। बरा या बड़ा इतना बनवा दिया कि अटारी जैसी बन गयी। घी की मेढुली (पूजा घर) बना दिया और बड़ा को उसी में डुबा दिया।

हरे–हरे बाँसों से मण्डप रचना करते हुए उसके नीचे विवाह की वेदी का निर्माण किए जाने का विवरण इस गीत में दिया गया है। यह वेदिका है जहाँ वेदों के मंत्र पढ़े जाते हैं। वेदों का वाङ्मय अवतरित होता रहता है।

हरे बांस मण्डप छाए सुनो री सखी।
सुरहिन गाय का गोबर मंगाए दिन भर अंगना लिपाए। सुनो री...
सोने के गेडुवा गंगाजल पानी पान के मंड़वा छवाए । सुनो री...
गहना जेवर चुनरी सारी ठाढ़ जनक मुसुकाए। सुनो री सखी...........
ऐसन योग्य दमाद हम पाएन रुचि–रुचि भोग लगाए। सुनो री..............
जब वे भोग लगा के रीते लौगन बीड़ा रचाए। सुनो री.................

सखियाँ आपस में कहती हैं कि हरे–हरे बाँस के मण्डप छा दिए गए हैं। सुरही गाय का गोबर मंगाकर अंगना लिपा दिया गया है। सोने के लोटे में गंगाजल को पानी जैसे भर दिया गया है। पान के पत्तों का मण्डप छवा दिया गया है। आभूषण, चुनरी साड़ी सब लिए हुए जनक जी खड़े हुए हैं और मुस्करा भी रहे हैं। इस प्रकार योग्य दामाद (जामाता) हमें मिला है। यह समझाकर अपनी रूचि के अनुसार भोजन किया। भोग लगाने या भोजन करने के बाद पान का बीड़ा रचा कर प्रसन्न होने लगते हैं।

इस गीत में भी हरे बाँस के मण्डप की रचना के साथ आँगन का गोबर से लीप दिया जाना; स्वर्ण कलश में जल भरना, पान या पत्तों से मण्डपाच्छादन आदि का विवेचन किया गया है।

कोदव केर कोदइया लहिला कइ दुइ दार।
हमरे फलाने कइ दुइ रे बहिनिया दूनउं जबर छिनार।
जब–जब लहुरी चली रे गमनमां रोमयं सब लगबार।

न रोबा रसिया न रोबा विरसिया ना पत खेबा हमार।
तीजि करहिया हम फिरि अउबइ रखवै मान तोहार।
कोदव केर कोदइया लहिला कइ दुइ दार।
हमरे फलाने राम कइ दुइ रे बहिनियां दूनउं जबर छिबार।
जब जब जेठरी चलै गमन मां रोमय सब लगबार।
ना रोबा रसिया न रोबा बिरसिया ना पत खोबा हमार।
देवारी दशहरा हम फिरि अउबै रखवै मान तोहार।।

कोदों से बनी कोदई और चने की दाल जैसी ही हमारे श्रीमान् अमुक जी की दो बहनें हैं और दोनों भारी घुमक्कड़ हैं। छोटी वाली जब गौने के लिए चलने लगती है, तब सभी जुड़े हुए लोग रोने लगते है। वह कहती हैं कि रसिकों, उदास जनों, मत रोओ, मेरी इज्जत सम्मान मत नष्ट करो। तीजा हरतालिका को मैं फिर लौट कर आऊँगी और तुम्हारा सबका मान–सम्मान रखूँगी ही। इसी प्रकार बड़ी वाली जब चलती है गौने के लिए, तो सभी जुड़े हुए लोग रोने लगते है। रसिया, उदास, कोई भी मत रोओ मेरी आन मर्यादा बचाओ। दीवाली दशहरा तो मैं फिर से ही आऊँगी और तुम्हारा मान–सम्मान करती रहूँगी।

यह हास्य व्यंग्य विनोद कथन भी मण्डप के छाए जाने के समय होता रहता है। उसका चित्र प्रस्तुत गीत में प्रकट किया गया है। इससे मिलते–जुलते अन्यान्य गीतों को भी यथास्थान सुना जा सकता है।

के फूल मांगइं तोहरे भाई बहिनियां के फूल मांगइ तोहार भउजाइ।
राम सकुचाने लखन मुसुकाने सखियां उतर अब लेउ।
नहीं फूल मांगइ भाइ बहिनियां नहिं फूल मांगइ भउजाइ।
भउजी हमारि त इहां बसति हंइ कहां से मांगइ फूल।
लछिमन उतर सीता देवइन पाइन सीता केर आवा बुलाइ।

फूल कौन मांग रहा है, क्या तुम्हारे भाई–बहन फूल मांग रहे हैं अथवा तुम्हारी भाभी फूल मांग रही है। श्री राम तो सकुच जाते हैं, परन्तु लक्ष्मण मुस्कराने लगते हैं। कहते हैं सखियों अब उत्तर सुन लो। मेरे भाई–बहन तो कोई फूल नहीं मांग रहे है न ही भाभी मेरी फूल मांग रही है। मेरी भाभी तो यहीं रह रही है, तब फूल कहाँ से मांग रही है, सीता जी तो लक्ष्मण का उत्तर देने ही नहीं पाते है कि सीता का बुलावा ही आ जाता है।

इस गीत में तो राम और लक्ष्मण को लक्ष्य में करके ही हँसी–मजाक की बातें की गयी हैं। लोक जीवन में ऐसी बातों को सरसता पैदा करने के लिए किया जाता है।

चित्र विचित्र को मड़वा पान फूल छाए है।
आजा ओखे ढेरिया संकल्पैं जैसे जल माछल।
आजी ओखी ढेरिया लुकावैं जैसे घी का गागर।
बाबू ओखे ढेरिया संकल्पैं जइसे जल माछल।
मम्मी ओखी ढेरिया लुकावैं जइसै घी का गागर।

मण्डप में रंग–बिरंगे पान और फूल छाए गए हैं। बिटिया के दादाजी अपनी पोती को संकल्प करने लगे हैं, जैसे जल में मछली थी वैसी ही अभी तक यह रही है। परन्तु घी के घड़े के समान इसकी दादी अपनी बेटी को छिपा रही हैं। बेटी के पिताजी अपनी बेटी को जल मछली के समान संकल्प किए दे रहे है, परन्तु माता जी घी के घड़े के समान उसको छिपाती जा रही है। कन्या दान का प्रसंग गीत के माध्यम से प्रस्तुत हुआ है।

दुआर चार (द्वार पूजन)

बाजत आवइ करइली का बाजन घुमड़त तबला निशान।
नाचत आवइ पतरेगवा समधिया हो बिहँसत दुलहे दामाद।
का दइकइ मनउबइ अजनिहा बजनिहा का दइ तबला निशान।
का दइके मनावइ पतरेगबा समधिया का दइ दुलहें दामाद।
भात दइके मनउबइ अजनिहा बजनिहा घिउ गुर तबला निशान।
दइआ दइके मनउबइ पतरे अंगवा समधिया धिया दइ दुलहे दामाद।

वरयात्रा वर को दूल्हा राजा बनाकर आती है और दरवाजे पर विवाह के लिए विष्णु रूप बनने वाले दूल्हे का सविधि सम्मान वेद मन्त्रों और लोक मन्त्रों से किया जाता है। सारे उमंग और उल्लास के साथ वर के परिवारजन, संबंधीजन विवाह के साक्षी बनने के लिए आते हैं। द्वार पर वर की पूजा की जाती है। इस प्रक्रिया में भी लोकगीत बरसते हैं। उनमें कहीं बारातियों का वर्णन और कहीं तो हँसी–मजाक ही गाते गुंजाते रहते हैं।

बारात में घुमड़ता हुआ तबला बजने का चिन्ह आ जाता है। करइली का बाजा बजता रहता है। पतले शरीर का समधी नाचता हुआ आता रहता है और जामाता होने वाला दूल्हा बिहँसता हुआ, विशेष रूप से हँसता हुआ आता है। कन्यापक्ष की चिन्ता

होती है कि बाजा बजाने वाले को क्या देकर प्रसन्न करेंगे। तबला वादक को क्या देकर प्रसन्न किया जाएगा। बाजा बजाने वालों को भात देकर मना लेंगे। घी के साथ गुड़ देकर तबले वाले को मना लेंगे। समधी को दहेज देकर मनाया जायेगा तथा दूल्हे को कन्या का दान करके मना लिया जायेगा।

इस गीत में भी दहेज प्रथा का उल्लेख मिलता है। दूल्हे के लिए तो कन्यादान ही होता है, परन्तु उसके पिता को दहेज दिया जाता है। यह प्रथा पूर्व में स्वैच्छिक थी अब इसे तय करके, निश्चय करके लिया जाता है। यह बढ़ती हुई प्रथा अब निन्दनीय हो गयी है।

बेरिया क बेर तोही बरजेउं फलाने राम कि जेठवा न रचेउ बिआह।
हथिया औ घोड़वा पियासन मरिहीं औ बर जइहै कुम्हिलाय।
राह–राह हम आमा लगउबैऔ पग–पग सगरा खनाय।
अपने दुल्हेरूआ का छत्र तनउबै का करी भुभुराऔ घाम।
बाजत आवइं करइली के बाजा घुमड़त आवइ निशान।
नाचत आवइं पतले हो समधी और बिहँसत दुलहे दामाद।
ऊँच चौतरा चौखुंट बना है घन तुलसी कइ छांव।
ओहीं तरी बइठे है बेटी के बाबुल धमकत आवइं बरात।
एतनी बरात देखि बाबा हो फलानेराम दइ लीन्हे बजुरकेमार।
भितरे से निकरी है बेटी की माया पूंछइं बरतिया के हाल।
घोड़बा त आए है इनतिन गिनतिन हथिया त पूर पचास।
सारे बरातिअन कुछू नहिं सूझइ–सूझइ दुआरे के चार।

गीत कहता है बार–बार तुम्हें मना करता हूँ कि जेठ के महीने में विवाह नहीं करना, हाथी और घोड़े प्यास से मर जायेंगे। वर (दूल्हा) भी मुरझाया हुआ रहेगा। सारे मार्ग में हम आम के पेड़ लगाएंगे और कदम–कदम पर तालाब खोदवा देंगे। अपने दूल्हे के लिए छत्र तना देंगे, तब धूप भी और पैरों को जलाने वाली गर्म–गर्म धूलि भी क्या कर पाएगी। किया हुआ बाजा बजता आता है। बरात का निशान बाजे के रूप में घुमड़ता सा चला आता है। पतले–दुबले संबंधी भी नाचते हुए आ रहे हैं। दूल्हा भी मुस्कराता हँसता आ रहा है। घर में– आँगन में चबूतरा चौकोर और ऊँचा बना हुआ है, उसमें घनी तुलसी की छाया है, जिसकी छाया में बिटिया के पिता जी बैठे हैं और धम–धम करती हुई बारात आ जाती है। बारात बहुत संख्या में देखकर दादाजी ने वज्र

किबाड़ लगा लिया। अन्तःपुर से बेटी की माँ निकलती है और बरातियों का हाल–चाल पूछने लगती है। अनेक संख्या में घोड़े आए हैं और बारातियों को कुछ भी समझ में नहीं आता है केवल द्वारचार ही उन्हें समझ में आ रहा है। द्वार पर आयी हुई बारात का स्वागत करना, दूल्हे का स्वागत एवं पूजन कर कन्या दान के लिए श्रीधर बनाने का कार्य द्वार पूजन में होता है। वर के सम्मान में द्वारचार होता है। पहले हाथी, घोड़े, पालकी, रथ की सवारी में बाराती आते थे।

कहना के रे लीली घोड़ी कहना के बछेड़ा रे।
अमुक गांव की लीली घोड़ी अमुक गांव के बछेड़ा रे।
भाग चली लिल्ली घोड़ी रगड़ चलो बछेड़ा रे।
का चरै लिल्ली घोड़ी का चरै बछेड़ा रे।
दूब चरै लिल्ली घोड़ी दार चरै बछेड़ा रे। कहना...........

द्वार पूजन का प्रसंग है और घुड़सवारी न हो। ये गीत लोक के चित्र को उपस्थित करते हैं। रेवांचल में राजा–रजवाड़ों की बारात में घुड़सवारी की प्रथा परम्परा में रही आती थी। नीली घोड़ी कहाँ की है और उसके बछेड़े कहाँ के हैं। अमुक गाँव की नीली घोड़ी है और फला गाँव का घोड़ा है। जब नीली घोड़ी भाग चलती है, तब बछेड़ा अर्थात् अश्व शावक रगड़ता जाता है, घिसटता जाता है। लिल्ली अर्थात् नीली घोड़ी क्या चरती है और बछेड़ा क्या चरता है। दूर्वा ही नीली घोड़ी चरती है तथा नीला बछेड़ा दाल चरता है।

आया बन्ना बड़ी दूर से, बड़ी धूम से, बड़ी धाम से, कोई जादू न डारो रे।
आगे घोड़ा उनके आजा का, उनके आजा के पीछे आजी का म्याना।
बीच का घोड़ा शहजादे का दूल्हे राजा को कोउ नजर न मारे।

बन्ना अर्थात् दूल्हा बड़ी दूर से बारात लेकर आया है। बड़ी धूमधाम से बारात भी आई है। कोई इन पर जादू न डाल दे। बीच का घोड़ा ही दूल्हे का है, उसकी सजावट व सुन्दरता को देखकर उस पर कोई जादू न डाल देना।

दोनों गीत सामान्यतया बारात के आने पर गाए जाते हैं। पहला गीत तो हास्य कारी है, परन्तु दूसरा गीत बारात की शोभा का वर्णन करता है।

आज को दिन अच्छे रे भाई राम रघुवर आए।
जब मोरे रघुवर खरिकन लौं आए गउअन दान देवाए रे। भाई राम .....
जब मोरे रघुवर गोइड़ो लौं आए सूखी दूब हरिआए रे। भाई राम....

जब मोरे रघुवर दुअरा लौ आए मोतिअन चौक पुराए रे। भाई राम...
जब मोरे रघुवर अंगना लौ आए कंचन कलश ले आए रे। भाई राम ...

श्रीराम की बारात निकलने वाली है, इसी में यह गीत बन गया है। आज मेरे दिन अच्छे हैं। हे भाई! श्रीराम रघुवंशियों में श्रेष्ठ आज यहाँ आए हुए हैं। जब हमारे रामजी खरिकन अर्थात् गौओं के बैठने–रुकने के स्थान तक आते हैं, तब गायों का दान दिलवाते है। जब मेरे श्रीराम जी गाँव के पास तक आ जाते हैं, तब सूख रही दूर्वा हरी–हरी हो जाती है। परन्तु जब यही श्रीराम दरवाजे तक आ जाते हैं, तब मोतियों से चौक पूर दी जाती है, जब हमारे राम जी अंगना तक आ जाते हैं, तब सोने के कलश जला दिए जाते है।

दूल्हे का खरिका (पशु स्थान) तक आना, गोइणे (ग्रामान्त) तक आना, दरवाजे तक आना और फिर आँगन तक आता है। खरिका में गोदान, ग्रामान्त में हरी दूब, द्वार पर चौक निर्माण, आँगन में स्वर्णकलश सजाना पड़ता है।

राम रमापति राम रघुराई कि बोल मेरे भाई।
बैठे थे शंकर करत बड़ाई कि बोल मेरे भाई।
जटाओ से गंगा हमने बहाई कि बोल मेरे भाई।
बैठे थे हनुमान करत बड़ाई कि बोल मेरे भाई।
सोने की लंका है हमने जलाई कि बोल मेरे भाई।
बैठे थे नारद जी करत बड़ाई कि बोल मेरे भाई।
घर–घर में झगड़ा हमने कराई कि बोल मेरे भाई।
बैठे थे रामचन्द्र करत बड़ाई कि बोल मेरे भाई।
धनुष तोड़ि सीता को हमने ले आई कि बोल मेरे भाई।

अरे मेरे भाई! श्रीराम, रमापति, राम, रघुराई आदि बोलते रहो। शिवजी प्रशंसा करते हुए बैठे थे, बड़ाई कर रहे थे कि अपनी जटाओं से गंगा जी को मैंने ही बहा दिया है, श्रीराम बोलो। इसी प्रकार हनुमान् जी भी प्रशंसा करते हुए बैठे थे कि सोने की नगरी लंका को हमने जला दिया है, अब मेरे भाई श्रीराम बोलो। नारद जी भी अपनी प्रशंसा करते हुए बैठे थे कि सब घरों में झगड़ा मैंने करा दिया है, श्री राम कहो। बैठे–बैठे रामचन्द्र जी भी बड़ाई यही कर रहे थे कि धनुष को तोड़कर सीता को मैं ले आया हूँ सभी लोग राम श्री राम रमापति और रघुराई बोलो।

इस गीत में शिव, हनुमान, नारद और रामचन्द्र सबने अपनी–अपनी बातें की हैं, परन्तु सीता को पाने की बात केवल श्रीराम ने की है।

फूलों गेदा फूल टोरइया नहिं आय कोई रे।
दुलहा कै बहिनी घूमै बाजार रखइया नहिं आय कोई रे। फूलों......
दुलहा कै फूफू बन–बन घूमै रखइया नहिं आय कोई रे। फूलों .....
दुलहा कै दादी बन–बन घूमै रखइया नहिं आय कोई रे। फूलों .....
दुलहा कै काकी बन–बन घूमै रखइया नहिं आय कोई रे। फूलों .....

गेंदा का फूल चारों ओर फूला हुआ है, परन्तु इसे तोड़ने वाला कोई नहीं है। दूल्हे की बहन तो बाजार में घूमती है, पर उसे कोई रखने वाला नहीं है। दूल्हे की फूफू भी वन–वन घूमती रहती है, उसे भी रखने वाला कोई नहीं दिखता है। दूल्हे की दादी भी वन–वन में घूमती रहती है, उसे कोई रखने वाला नहीं है। इसी प्रकार दूल्हे की चाची भी वन–वन घूमती रहती है, उसे भी रखने वाला कोई नहीं मिल रहा है।

द्वार पूजन में हास्यप्रद गीत और गाली गलौज वाले गीत भी गाए जाने की परम्परा सारे रेवांचल में दिखती है। यह गीत उन्हीं में से एक है।

अड़ि रहे पमन दुआर सुघर बर अड़ि रहे है।
ऊं ता हेरइ अपने फूफू के भतार सुघर बर अड़ि रहे हो।
ऊं ता हेरइं अपनी बहिनी के भतार सुघर बर अड़ि रहे हो।
खोजा–खोजा हो बाबा फलाने राम सुघर बर अड़ि रहे हो।
खोजा–खोजा हो काका फलाने राम सुघर बर अड़ि रहे हो।
ऊं ता हेरइ अपने मामी के भतार सुघर बर अड़ि रहे हो।
ऊं ता हेरइ अपने मौसी के भतार सुघर बर अड़ि रहे हो।

यह भी द्वार पूजन का गाली गीत है। सुन्दर घर में पवन की भाँति वर (दूल्हा) अड़ गए हैं, वे अपनी फूफू, बहन के पति की खोज कर रहे है। अरे बाबाजी! काकाजी! दूल्हे को ढूंढ कर लाओ। वे अपनी भाभी और मौसी के लिए पति ढूँढने में लगे हुए हैं।

एक और गाली गीत प्रस्तुत है :–

अंगने मोरे नीम लहरिया लेइ अंगने मोरे हो।
जहंना फलाने राम गाड़े हिंडोलना गाड़े हिंडोलना।
अरे उनकर दीदी फलनिया झूलि–झूलि जाय। अंगने मोरे...
जहंना फलाने राम गाड़े हिंडोलना गाड़े हिंडोलना।
उन कर फूफू फलनिया झूलि–झालि जायं। अंगने मोरे...

हमारे आँगन में नीम लहराने लगी है, वह अमुक राम झूला गाड़ दिया है और उनकी बहन जी झूलने आ जाती हैं और झूला झूलकर जा रही हैं, उनकी बुआ जी भी हिण्डोला में झूला झूलकर आती हैं।

तखते पर नचते आमइ रे बन्ना तखते पर।
अपने माया का नचावत ले आवइं रे बन्ना तखते पर।
अपने काकी का नचावत ले आवइं रे बन्ना तखते पर।

दूल्हा नाचते कूदते तखत पर आ रहा है और इसी प्रकार अपनी माता तथा चाची को नचाता हुआ ले आ रहा है। इन गीतों में दूल्हा और उसके परिवार जनों का उल्लेख करते हुए तथा कभी–कभी बरातियों का उल्लेख करते हुए निन्दा, प्रशंसा, हँसी आदि सभी का विवेचन किया जाता है। आगे के गीतों में यही रूप है।

जेतने बरतिहा आए रे सब करिअइ करिया।
पत्ता कै टोपी लगाए रे सब करिअइ करिया।
बड़े–बड़े मेंछन के आए रे, सब करिअइ करिया।
मट्टी के तेल लगाए रे, सब करिअइ करिया।
हांथी न लाए घोड़ा न लाए हांथ झुलावत आए रे। जेतने...

जितने बाराती आए हैं, सब काले ही काले हैं। पत्ता की टोपी लगाए हुए है और सभी काले–काले है। बड़ी–बड़ी मूंछों वाले हैं, पर सभी काले हैं। मिट्टी का तेल सिर में लगा कर आए हैं, न हाथी लाए न ही घोड़ा लाए हैं, सभी काले ही काले आए हैं।

कहंमइ केर बरतिहा हो सब करिअइ करिया।
कहंमइ केर देखइया हो सब गोरियइ गोरिया।
हुंअनइ केर बरातिहा हो सब करिअइ करिया।
उहनइ केर देखइया हो सब गोरियइ गोरिया।

कहाँ के बाराती आए हैं, सभी काले कलूटे ही हैं। कहाँ के बारात देखने वाले आए हैं, ये सब गोरे ही गोरे आए हुए हैं। अरे! वहाँ के बाराती हैं, सभी काले हैं, परन्तु यहाँ के घराती हैं, सभी गोरे ही गोरे दिख रहे हैं।

जाय बारात जनकपुर मेली भए नउअन केर बुलाव।
असने केर घोड़वा मैं तोहि देइहौं नउआ राम जी का छतरी देखाउ।

बारात जाकर जनकपुर मैं मेली गयी और नाई लोगों का बुलावा हुआ। अरे नाऊ! मैं तुम्हें घोड़ा दूँगा, तुम रामजी को छतरी दिखा दो।

बापउ पूत बिआहन आए उढ़री महतारी रे।
काटे कूटे पान ले आए खोखली सुपारी रे।

बाप बेटे विवाह के लिए आए हैं, परन्तु उनकी माँ दूसरे की पत्नी थी। फिर इनके आ गयी थी। पान भी कटा लाए और खोखली सुपाड़ी लेकर आ गए है।

चढ़ाव (रक्षासूत्रादिग्रहण)

सिरी सीताजी का चढ़त चढ़ाव सिरी मण्डप के नीचे।
सिरी सीताजी का होत है विवाह सिरी मण्डप के नीचे।
सिरी सीताजी का झूमक बेदी पहिनाउ सिरी मण्डप के नीचे।
हांथे मां कंगन अंगूठी पहिनाव सिरी मण्डप के नीचे।
सिरी सीताजी का छागल बिछुआ पहिनाव सिरी मण्डप के नीचे।
सिरी सीताजी का चढ़त चढ़ाव सिरी मण्डप के नीचे।

द्वार पर आए हुए दूल्हे की षोडशोपचार पूजा, उससे और कन्यादाता से गणपति पूजा हो जाती है। उसके बाद मण्डप में कन्या के द्वारा गणेशादि का पूजन होता है। साथ ही पंचलोक पाल, नवग्रह एवं शची पुरन्दरादि का पूजन कराते हैं। वरपक्षीय जन कन्या के लिए सिन्दूर, रक्षासूत्र, आभूषण, वस्त्रादि श्रृंगार की सामग्री ले आते हैं और उसका पूजन कर कन्या ग्रहण कर लेती है। यह सब श्रृँगार सामग्री चढ़ाव की सामग्री कही जाती है। इस समय भी लोक मुखर हो जाता है, गीतों के माध्यम से अपनी बात कहता है । इसकी परम्परा है, न केवल एक वधू के विवाह में ये गीत गाए जाते हैं, अपितु सभी वधुओं के चढ़ाव में यही उपक्रम और नाम परिवर्तन के साथ यही गीत गाए जाते है। इसीलिए ये लोकगान है, इनकी वाचिक परम्परा और कहें तो श्रुति परम्परा ही है। इनकी भी अक्षुण्णता तभी तक है, जब तक लिखे नहीं जाते, लिखने में वर्त्तनी की शुद्धाशुद्धि सामने आने लगती है। परम्परा में तर्क बुद्धि प्रवेश करने लगती है और विकृतियों को रोका नहीं जा सकता है।

श्री शोभा से युक्त मण्डप के नीचे श्री सीता जी का चढ़ावा चढ़ रहा है, उनका विवाह हो रहा है, उन्हें झूमक और वेदी श्रीमण्डप के नीचे पहनावें। हाथ में कंगन और अंगूठी पहना दो, उन्हें छागल और बिछुआ भी पहनाओ। यही सब पहनाने से चढ़ाव की

श्रृँगार प्रक्रिया पूरी हो जाती है। सीता को नामांकित करने वाले अनेक लोकगीत थोड़े से परिवर्तन के साथ पाए जाते हैं। इनमें सीता के अंगों में आभूषण पहनाते हुए सजाने का वर्णन ही मिलता है। अगले गीत में आज श्री सीता जी का चढ़ाव हरे मण्डप के नीचे चढ़ रहा है, ऐसे भाव प्रकट हुए हैं।

आज श्रीसीता जी के चढ़त चढ़ाव श्रीहरि मण्डप के नीचे।
आज श्रीसीता जी को बिन्दी पहनाऊं श्री मण्डप के नीचे। आज ....
आज श्रीसीता जी को झुमका पहनाऊं श्री मण्डप के नीचे। आज ....
आज श्रीसीता जी को हरबा पहनाऊं श्री मण्डप के नीचे। आज ....
आज श्रीसीता जी को चुड़िया पहनाऊं श्री मण्डप के नीचे। आज ....
आज श्रीसीता जी को पायल पहनाऊं श्री मण्डप के नीचे। आज ....
आज श्रीसीता जी को चुनरी पहनाऊं श्री मण्डप के नीचे। आज ....

इस गीत में बिन्दी, झुमका, हार, चूड़ियाँ, पायल और चुनरी से सजा देने का उल्लेख मिलता है। इसके आगे के गीत में अवधेश विवाह करने आए हैं, अस्तु सीता जी का चढ़ाव चढ़ाया जा रहा है, ऐसा गीत मिलता है। सुरभी अर्थात् गाय का गोबर मंगाया जाता है और पूरे आंगन को गोबर से लिपा दिया जाता है। सीता जी को मण्डप के नीचे सोने से बने हुए पीढ़ा या आसन में बैठा दिया गया है और चौक (अष्टदल कमल) बनायी गयी है, जिसमें मोती के दाने भर दिए गए हैं। यह छवि देखकर खड़े हुए जनक जी मुस्कराते हैं ओर सोचते हैं कि आज अपनी सामर्थ्य के अनुसार ही हमें संबंधी मिल गए हैं। सारी जनकपुर की नगरी में मांगलिक कार्य घर–घर में किए जा रहे हैं, वहाँ की सारी जनता के मन में हर्ष या आनन्द भर गया है। क्योंकि आज के दिन अयोध्या के राजा अपने बेटों का विवाह करने जनकपुर में आए हुए हैं। यह संबंध शुभकारक है। लोक में कन्या का विवाह सोत्साह होता है और प्रायः कन्या पिता को जनक जी और वर पिता को दशरथ मानकर ही सारे व्यवहार किए जाते हैं। जनकपुरी का अभिप्राय ससुराल से भी निकाला जाने लगा है।

आजु सिरी सियाजी का चढ़त चढ़ाउ यही मण्डप के नीचे।
धन्य भाग ससुर जी अइसन बहू पाइन यही मण्डप के नीचे।
धनि भागि जेठ जी कै जे पाइन अइसन बहू यही मण्डप के नीचे।

इसी मण्डप के नीचे सीता जी का चढ़ाव चढ़ रहा है। ससुर जी का धन्य भाग्य है कि इस मण्डप के नीचे इस प्रकार की बहू मिली है। इसी प्रकार जेठ जी का भी धन्य भाग्य है कि इसी मण्डप के नीचे इस प्रकार की बहू पा गए हैं।

एक और लोक गीत मिलता है, जिसके बोल यही हैं कि आज हरे मण्डप के नीचे मेरी सीता जी का चढ़ाव चढ़ रहा है। बहू या बेटी के माथे का सिन्दूर ही पहला सौभाग्य सूचक है। सब लोग सिन्दूर भर–भर उत्साह में भरी हुई हैं। कोई सखी, सहेली कोई सौभाग्यवती नारियां सब इकट्‌ठा हो–होकर आई हैं और अहिवात–अखण्ड सौभाग्य या पातिव्रत्य के लिए मन्नतें कर रही हैं। नारियाँ नेगहारिनें सब राजा से हँसी–ठिठोली भी करती जा रही हैं और अपने नेग भी गिनवाती जा रही हैं। पर यह सब हरे ताजे मण्डप के नीचे ही किया जा रहा है।

आज मोरी सीताजी के चढ़त चढ़ाउ हरे मण्डप के नीचे।
पहला सोहाग बन्नी माथे के सेन्दुरा भरि–भरि देती उराव हो। हरे.........
सखियां सहेली सोहागिनी समिटि सब करैं अहिवात कै मनावा हो। हरे........
नारी नेगहारी मिलि राजा से ठिठोली कैं–कैं नेगन के करत गिनावा हो।

इसी प्रकार अलग गीत है कि आज श्री सीता जी का चढ़ाव चढ़ रहा है, वह भी जनक जी के आंगन में। दशरथ जी चढ़ाव में जो–जो लेकर आए हैं, उसका उल्लेख किया जा रहा है।

सियाजी के चढ़त चढ़ाव जनकजी के आंगन में।
कंचन वेदी गढ़ाय लाएं दशरथ मोतियन लखत चन्द्रभाल।
झुमक सोहे कानन में, जनकजी के आंगन में। सियाजी..........
गले में मोतिअन हार सुशोभित बेसर बनी पुखराज सिया सोहे नाकन में। सियाजी.
हांथ में कंगना संकरी कमर में पायल घुंघुरूदार सियाजी के पायन में। सियाजी.
अति विचित्र मुद्रिका मनोहर मणियों की बनी चूड़ियां सिया सोहे वाहन में । सियाजी.
रंग केशरी की साड़ी पहिने मोतिन जड़े है जड़ाव बनी है कैसी लाखन में। सियाजी

जनक जी के आंगन में सीता जी के चढ़ाव का एक दृश्य इस लोक गीत में प्रस्तुत किया गया है। दशरथ जी सोने की बेंदी बनवाकर ले आए हैं, वह मस्तक पर है। ललाट में मोतियाँ चन्द्रोज्ज्वल शोभित है, कानों में झूमक सजे हुए हैं। गले में मोती का ही हार शोभा पा रहा है। पुखराज की बेसर अर्थात् नथ बनी हुई है, जो नाकों में सजी हुई है। हाथों में कंगन पहने है, कमर में सांकर पहनी हुई है। पैरों में घुंघुरूदार पायल भी पहने हुए हैं। उंगलियों में रंग–बिरंगी मुंदरी पहनी गयी है और मनोहारी मणियों की चूड़ियाँ सीता जी के बांहों में अच्छी लग रही हैं। केशरिया रंग की साड़ी सीता जी ने पहन रखी है, जिसमें मोती जड़े हुए हैं। वह लाखों में बनी हुई है।

रसिक परम्परा में गाया जाने वाला एक और चढ़ाव गीत है, जिससे सुनैना जी की बेटियों का चढ़ाव चढ़ रहा है। ऐसा उल्लेख किया गया है कि सौभाग्यवती स्त्रियों ने मिलकर सीता जी को सजाया है। घरों–घरों में मंगल सजाकर तने हुए छत्र ऊपर सजाए गए है। भौंह घुमाती हुई नाइन महाउर लगाती जा रही है।

जइसइं सेंधउरा से सेन्दुर झलकइ ओइसइ बेलहरी में पान।
वोइसइ झलक दइ के निकरी फलानी देई बइठी है चउके मां जायं।
हांथे में सेंधउरा लीन्हे खाए मुख पान हो कि।
बिना पउंदे मोरी ढेरिया चउके न जाइ हो कि।
एतना जो सुनिनि ससुरू फलाने राम सिर कइ
पगड़िया दिहिन पउंद विछाइ हो कि
एतना जो दिखिनि हइ जेठबा फलाने राम कंधवा कइ
अंगउछी फेकिन पउंद परि जाइ हो कि।
एतना जो दिखिनि हइ देवरा फलाने राम
हाथ कइ रूमलिया दिहिन पउंद डारि हो कि।

गीत सिन्दूर रखने वाले सेंधौरा से शुरू होता है कि सिन्दूर जिस प्रकार सेंधौरा में झलकता रहता है और उसी प्रकार बेलहरी में पान का पत्ता भी झलकता रहता है। इसी प्रकार झलक दिखाकर बेटी घर के कमरे से निकलती है और चौक में जाकर बैठ जाती है। हाथ में सेंधौरा लेकर मुख में पान खाते हुए चल रही मेरी कन्या पउंदि (पैदल चलने के लिए कपड़े) के बिना चौक में नहीं जायेगी। इतना सुना कि उसके भावी ससुर ने अपने सिर की पगड़ी उतार दी और पउंद बिछाने के लिए दे दिया, यह सब जब जेठ देखते हैं तो अपने कंधों पर रखी अंगौछी (अंगवस्त्र) को फेंक देते है और वही पौंद बन जाती है। देवर जब यह देखते हैं तो अपने हाथ का रुमाल पौंद के लिए दे देते हैं।

चढ़ाव के मण्डप में कन्या को कौतुकागार से लाया जाता है, जब वह आँगन में पैर रखती है तो कोई कपड़ा कमरे से मण्डप तक बिछा रहता है, इस कपड़े को पउंदि या पौंद कहते हैं। यह कपड़ा वर पक्ष के लोग ही ले आते हैं। गीत कहता है कि चौक तक वधू बिना पौंद नहीं आती है– अस्तु ससुर, जेठ, देवर सभी अपने–अपने उत्तरीय वस्त्रों को पौंद में उपयोग हेतु दे देते हैं। रेवांचल में पौंद के लिए एक साड़ी नाइन को दी जाती है, जिसे वह कोहबर से वेदी तक बिछा देती है। उसी में स्वस्तिमन्त्रों के साथ कन्या पैर रखती हुई चलती है।

जैसे सेंधौरी मां सेन्दुर झलकै जैसे गंगा जल पानि।
वैसे झलक दैके निकली चन्दा देई चौके बैठी आय।
काहे बेटी अनमन काहे बेटी उनमन काहे बेटी बदन मलीन।
मैं तोसे पूंछउं बेटी तोर सोनवां मलीन धौं रूपवा है खोट।
ना माया मोर सोनवा धूमिल ना रूपवा है खोट।
हम धन गोर पिया मोर सांवर ये गुन बदन मलीन।
सांवर सांवर ना करा बेटी सावर हमैं भगवान्।
संवरे कन्हैया मुख मुरली बजावैं मोहि रहे संसार।
माया के कोखि कुम्हार के आवां कोउ करिया कोउ गोर।

सेंधौरी में सिंदूर की झलक जैसी शोभा पाती है, उसी प्रकार गंगा में जल झलकता है, शोभा पाता है। इसी प्रकार झलक देकर चन्दा देवी निकलती हैं और चढ़ाव की चौक में आकर बैठ जाती है। प्रश्न होता है कि बेटी काहे तुम बेमन हो, काहे उदास मन की हो, तुम्हारा मुँह क्यों मलिन पड़ा हुआ है। बेटी मैं तुमसे पूछ रहा हूँ कि तुम्हारा सोना मलिन है या रुपया खोटा है, क्या कारण है। माँ न तो मेरा सोना धूमिल है और न ही रुपये में खोटापन है। मैं तो गोरी हूँ परन्तु मेरे प्रियतम पति साँवले रंग के हैं इसी गुण के कारण मेरा मुख कुम्हलाया हुआ है। माँ बेटी को समझाती है कि बेटी साँवरा–साँवरा न करो, क्योंकि भगवान् भी तो साँवले ही हैं। साँवले रंग के कन्हैया मुरली बजाते हैं और इस गुण से सारे संसार को मोहित करते जा रहे हैं। माँ की कोखि, कुक्षि या पेट तो कुम्हार के आँवा अर्थात् ईंट पकाने के भट्‌टे जैसी है, इसमें दो ही रंग के लोग होते हैं, कुछ लोग काले रंग के होते हैं और कुछ लोग गोरे भी होते हैं।

यह गीत यही संकेत करता है कि विवाह योग्य कन्या के मन में लड़के के गोरे मिलने का आकर्षण होता है। वह यदि गोरा न हुआ तो उसे साँवले पति के मिलने का थोड़ा दुःख या उदासी होती है।

दुलहे के बाप का ही एकौ न देखाय रे हमरे लाड़िलिया का बार–बार झांकै रे।
सांदना मां बांधि देइहौं बंधना मां बाधि देइहंउं मड़ए झुलाय देइहौं। दूलहे के...... ।
दुलहे के चाचा को ही एकौ न दिखाय रे हमरे लाड़िलिया का बार बार झांकैं रे।
सांदना मां सांदि देइहौं बांधना मां बांधि देइहौं मड़ए झुलाय देइ हौ।
दुलहे के मामा को ही एकौ न दिखाय रे हमरे लाड़िलिया का बार–बार झांकइ रे।
सांदना मां सांदि देइहौं बंधना मां बांधि देइहौं मड़ए झुलाय देइहौं।

मण्डप में चढ़ाव के प्रसंग में रक्षा सूत्रादि भी कन्या को धारण कराया जाता है।

द्वार पूजन में सारा कन्या पक्ष वर को देखता है और चढ़ाव में सारा वरपक्ष कन्या को देखता है। संभवतः वर के संबंधी कन्या को देखते रहते हैं और लोक जीवन में कोई गीत बन जाता है। लोक कण्ठ गाने लगता है कि दूल्हे के पिता जी को लगता है कि बिल्कुल दिखाई नहीं पड़ रहा है, वे हमारी लाड़ली बेटी को बार–बार देखते हैं, झाँकते हैं और यह सब लोकरुचि का नहीं है। अस्तु वे गा उठती हैं कि रस्सी से मैं उन्हें पैरों में सांद दूँगी अर्थात् बाँध दूँगी और बन्धन से बाँध भी दूँगी। इसी मण्डप में टंगा दूँगी तो ये झूलते रह जाएंगे। यही बात दूल्हे के चाचा कर रहे हैं उन्हें भी दिखता नहीं है, वे बेटी को बार–बार झाँकते हैं, देखते हैं, उनके साथ भी यही व्यवहार मैं करूँगी या हम करेंगे। बांधना, सांदना, मण्डप में रंगाना उन पर भी लागू हो रहा है। दूल्हे का मामा भी इसी प्रकार का काम कर रहा है, उसे भी नहीं दिखता है। वह भी ताँक–झाँक करता है। उसके साथ भी वही क्रम रखूँगी। यह गीत कन्या को बार–बार देखने पर आपत्ति करते हुए आगे बढ़ता है।

कोठवा के तीरे तीरे बसिगें सोनार हो कि।
अजबा फलाने राम डारले हंकार हो कि।
आवा हइ सोनरबा डेउढ़ी धरे ठाढ़ हो कि।
काहे खातिर मोरे साहिब परिगे हंकार हो कि।
गढ़ा सोनरा बाजूबन्द कंकना रबारि हो कि।
गढ़ा सोनरा माथबेंदी धिया का सिंगार हो कि।
गढ़ा सोनरा कड़ा छड़ा बिछुआ रबारि हो कि।
गढ़ा सोनरा पायजेहरि धिया का सिंगार हो कि।
एतना पहिरि धिया चउके मां आई हो कि।
दुलहे निहारइ लागि भरि भरि डीठी हो कि।
एतना जो दिखिन हइ भइया फलाने राम उठे रिसिआई हो कि।
बड़ी गोरी मोरि बहिनी काहे डारे डीठि हो कि।

कमरे के आसपास सोनार (स्वर्णकार) लोगों ने निवास बना लिया, तब उन्हें दादाजी ने पुकार कर बुला लिया। सोनार आकर देहली में खड़ा हो गया। पूछता है कि साहब आपने क्यों बुलाया। तब दादी जी बोलती हैं कि– हे स्वर्णकार! बाजूबन्द, कंगना, माथेबेंदी सब बना दो, यह मेरी बिटिया का श्रृंगार होगा। कड़ा, छड़ा, बिछुआ, पायजेब (पायल) सभी बेटी के श्रृंगार के लिए बना देना। यह सब पहनकर बेटी जब चौक या मण्डप में आई तो दूल्हा भर–भर आँखें देखने लगता है। यह देखकर बेटी का बड़ा भाई नाराज हो गया और कहने लगा कि मेरी बहन बहुत गौर वर्ण की है। इस

प्रकार तुम क्यों नजर लगा रहे हो। यह गीत कन्या के श्रृंगार हेतु स्वर्ण आभूषणों की जानकारी प्रस्तुत करता है।

पहिरे कुसुम रंग साड़ी किशोरी चलीं सोहे कर जयमाला।
देखहिं भूप सीय की शोभा मोहे रूप निहारी।। किशोरी चली..
रंगभूमि सिया सोहै कैसी शरद चन्द्र उजियारी। किशोरी चली...
कंकण किंकिणि नूपुर बाजत गावहि पुर नर नारी। किशोरी चली..
सिय उर माल राम जब मेली देव करहिं जयकारी। किशोरी चली..
रानी सुनैना मन अति हरषेउ बहुआ आरती उतारै।। किशोरी चली...

कुसुम या कुसुंभी रंग की साड़ी पहनकर किशोरी जी हाथ में जयमाला लेकर चल पड़ी, उनकी शोभा अच्छी थी। सभी राजा सीता की शोभा सुन्दरता देख रहे थे और उनका रूप सौन्दर्य देखकर सभी मोहित हो रहे थे। उस रंगभूमि में सीता जी की शोभा ऐसी ही हो रही थी, जैसे शरद् ऋतु के चन्द्रमा की चाँदनी अच्छी लगती है। कंकण, किंकिणी और नूपुर बज रहा था, नगर में नर और नारी गीत गा रहे थे। सीता जी के हृदय में रामजी ने जब माला डाल दी तो सभी देवता जय–जय करने लगते हैं। यह सब देखते–सुनते रानी सुनैना का मन बहुत प्रसन्न होने लगा, सभी मिलकर आरती उतारने लगती हैं।

यह प्रसंग जयमाला के समय का है। इसमें सीता जी के कैशोर्य भाव का सौन्दर्य सविस्तार वर्णित हुआ है।

जे नयना लोभिआयं लए री जे नयना।
जब सीताजी का चढ़ो चढ़ौना।
सीता चरकी हो गई री जे नयना। जे नयना...
जब सीता जी को मण्डप मा आयनो
सीता हरियर हो गयी री जे नयना। जे.
जब सीता जी को परै भांवरें
सीता बिरानी हो गयी री जे नयना। जे नयना..

श्री सीता जी मण्डप के नीचे चढ़ाव हेतु बैठी थीं उन्हे देखकर नयन लोभ में पड़ जाते है। इसी बात पर गीत बना और दर्शकों का गान है कि ये नेत्र लोभाविष्ट हो गए हैं। जब सीता जी का चढ़ाव चढ़ा, तब नैन ललचाने लगे हैं। सीता जी श्रृंगार में चरकी चितकबरी सी हो गयी हैं। जब सीता जी मण्डप में आती हैं तो फिर वे हरी–हरी हो जाती है। उन्हें देखकर नैन लोभाक्रान्त हो जाते हैं। बार–बार देखना चाहते हैं। अरे!

यही सीता जब मण्डप के नीचे भाँवर पड़ जाने पर परायी हो जाती हैं। सारी ममता स्नेह, आकर्षण अब पराया हो गया है या सीता के साथ राम हो गए हैं। पहले वे राम की बाद में दूसरों की हो जाती हैं।

यह सीता धरती की बिटिया का नाम है। इस धरती की सभी कन्याएँ सीता होती हैं। भारत में प्रत्येक कन्या का विवाह सीता विवाह ही होता है। हर घर की दुलारी बेटी ही तो सीता है, वह हर घर के लांगल की हल की रेखा है, इसी से संभवतः चढ़ाव सीता का ही चढ़ता है। मण्डप की वेदी में सीता ही होती है और उसे सजाया जाता है। यह सजी–साँवरी सबको आकर्षित करती है और उसे बाराती देखना चाहते है। इसी विषय को लेकर यह लोकगीत बन गया है।

आज सुनैना जी के बिटिया के चढ़त चढ़ावा हो।
मिलि के सुआसिन बनाई बनावा हो।
घर–घर मंगल साजि तने है तनावा हो।
रंगत महाउर नउनिया भौह मटकावा हो।
देखि–देखि राजाऔ रानी बिहँसि बिहरावा हो।
धनि–धनि नगर के लोग नयन फल पावा हो।

यह सब चरित्र देखकर राजा और रानी बिहँसते भी हैं और हँसते भी हैं। धन्य हैं सब नगर के बसने वाले जो इन्हें देखकर अपने नेत्रों का फल पा रहे है। यहाँ घर घर में चाँदनी सजी हुई है, मंगल कलश बने हुए हैं। महाउर सभी लगवा रहे हैं और यह उत्साह–उल्लास देखकर राजा रानी सभी प्रसन्न हो रहे हैं।

सौभाग्यवती (सुहागिनी) स्त्रियाँ सीता को मिलकर सजाने में लगी हैं। प्रत्येक घर में मंगल वाद्य बजते जा रहे हैं। नाइन महावर लगाकर नजरें और भौंहे मटकाती चलती हैं। यह सब विवाह के क्रम में सम्पन्न होता है और रानी राजा प्रसन्न हो जाते हैं। अब व्यवसायीकरण का प्रभाव नगरों में व्याप्त हो गया है, गाँवों में यह क्रम अवश्य बचा हुआ है।

विवाह

यह सृजन का संस्कार है, द्वैत के अद्वैत होने का संस्कार है। मनुष्य दो होकर भी मनसा, वाचा, कर्मणासे एक हो जाता है। एक का गोत्र दूसरे में लीन हो जाता है। यह सब लोक साक्षी में भी होता है और वेदसाक्षी में भी होता है। देवसाक्षी तो सारे मण्डप के देवता होते है, परन्तु सभी देवों के मुख भूत अग्निदेवता ही इस दाम्पत्य जीवन के देवता होते हैं। अग्नि ही गृहस्थ का देवता है। सारे देवताओं, मनुष्यों का जीवन एवं भोजन अग्नि पर ही आश्रित होता है। पुरुष और स्त्री सर्जना की भावना से एक होते हैं। काम इन्हें जोड़ता है, अद्वैत करता है और एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति तथा 'रूपं रूपं प्रतिरूपं बभूव' को स्थापित करता है। यह विवाह ही ऐसा संस्कार है जो सांस्कृतिक एवं सामाजिक रूप से स्त्री–पुरुष को एक साथ रहने की अनुमति देता है। यह स्वीकृति न केवल देवी–देवताओं की पूजा से ली जाती है अपितु कुल गोत्र, संबंधी–सजातीय, सहग्राम, सनगर सभी के सामने सम्पादित विवाह में सारा समाज स्वीकृति देता है। कन्या सारे गाँव की मर्यादा के रूप में ससुराल जाती है।

रेवांचल के विवाह गीतों में वे दृश्यबन्ध और वाक्यबन्ध उपलब्ध होते हैं, जिस विवाह से बढ़ई, लोहार, दर्जी, बनिया, तेली, नाई, पण्डित, माता–पिता, चाचा–चाची, भाई–भाभी, बुआ–फूफा, जीजा–जीजी, दादी–दादा आदि की सहभागिता प्रमाणित होती रहती है। सबके स्नेह, महत्व एवं प्रयास का परिणाम विवाह की सम्पन्नता होती है। पहले इस कार्य में तीन दिन लगते थे। जिससें दोनों पक्षों का ठीक से परिचय हो जाता था परन्तु इन दिनों यह संस्कार भी एक दिन का होने लगा है। द्वार पूजना, चढ़ाव एवं विवाह तथा अंजुरी एक ही साथ सम्पन्न करा दिए जाते हैं। यहाँ विवाह के आंचलिक गीतों का ही वर्णन किया जाता है।

केकरि आहीं गजगहिनी बखरिया हो सुरजन एक दुआर।
केकर पुतवा दरश काहे सुन्दर बांचत पोथिया पुरान।
उनहिन के आहीं गजगहिनी बखरिया सुरजन मुख आहीं दुआर।
उनहिन के पुतवा दरस केइ सुन्दर बांचत पोथिया पुरान।
ओहिन होइ के निकले हंइ दुलहे दुल्हेरूआ हो अरूझइ रे मडरिया।
आपुन भितरे से बोली हंइ बेटी फलानी देई सुना बाप विनती हमारि।

हाथी के निकलने जैसे विशाल दरवाजों वाली बखरी (बड़ा घर) किसकी है, जिसमें सूरजमुखी अर्थात् पूर्वमुख का द्वार (दरवाजा) बना हुआ है। किसका बेटा देखने में सुन्दर है और पुराण की पोथी बाँचने में लगा है। उन्हीं की यह विशाल भवन वाली रहाइस (वसति) है, उन्ही का पूर्व मुखी द्वार है। इन्हीं का पुत्र देखने में सुन्दर लग रहा हैं। उसी मार्ग से दूल्हा जी (वर) निकल पड़े। उनकी मौर उलझ जाती है। अमुक नाम वाली बिटियाँ भीतर रहती है और वही बोल उठती है कि पिता जी मेरी बिनती सुनो।

पूर्व समय में बड़े घर में रहने वाले, पुराणादि विद्या में व्युत्पत्ति और सूर्यमुखी द्वार अर्थात् सूर्योपासना करने वाले लोग ही समाज में श्रेष्ठ होते थे। वर ऐसे घर का होता है और वह मौर बांधे हुए हैं, वही मौर ऊँचाई के कारण मार्ग में अटक जाती है और इसी क्रम में बेटी उसे देख लेती है और पिता से यह सब बता देती है।

का देखि मछरी करइ लुर खुरिया का देखि भमरा लुभाइ।
का देखि पुतवा चले ससुररिया का देखि रहे लुभाइ।
जल देखि मछरी करइ लुरखुरिया फूल देखि भमरा लुभाइ।
धना देखि पुतवा चले ससुररिया सरहज देखि लुभाइ।
सारी देखि पुतवा चले ससुररिया धनिया देखि लुभाइ।
का मांगै सारी रे का मांगै सरहज का मांगइ धनिया तोहार।
सारी त मांगै अनधन सोनवां सरहज लहर पटोर।
धनियाँ जो मांगइ कंचन चुरिया सगली अजुध्या के राज।
कहां पइहे मोरे पूता अनधन सोनबा कहां पइहे लहर पटोर।
कहां पइहे कंचन चुरिया कैसे देह हे सगली अजुधिया के राज।
सोनरा घर पउबइ अनधन सोनबा पटवा घर लहर पटोर।
लखेर के घर पउबइ कंचन चुरिया अपने घर अजुधिया के राज।

प्रकारान्तर–

का देखि मछरी करइ लुरखुरिया का देखि भमरा लोभाइ।
का देखि पुतवा चले ससुररिया का देखि रहे हां लोभाइ।
जल देखि मछली करलुर खुरिया फूल देखि भमरा लोभाइ।
धना देखि पुतवा चले हो ससुररिया सरहन देखि लोभाइ।
का मांगइ सारी तोहरे ससुररिया औ का मांगइं सरहज तोंहार।
का मांगइ पुतवा धना के ससुररिया औ कैसे तू रहे हा लोभाय।
फूलन गजरा मांगइ सारी हमरी सरहज मांगइ लहर पटोर।
कंचन चुड़िया धना तो ससुररिया मांगे जियारा उनही लोभाय।
सुना हो तूं पुतवा कहां मिलिहीं मांगन नहीं ससुरइया लोभाउ।
ना मोरे गजरा ना लहर पटोरबा औ नाहि कंचन चुड़िया देखान।
फूलन गजरा मलिया घर मिलि हइं लहंगा बजाज घर होइ।
कंचन चुरिया बजरिया से लउबइ मां ससुररिया हम जाब।।

यह विवाह का ही गीत है, परन्तु तिलकोत्सव में भी कहीं–कहीं गाया जाता है। प्रायः लोक गीतों का उठान प्रश्न मूलक ही होता है। ये सभी लोक के ही प्रश्न होते हैं और इनका उत्तर भी लोक का ही होता है। लोक प्रसंग में ही संस्कार आते हैं और इसी के बीच प्रश्न हुआ कि मछली यदि जलक्रीड़ा (उछलकूद) करती है तो क्या देखकर करती है? समझ में नहीं आता कि भौंरा क्या देख कर लोभ में आ रहा है? यही प्रश्न आगे कि बेटा क्या देखकर ससुराल चला है और क्या देखकर लोभ में पड़ गया है। पानी देखकर ही मछली उछलती–कूदती है और भौंरा तो फूल को देखकर ही लोभ में पड़ता है। बेटा ससुराल चला है और सरहज को देख कर लोभ में पड़ गया है। साली क्या मांगती है, सरहज क्या मांगती है और बेटे की पत्नी क्या मांगती है। साली सोना मांगती है, सरहज (साले की पत्नी) लहरपटोर मांगती है, पत्नी तो सोने की चूड़ी मांगती है। कहीं–कहीं साली द्वारा फूलों का गजरा मांगने का उल्लेख किया गया है। पत्नी तो सोने की चूड़ी के साथ अयोध्या का सारा राज्य भी मांगती है माँ पूछती है बेटा सोना कहाँ पाओगे, लहर पटोर कहाँ पाओगे, सोने की चूड़ियाँ कहाँ मिलेंगी कैसे सारी अयोध्या का राज्य दे पाओगे। बेटा कहता है कि सोनार के घर सोना मिल जायेगा, पटवा के घर में लहर पटोर मिलेगा, कंचन चूड़ी लखेर के घर में मिल जायेगी। अयोध्या का राज्य तो अपने घर का ही है। बेटा हर समय यही कहता है कि ससुराल तो मैं जाऊँगा कि फूलों का गजरा माली के घर में मिल जायेगा, बजाज के यहाँ लहर पटोर मिलेंगा। बाजार से सोने की चूड़ियाँ मिलेगीं परन्तु ससुराल मैं जाऊँगा।

यह गीत बेटे के ससुराल जाने के लिए तैयार होने पर परिवार के प्रश्नोत्तर में ही बन गया और बढ़ गया है।

पान का पठएउं दुलहे दुल्हेरुआ कहना रहेउ बेलमाय।
की बेलमेउ तुम राजा दरबरिया की बेलमेउ ससुरार
ना हम बेलमेन राजा दरबरिया ना बेलमेन ससुरार।
हम ता बेलमेन आजा बगैचा कोइली गहागह लेइ।
हम तौ बेलमेन पिता के बगैचा कोइली गहागह लेइ।
हांथ के हिरौधी मैं तोही देइहौ पसिया कोइली पकरि लै आउ।
डारइ डारि बउड़े पसिया बेटउना पातै पात कोइली लुकाय।
कोइली पकड़ि के जांघ बइठाइनि पूंछइं कोइलिया से बात।
काहे मढ़ाउं तोर अखना रे पखना काहे मढ़ाऊं तोरी चोंच।
रूपबा मढ़ाबा मोर अखना रे पखना सोनमा मढ़ावा मोरी चोंच।
साथ चलउं मोहू दूल्हे दुल्हेरूआ बोलो रामायन बोल।

दूल्हे को पान लेने भेजा था, वह छोटा है न जाने कहाँ बिलम्ब करने लगा है। बेटा तुमने राजदरबार में देरी कर दी अथवा ससुरार में देर लग गयी। वह कहता है कि मैंने तो राजदरबार में देर की और न ही ससुरार में देर की। मैं तो दादाजी के बाग में रुक गया था जहाँ कोयल प्रसन्न होकर कूक रही थी। पिता, चाचा के बगीचे में भी थोड़ी देर लग गयी, क्योंकि वहाँ भी कोयल कूक रही थी। अरे! मैं तो तुम्हें हाथे की हिरौधी (गहना/आभूषण) दूँगी। कोयल को पकड़कर ले आओ। डाल ही डाल वह जाता है और कोयल पत्तों–पत्तों में ही छिपती जाती है। कोयल को पकड़ लिया, जंघा में बैठा लिया और कोयल से बात पूछने लगता है। कोयल तेरा पंख किससे मढ़वा दूँ और तेरी चोच किससे मढ़वा दूँ। कोयल कहती है– मेरा अंख–पंख चाँदी से मढ़ा दो और सोने से मेरी चोंच मढ़वा दो। मुझे भी दूल्हे राजा के साथ लेते चलो, रामायण की बातें मैं बोलती रहूँगी।

बाग–बगीचा होना समृद्धि का द्योतक होता था। व्यक्ति निर्माण में रामायण का चरित्र महत्त्वपूर्ण भूमिका रखता था, अस्तु कोयल साथ इसलिए रहना चाहती है कि वह रामायण सुनाएगी।

एक अमरइया एक आमा पियरै एक आमा सँवरिन पात।
एक आमा है मोरे आजा के द्वारे ओहीं तरी उतरी बारात।
एक आमा है मोरे बाबुल के द्वारे ओहीं तरी उतरी बारात।

सोवत रहिउं मैं माया के कोरवा भोर भयउ भिनसार।
केखे दुआरे बाजन बाजै केखर होइ बिआह।
तू ही बेटी ए गल तुही बेटी गे गल तुही बेटी चतुर सुजान। केखे ....
सिखइ न पयाउं गुन गिरह्थइयां तपै न पायों रसोय।
सास ननद मिलि भइया गरिअइहैं मोसे सही न जाय।
सिख ले बेटी गुन गिरहथइयां तपि ले महरि रसोय।
सास ननद मिलि भइया गरिअइ हैं लै लिहे अंचला पसरि।
तसवा मना करौ ढोलिया मना करा सहनइयां के शब्द नेवार।
पंडित विप्र तुम वेद मनइ करा मोर धिया रहिहइं कुंआरि।
खंभा के लोटे होइ कै बोले दुलेरूआ सुना धना बिनती हमरि।
तसवा न मना करा ढोलिया न मना करा पंडित विप्र तुम वेद सुनावा।
अब धिया के होइ विवाह।
सुरुज देडता के सखिया भरत हौ खेडहौं मैं नइया तुम्हार।

यह गीत कन्या की घरू मानसिकता का निरूपण करता है। कोई आमवाटिका (अमराई) है। वहाँ एक आम पीला अर्थात् पका है और एक आम काले पत्तों वाला है और एक आम का पेड़ मेरे दादाजी के दरवाजे पर है, जिसके नीचे बारात (वरयात्रा) आकर रुक गयी है। मेरे पिताजी के घर के द्वार पर जो आम है, उसी के नीचे बारात रुक गयी है। बेटी कह रही है कि मैं माँ की गोद में ही सो रही थी, जब सुबह होने लगती है, तो बाजे बज रहे हैं। वह पूछती है कि किसके दरवाजे पर बाजा बज रहा है और किसका विवाह हो रहा है? माँ कहती है कि बेटी तुम्ही यहाँ हो, तुम्ही वहाँ जाओगी, यहाँ वहाँ तुम्हारी ही बात चल रही है। तुम्ही समझदार हो। वह बोली कि मैं गृहस्थी के न तो गुण सीख पाई हूँ और न ही रसोई में काम सीख पायी हूँ। सास, ननद और देवर सब गाली देंगे और वह सब हमसे सहन नहीं होगा। माँ कहती है कि बेटी तुम गृहस्थी के सब गुण सीख लो, और माँ की रसोई भी सब सीख लो। जब सास, ननद और देवर गाली देंगे, तब आँचल फैलाकर सब गाली स्वीकार कर लेना। माँ कहती है ताशा बजाना, ढोल बजाना और शहनाई बजाना सब बन्द करा दो, पंडित जी तुम वेद पाठ भी बन्द कर दो। मेरी बिटिया कुमारी ही रह जाएगी। खंभे की आड़ में होकर दूल्हा बोलता है कि धन्यभाग्य (धना) मेरी विनय सुनो। न तो ताशा वाले को, न ही ढोल वाले को और न ही शहनाई वाले को मना करो, न ही पंडित को वेद पढ़ने से मना करो। मैं सूर्य की साक्षी देकर कहता हूँ कि तुम्हारी नाव मैं खेकर पार लगा दूँगा।

रेवांचल में आज भी बारात आती है और गाँव में किसी बगीचे में, आम के पेड़ के नीचे या बड़, पीपल के पेड़ के नीचे उसके रहने की व्यवस्था कर दी जाती है। प्रायः लोग अपने बगीचे में ही रुकने की व्यवस्था करते हैं, जिसे 'जनवासा' कहते हैं। बेटी कितनी भी बड़ी हो जाये वह सदा छोटी ही रहती है। वह कहती है कि मैं अभी माताजी की गोदी में सो रही थी। जब सुबह हुई तो देखा कि बाजे बजने लगे हैं। बिटिया पूछने लगती है कि यह बाजा किसका है, किसका विवाह हो रहा है। यही प्रमाणित करता है कि बेटी छोटी है। माँ ने बिटिया को समझाया कि यहाँ तो तुम्हारी ही बात हो रही है। प्रायः भोजन बनाना और गृहस्थी का काम सीखना ही लड़कियों का प्रमुख कार्य होता है। यदि वह कार्य नहीं आता तो ससुराल में बहू को सास और ननद तथा देवर सभी गालियाँ देते हैं। यही अपमान बहू को असह्य हो जाता है, तब अनेक दुर्घटनाएँ जन्म लेने लगती हैं। यह स्मरण करते ही माँ कहने लगती है कि ताशा–ढोल, शहनाई सब बन्द कर दो, विवाह नहीं करेंगे। विवाह किए जाने वाला दूल्हा आड़ में खड़ा होकर कहने लगता है कि मैं तुम्हारी लड़की की जिन्दगी पार लगाऊँगा। इससे यह भी निष्कर्ष हो जाता है कि पत्नी पति पर आश्रित रहती है, उसका भरण पोषण पति ही करता है।

राजा जनकजी के चारि बिटीबा चारिउ बारि कुंआरि।
चारिए बिअहबै एक मड़उना एकै लगन लिखाय।
एक ता बिअहबै अयोध्या के राजा दुसरे गोकुल केर कृष्ण।
का लइके आएं अयोध्या के राजा औ का लै के आए गोकुल कृष्ण।
रथ लइ आएं अयोध्या के राजा मुरली गोकुल कृष्ण।
डमरू लइ आए है संवरे महादेव बाजा लंका के राज।

लोक लीला अनबूझ और अतर्क्य सी होती है। गीतों में कही गयी बातें प्रतीकों से समझना आवश्यक है। यथार्थ समझने में विसंगतियाँ खड़ी हो सकती हैं। यह गीत कहता है कि राजा जनक की चार लड़कियाँ हैं। चारों अभी छोटी हैं, कुँवारी भी हैं। उन्हें एक ही मण्डप में विवाहित कर दूँगा। एक ही लगन में इनका विवाह होगा। एक का अयोध्या के राजा से, दूसरे का गोकुल के कृष्ण से, तीसरे का महादेव से, और चौथे का लंकेश से विवाह करेंगे। प्रश्न–जिज्ञासा है कि अयोध्या के राजा क्या लेकर आए हैं और कृष्ण क्या लेकर आए हैं, कौन सा बाजा काले महादेव लेकर आए हैं और लंका के राजा क्या लाए हैं? इसका समाधान है अयोध्यापति रथ लेकर आए हैं। गोकुल के श्रीकृष्ण मुरली लेकर आए हैं। साँवले शिव डमरू लेकर आए हैं और लंका के राजा बाजा लेकर आए हैं।

शिव को काला कौन जानता है, पर लोक गीत साँवरे महादेव कहता है। राजा जनक की चारों बेटियों का विवाह एक साथ होना लोक प्रसिद्ध है, परन्तु इन विवाह योग्य लड़कों का नाम है– श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न। यह लोक गीत तो अवध ोश, गोकुलेश, गिरिजेश और लंकेश को ही गिना रहा है।

कउने राम की ढेरिया की बड़ी–बड़ी अंखियां ओठवन चुअइ ओगार।
कउने राम के पुतवा की मौरि सजति है भंवरी लेति बसेर।
एक चिठिया लिखि भेजइं हो कउन देई दिहे राजा दुलहे के साथ।
तुम्हारे मौरि मां भमरी बसति है हम हूं जोगिनि होइ जाब।
एक चिठिया लिखि भेजइ कउन राम दिहे रानी कन्या के हाथ।
वन केरी भमरी बनइ उड़ि जइहीं हमरा तुम्हारा होइ विआह।
कौन आयं दुलहे कउन दुलहा भइया कउन आइं दुलहे के बाप।
छोटी मोटी हांथिनी सवारी साजी सोनवा मढ़ाए ओखे दांत।
सोनेन हउदा कसाव आवइं ओईं आयं दुलहे के बाप।
जमुना के ईरे तीरे घोड़िला कुदावइं बांधे वैजन्ती रंग पाग।
सिर ऊपर कलंगी चमकत आवइ ओई आयं दुलहे के भाइ।
छोटी मोटी डड़िया सवारी किए है छोटी लगे कहार।
माथे मौर सिर झमकत आवइ ओई आयं दुलहे दामाद।

यौवनारूढ़ा नायिका का सौन्दर्य और तदनुक्रम में विवाह का प्रसंग प्रकट करते हुए गीत बना है। बड़ी–बड़ी आँखों वाली और ओठों में रस भरा हुआ है जैसे लगने वाली लड़की किसकी बेटी है। किसके पुत्र की मौर सज रही है, बंध रही है, जिसमें भ्रमरी निवास कर रही है। बिटिया का क्या नाम है? उसने चिट्ठी लिखकर भेजा है और कहा है कि दूल्हा राजा के हाथ में ही देना, तुम्हारी मौरी में तो भमरी निवास कर रही है और मैं भी योगिनी बन जाऊँगी। दूल्हा ने भी चिट्ठी लिखकर भेजी और कहा कि वधू के हाथ में ही देना। लिखा कि वन की भौंरी तो वन में ही उड़ जाएगी और मेरा विवाह तुम्हारे साथ ही होगा। गीत इसी प्रसंग से आगे बढ़ जाता है। बाराती लोगों को देखकर जिज्ञासा है कि दूल्हा कौन है, दूल्हे का भाई कौन है, दूल्हे का बाप कौन है। यही गीत तीनों की पहचान गाकर बता देता है। छोटी किन्तु मोटी हथिनी सजाकर सवारी कर रहे हैं, उसके दाँत सोने से मढ़ा दिए गए हैं, उसमें सोने का हौदा अर्थात् बैठने का आसन कसा हुआ है–वही दूल्हे के पिता जी हैं। जिनके ऊपर चमकती हुई कलंगी बंधी हुई है, वे ही दूल्हे के भाई है। छोटी सी डड़िया पालकी की सवारी में आ रहे हैं, छोटे–छोटे कहार उस पालकी को उठाकर ले जा रहे हैं, माथे पर मौर बंधी सजी

है और झमकते हुए मस्ती में चले आ रहे हैं, वे ही दूल्हे हैं, वही इस घर के दामाद (जामाता) है। यह गीत बारात की भीड़ में भी समधी, दूल्हा और दूल्हा के भाई को पहचानने का है।

बखरी त भली बनवाए हो फलाने राम सुरजन मुंहे का दुआर।
ओहीं होइ के निकली हंइ फलानी देई गोरे बदन कुम्हिलाय।
कहा त मोरी बेटी छत्र तनाई कहा त सुरिज अलोप।
काहे का मोरे बाबू छत्र तनइहा काहे का सुरूज अलोप।
आज की राति बाबू तोहरे मड़ए तरी काल्हि विदेशिया के साथ।

यह गीत विवाह कालीन कन्या का वियोग सूचित करता है। बड़ा भवन अमुक ने बनवाया है और उसका दरवाजा सूर्यमुखी है, अर्थात् पूर्व दिशा की ओर है। उसी दरवाजे से होकर बिटिया अमुक देवी निकलती है, इसका गोरा बदन है, वह कुम्हला गया है, मुरझा गया है। पिता बोलता है कि मेरी बिटिया कहो तो छत्र लगवा दें और कहो तो सूरज को लुप्त करा दे। तब बिटिया बोलने लगती है कि– अरे मेरे पिताजी! क्यों छत्र तनवाओगे या लगवाओगे और क्यों सूर्य को लुप्त कराओगे। बाबू जी आज की रात तुम्हारे मण्डप के नीचे रही आऊँगी, परन्तु कल तो मैं विदेशिया के साथ ही चली जाऊँगी।

यह गीत सदा सत्य बात कहता है कि बेटी कभी भी पितृगृह में नहीं रहती है, वह तो पराये घर में ही जाती है। सारी ममता, वात्सल्य, स्नेह, दुलार, आग्रह यहीं रह जाता है। वह एक दूसरे घर में जाती है, बेटी से बहू बन जाती है, गृहिणी बन जाती है, माता बन जाती है। एक घर बनाती है, सजाती है और उसे राष्ट्र के लिए समर्पित कर देती है।

पूजा करन धनु सिय पगुधारी धनुष का लिहिनि उठाय।
लीपिन ठा`व करिनि शिवपूजा पुनि धनु धरिनि बनाय।
खबर सुनत मिथिला पति सिय की दिहिनि प्रतिज्ञा सुनाय।
जे कोउ वीर जगत महं उपजे शिवधनु लेइं उठाइ।
निज पुत्री वैदेही का हमरे दुलहिनि लेई बनाइ।
सुनि प्रण देश के भूपति आए निज श्रृंगार बनाय।
देव दनुज किन्नर नर तनुधरि शोभा बरनि न जाय।
मुनि संग आए हां राजकुमार दोउ ठहरि बाग मां जायं।
खबर सुनत नृप मन अति हरषेउ लाए है भवन बोलाय।

साथ लिए नृप मुनि संग भाषेउ दिहिनि प्रतिज्ञा सुनाय।
सोच तनिक मन करा नहि राजा तोरि है धनुष रघुराय।
धनुष उठावन लोग सब भूपति उठा नहि चले है बजाय।
वसुधा वीर विहीन लगत है बोले जनक घबराय।
रामचन्द्र सुनि वचन जनक कर मनहिं मनहि मुस्काय।
लै आज्ञा गुरु केरि धनुष कहं लीन्हिन तुरत उठाय।
तोरि धनुष दुःख जनक मिटायो देउता सुमन बरसाय।

यह सीता के विवाह की कथा का अनुसरण करता हुआ लोक गीत है। सीता जी पूजा करने जाती हैं तो शिव धनुष को सहज उठा लेती हैं और उस जगह लीप देती हैं, शिव पूजती हैं फिर वही धनुष सम्हालकर रख देती हैं। सीता का यह समाचार सुनकर मिथिलेश ने प्रतिज्ञा सुना दी कि संसार में जो भी कोई वीर पैदा हुए हों, आकर शिव का धनुष उठा लें। जो धनुष उठा लेगा वह मेरी बेटी वैदेही को दुल्हन बना लेगा। यह प्रतिज्ञा सुन–सुन कर देश के सभी राजा आ गए, अपना–अपना श्रृंगार बनाए हुए थे। देवता, दानव, किन्नर सब मनुष्य का रूप धारण कर आए थे, उनकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता था। मुनि विश्वामित्र के साथ दो राजकुमार आए जो बगीचे में रुके रहे। यह समाचार जानकर राजा बहुत प्रसन्न होते हैं और उन्हें घर बुलाकर ले आते हैं। साथ में आए हुए मुनि को राजा ने कहा कि मेरी प्रतिज्ञा इस प्रकार है। राजा थोड़ी भी चिन्ता मत करो, राम धनुष तोड़ देंगे, ऐसा विश्वामित्र ने भी कहा। सारे राजा धनुष उठाने लगते हैं, जब धनुष नहीं उठता है, तब लज्जित होकर चल देते हैं। धरती वीर विहीन हो गयी है, ऐसा राजा जनक घबराकर बोलने लगते हैं। यह जनक की बात सुनकर रामजी मन ही मन मुस्काते रहते हैं। गुरु की आज्ञा लेकर श्रीराम ने तत्काल धनुष उठा लिया और धनुष तोड़ दिया। जनक का दुःख दूर हुआ, सारे देवों ने फूलों की वर्षा की।

ऊंचे चउर बा हंइ चउंखुट बाबा हो धनि तुलसिन केरि छांहि।
ओहीं चढ़ि बइठे हंइ बेटी के बाबू पूजइं सालिगराम।
बेले कै पाती चढ़ाइ दिहिनि हइ अक्षत रहेगा हइ हांथ।
नेम धरम कुछ करइ न पाइनि सिंह गरजइ दुआर।
घोड़बा त आए है इनतिन गिनतिन हाथिनी त पूर पचास।
मारे बरातिया के दुआरे न सूझइ सुरज अलोपति जाह।

बारात आने का दृश्य लोकवाणी में यह गीत प्रस्तुत कर रहा है। घर में एक ऊँचा

और बड़ा चबूतरा बना हुआ है। वह चौकोर है, उसमें तुलसी का घना पेड़ है, जिसकी घनी छाया भी मिल रही है। उसी चबूतरे में चढ़कर उसी घनी छाया में बिटिया के पिताजी बैठे हुए हैं और शालिग्राम भगवान् की पूजा कर रहे हैं। यह गीत आगे जो कहता है वह शास्त्र विरूद्ध है, 'नाक्षतैरर्चयेद् विष्णुं' का उल्लेख मिलता है। परन्तु गीत कहता है– शालिग्राम पूजा में बेल की पत्ती चढ़ायी गयी है और अक्षत चढ़ाने के लिए हाथ में ले लिया है। इसके बाद पूजा के नियम और धर्म कुछ नहीं करने पड़ रहे है, परन्तु दरवाजे पर सिंह गर्जना होने लगती है। अनेकों की संख्या में घोड़े आ गए हैं, पूरी पचास हथिनियाँ आ गयी हैं। बारात में इतने लोग आ गए हैं कि दरवाजे पर भीड़ के कारण कुछ नहीं सूझ पड़ रहा है, सूरज छिपते से लग रहे हैं, अर्थात् भीड़ में सूर्य छिप से गए है, ऐसा अनुभव होने लगा है।

संकरी तलइया के घन अमरइयां पुरइन लहरैं लेंय।
जहंना दुल्हेरुआ धोती पखारैं डारे पिछौरा के फेंट।
अखियां बनी है जैसे आमा के कलियां नाक सुआ अस चोंच।
जिभिया बनी है जैसे कमल के पंखुरी ओठवन चुअइ ओगार।
इतने बरन के बने हैं दुल्हेरुआ इतने बड़े कस कुमार।
आजा उनके गए हैं राजा दरबजबा भैया उनके गए ससुरार।
चाचा उनके गए हैं लौग बनिजियां को उनको रचइं विआह।

यह गीत भी विवाह समस्या को बताने के लिए ही रचित है। छोटे तालाब की अमराई अर्थात् आम्रवाटिका बहुत घनी है और उस तालाब में कमल के पत्ते पद्मपत्र या पुरइन लहरों के साथ लहरें ले रहे हैं। उसी तालाब में दूल्हे राजा धोती पखार रहे हैं, धो रहे है कमर में पिछौरा या चादर बांधे हुए हैं। दूल्हे की आँखें ऐसी बनी हैं जैसे आम की कलियां और नाक ऐसी बनी है, जैसे तोते की चोंच होती है। उनकी जीभ कमल की पंखुड़ी जैसी है, ओंठ इतने रसीले है जिसमें से रस चूने की स्थिति समझ में आती है। दूल्हे जी अनेकों रंग से बहुरंगी बने हैं और इतने बड़े कुमार बने हैं। उनके आजा (पितामह) राजा के दरवाजे पर गए हैं और उनके भैया ससुराल गए हैं। उनके चाचा लौंग के व्यापार के लिए गए हैं, उनका विवाह और कौन कराएगा।

बेटा विवाह के योग्य हो गया है, परन्तु घर–परिवार के सभी लोग अपने–अपने कामों में लगे हुए हैं, इससे उसका विवाह कौन करेगा, ऐसा प्रश्न उठ रहा है।

मालिन दुआरे सुघर सुपरिया अलग बिलग ओखी डार मोरे लाल।
घोड़िया कुदावत निकरे दुल्हेरुआ कतरै सुपरिया की डार।

अथइन बैठे है दुलहे के आजा मालिन ओरहन देय।
बरजहुं मालिक अपने दुल्हेरुआ कतरै सुपरिया की डार।
बारे हो तो बरजौ री मालिन छैल बरजि नहिं जाय।
कुंअना हो तो भठाओ मोरी मालिनि सगरा भठाया नहि जाय।
चिठिया हो तो बांचो मोरी मालिनि करम बांचो नहि जाय।

मालिन के दरवाजे पर सुन्दर सुपाड़ी का पेड़ लगा हुआ है, जिसकी डालें इधर उधर अलग–थलग गयी हुई है। दूल्हा राजा घोड़े पर बैठे हुए घोड़े की उछल कूद कराते हुए निकल पड़ते हैं और सुपाड़ी की डगाल कतरने, काटने, छाँटने लगते हैं। दूल्हे के आजा/पितामह आसन लगाकर सभा में बैठे हुए हैं, तब मालिन ने उलाहना दिया।

इस गीत में सुपाड़ी के पेड़ की बात मिलती है। सारे रेवांचल में सुपाड़ी का पेड़ नहीं पाया जाता है, परन्तु निमंत्रण देने के लिए सुपाड़ी ही दिए जाने की परम्परा आज विद्यमान है।

मालिनि सोबइ गिरि धउराहरि मलिया सोबइ चउपारि।
सोवति मालिनि मलिया जगावइ अंगने दुल्हेरुआ हइं ठाढ़।
अजबा फलानेराम लगन धराइन अरगज मउरि बंधाइ।
आस पास गांछे मलिनी बइली का फुलबा बिचवा लगाउब जरपोश।

मौर बांधने के समय लोक जीवन माली–मालिन को याद करता है। मौर वे ही बनाते है। दूल्हा के सिर में मौर भी वही बांधता था। धवलागिरि में मालिनें सो रही हैं, परन्तु चौपाल में माली सो रहा है। माली मालिन को जगाने लगता है। वह भी इसलिए क्योंकि दूल्हा आँगन तक आ गया है और मौर बंधाना चाहता है। विवरण देता है कि उसके अमुक नाम वाले पितामह ने लगन निश्चय किया है, इसलिए भड़कीली मौर बंधवाना है। मौर के आसपास बेला का फूल गूंथ दिया था और बीच–बीच में जरपोश जड़ दिया है।

यह गीत दूल्हे की विवाह की तैयारी हेतु सजाने का है। माली के यहाँ ही गजरा बनता है, जयमाला बनती है और मौर भी वहीं बनता है, इसलिए उसे सबसे पहले मौर को फूलों के गुच्छों और चमकदार जरपोशों से सजाने का निर्देश दिया जा रहा है।

काहे का सेयों हरदी का बिरवा काहे के मैन मजीठ।
काहे का सेयों ढेरिया फलानी देई कच्चे दूध पिआइ।

पिअरी का सेयों हरदी का बिरवा चुनरी का मैन मजीठ।
धरम का सेयों ढेरिया फलानी देई कच्चे दूध पिआइ।
खोरबन दूधवा कटोरबन खांडवा लीन्हे आजी अंगने मां ठाढ़।
आने दिन मोरी आजी माया मुख हूं न बोले हो (2) कि
काहे आजी माया मोरी अनमन ठाढ़।
निंचिउ का दुधवा पिया मोरी नातिन तब फेरि चौके मा जाहु।
तब नहि दुधवा पिआऊं मोरी आजी माया जब रहिउं बारी कुमारि।
अब कैसे दुधवा पियउं मोरी आजी माया ठाढ़ विदेशिया दुआर।
हरियन–हरियन सेन्दुरा महंग गए चुनरी भई अनमोल।
एहीं सेन्दुर बा के कारण बाबू छोड़ेंउ देसबा तोहार।

विवाह में लगने वाली सामग्री को भी गीत में सम्मिलित किया गया है। गीत प्रश्नोत्तर से प्रारंभ होता है। हल्दी का पेड़ क्यों लगाया–बढ़ाया और मजीठे को क्यों लगाया, बेटी की सेवा सुश्रूषा क्यों की, उसे कच्चे दूध को पिला पिलाकर पालन क्यों किया? हल्दी पियरी (पीली धोती) के लिए होगी। मैन मजीठ से चुनरी रंग देंगे, कन्या का पालन–पोषण धर्म के लिए किया है। बड़े कटोरे में दूध और छोटे कटोरे में खांड लेकर माँ, दादी खड़ी रहती हैं। दूसरे दिनों में माँ–दादी मुँह से भी नहीं बोलती थी, पर आज सब बेमन खड़ी हैं, कहती हैं मेरी बेटी–पोती–नातिन थोड़ा तो भी दूध पी लो और तब वेदी में, चौक में जाओ। बेटी कहती है कि माँ/दादी तब दूध नहीं पिलाया, जब मैं छोटी थी, कुंआरी थी। अब मैं दूध कैसे पी सकती हूँ। विदेशी (पति) दरवाजे में खड़े हैं। बाजार में सेन्दूर महंगा हो गया है और चुनरी तो अमूल्य हो गयी है। बेटी कहती है कि पिता जी इसी सिन्दूर के लिए तो मुझे आपका देश छोड़ना पड़ा है।

हल्दी से हाथ पीले करना, हल्दी के पीले कपड़े पहनना, हल्दी–तेल चढ़ाना आदि शुभ कार्य माने गये हैं। 'हरिंद्रावयति' अर्थात् प्रभु को द्रवित कर देने वाली हल्दी है। पीला रंग ही सर्जना का सृष्टि का, होता है। इस गीत में हल्दी का वर्णन है। यहाँ सिन्दूर का भी महत्त्व वर्णित है।

की मै नेउतेंउ गया के गजाधर की रे अयोध्या के राम।
की मैं नेउतेंउ यहै जगजननी मोरी जग्य पूरन होय।
कहना उतारूं गया के गजाधर कहना अयोध्या के राम।
कहनां उतारूं मैं जग जननी मोरी जग्य पूरन होय।
फरिका उतारों गया के गजाधर अंगना अयोध्या के राम ।

रसोइयां उतारौ मोरी जग जननी मोरी जग्य पूरन होय।
का चढ़ि आवै गया के गजाधर का चढ़ि आवैं अयोध्या के राम।
का चढ़ि आवै मोरी जग जननी मोरी जग्य पूरन होय।
घोड़ा चढ़ि आवै गया के गजाधर रथ चढ़ि आवै अयोध्या के राम।
म्याना चढ़ि आवै मोरी जग जननी मोरी जग्य पूरन होय।

गीत में विवाह को यज्ञ कहा है। विवाह में निमंत्रण मैंने गया के गदाधर (विष्णु) को दिया है और अयोध्या के राम को दिया है। मैंने जग जननी को भी निमंत्रण दिया है, जिससे मेरी कामना पूरी हो जाय। मैं कहाँ गदाधर को, कहाँ अयोध्या के राम को और कहाँ जगदम्बा को विराजित करूँ फरिका अर्थात् मैदान में गया के गदाधर, आँगन में श्रीराम और जगदम्बा को यज्ञ पूरा होने के लिए रसोई घर में विराजित करेंगे। मेरी यज्ञ की पूर्णता हेतु गदाधर विष्णु किस वाहन से, श्रीराम किस वाहन से तथा जगदम्बा किस वाहन से आए हैं। उत्तर में विष्णु घुड़सवारी से, राम रथारूढ़ होकर तथा जगदम्बा मियाना (पालकी) में चढ़कर आयेंगी और मेरा यज्ञ पूरा हो जाएगा।

इस गीत में पालन–पोषण के देवता श्री विष्णु, गृहस्थ के आदर्श नायक श्रीराम और अन्नपूर्णा माँ जगदम्बा को निमन्त्रण देने से यह क्रम पूरा हो जाता है। यहाँ बाहर गदाधर रहने से निर्विघ्नता रहेगी। आँगन में राम के रहने से विवाद नहीं होगा और रसोई में अन्नपूर्णा के होने से भोजन में कमी नहीं रहेगी। रसोई में गृहलक्ष्मी, आँगन में कुल का उत्तराधिकारी बालक और बाहर पालन कर्ता गृहपति रहता है। प्रकारान्तर से गीत सुखी परिवार की सूचना देता है।

बखरी त भली बनवाए हो फलाने राम बखरी के निबल दुआर।
ओही होइ के निकरे है दुलहे दुल्हेरुआ मौरी अरुझि गई द्वार।
किरिया करत नन्द बाबा के कबहूं न अइहौ ससुरार।
एक छिन मौरी निरुआए मोरी धनिया मौरी के फूल झरा जाय।
कैसे के मौरी निरुआरौ मोरे स्वामी बाबुल दुआरे मां ठाढ़। बखरी ओही...
किरिया करत हौ राजा दशरथ के कबहूं न अइहौ ससुरार।
एक छिन मौरी निरुआरौ मोरी धनिया मोरी के फूल भरा जाय।
कैसे के मौरी निरुआरौं मोरे स्वामी चाचा दुआरे मां ठाढ़। बखरी...

यह गीत निवास के विवरण से आंरभ होता है। अच्छी भली अटारी वाली बखरी (बड़ा घर) बनवाया है, पर उसके दरवाजे दुर्बल हैं। उसी दरवाजे से दूल्हा निकलता है और उनकी मौरी उलझ जाती है। दूल्हा कसम खाता है कि अब ससुरार कभी नहीं

आऊँगा। पत्नी से कहता है कि एक क्षण में मेरी मौर जो उलझ गयी है, उसे निकाल दो, क्योंकि उसके गुंथे हुए फूल गिरे जा रहे हैं। वह कहती है कि स्वामी मैं मौर कैसे ठीक करूँ, मेरे पिता जी दरवाजे में खड़े हैं, देख भी रहे हैं। वहाँ लज्जा के कारण ऐसा हो रहा है। पति कहता है कि मैं राजा दशरथ अथवा अपने पिता जी की शपथ खाकर कह रहा हूँ कि अब मैं ससुराल नहीं आऊँगा। दूसरी बार भी मौर निकालने का आग्रह करता है और पत्नी चाचा के दरवाजे पर होने की बात करती है।

यह गीत स्त्रियों की मातृगृह में लज्जा का ही निरूपण करती है। ससुराल न आने की शपथ करने के बाद भी पिता और चाचा के देखते हुए वह पति की मौर ठीक करने को तैयार नहीं हो रही है।

डोलिया के पीछे–पीछे फिरत विदेशिया काहे धना रोवत जात।
की तुम ही सुधि आवै सखिया सहेलनी की रे कलेउना की जून।
की तुम ही सुधि आवै माता के कोरा अंचला माँ दूध पिआय। डोलिया..
ना मोही सुधि आवै सखिया सहेलनी ना रे कलेउना की जून।
मोही त सुधि आवै माता के कोखा अंचल त दूध पिआय। डोलिया....

यह गीत ससुराल में भी माँ की याद आने का निरूपण करता है। पति दुल्हन की डोली के पीछे–पीछे घूमता है और पूछता है कि क्यों रोती जा रही है। तुम्हारी सखियाँ–सहेलियाँ याद आ रही हैं अथवा सुबह के अल्पाहार का समय है और भूखी रहने के कारण रो रही हो। कहीं तुम्हे माँ की गोद की याद तो नहीं आ रही है, आँचल में दूध पीना तो नहीं याद आ रहा है। विवाहिता वधू कहती है कि न तो हमें सखी–सहेली याद आ रही है न ही कलेवा का समय होने से भूख सता रही है, परन्तु मुझे माँ की याद आ रही है, उसकी गोद याद आती है, आँचल का पीया हुआ दूध याद आता है।

इस गीत में माँ को कभी न भुला पाना, उसके लालन–पालन और पोषण कभी न भूल पाना प्रकट हुआ है। ससुराल गयी हुई बिटिया को माँ की ही याद आती है, उसका ममत्व और स्नेह याद कर के रोने लगती है।

गंगा के ओरे जमुना जी के छोरे एक आम।
ओहीं तरी सीता खेलयं झाग झूमर, रामा खेलै पिचकार।
खेलिन कूदिन घर का सिधारिनि माया उठीं खिरझाय।
कहंवा बिताए बेटी दिन दुपहरिया कहंवा बिताए आधीरात।

फुलवा बिनत माया दिन दुपहरिया गजड़ा गांछत आधी रात।
गंगा के ओरे जमुना के छोरे एक आम ओहीं तरी
सीता खेलैं झाग झूमंर राम खेलैं पिचकार।
खेलिन कूदिनि घर का सिधारिनि भाभी उठीं खिरझाय।
कहंवा बिताए ननदी दिन दुपहरिया कहंया बिताए आधी रात।
मेहंदी तोड़त भउजी दिन दुपहरिया हंथवा रचत आधी रात।

यमुना जी के किनारे गंगा की ओर एक आम का पेड़ है, जिसके नीचे सीता झाग झूमर का खेल खेलती है और रामजी पिचकारी खेलते हैं। खेल–कूद करके घर को चले गए तब माता चिढ़ जाती है और पूछने लगती है कि दिन की दोपहर कहाँ बिता दी, आधी रात कहाँ बिता दी। कहती हैं कि दिन दोपहर मैं फूल बीनती रही और गजरा गूंथते आधी रात हो गयी है। यही प्रश्न भाभी ने पूछ लिया, तब कहती हैं कि भाभी दिन दोपहर तो मेहंदी तोड़ते–तोड़ते बीत गयी और हाथ में मेहंदी रचाते–रचाते आधी रात बीत गयी।

सामान्य जीवन में युवती बिटिया का घर से बाहर अकेले रहना शंका मूलक होता है। इसी से पूछ–ताछ होने लगती है। इस गीत में भी सीता के बाहर रहने पर उनसे पूछा गया है कि वे कहाँ थीं, घर से बाहर क्यों और कैसे थीं।

आज सबेरे जमुना जी के तीरे कृष्ण जी गउएं चरामै मोरे लाल।
ओहीं होइकै निकरी है ग्वालिन गुजरिया कृष्ण गहै लागे बांह मोरे लाल।
मचियन बैठी है माता यशोमति ग्वालिन त ओरहन देइ मोरे लाल।
दही मोरा खाइनि मटकी मोरी फोरिनि टोरिन है मोतिअन के हार मोरे लाल।
हमरे दुलेरूआ गौधुरिया खेलन में कइसन करौ परतीत मोरे लाल।
सुन ग्वालिन मोरो बारो कंधइया नाहक न दोष लगावा मोरे लाल।

आज सुबह–सुबह यमुना जी के किनारे श्रीकृष्ण जी गायें चराने के लिए चले गए थे। उधर से ही ग्वालों की कन्या निकल पड़ी और कृष्ण उसकी बाँह पकड़ने लगते हैं। वह ग्वालिन मचिया में बैठी यशोदा के पास आती है और शिकायत करती है। कहने लगती है कि मेरा दही खा लिया, मटकी तोड़ दी, मेरे गले के मोती के हार को तोड़ दिया। यशोदा ने कहा कि मेरा बेटा तो गाय चराता है और उसकी धूलि में खेलता है। तुम्हारी बात पर मैं कैसे भरोसा कर लूँ। बोली अरे– ग्वालिन! सुनो मेरा कन्हैया अभी छोटा है, बेकार दोष मत लगाओ।

इस गीत में कृष्ण की गोचारण लीला है। इसमें माँ की ममता ही प्रकट हो रही है।

बापा मोरे दीन्हिन नौ मन सोनमा माया मोरी लहर पटोर।
भइया मोरे दीन्हिन असनै के घोड़ी भउजी सेंदुर भरि मांग।
नौ मन सोनमा काहे बापा दीन्हा फट जइहैं लहर पटोर।
असनै कै घोड़िउ रामा दूरी रखबइ लेबइ सेन्दूर भरी मांग।

यह गीत बहू को पिता के यहाँ से मिलने वाली वस्तुओं के स्मरण में बनाया गया है। मेरे पिता ने नौ मन सोना दिया है, माता ने लहर पटोर पहनने हेतु दिया है। भाई ने चढ़ने के लिए, आसन के लिए घोड़ी दी है और भाभी ने सिन्दूर दिया है, मांग भरने के लिए बेटी का विचार प्रकट करता हुआ गीत है कि पिताजी नौ मन सोना क्यों दिया है, लहर पटोर तो फट जायेगा, घोड़ी भी उपयोग में लाने के बाद दूर ही रहेगी, परन्तु सिन्दूर तो अहर्निश मेरी मांग में, सौभाग्य में, सिर में सदा स्वीकार करती रहूँगी।

इसमें विवाह के बाद सर्वाधिक आवश्यक सिन्दूर अर्थात् मांग का सिन्दूर या सौभाग्य है। इसमें सिन्दूर की महिमा का वर्णन मिलता है।

रामा विआहन चले राजा दशरथ बरहौ बजन बजबाय।
जाइ बारात बरा तरि मेलिनि भँटबा बखानन लाग।
अच्छे–अच्छे कवित्त कहा राजा भंटबा तुहीं देवइ असने के घोड़े।
आइ बारात जमुन दह मेली जमुना धरे दोउ पाट।
हांथे कइ हिरौधी मै तोहि देवइ केवटा रामा क पार लगाउ।
रामा रे उतरे लछिमन उतरे उतरी है सकल बारात।
अच्छे–अच्छे कलस लेसाये रानी चेरिया तोहई देवै कपिला के दान।
होइगा विआह राम कोहबर गे सरहज छेकइं दुआर।
अमुरे नउआ आउ रे बरिया धाइ अजुधिया का जाउ।
हमरे मुड़उसे है मोतिन माला धाइके जल्दी लइआउ।
पहिरा हो सरहज मोतिन माला छोंड़ि दे पवर दुवार

यह गीत द्वार छेंकाई की प्रथा तक जाता है। जब राजा दशरथ श्रीराम का विवाह करने चलते हैं, तब बारह प्रकार के बाजे बजवाते चलते हैं। बारात ले जाकर बरगद के नीचे रुकवा दी गई। भाट चारण आते हैं और दोनों कुल की प्रशंसा में विरदावली का वर्णन करने लगते हैं। दशरथ ने कहा कि भट्ट जी तुम अच्छे–अच्छे कवित्त सुनाते

जाओ। मैं तुम्हें सवारी के लिए घोड़ा दूँगा। बीच में यमुना जी में बारात रुकती है, जहाँ जमुना जी दो पाट छूकर बह रही हैं। केवट से आग्रह करते हैं कि हाथ का आभूषण (हिरौदी) संभवतः अंगूठी मैं पुरस्कार में दे दूँगा। केवल हमारे रामजी को उस पार लगा दो। राम उतरते हैं, फिर लक्ष्मण उतरते हैं, फिर सारी बारात उतर जाती है। चेरी (कार्यचारिणी) अच्छी तरह कलश जला दो, तुम्हें भी कपिला गाय का दान करूँगा। विवाह हो गया, राम जी कोहबर में जाते हैं, परन्तु सरहज ने दरवाजे में रोक दिया। नाई बारी को बुलाते हैं, कि आओ और दौड़ते हुए अयोध्या जाओ, हमारे सिरहाने पर मोती की माला है। उसे दौड़कर ले आओ। राम कहते हैं कि सरहज जी मोती की माला पहन लो और दरवाजे का रोकना बन्द कर दो। इस गीत में कलश, कोहबर, द्वार छेंकाई, द्वार खोलने का नेग आदि सबका वर्णन किए गए हैं।

बइठी अटारी मां सुघर सुवासिन संउहे धरे दरपनिया।
कि हां जू सउहे धरे दरपनिया।
मोतिन हार सोनेन केर कंगना लहरै कमर कर धनियां । कि हां जू.........
साड़ी मां झलकइ चन्दन जइसी देहिआ झलकइ चोली चिकनिया। कि हां जू..
हांथे मां रतन अंगूठी तो चमकइ नाके मां चमकइ बेसरिया। कि हां जू...

यह गीत बहू के श्रृंगार की एक झाँकी प्रस्तुत करता है। अटारी में चढ़कर कभी सौभाग्यवती नारी बैठ जाती है और अपने सामने दर्पण रख लेती है। वह देखती है कि गले में मोती का हार पड़ा है और हाथ में सोने का कंगन शोभित हो रहा है, कमर में करधनी लटक रही है। साड़ी पहनी हुई उसके भीतर चन्दन जैसी गौर वर्ण की देह झलक रही है और साथ ही चिकनी चोली भी झलक रही है। हाथों में रत्न की अंगूठी चमक रही है, नासिका में बेसर झलक रही है।

हाथ में कंगन सोने का, अंगूठी रत्न की, नाक में नथ, गले में मोती का हार, कमर में करधनी सुन्दरता बढ़ा रही है। साड़ी भी ऐसी है कि चोली भी दिख रही है और देह भी दिख रही है।

राम लखन दोउ वन के अहेरिया वन–वन खेलइं अहेर मोरे लाल।
एक वन नाके दुसर बन नाके तिसरे मां लगी है पियास मोरे लाल।
अस नहिं आय कोऊ धरम मनइया एक बुन्द पनिया पियाव मोरे लाल।
बंसवा के ओटे निकरी सीतल देई पायन नेवर झहनाइ मोरे लाल।
केखरि आहे बरी बिआही केखर लागे भौजाई मोरे लाल।
रामा के आहीं बरी रे विआही लछिमन के भौजाई मोरे लाल।

राजा दशरथ के कुल की नन्दिनी पनिया पिया न विचार मोरे लाल।

गीत वनवासी राम का एक चित्र प्रस्तुत करता है। श्री राम और लक्ष्मण दोनों वन में शिकार खेलते हैं, वे वन के शिकारी हैं। एक वन से जाकर दूसरे वन में पहुँचते हैं और तीसरे वन में पहुँचने पर प्यास लग जाती है। कोई ऐसा आदमी नहीं मिल रहा है, जो धर्मानुरागी हो और एक बूंद पानी इन्हें प्यास बुझाने के लिए पिला दे। बाँस के आड़ से सीता जी निकलती हैं, उनके चलने पर पायजेब बजती रहती है, पर पानी पिलाने से पहले उनका परिचय आवश्यक है। वह किसकी विवाहिता है और किसकी भाभी है। सीता जी श्रीराम की पत्नी हैं और उनके देवर लक्ष्मण जी हैं, राजा दशरथ के कुल की आनन्दिनी हैं, अतः बिना विचार किए पानी पी लेना चाहिए।

गाँवों की सुदृढ़ परम्परा जल पान में भी विचार या परिचय करना जहाँ स्वास्थ्य चेतना एवं समाज चेतना का संदेश देता है। वहीं प्रथा को भी इंगित करता है।

तोसे पूंछउं गंगा गोसाइंन कउने गुन ढाबर पानी मोरे लाल।
धौं तोरे पानी मगर हिलोरिसि धौ तोरी ओधसी कगारी मोरे लाल।
ना मोरे पानी मगर हिलोरिसि नहि मोरी ओधसी कगारी मोरे लाल।
हंथिया औ घोड़वा लइ उतरे राजा दशरथ ढाबर पानी देखाय मोरे लाल।
कै लख उनके हांथी औ घोड़ा कै लख सजी है बारात मोरे लाल।
नौ लख उनके हांथी औ घोड़ा दस लख साजे बारात मोरे लाल।

श्रीराम की बारात की विशालता का चित्रण करना है तो गंगा से पूछा जाता है कि– हे गंगा गोसाँई! यह बता दो कि तुम्हारा पानी मटमैला क्यों हो रहा है? क्या इस पानी में मगर (घड़ियाल) रहता है, उसने हिलोर दिया है अथवा किनारा गिर कर पानी में मिल गया है। गंगा ने कहा–न कोई मगर पानी में हिलोर रहा है और न ही हमारे किनारे के गिरने से पानी मटमैला हुआ है। यह तो राजा दशरथ हाथी–घोड़ा लेकर बारात जा रहे थे, गंगा को पार किया है इसलिए मटमैला पानी हो गया है। इनके हाथी कितने लाख थे और घोड़े कितने लाख थे, जिनसे सजी बारात आयी थी। हाथी तो नौ लाख की संख्या में थे और घोड़े दस लाख की संख्या में थे। इनके बारात में शामिल हो जाने और पार उतरने से पानी मटमैला हो गया है।

इस गीत में श्री राम के विवाह में दशरथ द्वारा बारात में ले जाने वाले हाथी घोड़ों की बहुसंख्या का वर्णन किया गया है।

ले लो कन्यादान बिटिया पराये घर की हो गयी।
राजा जनक के द्वारे जनक के द्वारे जुरि आएं जजमान। बिटिया..
सिय जू की परत भंवरिया परत भंवरिया ब्रह्मा करत बखान। बिटिया..
राम लखन चारो भइया चारो भइया दूल्हा बने भगवान्। बिटिया..
दशरथ जी समधी बनिआए समधी बनिआए सखियां गावै मंगलगान। बिटिया..
शोभा न जाय बखानी न जाय बखानी सिया सुखियन की खान। बिटिया..

कन्यादान के बाद बेटी दूसरे के घर की हो जाती है। इसी बात को गीत के द्वारा प्रकट किया गया है। कन्या दान ले लीजिए, अब बेटी परायी होने जा रही है। राजा जनक के दरवाजे पर अनेक यज्ञ प्रेमी इकट्ठा हो जाते हैं और बेटी की परायी होने की वृत्ति के साक्षी बन रहे हैं। सीताजी की भाँवर पड़ रही है और ब्रह्मा जी सारे कुल की बातें बता रहे हैं। राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न चारों भाई हैं, परन्तु दूल्हा बने हुए भगवान् ही है। भगवान् दूल्हा तो एक ही बार बने होगे परन्तु दूल्हा रोज–रोज भगवान् बन रहे हैं। दशरथ जी जनक के समधी बनते हैं और सीता की सारी सखियाँ मंगल गीत का गायन करती रहती हैं। सीता जी तमाम सुख की खान हैं, उनकी शोभा का वर्णन कर पाना संभव नहीं है।

रेवांचल के प्रत्येक विवाह में समधी जनक और दशरथ होते हैं। समधिनें सुनैना और कौशल्या होती हैं। वधुए। सीता होती हैं और वर श्रीराम ही होते हैं।

हमरे पछितिआ कदम केर बिरवा मोतिअन कर ही है डाल।
ओही तरी मालिनि फुलबा गुहति है गोरा बदन कुम्हलाय।
काहे गुन मालिनि तोर ओंठबा सुखाये काहे गुन बदन मलीन।
खाहु न मोरी मालिनि खैर सुपरिया कतरा बेलहरिन पान।
सोबा तूं मालिनि हमरी सेजरिया हमहिं देखि जियरा जुड़ाय।
अगिया लगै तोरे खैर सुपरिया बजुर बेलहरिन पान।
बना रे रहै मोर मलिया छोकरबा जेहि देखे जियरा जुड़ाय।

मालिन को केन्द्र में रखकर यह गीत बन गया है। किसी के घर के पीछे एक कदम्ब का पेड़ है। उसकी डगालें इतनी अच्छी पल्लवित–पुष्पित हैं कि लग रहा है जैसे मोती जड़े हुए है। गोरे रंग की मालिन उसी के नीचे बैठकर फूलों का हार बना रही है। उसका गोरा बदन कुम्हला गया है, सूख गया है। कोई युवा कहने लगता है कि मालिनि तुम्हारा ओठ क्यों सूखा जा रहा है, मुँह क्यों मलिन हो रहा है? मेरी मालिनि,

तुम खैर, सुपाड़ी और पान खा लो। कहता है कि हमारी शय्या में सो जाओ और हमें देखकर तुम शांति शीतलता का अनुभव करो। चरित्र की दृढ़ मालिन बोल उठती है कि तेरे खैर सुपाड़ी में आग लग जाय, पान की बेलहरी में वज्रपात हो जाय, मेरा माली का लड़का बना रहे, उसे देख–देख मेरा मन ठण्डा हो जाता है।

यहाँ मनचले ग्रामीणों की चाल–चलन का रूप सामने लाता है और उसमें स्त्री की चारित्रिक दृढ़ता का भी उदाहरण मिलता है।

थारी रे कांपइ गेंडुआ रे कांपइ कांपइ कुशा केरि डारि।
मड़ए तरी कांपइ बपबा फलाने राम देत कुमारी के दान।
अब नहिं हंथवा सकेले मोरे बाबू होइहि धरम केरि जून।
अच्छी–अच्छी कपिला पखारे मोरे बाबू होइ गइ धरम के जून।

कुशाक्षत जलादि के साथ कन्या देते समय थाली पैर पूजा हेतु और लोटा जल डालने हेतु भी दिया जाता है। यह ऐसा अवसर होता है कि माता–पिता अपनी लालिता पालिता कन्या को दूसरे घर के लिए सौंप देते है। गीत कहता है कि थाली काँपने लगती है, लोटा (गेहुंआ) काँपने लगता है, पिता जी काँपने लगते हैं, क्योंकि वे कुमारी कन्या का दान कर रहे होते हैं। गीत सचेत करता है कि मेरे बाबू जी, अब धर्म का पालन करने का प्रसंग है तो हाथ मत खींचना, अर्थात् कार्पण्य नहीं करना, कपिला गायों की पैर पूजा के समय दान करना, क्योंकि यह धरम के आचरण का समय हो रहा है।

कन्या के दान के समय का यह गीत है। कन्या के दान करते समय पिता का हाथ काँपता है, थाली काँपती है, लोटा काँपता है, कुश काँपता है और स्वयं पिता भी काँपने लगता है। ममता, स्नेह, वात्सल्य, दुलार सबका आश्रय बेटी को दूसरे हाथों सौंपते हुए काँपने लगना तो स्वाभाविक ही है। कन्यादान के साथ गोदान की परम्परा है। यह क्षण सभी पिता के लिए आता है और वह इसी प्रकार सकम्प, सकरुण, सदय और साश्रु यह कन्यादान सम्पन्न करता है।

मिथिला पति मिथिलेश राम जू के चरण पखारन लागे।
जौन चरण छुइ तरी अहल्या गई अपने पति देश। राम जू के...
जेहिं चरणन से निकली है गंगा त्रिभुवन तारण हेतु। राम जू के....
जेहिं चरणन केवट धरि धोवत सीता अनुज समेत। राम जू के...
जेहिं चरणन की चरण खड़ाऊं भरत सीस धरिं लेत। राम जू के ...
सोइ चरण मिथिलेश पखारत दान गउन कर देत। राम जू के ...

मिथिला के राजा जनक श्रीराम के चरण धोने लगते हैं। जिस चरण को छूकर अहिल्या का उद्धार हो गया और वह अपने पति के पास चली गयी। जिन चरणों से गंगा निकली और तीनों लोकों को तार रही है, उद्धार कर रही है। सीता और लक्ष्मण जिन चरणों को पकड़कर धोते हैं। जिन चरणों की खड़ाऊं भरत जी सीस में धर लेते हैं, स्वीकार करते हैं वही चरण कमल जनक जी धो रहे हैं और गायों का दान कर रहे हैं।

इस गीत में श्रीराम के चरणों की महिमा बताई गयी है। यह गीत पारम्परिक नहीं लगता है। परन्तु श्रीराम के विवाह के समय पादपूजन के समय का गीत है।

लावा परसा भइया लावा तोहारि बहिनी पियारी हइ हो।
एक तउ पियारी तोरी बहिनी दूसर बहनोइया हो।
पहिले पियारी सग महतरिया दूसरे पियार तोहार बाबू हो।
अउ तिसरे पियार सग बहनोइया तोहरी बहिनी पियारी हइ हो।
लावा परसा भइया लावा तोहार फूफू पियारी हइ हो।
लावा परसा भइया लावा तोहार बहिनी पियारी हइ हो।
लावा परसा भइया लावा आज से बहिनी बिरानी भई।

गीत लावा परोसने के समय का है। 'भ्रष्टब्रीहिर्भविल्लाजा' भुना हुआ धान्य ही लाजा होता है। वैवाहिक हवन के अन्त में लाजा होम किया जाता है। मुख्यतः भौरी के समय ही तीन–तीन आहुतियाँ लाजा की दी जाती हैं। इन मन्त्रों में अग्नि देवता से प्रार्थना की जाती है कि मेरा पति दीर्घायु हो और मेरी जाति–बन्धुओं की वृद्धि होती रहे। यह वधू की प्रार्थना है।

गीत में भाई को लावा परोसने हेतु कहा गया है, क्योंकि उसे बहन बहुत प्यारी है, एक तो उसे बहन प्यारी है दूसरे उसका बहनोई भी प्रिय है। पहले माँ प्यारी है, दूसरे पिता जी प्रिय हैं, आज से तीसरा बहनोई भी प्रिय हो गया है, क्योंकि बहन प्यारी है। इसी प्रकार फूफू प्यारी है अस्तु लावा परोस दो। कन्या का भाई आहुति के लिए वर–वधू के जुड़े हाथों में डालता है। इसे लावा परोसना कहा जाता है।

बुआ लावा भूंजती है, भाई लावा परोसता है, बहन व बहनोई आहुति देते हैं, आचार्य मंत्रपाठ करता रहता है। इसी बीच अग्नि की परिक्रमा होती है, यहीं ग्रन्थिबन्धन होता है और यहीं अश्मारोहण भी होता है। यह सब भाई के सामने होता है, वह इसके बाद से बहन और उसके पति से साम्य होने लगता है और यही सम्बन्ध क्रमशः प्रगाढ़ होता जाता है।

पहिली भामरि फिरि आइउं बाबा अबहूं तुम्हारी है हो।
दूसरी भामरि फिरि आइउं बाबुल अबहूं तुम्हारी है हो।
तिसरी भामरि फिरि आइउं पितिया अबहूं तुम्हारी है हो।
चंउथी भामरि फिरि आइउं भइया अबहूं तुम्हारी है हो।
पंचई भामरि फिरि आइउं नाना अबहूं तुम्हारी है हो।
छठई भामरि फिरि आइउं आजी अबहूं तुम्हारी है हो।
सतमी भामरि फिरि आइउं माया अब भइउं परायी है हो।

यद्यपि शास्त्रों में चार ही भाँवरि पड़ने का निर्देश और उल्लेख मिलता है, परन्तु 'शास्त्राद् रूढ़िर्बलीयसी' मानकर लोकगीत सात भाँवरि के लिए गीत गाता है। पहली भाँवरि में बाबा, दूसरी में बाबुल, तीसरे में चाचा, चौथे में भाई, पाँचवे में नाना, छठे में आजी से कन्या भाँवरि के बाद भी तुम्हारी ही रहने की बात गाती है, परन्तु सातवीं भाँवरि में माँ से कहती है– माँ, मैं अब परायी हो गयी हूँ।

यह गीत भाँवरों के द्वारा कन्या का वर से अद्वैत होने का वर्णन करता है। पहले की छह भाँवरों में वह पूरी तरह परायी नहीं हो पाती है, परन्तु अन्तिम भाँवर पड़ते ही वह मातृ– पितृ पक्ष से वर पक्ष की हो जाती है। बिटिया से बहू बन जाती है।

राम अब काहे न मेरवहु बाती।
की जननी भगिनी सिखइनि है की लागति अति ताती। राम ...
सीस नवाइ मौन कस होइ रह्यो पठवहुं बोलि बाराती। राम...
यह न होइ टोरहु शिव का धनु नाथ ताड़का घाती। राम...

विवाह के बाद दूल्हा–दुल्हान कोहबर (कौतुकागार) जाते हैं, जहाँ मातृकाएँ पूजी गई होती हैं, उन्हीं के सम्मुख लोकाचार भी होता है। दो बातियों को एक करने का काम दूल्हे का होता है, उसका नेग भी होता है। राम को केन्द्र में रखकर यही प्रसंग गीत बनता जाता है। हे श्रीराम! तुम अब बत्ती क्यों नहीं मिला रहे हो। क्या तुम्हारी माता या बहन ने सिखाया है कि आपको यह अधिक गर्म लग रही है। सिर झुकाए हुए मौन कैसे हो गए हो। बारातियों को बुलवा लो और बाती मिला दो। यह शिव का धनुष तोड़ना नहीं है और ताड़का स्त्री को मारना भी नहीं है।

अभी तक एक बत्ती वर के घर में और एक बत्ती वधू के घर में जलायी जाती रही है, परन्तु अब विवाह के बाद मातृकाओं की साक्षी में कौतुकागार में घर–परिवार की स्त्रियों की लोक साक्षी में विवाह के मंत्रों और लोकाचार में किए गए द्वैत को अद्वैत

के निर्णय की स्वीकृति में वर का यह दायित्व बोध है कि दो शरीरों की बत्ती अर्थात् जीवन एक हो, ज्योति एक हो तेल–घी अर्थात् स्नेह एक हो। दोनों अन्वय सम्बन्ध से एक रहें। सुख–दुःख, घर–परिवार, समाज–देश और सांस्कृतिक–सामाजिक सभी व्यवहारों में एक होकर व्यवहार करें। उपनाम एक, गाँव एक, परिवार एक, घर एक सब कुछ निर्णय बाती मिलाने से होना है। यह कार्य प्रसन्नता का है, अस्तु इसके लिए दूल्हे को नेग स्वरूप कुछ दिया भी जाता है।

लाल तुम काहे न मेरवहु बातीं।
धौं लाला तुम्हरी आजी सिखइनि धौ तुम्हहि सिखवइं बाराती। लाल...
धौ लाला तुम्हरी माया सिखइनि धौ तुम्हहि सिखवइं बाराती। लाल...
धौ लाला तुम्हरी चाची सिखइनि धौ तुम्हहि सिखवइं बाराती। लाल...
धौ लाला तुम्हरी भाभी सिखइनि धौ तुम्हहि सिखवइं बाराती। लाल...
धौ लाला तुम्हरी फूफू सिखइनि धौ तुम्हहि सिखवइं बाराती। लाल...

यह गीत थोड़े परिवर्तन के साथ यहाँ प्रस्तुत हुआ है– बेटा तुम बाती क्यों नहीं मिला रहे हो। क्या तुम्हारी दादी ने सिखाया है अथवा बारातियों ने कुछ सिखाया पढ़ाया है, क्या तुम्हारी माता जी ने सिखाया है? अथवा बारातियों की यह शिक्षा है। इसी प्रकार बाती न मिलाने का कारण तुम्हारी काकी, भाभी या फूफू किसने सीखा दिया है। यदि परिवारजनों ने नहीं सिखाया है, तब लगता है कि बारातियों ने कुछ सिखा समझा दिया है। चूंकि इसमें नेगाचार होता है अस्तु गाँवों में बड़ी–बूढ़ी औरतें कुछ लोभवश भी दूल्हों को समझा रखती हैं। यही बात गीत के द्वारा प्रकट होती जा रही हैं।

देखु दुलहे एक चिरई बनी है।
मोरे आजा तोरी आजी जोड़िया बनी है। देख दुल्हे...
मोरे पापा तोरी मम्मी जोड़िया बनी है। देख दुल्हे...
मोरे चाचा तोरी चाची जोड़िया बनी है। देख दुल्हे...
मोरे भइया तोरी भाभी जोड़िया बनी है। देख दुल्हे...
मोरे फूफा तोरी फूफू जोड़िया बनी है। देख दुल्हे...
मोरे जीजा तोरी जीजी जोड़िया बनी है। देख दुल्हे...

कोहबर में दूल्हा–दुल्हन बाती मिलाई या बाती मेरवाई के लिए विवाह विधि के बाद जाते हैं। वहाँ गाए जाने वाले गीत हँसी–मजाक के ही होते हैं। गीत में दूल्हे को एक पक्षी के चित्र की ओर मिथ्या ही देखने का आग्रह किया जाता है और इसके साथ

ही हास्य का सृजन किया जाता है। वधू के आजा और वर की आजी, वधू के पापा और वर की मम्मी, वधू के चाचा और वर की चाची, वधू का भइया और वर की भाभी वधू का फूफा और वर की फूफू, वधू के जीजा और वर की जीजी की जोड़ी अच्छी बनी है, ऐसा बारबार गाया जाता है।

हास्य–विनोद के लिए दूल्हे को झूठ में ही पक्षी की ओर देखने के लिए गीत में कहा जाता है और जूतों की चोरी कर ली जाती है और दूल्हे से नेग लेकर जूते फिर दे दिए जाते हैं। इसी समय दूल्हे को गीत के द्वारा कुछ हँसाने का उपक्रम किया जाता है।

काहे नहीं करत कलेऊ सिया के बर।
धौ तोहि बरजे कौशिल्या माता धौ तोहि बरजे बराती सिया के बर।
ना मोहि बरजे कौशिल्या माता ना मोहि बरजे बराती सिया के बर।
धौ तोही चाही हांथी औ घोड़ा धौ तोही चाही हो मोहर सिया के बर।
ना हमें चाही हांथी औ घोड़ा ना हमैं चाही हो मोहर सिया के बर।

सिया के वर अर्थात् दूल्हा श्रीरामजी कलेवा (कल्यवर्त, प्रातराश, सुबह का अल्पाहार) क्यों नहीं कर रहे हैं अरे! श्रीराम जी सिया के वर, क्या तुम्हें कौशल्या माता ने मना किया है अथवा बारातियों ने मना किया है जो कलेवा नही कर रहे हो। श्रीराम ने बताया कि न तो हमे माँ कौशल्या ने और न ही बारातियों ने मना किया है। फिर आपको हाथी चाहिए कि घोड़ा चाहिए अथवा मोहर (मुद्रा) चाहिए। रामजी ने कहा कि न तो हाथी और न ही घोड़ा तथा मोहर भी हमें नहीं चाहिए।

हमारे दूलह जेवन बइठे राम जेवइया रे।
छींदा टाठी दइदे काकी राम जेवइया रे।
छीदा दोहनिया हारे बहिनिया राम जेवइया रे।
नोवा गइया दे दो भइया राम जेवंइया रे।

यह कलेवा का गारी गीत है। टाठी के लिए काकी, दोहनी के लिए बहन, गाय को नोई से बांधने के लिए माँ की मांग ससुराल में दूल्हे से की जा रही है।

सूखा कलेउना काहे खाए ललन भोरे। (2)
अपनी माया कंदुआ घर रखतेउं पेड़ा मिठाई लइ खाते ललन मोरे।

यह भी प्रसिद्ध गारी गीत है। इसमें सूखा कलेवा खाने की बात की गयी है और माँ के बदले मिठाई पेड़ा लेने की गाली दी गयी है।

निवाह लीन्हेउ गुंइया हो तुम प्राण पियारे लाला।
दशरथ सुत कौशिल्या जाये येंई ननदोइया हमारे। निवाह...
मलयागिर चन्दन उयं गारे केशर तिलक संवारे । निवाह....
एक सखी जल लीन्हे ठाढ़ी एकै चरण पखारै। निवाह....
वरन–वरन के चार सिंघासन चरिउ मां बइठारे। निवाह...
वरन–वरन के छप्पन भोजन जेवत राज दुलारे। निवाह...

सखीजनों की परस्पर चर्चा में यह गीत है। सखी ये लाला प्राणों से प्यारे हैं, अस्तु इनके साथ निर्वाह कर लेना। ये दशरथ के पुत्र हैं, कौशल्या इनकी माता है। ये हमारे ननदोई हैं। मलयागिर चन्दन घिसते हैं और केशर से तिलक रच लेते हैं। एक सखी पानी लेकर खड़ी रहती है और दूसरी पैर धोती है। चार सिंहासन हैं जो विविध प्रकार के हैं। चारों भाइयों को अलग–अलग सिंहासनों में बैठा दिया जाता है और अनेक प्रकार का छप्पन भोग दिया जाता है और सभी राज दुलारे भोजन करते हैं।

इस गीत में रामजी के कलेवा करने के दृश्य का वर्णन किया गया है।

माया चली परछन का बेटी का विदा करइ।
माया पहिरिन तन मां पिअरिया बेटी का विदा करइ।
तोहरे ऊपर हो सुख की बरखा सदा सुहागिन रहहु।
दुलेउना चला धीरे बापू आए मिलन को।
चाचा आए बहिना आए भाभी आई मिलन को। माया ....
आरती उतारिनि पालकी बइठाइनि अंसुवन घिर आई है।
माया गई कुम्हिलाय कि धरती पसरि परि हंय।

माँ पीली साड़ी पहन लेती है, क्योंकि बेटी की विदाई का परछन करना है। कहती है– बेटी तुम्हारे ऊपर सुख की बरसात होती रहे, सदा सौभाग्यवती रहो, दूल्हा जी जरा धीरे–धीरे चलना क्योंकि पिताजी मिलने के लिए आ रहे हैं। चाचा, बहन, भाभी सभी मिलने के लिए आ रहे हैं। सभी आरती उतारते हैं। पालकी में बैठा देते हैं और आँसुओं से भर जाते हैं। माया सूख जाती है, धरती में व्याकुल होकर गिर पड़ती है। इसमें बेटी की विदाई के समय का चित्र प्रस्तुत किया गया है। उस समय सारा परिवार भेंट करना चाहता है और माँ की हालत सर्वाधिक दुःख की हो जाती है।

रोइ दिहिनि हो बन्नी डोला का देखि के।
पहले रोइनि बन्नी आजी का भेंटि के खीचि लिहिनि हो बन्ना आजी से जाइ के।

दुसरे रोइनि बन्नी माया से भेंटि के खीचि लिहिनि हो बन्ना माया से जाइ के।
तिसरे रोइनि बन्नी चाची से भेंटि के खीचि लिहिनि हो बन्ना चाची से जाइ के।
चउथे रोइनि बन्नी भाभी से भेंटि के खीचि लिहिनि हो बन्ना भाभी से जाइ के।
पंचवे रोइनि बन्नी जीजी से भेंटि के खीचि लिहिनि हो बन्ना जीजी से जाइ के।

विदाई के समय का दृश्य माता—पिता की ममता को छोड़कर नए घर की ममता को आरंभ करने का होता है। आँसू ममता का विगलन है। लोक में यही आँसू गीत बन जाते हैं।

बन्नी डोला सजा हुआ देखकर रोने लगती है। आजी को भेंट कर रोती है, परन्तु बन्ना उसे खींच लेता है। दूसरी बार माँ से भेंटती रोती है, तीसरी बार चाची से मिलती रोती है, चौथी बार भाभी से मिलती और रोती है। पाँचवी बार बहन से भेंटती और रोती है, तब भी बन्ना सभी से छुड़ाता है और दोनों साथ हो जाते हैं।

ऐसा लगता है कि माँ, चाची, भाभी, जीजी के प्रति ममता रो—रोकर विगलित होती जा रही है, परन्तु दूल्हा सबसे अलग करता हुआ नवीन स्नेह रचना करता रहता है। परिवार के सभी लोगों का प्रेम मानो दूल्हे में समर्पित हो जाता है। वही विवाह के बाद वधू का सारे प्रेम—पात्रों का पूजीभूत हो जाता है।

खेत भला जहां गोहुंआ रे उपजै हो बाग भली गुलजार।
कोख भली जहां उपजै दुल्हेरुआ हो नौबत बजै दुआर।
को रे पहिनै रुनझुन गहना कोरे लहर पटोर।
को रे पहिनै तन मां पियरिया हो नउबत बजइ दुआर।
माया त पहिनइं रूनझुन गहना हो माया तो लहर पटोर।
माया पहिरिन तन मां पिअरिया दुलहे के आरती उतार।
आरती उतारिन पालकी चढ़ाइन माया गयी मुरझाइ।

वही खेत अच्छा माना जाता है, जहाँ गेहूँ की खेती होती है। बगीचा वही अच्छा होता है जहाँ पुष्पादि की समृद्धि रहती है। दूल्हा जहाँ पैदा होता है वही कोख अच्छी होती है और उसके आने पर दरवाजे पर अनेक विध बधाइयाँ बजती हैं। कौन है जो रुनझुन बजता हुआ गहना पहनता है और कौन लहर पटोर पहनता है। शरीर में पियरी (पीत धोती) कौन पहनाता है और किसके दरवाजे पर अनेकों बाजे बजते हैं। वधू की माता जी रूनझुन गहना पहनती है। वही लहर पटोर पहनती है और वही माँ अब पीली साड़ी पहनती है और दूल्हा की आरती उतारती है। आरती उतारती हुई पालकी चढ़ा

देती है और तब कुम्हला जाती है, सूख जाती है। जब उसकी बेटी पालकी में दूल्हें के साथ चढ़ जाती है, परायी हो जाती है। एक सर्वथा नए व्यक्ति के साथ सारा घर–परिवार रोता विलखता छोड़ कर, सब कुछ छोड़कर ममता तोड़कर चली जाती है। इस धार्मिक क्षण का वर्णन साहित्य में भी मिलता है, परन्तु लोक–जीवन में इसका उत्स इन्हीं गीतों में रहता है।

मोरी छोटी है जनक दुलारी बिदा ना करबइ बिदा ना करबइ।
बाहर ठाढ़े ससुर समुझावइं ससुर समुझावैं भितरे से रोमयं महतारी। बिदा..
अंगना मां ठाढ़े जेठ समझावैं जेठ समझावैं भितरे से रोमयं महतारी। बिदा...
दुअरा मां ठाढ़े देवर समझावैं देवर समझावैं भितरे से रोमयं महतारी। बिदा..

मेरी बिटिया जनक तनया बहुत छोटी है। मैं ससुराल के लिए विदा नहीं करूँगी। बाहर खड़े हुए ससुर समझाइस दे रहे है और भीतर माँ रोती जा रही हैं आँगन में जेठ समझाने में लगे हैं, पर माँ भीतर तो रोती ही रहती है। दरवाजे पर देवर समझाते हैं, परन्तु माँ है कि रोती जाती है।

माँ ममता में आँसू बहाती हुई रोती जा रही है और बेटी की विदाई के लिए तैयार नहीं हो रही है। उसे ससुर भी, जेठ भी, देवर भी सभी समझाते हैं, परन्तु ममता है कि मानती ही नहीं है।

माया देहि असीस कि मंगल गामइं।
जहं–जहं जाइ बिटिया मोरी राज करइ
दूध कटोरन पूतो ते राजभरइं।
सब सखियां देइं असीस कि मंगल गामइं।
सदा सुहागिन रहहुं कि मोरी सखि री।
पिया के मन मां वास करइं सब दिन करहु पिय पूजा री।
फूफू देइं असीस कि मंगल गांमइं।
सास ससुर की सेवा करियो ननद जेठानी का पटाय रखा री। फूफू.

मेरी माता आशीर्वाद देती है। मंगलगान गाए जा रहे हैं– बेटी जहाँ–जहाँ जाए वहीं–वहीं राज सुख प्राप्त करे, कटोरा भरा दूध पीए, पुत्रों से राज्य भरा पूरा कर दे। सभी सखियाँ आशीर्वाद देती हैं कि सदा सर्वदा सौभाग्य बना रहे, सुहागिनी बनी रहो। प्रियतम पति के मन में निवास करती हो और सारे दिन प्रिय की पूजा करती रहो। फूफू भी मंगलगान पूर्वक आशीर्वाद दे रही है कि सास एवं ससुर की पूजा करना और ननद

तथा जेठानी को अनुकूल करके रखना। गीत में विदाई के समय आशीष भी हैं और सीख भी दी गयी है। पति की पूजा, सास–ससुर की सेवा और ननद–जेठानी को अनुकूल रखने का निर्देश दिया जाता है।

लै लेहु री भरि लोचन लाहू।
ना फिरि राम जनकपुर अइहैं ना पुर नारि अवधपुर आहू। लै लेहु...
राम सिया की परत भांवरी पण्डित वेद पढ़त कहे आहू। लै लेहु....
मंगल धुनि सुर नभ झरि लाए राम सिया के होत बिआहू।...
परछन करत राम लछिमन के फेरि रहा राउर अस नाहू।
होत उदास जनकपुर वासी घर–घर मिलि सब होत उछाहू।

जनकपुर में विदा के समय परछन का प्रसंग इस गीत का विषय है। परस्पर सखियाँ मैथिलानियाँ कहती हैं आँखों की सार्थकता सुंदर और मंगलकारी दृश्य देखने में है। प्रभु को देखना है। सौन्दर्य को निहारना है, अस्तु सब नेत्रवान होने का लाभ ले लो। दूसरी बार श्रीराम जनकपुरी नहीं आयेंगे और जनकपुरी के नर–नारी अयोध्या नहीं जाएंगे। पण्डित लोग वेद मन्त्रों का उच्चारण करते जा रहे हैं और सीता, रामजी की भाँवरी पड़ रही है। देवता लोग आकाश में मंगल धुनि बजाते हुए खूब उत्साह बढ़ा रहे हैं– लगने लगा है कि राम और सीता का विवाह हो रहा है। राम और लक्ष्मण का परछन होने लगा है, यह आनन्द अब नहीं होगा। यद्यपि जनकपुर निवासी सब सीता की विदाई से उदास हो रहे हैं, परन्तु सब घर–घर में मिलते हैं और उत्साह बढ़ता जा रहा है।

दूल्हा–दुल्हन यहाँ सीता और रामजी हैं। दोनों का यह अद्भुत दर्शन है जो कि भविष्य में अब नहीं होगा।

अबके गए कब अइहै सिया के वर ।
धन–धन भाग है नगर अयोध्या की जहवां लिया है अवतार। सिया...
धन–धन भाग है माता कौशिल्या की जोतोही गोदखिलायी। सिया...
धन–धन भाग है जनकपुरवासी की जो छवि दर्शन पाई। सिया...
धन–धन भाग है ऊ बाग बगीचा जहं विचरे संग लक्ष्मण भाई। सिया के......
धन–धन भाग है ताल तलइया के जिनका पिया तुम पानी। सिया के......
धन–धन भाग है जग जन के मुख मन में बसा सुख धाम। सिया के........

जनकपुर में विदाई का प्रसंग है और परछन के प्रसंग में लोक का सुर गाने लगता है, विदाई का क्षण ही गीत रच देता है। सीता के वर श्रीराम! अब जा रहे हो,

परन्तु आने का समय बता कर जाओ। अयोध्या नगर का भाग्य धन्य है, जहाँ सीता पति ने अवतार लिया है। माँ कौशल्या का भाग्य भी धन्य है, क्योंकि आपको अपनी गोद में खिलाया है। जनकपुर वासियों के भाग्य भी धन्य हैं, क्योंकि सब ने आपकी छवि का दर्शन प्राप्त कर लिया है। वे बाग–बगीचे भी धन्य हैं, जहाँ छोटे भाई लक्ष्मण के साथ श्रीराम विचरते–घूमते रहे हैं। बड़े तालाब, छोटे तालाब सभी धन्य हैं, जहाँ आपने जल पान किया है। संसार की जनता के मुँह में आपका नाम और मन में आपका दिव्य स्वरूप बसा हुआ है, वे सब भी धन्य हैं।

जनकपुर के लोग विदाई के समय राम से पुनः आने का समय पूछने लगते हैं। उनके सौन्दर्य से इतने मुग्ध हैं कि जहाँ–जहाँ श्रीराम की उपस्थिति और स्थिति हुई है, सबके लिए धन्यवाद कर रहे हैं।

घर–घर बजत बधावा हो राम ससुररिया से आइगें।
तोरेहु धनुष राम शंकर का जनकपुरी सुख छावा हो। राम...
सीता माल राम उर मेली सांवली सुरत मन भावा हो। राम..
सीता व्याहि राम घर आएं अवध मां मंगल छावा हो। राम...
मन हरषित अति रानी कौशिला कंचन कलश सजावा हो। राम...
परछन करन लगीं सब रानी मनहुं सो सम्पति पावा हो। राम..
राम सीय छवि एकटक निरखत प्रेम से हृदय लगावा हो। राम..
एक एक मिलि चली सहेली मंगल गीत सुनावा हो। राम..

श्री राम जी ससुराल से वापस आ गए हैं, अस्तु घर–घर में बधाई बजने लगी है। शिवजी का धनुष रामजी ने तोड़ दिया और जनकपुर में सभी जगह सुख व्याप्त हो गया। सीता ने जयमाला रामजी के ऊपर मेल दी अर्थात् पहना दी। उनकी श्यामली रंग की सूरत या छवि शोभा बढ़ा रही है। सीता संग विवाह करके राम घर आते हैं और अयोध्या में चारों ओर मंगल छा गया है। रानी कौशल्या मन में बहुत प्रसन्न हो गयी है। सोने का कलश उन्होंने तैयार कर लिया। सारी रानियाँ परछन करने लगती हैं, लगता है सब सम्पत्ति पा गयी हैं। राम जी सीता की छवि को अपलक नेत्रों से देखते रहते हैं और प्रेम में भरकर हृदय से लगा लेते हैं। सारी सखियाँ मिलकर चलती हैं और मांगलिक गीत सुनाने लगती हैं। श्री राम का जनकपुर से सीता विवाह के बाद अयोध्या वापस आने पर मनाए जा रहे उत्सव उल्लास का वर्णन किया गया है।

विआहि लाएं रघुवर जानकी का।
अपने को लाएं राम हांथी औ घोड़ा सजाय लाएं म्याना जानकी का।

अपने को लाएं राम कण्ठी औ कठुला गढ़ाय लाएं हरवा हो जानकी का।
अपने को लाएं राम खटियाऔ मचिया कसाय लाएं पलंगा हो जानकी का।
अपने को लाएं राम शाला दुशाला रंगाय लाएं चुनरी हो जानकी का।
अपने को लाएं राम लौंग इलायची बंधाय लाएं बिटिया हो जानकी का।
अपने को लाएं राम जामा औ जोड़ा बेसाहि लाएं चुनरी हो जानकी का।
अपने को लाएं राम काने के कुण्डल गढ़ाय लाएं बेसर जानकी का।

राम विवाह कर अयोध्या लौटकर आये हैं, साथ में जानकी वधू बनकर आयी है। ससुराल से क्या–क्या लाए हैं? यह बताने के लिए भी गीत बन जाता है। राम विवाह कर जानकी को ले आए हैं, अपने लिए राम हाथी और घोड़ा लेकर आए हैं, परन्तु श्री जानकी जी को म्याना मियाना या पालकी सजाकर ले आए हैं। यह तो गमनागमन के लिए लाए हैं। श्रीराम जी अपने लिए कण्ठी और कठुला लेकर आए है और जानकी के लिए हार गढ़वा कर या बनवा कर ले आए हैं। यहाँ श्रृंगार भूषण की बात होती है। आसन, शयन के लिए राम जी अपने लिए खटिया और मचिया लेकर आ गए हैं, परन्तु जानकी जी के लिए पलंग ले आए हैं। रामजी अपने लिए शाला दुशाला ले आए हैं, परन्तु जानकी को चुनरी रंगाकर ले आए है। इसी प्रकार अपने लिए लवंग पुष्प और इलायची मात्र लेकर आए हैं, परन्तु जानकी जी के लिए बीड़ा लगवाकर ले आए हैं। राम जी जामा और जोड़ा अपने लिए ले आए हैं, परन्तु चुनरी खरीद कर जानकी जी के लिए ले आए हैं। राम जी कानों के लिए कुण्डल ले आए हैं, परन्तु जानकी जी के लिए बेसर अर्थात् नथ लेकर आए हैं।

इस गीत के माध्यम से दूल्हा और दुल्हन के विवाह कालीन श्रृंगार–आभूषण का निरूपण किया गया है। सर्वांग श्रृंगार का दोनों का विवरण प्राप्त होता है।

विआहि लाएं रघुबर जानकी का।
मिथिलापति की कठिन प्रतिज्ञा पूरि कियो रघुवीर टोरि धनुही का। विआहि...
बलि के सुत बाणासुर आयो शिव धनु उठा नहि गवन घर ही का। विआहि..
जेहिं कौतुक शिवशैल उठावा छुआ नहिं धनुष गयउ लंकहि का। विआहि...
देश देश के भूपति आए सीय स्वयंवर देखन ही का। विआहि...
कौशल्या सुत दशरथ नन्दन जनकपुर बना के सिय दुलही का। विआहि...

इसमें भी राम जी जानकी को विवाह कर ले आते हैं, परन्तु मिथिलानरेश की कठिन प्रतिज्ञा को पूरा करना पड़ा। साथ ही धनुष तोड़ना पड़ा है, बलि का पुत्र बाणासुर आया, वह भी शिव का धनुष नहीं उठा सका और सलज्जभाव से घर के लिए चला

गया। कैलाशपर्वत उठाने वाला महाबली रावण भी आया था, परन्तु धनुष को स्पर्श न करते हुए ही वह लंका के वापस चला गया। देश के अनेकानेक राजा आए थे परन्तु सीता जी के स्वयंवर सभी देख रहे थे। कौशल्या के पुत्र और दशरथ को प्रसन्न करने वाले श्रीराम जी जनकपुर मे सिया को दुलही बनाकर ले आए।

इसमें सीता–राम विवाह का निरूपण है।

ऐसन सांकरि गलिया हो मोरा जूना लरद में।
बारी ससुइया मैं तोरी पइयां लागउं जलदी करो परछनियां हो। मोरा .....
बारी जेठनिया मैं तोरी पइयां लागउं जलदी करो परछनियां हो। मोरा....
बारी ननदिया मैं तोरी पइयां लागउं जलदी करो परछनियां हो। मोरा....
बारी देवरनियां मैं तोरी पइयां लागउं जलदी करो परछनियां हो। मोरा....

गर्मी के कारण यह गीत वधू के परछन के आग्रह को प्रकट करता है। कहती है कि इतनी संकरी गली है कि मेरा जी थक गया या घबराने लगा है। सासूजी के पैरों में पड़ती हुई आग्रह करती है कि मेरा परछन शीघ्र कर दो। इसी प्रकार जेठानी से, फिर ननद से और फिर देवरानी से आग्रह करती है कि मैं सबके पैरों में गिरकर निवेदन कर रही हूँ कि मेरा जी घबड़ा रहा है, कृपया शीघ्र ही परछन कर लो।

सिया बनरी के करा तैयारी ललन ससुरारी से आएं।
पहले मिलन को सास रानी आईं सरई सूप देखाइनि। ललन ससुरारी...
दुसरे मिलन को ननद रानी आई कंचन कलश देखाइनि। ललन...
तिसरे मिलन को जेठानी रानी आई मोतिन माला पहिराइन। ललन...

ललन या दूल्हा ससुरारी से आ गए हैं। अब सीता जी के परछन की तैयारी कर लो। पहले मिलने को सासु रानी आ जाती है और सरई सूप दिखाकर परछन करती हैं। दूसरी मिलने वाली ननद रानी आती हैं और सोने का कलश दिखाती है। तीसरे मिलने को जेठानी रानी आ जाती हैं, जो मोती की माला पहनाती हैं। यहाँ परछन की परम्परा का उल्लेख है।

ससुरारिउ से आए मोरे बारे ललना।
ससुर दुअरवा हांथी अउ घोड़ा हथिनी ले आए मोरे बारे ललना।
ससुर दुआरे हांडा कसहड़ी पंचहड़बड़ ले आए मोरे बारे ललना।
ससुर दुआरे सारी अउ सरहज दुलहिनिउ ले आए मोरे बारे ललना।

मेरा बेटा ससुराल से आ गया है। ससुर जी के दरवाजे पर हाथी और घोड़ा है,

परन्तु ये अपने लिए हथिनी लेकर आए हैं। ससुर जी के यहाँ हांडा कसहड़ी आदि बर्तन हैं, परन्तु ये केवल पाँच हांडा ही लेकर आए हैं। साली सरहज सब ससुर जी के दरवाजे पर मिलते हैं, परन्तु वहाँ से ये अपने लिए दुलही लेकर आए हैं। ससुराल में दहेज के रूप में हाथी, घोड़ा, बर्तन सब दिये जाते थे। ऐसा इस गीत से प्रकट होता है।

अंचला भीतर करि लो री लागि जइहैं नजरिया।
ई बन्ना आजा जी को प्यारे (2)
आजी के आंखों के तारे री। लागि जइहैं...
ई बन्ना पापा जी को प्यारे (2)
मम्मी के आंखों के तारे री। लागि जइहैं...
ई बन्ना चाचा जी को प्यारे (2)
चाची के आंखों के तारे री। लागि जइहैं...
ई बन्ना भइया जी को प्यारे (2)
भाभी के आंखों के तारे री। लागि जइहैं...
ई बन्ना फूफा जी को प्यारे (2)
फूफू के आंखों के तारे री। लागि जइहैं...
ई बन्ना जीजा जी को प्यारे (2)
जीजी के आंखों के तारे री। लागि जइहैं...

अरे! वर इतना सुन्दर और आकर्षक है कि उसे नजर लग सकती है, अस्तु गीत ने सावधान किया है। दूल्हे को अपने आँचल में छिपा लो, कहीं नजर न लग जाए। यह बन्ना वर या दूल्हा आजा (पितामह) को बहुत प्रिय है, दादी की आँखों का तारा है, पिता जी, चाचा जी, भइया, फूफा और जीजा सबको बहुत प्यारा है, साथ ही मम्मी, चाची, भाभी, फूफू और जीजी की आँखों का भी तारा है। जब इन सबको यह इतना प्रिय है तब उसे नजर लग जाने का संदेह हो जाना स्वाभाविक है, अस्तु आँचल में छिपा लेने से वह नजर से बच जायेगा।

दूल्हा इतना सुन्दर सजता है और लगने लगता है कि गीत कहता है कि छिपा लो, आंचल के भीतर छिपा लो कहीं नजर न लग जाये। वह सबको प्रिय भी है, अस्तु नजर लगने की आशंका और भी बढ़ जाती है।

लाला खोला केमरिया के द्वार मैं देखउं तोरि धना।
धउं सामर हइ धउं गोर मैं देखउं तोर धना।
लाला फूफू जो खड़ी है दुआर मालिक तोरे कहंना गए।

फूफू मालिक गए है भण्डार तिजोरी ताला खोल रहे।
लाला खोल केमरिया के द्वार मैं देखउं तोरिधना।
लाला बहिना जो खड़ी है दुआर त मालिक तोंहरे कहना गए।
बहिनी मालिक गए गउसार त गउआ बेराय रहे।

बहू नई–नई जब विवाहिता होकर आती है, तब उसे देखने के लिए सभी सौभाग्यवती स्त्रियाँ आ जाती हैं। गीत में दूल्हे को दरवाजा खोलने हेतु आग्रह किया गया है कि वह दरवाजा खोल दे ताकि उसकी पत्नी को देखा जा सके। न जाने वह श्यामल रंग की है अथवा गौर वर्ण की है। इसलिए मैं तुम्हारी पत्नी देखूँगी। बेटा मैं, तुम्हारी फूफू द्वार पर खड़ी हुई हूँ। तुम्हारे मालिक कहाँ गए हैं, वह कहता है फूफू मालिक तो भण्डार की तिजोरी का ताला खोल रहे हैं। इसी प्रकार बहन दरवाजे पर खड़ी है। उसके स्वामी कहाँ है? बहन के मालिक तो गोशाला गए हैं और गायें छाँट रहे हैं।

इस गीत के द्वारा बहू की मुँह दिखाई की प्रथा का विवेचन किया गया है।

भइया उतारौ कि नोनमा हो जादू डारे मलिनिया।
कहंना उपजै रइयाऔ नोनमा कहना उपजै मलिनिया, हो जादू डारै मलिनिया।
गोकुला उपजै रइयाऔ नोनमा मथुरा उपजै मलिनिया हो, जादू डारै मलिनिया।

मालिन ने जादू डाल दिया है तो मैं राई उतारूँ या नोन उतारूँ। यह राई कहाँ पैदा होती है और नमक कहाँ पैदा होता है। यह मालिन तो जादू डाल रही है। गोकुल में राई पैदा होती है और मथुरा में नमक पैदा होता है। इसे शरीर पर से उतार देने से जादू का प्रभाव नहीं होता हैं। राई नमक उतार कर हवन करने से नजर नहीं लगने और लगी नजर उतर जाने की परम्परा है।

ऊँचे नीचे धउं हो उनकी माया निहारइ हो।
काहा निहारै फलाने बहू राम लखन अइसी जोड़ी हो।
ऊँचे नीचे धउं रे उनकी काकी निहारइ हो।
कहना निहारइं काका फलाने राम उनकी राम लखन अस जोड़ी हो।
ऊंचे नीचे धौं रे उनकी फूफू निहारइ हो।
कहना निहारैं फूफा फलाने रामा उनकी राम लखन अस जोड़ी हो।
ऊंचे नीचे धौं रे उनकी बहिनी निहारै हो।
कहना निहारै जीजा फलाने राम उनकी राम लखन जइसी जोड़ी हो।

स्त्रियाँ कभी ऊपर और कभी नीचे देखने लगती हैं। परछन के समय राम–लक्ष्मण जैसी जोड़ी बनी है तो ऊँचे देखना नीचे देखना सभी व्यर्थ है। काका, फूफा और जीजा तीनों को ऊपर नीचे देखने के प्रसंग में यही कहा गया है कि राम–लखन जैसी जोड़ी बनी हुई है, अतः ध्यान से देखो।

इसमें परछन के समय जोड़ी देखने का आग्रह है।

परछन करइ चली है वर कामिनी अरे परछन सगुन शुभ होइ हो।
दस सखी आगे चलैं दस सखी पीछे चलइं दस सखी गोहननि जायं हो।
तू कलसा लेहुं दुलहे–दुलहे कलश सगुन शुभ होइ हो।
अइसे दुलेरूआ का अशुभ झाडू लैके मरतेंउं।
मथानी लैके मरतेउं छोड़िय मूसर लइके मरतेउं।
अक्षत राई लोन लइके मरतेउं पइ चूमि लेतिउं तिलक लिलार।

श्रेष्ठ कामिनियाँ परछन के लिए चलती हैं। यह शगुन और शुभ परछन या प्रेक्षण प्रसंग होता है। दुल्हन की दस सखियाँ आगे रहती हैं, दस पीछे रहती हैं और दस सखियाँ साथ में चल रही हैं। दूल्हे को कलश लेने को कहती हैं, क्योंकि वह शगुन शुभ होता है। इसके बाद हास्य विनोद शुरू कर देती हैं कि ऐसा दूल्हा झाडू से पीटूँगी मथानी से पीटूँगी, मूसल से पिटाई करूँगी, अक्षत–राई–नमक लेकर मारूँगी। यह सब करके भी दूल्हे का ललाट चुम्बन करती हैं।

परछन के समय राई–नमक उतारकर व अग्नि में डालने की प्रथा है तथा गृहस्थी की सभी वस्तुओं का स्पर्श कराने की भी परम्परा है। तिलक करना और प्रेक्षण करना ही पारम्परिक है।

यह गीत परछन गीत है। इसमें दुल्हन से उतर चलने का आग्रह किया गया है।

ललनै ना लजबावा उतरि चला दुलहिन।
तोहरे भितरे हमें गर्मी लगति है भितरे पंखा लगउबै। उतरि चला दुलहिन।
तोहरे भितरे हमें भूख लगति है भितरे कंदुआ बसउबै। उतरि चला दुलहिन।
तोहरे भितरे हमें प्यास लगति है भितरे सगरा खनउबै। उतरि चला दुलहिन।

दुल्हन कहती है कि भीतर गर्मी है तो पंखा लगाने हेतु कहा जाता है। भूख के बहाने हलवाई लगाने की बात होती है। प्यास लगने पर तालाब बनवाने की बात कर

दी जाती है। असुविधाओं की बात दुल्हन करती है और उसे व्यवस्थाओं का आश्वासन प्राप्त होता है।

ललरी काहे का कराऊं भितरे चला दुलही।
तोहरे भितरे हमें भूंख लगति है भीतर कंदुआ बसैहौ। भीतर चला दुलहिनि।
तोहरे भितरे हमें प्यास लगति है भीतर कहंरा बसैहौ। भीतर चला दुलहिनि।
तोहरे भितरे हमें अमल लगति है भीतर बरई बसैहौ। भीतर चला दुलहिनि।
तोहरे भितरे हमें नींद लगति है भीतर सेज लगैहौ। भीतर चला दुलहिनि।

भूख लगने पर भीतर कंदुआ (हलवाई) होने की प्यास लगने पर भीतर कहार होने की लगने पर भीतर बरई (तमोली) बसने की है और नींद आने पर सेज लगाने की बात करके नववधू को परछन के समय उतरने का आग्रह और बाद में गृह प्रवेश कराया जाता है।

बन्ना या बनरा

विवाह गीत एवं व्रतबन्ध दोनों संस्कारों में यह गीत गाया जाता है, परन्तु सामान्यता इसका सम्बन्ध विवाह में सजे दूल्हा–दूल्हन से ही है। दूल्हा और दुल्हन को वस्त्र–आभूषण आदि विविध श्रृंगारों से सजाया जाता है। उन्हें सजा सजा कर दूल्हा और दुल्हन बनाया जाता है। इसी सजावट को केन्द्र में रखकर विविध गीत बन गए हैं। पुरुषों को सजाने वाले गीत, बन्ना गीत और स्त्री को सजाने वाले गीतों को बन्नी गीत के नाम से जाना जाता है। ये मंगलमय भी होते हैं, श्रृंगारिक भी होते हैं और विवरणात्मक भी होते हैं। बदलते हुए क्रम में रेवांचल का नारी कण्ठ भी पारम्परिक की अपेक्षा बन्नी–बन्ना के गीतों में ही ज्यादा रुचि लेने लगा है। आजकल तो फिल्मी गानों की धुनों पर भी गीत गाए जाने लगे हैं।

मोरे राम के रूप सरूप भूप सब देखन आए रे।
बन्ना के माथे मौरे सोहइ कलंगिन जड़ा है जड़ाव। भूप सब...... मोरे...
बना के काने मां झुमका सोहइ झुमकन जड़ा है जड़ाव। भूप सब....
बना के गले मां लाकेट सोहइ निकिल से जड़ा है जड़ाव। भूप... सब...
बना के अंग मां जामा सोहइ फैशन जड़ा है जड़ाव। भूप...
बना के हांथ मां घड़िया सोहइ चैनन जड़ा है जड़ाव। भूप...... मोरे ....

यहाँ दूल्हे को राम के नाम से संबोधित किया गया है। गीत आह्वान करता है कि मेरे राम का या दूल्हे का रूप राम जैसा है। उन्हें सारे राजा देखने आए हुए हैं। दूल्हे के सिर पर मौरें बंधी हुई हैं, परन्तु उनकी कलंगियों में जड़ाव लगा हुआ है। उसके कानों में झुमका है उसमें जड़ाव है, गले की लाकेट में निकिल का जड़ाव है। अंग के जामा में फैशन जड़ दिया है घड़ी है। हाथ में और उसके चेन में जड़ाव बना है।

रेवांचल में बारात का आकर्षण दूल्हा ही होता है। दूल्हे का श्रृंगार श्री राम जैसा ही किया जाता है, जिसका वर्णन इसमें किया गया है।

मोरे राम जी का रूप सरूप भूप सब देखन आए रे।
आजी भरि मुंह देहु असीस धनुष हम तोड़न जाबै रे। भूप ...
धनुष हम तोड़न जाबइ रे सिया का व्याहि ले अउबै रे। भूप...
बेटा अभी उमर नादान धनुष तुम टोरि न पइहौरे। भूप...
धनुष तुम टोरि न पइहौ रे सिया का व्याहि न लइहे रे। भूप ....

मेरे राम जी का सुन्दर रूप है; सारे राजा उन्हें देखने के लिए आए हैं। दादी के पास राम जी ने कहा कि मुझे मुँह भर कर आशीर्वाद देना, हम धनुष तोड़ने जा रहे हैं। मैं धनुष तोड़ने जाऊँगा और सीता का विवाह कर लाऊँगा। दादी कहती है– बेटा अभी तो तुम्हारी आयु कम है। तुम धनुष नहीं तोड़ पाओगे और धनुष नहीं तोड़ पाओगे तो सीता को विवाह कर नहीं ला पाओंगे।

इस गीत में तो सीता–विवाह की पृष्ठभूमि में धनुष भंग–प्रसंग का वर्णन किया गया है।

अपने गुरुजी के साथ राम मिथिलापुर आयो रे।
साथ लखन सुकुमार दरश सब पुरजन पायो रे।
सीता रहीं सुकुमार जनक प्रण ठानि दिखायो रे।
तोड़ि धनुष सुकुमारि व्याहि रघुबर घर लायो रे।
घर–घर बजत बधाव अवधपुर मंगल छायो रे।
माता परछन कीन्ह सिया अस दुलहिन लायो रे।

अपने गुरु श्री विश्वामित्रजी के साथ श्री राम जी मिथिलापुरी आ गए हैं। उनके साथ में सुकुमार श्री लक्ष्मण जी हैं, जिनका सभी पुरवासियों ने दर्शन प्राप्त कर लिया है। सीता बहुत सुकुमारी थी, परन्तु राजा जनक ने प्रतिज्ञा कर दिखा दी। श्रीराम ने धनुष तोड़ा, सुकुमारी से विवाह कर लिया और अपने घर ले आए। अयोध्या में चारों ओर मंगल व्याप्त हो गया और घर–घर में बधाई बजने लगी। माता ने परछन किया और सीता जैसी बहू घर ले आए।

यह गीत भी श्रीराम–लक्ष्मण और सीता के विवाह प्रसंग का वर्णन करता है।

देखो दशरथ राजदुलारे नवल बनरा बनि आयो रे।

नवल बनरा बनि आयो रे छयल बनरा बनि आयो रे।
आगे घोड़ा उनके आजा का पीछे आजी का म्याना रे।
बीच का म्याना शहजादे का मोती झालरि लागइ रे। देखो.....
आगे का घोड़ा उनके बाबुल का पीछे मम्मी का म्याना रे।
बीच का म्याना शहजादे का मोती झालर लागइ रे। देखो...
आगे का घोड़ा उनके चाचा का पीछे चाची का म्याना रे।
बीच का म्याना शहजादे का मोती झालर लागइ रे। देखो...
आगे का घोड़ा उनके भइया का पीछे भाभी का म्याना रे।
बीच का म्याना शहजादे का मोतियन झालरि लागइ रे। देखो...

थोड़ा बदला रूप इस प्रकार भी मिलता है —

आया बन्ना बड़ी दूर से मोती झालर बांधे।
आगे घोड़ा उनके बाबू का पीछे अम्मा का म्याना।
बीच घोड़ा शहजादे का मोती झालर बांधे। आया बन्ना बड़ी...
आगे घोड़ा उनके चाचा का पीछे चाची का म्याना।
बीच घोड़ा शहजादे का मोती झालर बांधे। आया बन्ना ....
आगे घोड़ा उनके भइया का पीछे भाभी का म्याना।
बीच घोड़ा शहजादे का मोती झालर बांधे। आया बन्ना...

सखियाँ आपस में कहती हैं कि देखो भी, राजा दशरथ के दुलारे नए दूल्हा बनकर आ गए हैं। आगे उनके आजा का घोड़ा पीछे आजी का म्याना या पालकी सजी है। बीच में दूल्हे का म्याना है, जिसमें मोती की झालरि लगी हुई है। इसी प्रकार आगे का घोड़ा पिता का, पीछे माँ की पालकी है। कभी चाचा आगे घोड़े पर कभी चाची पीछे पालकी पर, कभी भाई का घोड़ा कभी भाभी का म्याना पीछे रहेगा, परन्तु बीच में सदैव दूल्हे का म्याना रहता है। दूल्हे की पालकी में लगी मोती की झालरें यही विशेषता सूचित करती है।

इसमें बारात का वर्णन किया गया है।

दशरथ राज दुलारे नवल बनरा बनि आयो रे।
नवल बनरा बनि आयो सुघर बनरा बनि आयो रे।
बना को मौरें सोहइं रे बना को चन्दन सोहइ रे।
बना के मुकुट बने अनमोल नवल बनरा बनि आयो रे। दशरथ....

बना को कुण्डल सोहइ रे बना को बाला सोहइ रे।
बना के लटकन में अनमोल नवल बनरा बनि आयो रे। दशरथ ....
बना को जामा सोहइ रे बना को फेंटा सोहइ रे।
बना की अंगिया में बना मोर नवल बनरा बनि आयो रे। दशरथ....

आज दशरथ राजा के पुत्र नए–नए बनरा (दूल्हा) बन कर आ रहे हैं। दूल्हा के मौरें बंधी हुई हैं। चन्दन लगा हुआ है, अनमोल मुकुट बंधा हुआ है। दूल्हे का कुण्डल लहरा रहा है और बाला भी सजा हुआ है, लटकन में अनमोल रत्न जड़े हुए हैं। जामा भी पहने हैं। उसमें फेटा बंधा हुआ है। अंगिया पहने हैं, जिसमें मोर बना हुआ है। इसमें भी श्रीराम का श्रृंगार वर्णन किया गया है।

हमारी जनकपुरी ससुराल अयोध्या में माता पिता है रे।
आजी चलो हमारे साथ अयोध्या में माता पिता है रे।
मम्मी चलो हमारे साथ अयोध्या में माता पिता है रे।
चाची चलो हमारे साथ अयोध्या में माता पिता है रे।
भाभी चलो हमारे साथ अयोध्या में माता पिता है रे।

हमारी ससुराल जनकपुर में है और माता–पिता अयोध्या में रहते हैं। दूल्हा माता–पिता के पास अयोध्या ले जाने के लिए क्रमशः दादी, माँ, चाची और भाभी से आग्रह करता है। यह श्रीराम का आग्रह है कि वे अयोध्या में माता–पिता से मिलाने का आग्रह कर रहे हैं।

लीन्हें धनुष बन्ना ठाढ़ हो कोई जोड़ी तो मिला दो।
बारे बन्ना जी के मौरे भी सोहै कलंगी सम्हारै सिया जानकी। कोई जोड़ी...
बारे बन्ना जी के कुण्डल भी सोहै झुमकी सम्हारै सिया जानकी। कोई....
बारे बन्ना जी के चैन भी सोहै लाकेट सम्हारै सिया जानकी। कोई....
बारे बन्ना जी के घड़िया भी सोहै चैने सम्हारै सिया जानकी। कोई....
बारे बन्ना जी के जामा भी सोहै फेंटा सम्हारै सिया जानकी। कोई....
बारे बन्ना जी के जूता भी सोहइं मोजा सम्हारै सिया जानकी। कोई....
नैनन सुरमा आंजो राजा बनरे भौहै सम्हारै सिया जानकी । कोई लीन्हे..
मुख भरि बिरिया चाबो राजा बनरे, लाली सम्हारैं सिया जानकी । कोई लीन्हे.

धनुष लेकर दूल्हा खड़ा हुआ है। इसमें जोड़ी मिलाने के लिए गीत गाया जा रहा है। दूल्हा जी के मौरें सजी हुई हैं, जनकजा सीता कलंगी सम्हाल रही हैं। जब कुण्डल

से दूल्हा सजता है तो सीता जी झुमकी सम्हालती हैं। जब चेन पहनता है तो सीता जी लॉकेट सम्हालती हैं। घड़ी पर चेन, जामा पर फेटा, जूते पर मोजा, सुरमा पर भौहें और बीड़ा चबाने पर लाली सीता जी सम्हालती रहती है। यह गीत दूल्हा राम और दूल्हन सीता की श्रृंगार सज्जा का निरूपण करता रहता है।

मोरे अवधनरेश कुमार राम बनरा बनि आयो रे।
बना के माथे मौरे सोहैं कलियों में अंतर भरायो रे।
बना के कानो कुण्डल सोहै मुतियन अंतर भरायो रे।
बना के गरे में हरवा सोहै गुंजन अंतर भरायो रे। मोरे अवधनरेश..

मेरी अयोध्या के राजकुमार श्रीराम जी दूल्हा बनकर आए हैं। दूल्हे के सिर पर मौर अच्छी लग रही है और कलियों में इत्र भरा हुआ है। कानों में कुण्डल सजा हैं और उसकी मोतियों में इत्र भरा हुआ है, गले में हार सजा है घुंघची में इत्र भरा हुआ है। इस गीत में श्रीराम का श्रृंगार वर्णन हुआ है।

मोरे दशरथ राज दुलारे आज दूल्हा बनि आयो जू।
क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल गल मोतियन का हार गले बिच माला सौहे जू।
पहुंची बारात जनक जी के द्वारे होइ दुआरे के चार सखी सब मंगल गावइं जू।
राजा जनक ने रचा है स्वयंवर जो कोई धनुष का तोड़े सिया ओही का व्याहै जू।
उठे रघुनन्दन धनुहा का तोड़े सिय जयमाला डालैं सखी सब मंगल गावैं जू।

आज मेरे दशरथ के राजकुमार दूल्हा बनकर आ गए हैं। उनके सिर में मुकुट बंधा है, मकर की आकृति वाला कानों में कुण्डल सजा है। गले में मोती का हार भी है और सुन्दर माला भी सुशोभित हो रही है। जनक जी के दरवाजे पर बारात पहुँच गयी है और द्वार पूजन होने लगा है। सभी सखियाँ मंगल गीतों का गायन करने लगी हैं। राजा जनक ने स्वयंवर रचा दिया है, यदि कोई धनुष तोड़ देगा, तब सीता उसी से विवाह करेंगी। रामजी उठते हैं, धनुष तोड़ देते हैं, सीता जी गले में जयमाला डाल देती हैं। सारी सखियाँ मंगल गान करने लगती हैं। इस प्रकार यह गीत श्रीराम की सज्जनता का वर्णन करता है।

मोरे दशरथ राज दुलारे राम बनरा बनि आयो रे।
माथे उनके तिलक भल सोहै चन्दन लगा है लिलार। राम दुलहा बनि आयो रे।
काने उनके कुण्डल भल सोहै गले बैजन्ती माल। राम दुलहा बनि आयो रे।
कांधे उनके धनुष भल सौहे बगल में तीर कमान। राम दुलहा बनि आयो रे।

दशरथ जी के राजकुमार मेरे रामजी बन्ना या दूल्हा बनकर आ गए हैं। मस्तक पर सुन्दर तिलक और ललाट में चन्दन लगा हुआ है। कान में कुण्डल और गले में वैजयन्ती की माला शोभित हो रही है। उनके कन्धे पर अच्छा धनुष सुशोभित हो रहा है और बगल में तीर कमान लिए हुए रामजी दूल्हे के वेश में सुन्दर लग रहे हैं। श्रीराम बनरा बने हैं। उन्हीं का वर्णन है।

दशरथ राजदुलारे जनकपुर व्याहन आए रे।
सबके मन है भाए रे जनक पुर व्याहन आए रे।
रामलखन अरू भरत शत्रुहन सब बनरा बनि आए रे। जनकपुर...
सिर सोने की मौर विराजैं मुख फूलन का सेहरा रे। जनकपुर....
तिलक मालऔ आंख कटीली सोहत सुन्दर गजरा रे। जनकपुर...
तन सोहइ केशरिया जामा गल मोतियन का गजरा रे। जनकपुर...
सब देवता मिलि देखन आए राम बने बांके बनरा रे। जनकपुर..

सखियाँ आपस में बात करती हैं; गीत गाती हैं। दशरथ के राजकुमार जनकपुरी में विवाह करने आए हैं। वे सबको अच्छे लग रहे हैं। राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न सभी दूल्हे बनकर आए हुए हैं। इनके सिर में सोने की मौर विराजित है और मुँह पर फूलों का सेहरा लटक रहा है। मस्तक पर तिलक लगा है। कँटीली नुकीली आँखें बनी हुई हैं और सुन्दर गजरा सुशोभित हो रहा हैं। शरीर में केशर रंग का जामा अच्छा लग रहा है। गले में मोतियों से गुंथा हुआ गजरा लगा हुआ है। सारे देवता मिलकर आ गए हैं और देखते हैं कि श्रीराम जी सुन्दर दूल्हा बने हुए हैं। इसमें भी वही श्रीराम का सौन्दर्य वर्णित है।

मुनि संग आए है दोई सुकुमार जी बन्ना श्रीराम जी लला।
विश्वामित्र रहे बड़भागी जिनने भीख लई दोउ मांगी।
बन में करी यज्ञ रखवारी, प्रभु ने नारि ताड़का मारी।
सखी ताको कियो भवपार री। बन्ना श्रीराम जी लला।
राह मे चलत अहल्या तारी, गौतम ऋषि की श्राप उतारी।
प्रभु के चरनन को बलिहारी, सखी पतितों के प्राणअधार हो। बन्ना श्रीरामजी...
धाम ने मिथिलापुर में छाई, बस में कर लए लोग लुगाई।
उनके नैनन में छवि समाई सखी अंखियाँ भरि लेहु निहारी। बन्ना...
सिर पै क्रीट मुकुट को धारे, कुंडल हिले गाल पै प्यारे।
मुसुकाने का नहीं कछु पार री। बन्ना श्री.....
जिनमें लछिमन भइया छोटे, जिनके पांव में ब्रह्मा लोटे।

बिना जप तप के हो गए उद्धार री। बन्ना श्री राम..
वे तो भांवरिया पड़ि जइहैं फिर वे सीताराम कहैहैं।
सबकी बिगड़ी बात बनैहैं धनुहा तोड़ि के बनी है ससुरार री। बन्ना..

मुनि विश्वामित्र के साथ दो सुकुमार आए हैं। उनमें बन्ना (दूल्हा) श्री रामलला जी है। बड़े भाग्यशाली विश्वामित्रजी हैं, जिन्होंने भीख में दोनों भाइयों को मांग लिया है। वन में उन्होंने यज्ञ की रक्षा की है और प्रभु ने ताड़का नारी को मार डाला और उसे संसार के पार कर दिया। राह चलते–चलते अहिल्या को तार दिया, उद्धार कर दिया। गौतम ऋषि का शाप दूर कर दिया। प्रभु के चरणों में बलि जाते हैं। वे पतितों के प्राणाधार है। मिथिला में नर–नारियों को बस में कर लिया, उनके आँखों में श्रीराम की झाँकी समा गयी है। इसीलिए कहती हूँ कि आँख भर कर देख लो। सिर में किरीट मुकुट पहने हैं; गालों पर सुंदर कुण्डल भी हिल रहे हैं, हँसते ही रहते हैं। उनका कोई पार नहीं है। लक्ष्मण जी उन्हीं पैरों में लोट गए जिनमें ब्रह्मा लोटे थे तो बिना जप और तप के ही उद्धार हो गया। जब भाँवरि पड़ जाएगी; तब वे सीताराम कहे जाएँगे और सबकी बिगड़ी हुई सुधारने लगेंगे। धनुष तोड़ने से ही ससुरार बन गयी है।

श्रीराम के चरित्र का कथन ही बन्ना गीत बन गया है।

दशरथ नन्दन तुम कुल वन्दन सुन्दर बदन तुम्हारे जू।
अंगना लिपाइनि चौक पुराइनि धनुष दिहिनि ओंढ़काई जू। दशरथ...
आंगन जो लीपैं सीतला रानी पांउ धरै सहलाई जू। दशरथ...
देशन–देशन पतियां पठाइनि भूप लिहिनि बुलवाई जू। दशरथ...
रावण औ बाणासुर आए सब जुड़ गए है समाजै जू। दशरथ...
सब भूपन मिलि धनुष उठावैं धनुष बजुर होइ जाई जू। दशरथ...
रामलखन का सनकी चलावैं तुम भइया धनुष उठाई जू। दशरथ...
हम लहुरे तुम जेठे भइया कैसे के धनुष उठाई जू। दशरथ...
बाएं अंगुरिया रामा धनुष उठाइनि लीन्हिनि सिया जी का व्याहिन जू। दशरथ.

हे दशरथ के नंदन! तुम्हीं कुल में वन्दनीय हो; तुम्हारा मुख सुन्दर है। आँगन गोमय से लीप दिया गया, उस पर चौक बना दी गयी और वहीं धनुष टिका दिया गया। यह आँगन सीता जी ने लीपा था। सम्हाल कर पैर रखा था। देश के कोने–कोने में पत्र या चिट्ठी भेज दी थी और राजाओं को बुलवा लिया। रावण और बाणासुर आए, और समाज भी जुड़ गया था। सारे राजा मिलकर धनुष उठाते हैं। पर वह धनुष भी व्रज जैसा कठोर था। राम ने कहा कि हम छोटे और तुम बड़े भाई हो। मैं धनुष उठा

लूँ। तब श्रीराम ने बाएँ हाथ की छोटी अंगुली से धनुष उठा लिया। परिणामतः सीता जी से ब्याह कर लिया था। यहाँ भी श्रीराम का पराक्रम वर्णित हुआ है।

खेलै–खेलै कौशल्या जी के गोद हो रामचन्द्र दूल्हा बने।
माथे बना जी के मौरे सोहै देखो कलंगिन पर नाच रहा मोर हो। रामचन्द्र...
कानन उनके कुण्डल सोहै देखो झुमकिन पै नाच रहे मोर हो। रामचन्द्र..
हाथे बना जी के चूड़ा भी सोहै देखो कंगन पै नाच रहे मोर हो। रामचन्द्र...
पांव बना जी के चूड़ा भी सोहै देखो जूतन पै नाच रहे मोर हो। रामचन्द्र ..

श्रीराम जी माँ कौशल्या की गोद में खेलते रहे हैं। आज दूल्हा बने हुए हैं, मस्तक में मौर बंधी है। कलंगियों पर मोर नाच रहे हैं। कानों में कुण्डल, उनकी झुमकियों में मोर नृत्य, हाथों में चूड़ा सजे हैं। कंगन में मोर नृत्य और पैरों में भी चूड़ा सजे हैं। जूतों में मयूर नृत्य सुशोभित हो रहा है। इसमें भी दूल्हा श्रीरामचन्द्र जी का श्रृंगार वर्णन मिलता है।

बन्नी की अवधपुरी ससुरार मिले बनरा रघुराई री।
बनी के बाबुल चरण परखारैं नगर में खुशियां छाई री।
बनी की माता कण्ठ लगावै मधुर बजै शहनाई री।
बनी के राजा दशरथ जी ससुरा सजे ठाढ़े चारों भाई री।
बनी के लछिमन जैसे देवर करै सेवक ठकुराई री।
बनी की कौशल्या जी सास सखी मिलि गीत बनाई री।

बन्नी की अयोध्या में ससुराल है और बन्ना रामजी मिले है, उसके पिता जी पैर धो रहे हैं नगर में उल्लास छा रहा है। माँ गले से लगा रही है। मीठी शहनाई बज रही है। ससुर राजा दशरथ है और चारों भाई सजकर खड़े हो गए है। उसके देवर श्री लक्ष्मणजी हैं जो सेवा कर रहे हैं और उसकी सास कौशल्या जी हैं। इसमें भी सीता बन्नी हैं इनके सास–ससुर–देवर का वर्णन किया गया है।

निहार प्यारी सखिया रघुबर की छवि को निहार।
सीस में उनके मुकुट भी सोहइ चन्दन सोहइ लिलार। निहार...
कान में उनके कुण्डल भी सोहइ गल मोतिअन को हार। निहार...
जनकपुरी को सजे बराती राजा जनकजी के द्वार । निहार...
रामचन्द्रजी के ब्याह रचाएं सिय सुकुमारी के साथ। निहार....
मंगल गीत सखी सब गावइं ताली बजै एक साथ। निहार....

सखी देखो, राम जी की छवि को देखो, उनके सिर पर मुकुट सुशोभित हो रहा है। ललाट में चन्दन सुशोभित है। उनके कानों में कुण्डल सुशोभित हो रहा है। गले में मोती का हार सजा है। सभी बाराती जनकपुर के लिए सज गए हैं। जनक राजा के दरवाजे जायेंगे। रामजी का विवाह सीता जी के साथ हो रहा है। सखियाँ ताली एक साथ बजा रही हैं और मंगल गीत गान कर रही हैं। श्रीराम की छवि का वर्णन किया गया है।

आए सज धज के अवध भुआल रामचन्द बनरा बने।
काहे चढ़ि राम आएं काहे चढ़ि लछिमन काहे चढ़ि अवध भुआल। रामचन्द्र..
हांथी चढ़ि राम आवै घोड़ा चढ़ि लछिमन रथ चढ़े अवध भुआल। रामचन्द्र...
सोनेन के कलशा लैके आई सखियां गावहिं मंगल चार।। रामचन्द्र...

श्रीरामचन्द्र जी दूल्हा बन गए हैं और अयोध्या नरेश सज–सँवर के आ गए हैं, सवारी रामजी की, लक्ष्मण जी की और अवधनरेश की क्या है। यह प्रश्न होता है, तब उत्तर में राम जी हाथी पर सवार हैं, लक्ष्मण जी घोड़े पर चढ़े हैं और राजा दशरथ रथ में चढ़कर आए हुए है। सखियाँ सब सोने का कलश लेकर आती है और मंगलाचारण की गीत गा रही है। बन्ना श्रीराम जी का आचार व्यवहार निरूपित हुआ है।

चलो देखो अवध की बहार राम चन्द्र बनरा बने। रामचन्द्र...
लछिमन सजि गए भरत भी सजि गए सजि गें चारिउ भाई । रामचन्द्र...
हांथी सजि गए घोड़ा सजि गए सजि गे रथ असवार। रामचन्द्र...
गुरूजी भी सजि गए मन्त्री सजि गए सजि गए दशरथ राज। रामचन्द्र...
रानी सजि गयीं सखियां सजि गयीं सजि गयी सकल बारात। रामचन्द्र...

चलो भाई अयोध्या का आनन्द देखते हैं, वहाँ रामचन्द्र जी दूल्हा बने हैं। लक्ष्मण जी, भरतजी और सभी भाई सज गए हैं। हाथी, घोड़ा और रथ की सवारी भी सजा दी गयी है। गुरूजी सज गए हैं और राज्य मंत्री तथा राजा दशरथ भी सज सँवर कर तैयार हो गए हैं। रानियाँ सब सजकर तैयार हैं। सखियाँ सहेलियाँ भी सजकर तैयार हो गयी है। सारी बारात भी सजी हुई है। बारात की शोभा का वर्णन किया गया है।

आज मोरे राम जी का लगन चढ़त है
लगन चढ़त है अनन्द बढ़त है।
केशर रंग जामा रामजी का सोहइ
बिच–बिच फेंटा अति बिलसत है।
कानन कुण्डल रामजी के सोहइ

गले बिच मोतिअन हार चमकत है।
मुख भर बीड़ा मोरे राम जी के सोहइ
देख–देख मोरा जिय ललचत है।

आज मेरे श्रीराम जी का लगन चढ़ रहा है या तिलक चढ़ाया जा रहा है, इस से आनन्द में वृद्धि होती जा रही है। राम जी ने केशरिया रंग का जामा पहना है और सुन्दर भी लग रहे हैं। उसके बीचों–बीच फेटा बंधा है, जिसकी शोभा बढ़ती जा रही है। श्रीरामजी के कानों में कुण्डल सज रहा है और गले में मोतियों का हार लहराता हुआ अच्छा लग रहा है। मेरे राम जी के मुँह में सुन्दर बीड़ा सुशोभित हो रहा है, उसे देख कर मेरा जी ललचा रहा है।

इसमें भी श्रीराम जी की सजावट का वर्णन है–

भावै री बन्ना राम सलोना।
श्यामली सूरत माधुरी मूरत, चितवन में सखी डारत टोना। भावै...
व्याह विभूषण सोहत सुन्दर, देखि रूप छवि बरनि सकौं ना। भावै...
जनक नगर में कहर मच्यो है, भूले पलक ललक सुख सोना। भावै....
कंचन कुंअर बना दशरथ को, मो जीवन धन जगत निरौना। भावै...

साँवला सलोना श्रीराम का बन्ना दूल्हा रूप बहुत अच्छा लगता है। सूरत तो सांवली है परन्तु मूर्ति में मधुरता है। देखने में टोना कर देता है। विवाह के सारे आभूषण सुन्दर लग रहे हैं। सुन्दरता देखकर वर्णन नहीं कर सकते हैं। देखने की ललक लिए जनकपुर के लोग सोना और पलकें झपकाना भी भूल गए हैं, कुहराम मच गया है। दशरथ का बेटा सोने का बन गया है मेरे, जीवन का धन है जो जगत में निराला है। श्रीराम के सुन्दर रूप का वर्णन किया गया है।

इन गलियन लैके अइयो जी रघुनाथ बना को।
सास तो इनके चमकी पगिया कलंगी पै
अतर लगइयो जी रघुनाथ बना को।
काने बना के कुण्डल सोहइ मोती पै
अतर लगइयो जी रघुनाथ बना को। इन.
अंग बना के जामा सोहइ पटके पै
अतर लगइयो जी रघुनाथ बना को। इन..
हांथ बना के कंगना सोहइ लटकन पै
अतर लगइयो जी रघुनाथ बना को।

दूल्हा रघुनाथ जी को इन गलियों में लेकर आना, ऐसा सखियों का आग्रह है। इसके सिर पर पगिया बंधी हुई चमक रही है और कलंगी भी है, उसमें अतर लगा देना। कान में कुण्डल है, उसके मोती में इत्र लगा देना। आँगन में जामा सजा है, उसके फेंटे पर इत्र लगा देना। हाथ में कंगन शोभित है, लटकन पर इत्र लगा देना।

श्रीरामजी के साथ व्यवहार कैसे करना है; इसका निर्देश है–

सखी आज कैसी मनोहर घड़ी है गले राम जयमाल सुन्दर पड़ी है।
कलियों में कलियां और लड़ियों में मोती चमक तो वो शेहरे की पंखुड़ी है। सखी.
मिले हर लड़ी पै हमें सौ अशरफी इसी बात पर आज मालिन अड़ी है। सखी
नहीं आज फूला समाता अवधपुर खुशी आज रानी कौशल्या बड़ी है। सखी..
भई आज शादी सियाराम जी की खुशी आज राजा जनक को बड़ी है। सखी.

सखी! आज कैसी सुन्दर घड़ी है कि श्रीराम के गले में सुन्दर जयमाला पड़ी हुई है। मौर में कलियों पै कलियाँ हैं, लड़ियों में मोती जड़े हैं। प्रत्येक लड़ी में सौ–सौ मुहरें मालिन लेने का हठ कर रही है। आज अयोध्या प्रसन्नता से फूली नहीं समाती है और माँ कौशल्या आज बड़ी खुश है। आज सीता और राम जी का विवाह हो गया है। इस पर राजा जनक को बहुत प्रसन्नता हो रही है। जयमाला के बाद श्रीराम जी शोभा और सबकी प्रसन्नता का निरूपण हुआ है।

आज बन्ना की मदभरी अंखियां ।
हमने कहा कि बन्ना आजा जी को लाना
आजी जी को लाए बन्ना मद भरी अंखियां। आज...
हमने कहा कि बन्ना बाबू जी को लाना,
अम्मा जी को लाए बन्ना मद भरी अंखियां। आज...
हमने कहा कि बन्ना चाचा जी को लाना,
चाची जी को लाए बन्ना मद भरी अंखियां। आज...
हमने कहा कि बन्ना फूफा जी को लाना,
फुआ जी को लाए बन्ना मद भरी अंखियां। आज...
हमने कहा कि बन्ना जीजा जी को लाना,
जीजी जी को लाए बन्ना मद भरी अंखियां। आज...
हमने कहा कि बन्ना नाना जी को लाना,
नानी जी को लाए बन्ना मद भरी अंखियां। आज...
हमने कहा कि बन्ना भइया जी को लाना,
भाभी जी को लाए बन्ना मद भरी अंखियां। आज...

आज बन्ने की आँखें मतवाली हो रही हैं। उनसे हमने दादाजी, पिता जी, चाचाजी, फूफाजी, जीजाजी, नानाजी और भइया जी को लाने के लिए कहा और वे क्रमशः दादी, अम्मा, चाची, फुआ, जीजी, नानी और भाभी को लेकर आते हैं। उनकी आँखें मद से भरी हुई हैं। बन्ना अपने संबंधियों के साथ आया है। उसकी आँखें नशीली हो गयी हैं।

बन्ना धीरे धीरे चलना ससुराल गलियां ।
तुमको बेंदी पहिनाएं बन्नी वही सखियां
जिनके लम्बे–लम्बे केश गोलारी अंखियां।
तुमको चैन पहिनाएं बन्नी वही सखियां
जिनके गोरे–गोरे गाल गुलाबी अंखियां।
तुमको झुमका पहिनाएं बन्नी वही सखियां
जिनके भौरों जैसे केश कजरारी अंखियां।

बन्ना या दूल्हे को कहा जा रहा है कि ससुराल की गलियों में धीरे–धीरे चलना। वहाँ तुम्हारी सजावट सखियाँ ही आकर करेंगी। जिन साखियों के केश बड़े लम्बे–लम्बे हैं और आँखें गोल–गोल हैं, वे ही तुम्हे बेंदी पहनाएंगी। वे सखियाँ जिनके गाल गोरे गोरे रंग के हैं वे चेन पहनाकर सजाएंगी। जिन सखियों की आँखें काली कजरारी हैं, जिनके बाल भौरों जैसे काले घुँघराले हैं, वे ही तुम्हें झुमका पहनाएंगी और श्रृंगार करेंगी। बन्ना ससुराल की गलियों में धीरे–धीरे चलता रहेगा और सखियाँ सजाती रहेंगी, यही वर्णन हुआ है।

बन्ना धीरे चलो ससुराल गलियां।
बन्ना सेहरा संभालेंगी वही सखियां
जिनके लम्बे–लम्बे केश, हरी हैं चूड़ियां। धीरे.
बन्ना बागो सम्हालेंगी वही सखियां
जिनके लम्बे–लम्बे केश, हरी हैं चूड़ियां। धीरे.
उनके कुण्डल संभालेंगी वे ही सखियां
जिनके लम्बे–लम्बे केश, हरी हैं चूड़ियां। धीरे.
बन्ना डोली सम्हालेंगी वही सखियां
जिनके लम्बे–लम्बे केश, हरी हैं चूड़ियां। धीरे..

बन्ना को ससुराल की गलियों में धीरे–धीरे चलने का निर्देश मिल रहा है, क्योंकि जिन सखियों के हाथ में हरी–हरी चूड़ियाँ सजी हैं और लम्बे–लम्बे बाल हैं; वे ही उसे

सेहरा बाँधेंगी; उसे ठीक करेंगी। उनकी आन, बान, शान वही सम्हालेंगी, उन्हें वही कुण्डल भी पहनाकर सजाएंगी। वे ही विदा की डोली भी तैयार करेंगी। इसमें भी सखियों के सजाते रहने के कारण दूल्हे को ससुराल की गलियों में धीरे–धीरे चलने का वर्णन किया गया है।

बन्ना धीरे से जाना ससुराल गलियां ।
बना मौरी संभालेगी वही सखियां, जिनके गोरे–गोरे गाल मोती सी दंतियां।
जिनके गोरे गोरे हांथ सुनहली चूड़ियां, जिनके लम्बे–लम्बे केश रसीली अंखियां।
बना कुण्डल सम्हालेंगी वही सखियां, जिनके गोरे–गोरे गाल मोती सी दतियां।
जिनके गोरे गोरे हांथ सुनहली चूड़ियां, जिनके लम्बे–लम्बे केश रसीली अंखियां।
बना कंगन सम्हालेंगी वही सखियां, जिनके गोरे–गोरे गाल मोती सी दंतियां।
जिनके गोरे गोरे हांथ सुनहली चूड़ियां, जिनके लम्बे–लम्बे केश रसीली अंखियां।
बना जामा सम्हालेंगी वही सखियां, जिनके गोरे–गोरे गाल मोती सी दंतियां।
जिनके गोरे गोरे हांथ सुनहली चूड़ियां, जिनके लम्बे–लम्बे केश रसीली अंखियां।
बना जोड़ी सम्हालेंगी वही सखियां, जिनके गोरे–गोरे गाल मोती सी दंतियां।
जिनके गोरे गोरे हांथ सुनहली चूड़ियां, जिनके लम्बे–लम्बे केश रसीली अंखियां।
बना डोली सम्हालेंगी वही सखियां, जिनके गोरे–गोरे गाल मोती सी दंतियां।
जिनके गोरे गोरे हांथ सुनहली चूड़ियां, जिनके लम्बे–लम्बे केश रसीली अंखियां।

बन्ने को (दूल्हे को) ससुराल की गलियों में जाने हेतु धीरे–धीरे गति रखने की सलाह दी गयी है, क्योंकि वे सखियाँ ही मौरी संभालेगी–सजाएगी, जिनके गाल गौर वर्ण के हैं, दाँत मोती जैसे हैं, गोरे हाथों में सुनहली सोने के रंगवाली चूड़ियाँ सजी हैं; उनके लम्बे–लम्बे बाल है और रसभरी आँखें भी हैं। दूल्हा जी वे सखियाँ ही कुण्डल पहनाएँगी, वही कंगन पहनाएंगी; वही जामा सजाएँगी; वही जोड़ी भी सम्हालेंगी। वही डोला भी संभाल लेंगी। इस गीत में भी बन्ने को ससुराल की गलियों में धीरे–धीरे चलने का इसलिए निर्देश किया गया है, क्योंकि उसे सखियाँ सजाती रहेंगी।

आज सखि आए ससुरारी में बनरा।
तन में सोहइ केशरिया जामा नयनन में सोहै ढेपाकदार कजरा। आज...
माथे मुकुट और सोहै चन्दन गले में सोहइ बहारदार गजरा। आज ...
गोरे रंग दुलहिन सांवरे रंग दुलहा दोनों का फैशन शोभायमान चेहरा। आज..
कहै हरि भक्त निरखि छवि लीला मारै सब सखियां जनकपुर की नजरा। आज.

सखियाँ आपस में बात कर रही हैं कि– हे सखि! आज बन्ना ससुराल में आ

गए हैं। शरीर में केशर के रंग वाला जामा पहने हुए हैं और आँखों में सुन्दर काजल आंज रखा है, माथे पर मुकुट बंधा है, चन्दन लगा है और गले में बहारों वाला आनन्दित करने वाला गजरा सजा हुआ है। दूल्हनें गौर वर्ण की हैं और दूल्हा साँवला है। दोनों की (फैशन) सजावट के कारण मुखाकृति शोभा दे रही है। हरिभक्त कहते हैं कि इनकी सुन्दरता को देखकर सभी जनकपुर की महिलाएं नजरें मार रही हैं। जनकपुर में दूल्हा दुल्हन दोनों का श्रृंगार वर्णन किया गया है।

दल साजि चले मोरे लाल ससुर घर व्याहइ।
जबहिं बरात जनवासे बने की आई हां साले लिए अगवान् चलें ससुरारी। ससुर..
जबहिं बरात दुआरे मां बने की आई हो तिरिया कलश लिए ठाढ़ ससुर घर व्याहइ। दल.
जबहिं बरात बरोठे में बने की आई हां ससुर ने आरती साजी ससुर घर व्याहइ। दल.
जबहिं बरात मड़ए में बने की आई हां कन्या सेंधौरा लिए ठाढ़ि चलें ससुरारी। दल.

मेरा बेटा अपने दल या समूह को सजाकर स्वयं का विवाह करने के लिए ससुराल चल दिया है, जब बारात जनवासे में पहुँचती है तो साला अगवानी हेतु आता है। बारात दरवाजे पर आती है तब स्त्रियाँ कलश लेकर स्वागत करती हैं। बारात जब बरोठे अर्थात् आँगन में आती है तब ससुर ने आरती सजा ली और जब यह वरयात्रा मण्डप के नीचे पहुँचती है तो बेटी सेंधौरा (सिन्दूरपात्र) लिए खड़ी रहती है। बारात के आने पर अगवानी लेना, कलश दिखाना, आरती करना और कन्या का सेन्धौरा लेकर मण्डप में आना सब क्रियाएं उस गीत में वर्णन की गयी हैं।

केशर की क्यारी बोबाउ बनरे को केशर सोहै।
केशर बोवावै उनके आजा गए हैं (2)
होइ रहे लाल गुलाल। बनरे को केशर सोहै।
केशर बोवावै उनके बाबू गए हैं (2)
होइ रहे लाल गुलाल। बनरे को केशर सोहै।
केशर बोवावै उनके चाचा गए हैं (2)
होइ रहे लाल गुलाल। बनरे को केशर सोहै।
केशर बोवावै उनके भइया गए हैं (2)
होइ रहे लाल गुलाल। बनरे को केशर सोहै।
केशर बोवावै उनके मामा गए हैं (2)
होइ रहे लाल गुलाल। बनरे को केशर सोहै।

दूल्हे को केशर अच्छे लगते हैं, अस्तु केशर की क्यारी बो देना है। केशर बोने

दादा जी जाते हैं और लाल गुलाल जैसे हो जाते हैं। इसी प्रकार पिताजी, चाचाजी, भइयाजी और मामाजी केशर बोने जाते है और गुलाल जैसे लाल रंग के होकर आते हैं। इस गीत में केशर का श्रृंगार वर्णन किया गया है।

आज बना है बन्नी के नगर मां।
मौरी संवारै बन्ना अपने नगर मां कलंगी संवारै बनरी के नगर मां। आज..
कुण्डल संवारै बन्ना अपने नगर मां फेनिया संवारै बनरी के नगर मां। आज..
कण्ठा संवारै बन्ना अपने नगर मां सेल्ही संवारै बनरी के नगर मां। आज....
जामा संवारै बन्ना अपने नगर मां फेटा संभारै बनरी के नगर मां। आज...
कंगन संवारै बन्ना अपने नगर मां चूड़ा संवारै बनरी के नगर मां। आज....

आज दूल्हा बन्नी (कन्या वधू) के नगर में विवाह के लिए आया है। वह मौर तो अपने यहाँ से ही बांधकर आया था, परन्तु अब ससुराल में कलंगी ठीक कर रहा है। इसी प्रकार कुण्डल वहीं से पहनकर आया था, यहाँ फेनिया ठीक कर रहा है। कण्ठ में पहना हुआ कुण्डल या हार वहीं से सजा लिया था, परन्तु उसकी सेल्ही यहाँ ठीक कर रहा है। वहाँ से जामा पहन लिया था, अब यहाँ फेंटा ठीक से बांध रहा है। कंगन वहीं पहन लिया था, परन्तु चूड़ा यहाँ सम्हाल रहा है। ससुराल में दूल्हा कभी कलंगी, कभी सेल्ही, कभी फेंटा और कभी चूड़ा से सजता जा रहा है।

गोरे लिलार दमक रही बिंदिया।
ठण्डे से पानी गरम करि लाए सपरइं न राजा निरख रहें बिंदिया। गोरे...
सोने के थाली में जेमना परोसिउं जेवइं न राजा निरखि रहे बिंदिया। गोरे...
सोने के करोला गंगा जल पानी घूंटइं न राजा निरखि रहे बिंदिया। गोरे...
लौगन कीला के बीड़ा लगायउं चाबइं न राजा निरखि रहे बिंदिया। गोरे...
चुनि–चुनि कलियों की सेज लगायउं सोबइं न राजा निरखि रहे बिंदिया। गोरे.

.गोरे रंग का ललाट है, जिसमें चमक से भरी बिंदिया (बेंदी) लगी है। पानी ठण्डा था, उसे गरम करके ले आया गया, परन्तु राजा जी, स्वामी जी, पतिजी नहा नहीं रहे हैं। बेंदी ही निहार रहे हैं। सोने की थाली में भोजन परोस दिया, परन्तु वे भोजन भी नहीं कर रहे हैं। बेंदी ही देखते रह जाते हैं। सोने के लोटे देखते हैं, लौंग से पान का बीड़ा लगाते है, परन्तु राजा जी चबाते नहीं हैं, बेंदी देखते रह जाते हैं। चुन–चुन कर कलियों से बिस्तर शय्या लगा देती हूँ, परन्तु वहाँ भी राजा सोते नहीं हैं। बेंदी ही देखते रहते हैं। इसमें बेंदी को देखकर दूल्हा इतना मुग्ध हो रहा है कि नहाना, खाना, पीना, पान चबाना और सोना सब कुछ भूल गया है।

सो आवत हो बनरा धीरे–धीरे।
टट्टू से आवें अम्मा सोहागिन बजावत हो बिछुआ धीरे–धीरे। सो....
कोठी से निकली भाभी सोहागिन घुमावत हो नैना धीरे–धीरे। सो...
द्वारे से निकली जीजी सोहागिन बजावत हो कंगना धीरे–धीरे। सो...
मड़ए में आई चाची सोहागिन बजावत हो पायल धीरे–धीरे। सो...

वे दूल्हा जी धीरे–धीरे चले आ रहे हैं। तांगे में सौभाग्यवती माँ आ रही है और उसके पैर की उंगलियों का बिछुआ धीरे–धीरे बज रहा है। कोठी से सौभाग्यवती भाभी निकली हैं और वे धीरे–धीरे नैन घुमा रही हैं, दरवाजे से सौ. भाग्यवती जीजी निकली और उनका कंगन धीरे–धीरे बज रहा है। मण्डप में सौ. भाग्यवती चाची आ गयी हैं। उनकी पायल धीरे–धीरे बज रही है। इस गीत में दूल्हे के मण्डप में आने पर माँ, भाभी, बहन, चाची सभी के आने का निरूपण किया है।

मोतिया का बिरझैं दुल्हेरूआ आजी हीरा मोती लेबइ रे।
आजा उनके धइ झिकझोरइं आजी हृदय लगावइं रे।
आवा ललन मोरी कनियाँ मै हीरा मोती देवइ रे। मोतिया......
बाबू उनके धइ झिकझोरइं माया हृदय लगावइं रे।
आवा ललना मोरी कनियां हीरा मोती देवइ रे। मोतिया....
काका उनके धइ झिकझोरइं काकी हृदय लगावइं रे।
आवा ललना मोरी कनियां हीरा मोती देवइ रे। मोतिया.....

दूल्हा दादी से उलझ जाता है कि मैं हीरे मोती लूँगा। उसके दादा उसे डाँटने लगते हैं, परन्तु दादी गले से लगा लेती है और कहती है कि बेटा मेरी गोद में आ जाओ मैं हीरे–मोती तुम्हें दूँगी। पिता भी उसे डाँटते हैं, पर माँ गले लगा लेती है। गोद में बैठाती है और हीरा–मोती देने को कहती है। काका भी डाँट देते हैं, परन्तु काकी गले लगाकर गोद में बैठाती है और हीरा–मोती देने को कहती है। इसमें दादा, पिता काका, दूल्हे को फटकारते हैं, परन्तु दादी, माँ और चाची गले से लगाती है और हीरा–मोती भी देने के लिए कहती हैं।

नजरिया लगि जइऐ रे मेरे बन्ने को कोई मत देखो।
सीस बन्ने के सेहरा सो है, कलंगी पै नजरिया लगि जइहै। मेरे बन्ने...
बन्ने ने पहना जोड़ा जामा पटुके पै नजरिया लगि जइहै। मेरे बन्ने...
बन्ने के मुख पै बीरा सोहै लाली पै नजरिया लगि जइहै। मेरे बन्ने....
मोटर पै चढ़ि कै बन्ना आया झालरि पै नजरिया लगि जइहै। मेरे बन्ने..

दूल्हे की सजावट और सौन्दर्य को देखकर कोई सखी गाने लगती है कि मेरे बन्ने को कोई न देखना, क्योंकि उसे नजर लग जायेगी। बन्ने के सिर पर सेहरा बंधा हुआ है, उसकी कलंगी पर नजर लग जायेगी। इसने जामा जोड़ा पहन रखा है, उसके पटुके पर नजर लग जायेगी। इसके मुँह में बीड़ा है, उसकी लाली पर नजर लग जायेगी। मोटर कार पर चढ़कर बन्ना आया है, उसकी झालरों पर नजर लग जायेगी। इसमें भी दूल्हे का श्रृंगार वर्णन किया गया है।

बन्ने सजे है चितचोर हो नजर ना लागै।
माथे बना जी के मौरे सोहइं कलंगी में नाचै छम–छम मोर हो नजर ना लागै।
काने बना जी के कुण्डल सोहइं मोतियो में नाचे छम–छम मोर हो, नजर ना लागै।
अंग बनाजी के जामा सोहइं फेंटा में नाचे छम–छम मोर हो, नजर ना लागै।
हांथे बना जी के घड़ियां सोहइं नम्बर में नाचे छम–छम मोर हो, नजर ना लागै।
पैरो बना जी के जूता भी सोहइं भोजन में नाचे छम–छम मोर हो, नजर ना लागै।
संगे बना जी के डोला भी सोहइं, परदों में नाचे छम–छम मोर हो, नजर ना लागै।

बन्ना अर्थात् दूल्हा खूब सज गया है। वह चित्त को चुराने वाला है, कहीं उसे नजर न लग जाय। उसके माथे या मस्तक पर मौर सजी है। कलंगी में मोर नाच कर रहे हैं। कानों में कुण्डल सजे हैं उनकी मोतियों में छम–छम करते मोर नाच रहे हैं। उनके शरीर में जामा अच्छा लग रहा है। फेंटा में मोर नाच रहे है। हाथों में घड़ी बंधी है, उसके अंगों में मोर नाच रहे हैं। पैरों में जूते सजे है। मोजों में मोर नृत्य छम–छम कर रहे हैं। डोला सजा है उसके पर्दो में मोर नाच रहे हैं।

दूल्हा के श्रृंगार का वर्णन किया गया है।

बना तेरी अंखियां सुरमा दानी दूल्हा तेरी अंखियां।
बना तेरो आजा पांच हजारी बना तेरी आजी फूल गुलाबी।
बना तेरो बाबू पांच हजारी बना तेरी अम्मा फूल गुलाबी।
बना तेरो काका पांच हजारी बना तेरी काकी रंग गुलाबी।
बना तेरो भइया पांच हजारी बना तेरी भाभी रंग गुलाबी।
बना तेरो जीजा पांच हजारी बना तेरी जीजी इतर गुलाबी।
बना तेरो फूफा पांच हजारी बना तेरी फूफू रंग गुलाबी।
बना तेरो मामा पांच हजारी बना तेरी मामी फूल गुलाबी।
बना तेरो नाना पांच हजारी बना तेरी नानी फूल गुलाबी।

इसमें बन्ना या दूल्हे की आँखों को सुरमादानी (काजल की डिबिया) कहा गया है और उसकी आँखों में काजल तो लगा ही हुआ है। दादा, पिता, काका, भाई, जीजा, फूफा, मामा और नाना सभी को पाँच हजारी कहा गया है और दादी, माता, काकी, भाभी, जीजी, फूफू, मामी एवं नानी को गुलाबी रंग का फूल कहा गया है। यह बन्ना गीत हास्य विनोद परक है।

राजा बना बेगि चले आवा तुम्हइ बिन अच्छा न लागइ।
राजा बना अपने बब्बा के प्यारे आजी के प्राण अधार हो।
चला सखि देखन चलिए। राजा बना....
राजा बना अपने पापा के प्यारे मम्मी के प्राणाधार हो। चला.................
राजा बना अपने काका के प्यारे काकी के प्राणाधार हो। चला.................
राजा बना अपने भइया के प्यारे भाभिउ के प्राणाधार हो। चला.................
राजा बना अपने फूफा के प्यारे फूफू के प्राणाधार हो। चला.................

दूल्हे राजा आप शीघ्र ही चले आएँ, क्योंकि तुम्हारे बिना हमें अच्छा नहीं लग रहा है। ये दूल्हे राजा अपनी दादी जी के प्यारे–दुलारे है और दादी के प्राणों के आधार हैं। अरी सखी! चलो देखने के लिए चलते हैं। इसी प्रकार दूल्हे राजा अपने पिता जी के प्यारे और माँ के प्राणाधार हैं, उन्हें देखने के लिए सखी को वधू आग्रह करती है। ये दूल्हे राजा अपने काका जी को प्रिय हैं और काकी के प्राणाधार हैं, अतः हे सखी! आओ देखने चलते हैं। ये दूल्हा राजा अपने भइया को प्यारे हैं, भाभी के प्राणाधार हैं तथा फूफा जी के प्राणों के प्यारे हैं और फूफू के प्राणाधार है। सखी! चलो इन्हें देखने चलते है।

ऐसे नबाब बनरे, सड़कों पै गेंद खेलयं।
आजा के प्यारे बनरे आजी की गेंद खेलयं, ऐसे नबाब बनरे....
बाबू के प्यारे बनरे माया की गेंद खेलयं, ऐसे नबाब बनरे....
चाचा के प्यारे बनरे चाची की गेंद खेलयं, ऐसे नबाब बनरे...
भैया के प्यारे बनरे भाभी की गेंद खेलयं, ऐसे नबाब बनरे....

हमारे बन्ना जी ऐसे नवाब हैं कि सड़कों पर गेंद खेलने लगे हैं। दादा, पिता, चाचा और भैया के लिए ये बन्ने प्यारे हैं, परन्तु दादी, माँ, चाची और भाभी की गोद में खेलते हैं।

काजू ले लो किसमिस मखाना ले लो बनरे।
आजी की गोद में मचल रहा बनरा आजा समझावै समझ लो प्यारे बनरे।

अम्मा की गोद में मचल रहा बनरा बाबू समझावै समझ लो प्यारे बनरे।
चाची की गोद में मचल रहा बनरा चाचा समझावै समझ लो प्यारे बनरे।
भाभी की गोद में मचल रहा बनरा भइया समझावै समझ लो प्यारे बनरे।
जीजी की गोद में मचल रहा बनरा जीजा समझावै समझ लो प्यारे बनरे।
फूफू की गोद में मचल रहा बनरा फूफा समझावै समझ लो प्यारे बनरे।

बन्ना या दूल्हा मचल गया है, रूठ गया है। वह दादी की गोद में रूठता है, तब दादा जी समझाते है। माँ की गोद में रूठता है तो पिताजी, चाची की गोद में रूठता है तो चाचाजी, भाभी की गोद में रूठता है तो भैयाजी, जीजी की गोद में रूठने पर जीजा जी और फूफू की गोद में मचलने पर फूफाजी क्रमशः समझाते हैं कि बेटा काजू, किसमिस और मखाना ले लो।

बनरा के सिर पर सेहरा हो मोतिअन से गुहे हैं।
आवा हो मालिनि बैठा दुलैंचाकरा मौरी केर मोल हो। मोतियन से ....
नौ लाख बाबा मोल किहिन हो दस लाख अम्मा दीन्हि हो। मोतियन से.......
मौरी बांधे दुलहे फलाने राम बांधि ससुररियइ जाइं हो। मोतियन.......
ओहीं ससुररिया की सांकर गलियां अरझै मौरिया के झोंप हो। मोतियन.........
बनरी बिआहि बना घर आएं झुकि–झुकि करत सलाम हो। मोतियन...............

बन्ना या दूल्हा के सिर पर बंधा है सेहरा जो मोतियों से गुंथा हुआ है। मालिन को बुलाकर मौरी का मोल भाव करना चाहते हैं। बाबा ने नौ लाख कीमत तय की और माँ ने दस लाख दे दिये, वही मौरी दूल्हे ने बांधी, ससुराल को जाने के लिए, ससुराल की गलियां संकीर्ण हैं वहाँ से निकलते समय मौर उलझ जाती है। बन्नी या दुल्हन को विवाह कर दूल्हा घर आ जाता है और विनम्रतापूर्वक सब को नमस्कार कर रहा है।

बन्ना सोवइं अटारी जगावा सखी।
उनकी मौरी मां लागी है अनार की कली, कचनार की कली (2)
बेला फूल की कली..
उनकी कलंगी मां बनी है अनार पुतरी
कचनार पुतरी बेला फूल पुतरी। बना सोवइं
उनके कंगन मां लगी है अनार की कली
कचनार की कली बेला फूल की कली। बना......
उनके जामा मां लगी है अनार की कली
कचनार की कली बेला फूल की कली। बना.......

दूल्हा अटारी में सो रहा था, उसे जगाने के लिए सखी को बन्नी कह रही है कि– हे सखी अटारी में सोते हुए बन्ना को जगा दो। उनकी मौर में अनार की, कचनार की, बेला फूल की कली गुंथी हुई है। उसमें कलंगी है जिसमें अनार पुतली लगी है। इसमें कचनार और बेलाफूल की भी पुतली लगी है। उसके कंगन में, जामा में भी ये कलियाँ लगी हुई है; अतः जगा दो।

जगाय लाओ सखी बन्ना सोवइं अटरियां ।
मोर मुकुट सिर बांधो राजा बनरे,
कलंगिन बीच अनार की कली, कचनार की कली, सखि लागे न नजरिया। जगाय0
माथे खौरे काढ़ी राजा बनरे
टिकलिन बीच अनार की कली, कचनार की कली, सखि लागे न नजरिया। जगाय0
झेलन बीच अनार की कली, कचनार की कली, सखि लागे न नजरिया। जगाय0
रूनझुन गूंजे पैरों राजा बनरे,
गोपिन बीच अनार की कली, कचनार की कली, सखि लागे ना नजरिया। जगाय0
अंगे बागो पहिरो राजा बनरे,
पनरस बीच अनार की कली, कचनार की कली, सखि लागे ना नजरिया। जगाय0
हांथन घड़ियां बांधो राजा बनरे,
कंगन बीच अनार की कली, कचनार की कली, सखि लागे ना नजरिया।
पायन मोजा पहनों राजा बनरे महावर बीच अनार की कली, कचनार की कली
सखि लागे ना नजरिया जगाय लो सखी बन्ना सोवइं अटरिया।

अरी सखी! बन्ना अटारी में सो रहे हैं, उन्हें जगा लाओ। राजा बन्ना के मोर मुकुट बंधा है उसकी कलंगियों में अनार, कचनार की कली गुंथी है, कहीं नजर न लग जाए। बन्ना राजा के माथे में खौर (चन्दनलेप) है। टीका के बीच; फेटों के बीच भी यही कलियां लगी हैं। पैरों में रूनझुन बन्ना के बज रहा है, गोपियों के बीच में कलियाँ सजी है। अंगो पर बाग के पुष्पों का श्रृँगार किया है। उसके पनरस में सभी कलियाँ सजी हैं। हाथों में घड़ी बंधी है, कंगनों में कलियाँ सजी हैं। पैरों में मोजे पहने है महावरों में भी अनेकों कलियाँ सजी हुई हैं। उनको नजर न लग जाय।

फूलो की क्यारी लगामइं राजा बन्ना फूलों को बिरझे।
जाय कहो उनके बारे आजा से फूलों की क्यारी लगावै, राजा बन्ना फूलों को विरझे।
जाय कहो उनके बारे बाबू से फूलों की क्यारी लगावै, राजा बन्ना फूलों को विरझे।
जाय कहो उनके बारे मामा से फूलों की क्यारी लगावै, राजा बन्ना फूलों को विरझे।
जाय कहो उनके बारे भइया से फूलों की क्यारी लगावै राजा बन्ना फूलों को विरझे।

दूल्हा राजा फूलों के लिए मचले हुए हैं, अस्तु फूलों की क्यारी लगा रहे हैं। यह बात दूल्हे के दादा से, पिताजी से, मामा से और भइया से जाकर कह दो कि फूलों की क्यारी बगियाँ में लगा दें, क्योंकि दूल्हा फूलों के लिए रूठा हुआ है।

बन्ना के मोती सोहै लरी रे लरी।
बनरा के माथे मौरी सौहे कलंगी सम्हारै घरी रे घरी। बन्ना के...
बनरा के काने कुण्डल सोहै फेनियां सम्हारै घरी रे घरी। बन्ना के...
बनरा के गले मां कण्ठा सोहै फेनियां सम्हारै घरी रे घरी। बन्ना के...
बनरा के हांथे कंगन सोहै फेनियां सम्हारै घरी रे घरी। बन्ना के...
बनरा के देहे जामा सोहै फेनियां सम्हारै घरी रे घरी। बन्ना के...
बनरा के गोड़े पनहीं सोहै फेनियां सम्हारै घरी रे घरी। बन्ना के...

मोतियों की लड़ियाँ ही लड़ियाँ बन्ना की सजावट में शोभित हो रही हैं। बन्ना के सिर पर मौरी रखी हुई, सजी हुई अच्छी लग रही है। बन्ना उसमें लगी कलंगी को घड़ी घड़ी सम्हाल रहे हैं। कानों में कुण्डल सजा है। बन्ना तो बार–बार फेनिया सम्हालते है, दूल्हा के गले में कण्ठा कठुला सुशोभित हो रहा है। उसकी सेल्ही बार–बार सम्हालते रहते है। दूल्हे के हाथों में कंगन सज रहा हैं, वे बार–बार घड़ी सम्हाल रहे है। शरीर में जामा सुशोभित हो रहा है और बार–बार फेंटा सम्हालने लगते हैं। दूल्हे के पैर में जूता अच्छा सजा है, परन्तु बार–बार मोजा सम्हाल रहे हैं।

कच्ची ईंट बाबुल डेहरी न धरियों बेटी न दिहे परदेश मोरे लाल।
माया के रोए नदिया बहति है बाबुल के रोए सागर ताल मोरे लाल।
भइया के रोए छतिया फटति है भउजी के जियरा कठोर मोरे लाल।
माया कहै बेटी निसिदिन अइहै बाबुल कहैं छे मास मोरे लाल।
भइया कहैं बइया (बेटी) सादी समइया भउजी के जियरा कठोर मोरे लाल।

बिटिया अभी कच्ची ईंट के समान है, उसका पिता जी से आग्रह है कि डेहरी या देहली में कच्ची ईंट नहीं रखी जाती है, क्योंकि उसका निरन्तर उपयोग करना पड़ता है। बिटिया का परदेश में विवाह न करने का भी आग्रह है। उसकी विदाई में सब रोते हैं। माँ रो–रोकर नदी बहा देती है, पिता के रोने पर तालाब समुद्र सा भर जाता है, भाई के रोने से छाती फट जाती है, धैर्य टूट जाता है, परन्तु भाभी के हृदय को कठोर कहा गया है । माँ तो बिटिया को रोज बुलाना चाहती है, परन्तु पिता उसे छः महीने में बुलाना चाहते हैं। भाई कहता है कि शादी ब्याह में बहन आएगी, परन्तु भाभी कठोर है उसका इस विषय में कोई विचार नहीं है।

ओ जी आओ महाराज शादी के लिए।
बन्नी ने भेजा अर्जुन तीर शादी के लिए।
माथे बनी के बिन्दिया भी सोहइं।
लड़ियों में मोती जड़वाय दो शादी के लिए। बन्नी ने...
काने बनी के झुमके भी सोहइं, झुमकों में नग जड़वाय दो शादी के लिए ।
गले बनी के हरवा भी सोहइं, हरवा में हीरा जड़वाय दो शादी के लिए ।
हाथे बनी के कंगना भी सोहइं, कंगन में नग जड़वाय दो शादी के लिए।
संग बनी के बन्ना भी सोहइं, जोड़ी के फोटो खिंचवाय दो शादी के लिए।
बन्नी ने भेजा अर्जुन तीर शादी के लिए। आओ जी आओ...........

बन्नी ने विवाह के लिए अर्जुन का बाण भेजा है, अस्तु राजा अब विवाह के लिए आ जाओ। बन्नी या दुल्हन के बिन्दिया लगी है उसमें मोती जड़वा दें। उस के कानों में झुमके अच्छे लग रहे हैं, उनमें भी कोई नग या रत्न जड़वा दें। बन्नी के गले में हार शोभित हो रहा है, इसमें हीरा जड़वा दें। बन्नी के हाथ में कंगन अच्छा लग रहा है, उसमें भी कोई नग जड़वा दें। बन्नी–बन्ना दोनों एक साथ ही हैं, इस जोड़ी का फोटो खिंचवा दें। विवाह के लिए यह सब आवश्यक है।

झुकि जाओ तनिक रघुवीर लली मोरी छोटी सी।
खड़े–खड़े पग दूखन लागे दया करो बेपीर। लली.........
राजा दशरथ के राज दुलारे रघुनन्दन रघुबीर। लली......
एकटक निरखत नैना थाके अब सिया होति अधीर । लली...
काहे का लाल दयानिधि बोलत अब नहि दया शरीर। लली....

मेरी बिटिया छोटी है। लाला (बेटा) रघुबीर, थोड़ा झुक जाओ। खड़े–खड़े पैरों में पीड़ा होने लगी है। अतः दया करो, निर्दयी मत बन जाओ। तुम तो राजा दशरथ के राजकुमार हो, रघुवंशियों को आनन्द देते हो। उनमें वीर भी हो। सीता अपलक देख रही है। उसके नेत्र थक गये हैं। वह अधीर हो रही है। तुम्हें क्यों लोग दयानिधि कहते है, शरीर में तो कोई दया ही नहीं दिख रही है। यह बहू की ओर से दूल्हे के लिए जयमाला प्रसंग का गीत है।

जाओ लली तुम फलियों फूलियो सदा सुहागिन रहियो मेरे लाल।
कौन के रोए छतिया फटत है कौन के रोए सदा ताल मोरे लाल।
माता के रोए छतिया फटत है बाबुल के रोए सदा ताल।
कौन के रोए धीर बंधत है कौन के जिअरा कठोर मोरे लाल।
भैया के रोए धीरज बंधत है भाभी के जिअरा कठोर मोरे लाल।

बिटिया की विदाई के समय का यह दृश्य है। बेटी तुम जाओ, फलो–फूलो, सदा सौभाग्यवती रहो। यही हमारी (माँ–पिता आदि की) कामना है। किसके रोने से छाती फट जाती है और किसके रोने से तालाब भर जाता है? माँ के रोने से छाती फट जाती है और पिता के रोने से तालाब भर जाता है। किसके रोने से धीरज बंध जाता है और किसका ह्रदय कठोर रहता है? इसमें रोने के माध्यम से सबकी ममता को प्रकट किया गया है।

सुकुमार प्यारी बन्नी धीरे चलो सुकुमार।
माथे बन्नी के बेंदी भी सोहइ झूमर को लेना संभाल। संभाल प्यारी बन्नी..
कानो बन्नी के कुण्डल भी सोहइ झुमका को लेना संभाल। संभाल प्यारी.....
गले बन्नी के हरवा भी सोहइ लाकेट को लेना संभाल। संभाल प्यारी.....
हाथे बन्नी के कंगना भी सोहइ चूड़ी को लेना संभाल। संभाल प्यारी.....
पांव बन्नी के पायल भी सोहइ बिछिया को लेना संभाल। संभाल प्यारी.....
संग बन्नी के बन्ना भी सोहइ जोड़ी को लेना संभाल। संभाल प्यारी.....
सुकुमारी सिया प्यारी धीरे चलो सुकुमार।

प्यारी सुकुमारी बन्नी धीरे–धीरे चलना। बन्नी के माथे में बेंदी, उसमें झूमर, कानों में कुण्डल, उसमें झुमका, गले में हार उसमें लॉकेट, हाथ में कंगना और चूड़ियाँ, पैरों में पायल और अंगुलियों में बिछिया सुशोभित हो रही है। इसमें वधू के श्रृंगार का वर्णन किया गया है।

सुकुमार सिय प्यारी धीरे चलो सुकुमार।
देश–देश के भूप जुरे हैं करि–करि के अपना श्रृंगार। श्रृंगार सिया...
कंकन किकिनि नूपुर धुनि सुनि त्रिभुवन की झंकार। सुकुमार...
राजा जनक की कुमारी कन्या अति कोमल सुकुमार। सुकुमार....
लै वरमाला राम गल डाली हो रही जय जयकार। सुकुमार.......
तुम्हारे छवि को शेष नहि बरनत जिभिया है जिनके हजार। सुकुमार....

प्यारी सुकुमारी सिया जी धीरे–धीरे चलो। सारे देश देश के राजा जुट गए हैं, इकट्ठा हो गए हैं। अपना–अपना श्रृंगार किए हुए हैं तीनों लोक को झंकृत करने वाली कंकन और किकिंणी तथा नूपुर की धुनि सुन रहे हैं। राजा जनक की अत्यन्त कोमल सुकुमार एवं कुमारी कन्या सीता जी हैं। वे वरमाला लेकर रामजी के गले में डालती हैं। चारों ओर जय–जय हो रही है। हजारों जीभ वाले शेष भी तुम्हारी छवि का वर्णन नहीं कर पा रहे हैं। इसमें भी सीता के सौन्दर्य का वर्णन किया गया है।

जनक लिहिनि प्रण ठानि सिया व्याहन का।
जो तोड़े शिव के धनुहा का वो है बीर महान्। सिया....
सीता व्याह रचउबै ओसे देव ओहीं सम्मान। सिया......
सुनि–सुनि के सब राजा आएं सिया स्वयंवर जान। सिया.........
आपन जोर देखावैं लागें सीता आपन तान। सिया.........
अंगुल एक टारि ना पाइन रावण से बलवान ।सिया ....
नाड़ी छूट जनक राजा कै सूखइ लागें प्रान। सिया.......

सीता जी के विवाह की प्रतिज्ञा जनक जी महाराज ने कर दी कि जो शिव के धनुष को तोड़ देगा, वही महान् वीर है, उसी से सीता का विवाह करेंगे और उसी को सम्मान देंगे। यह सुनकर सभी राजा आ गए, क्योंकि उन्हें सीता के स्वयंवर का ज्ञान हो गया था। सभी अपनी शक्ति लगाकर धनुष उठाने का प्रयास करने लगे, परन्तु रावण जैसे बलशाली लोग भी एक भी अंगुल धनुष को हिला नहीं पाये। राजा जनक दुःखी हो जाते हैं और उनके प्राण सूखने लगते हैं। इसमें धनुष यज्ञ के प्रकरण को बताया गया है।

बन्नी चलो ससुराल किए श्रृंगार सुनैना प्यारी हो
मिथिलापति प्राण अधारी हो।
रानी ने सिया समुझाई है सब नारि धर्म बताई है
तुम जाय सिया होने पति आज्ञाकारी।
कीन्ही गौरा सेवकाई है, मन वांछित वर तुम पाई है
तुम जाय बनो राघव की प्राण पियारी।
ये दयासिन्धु रघुराई है संतन सेवक सुददायी है,
है कौशल्या सुत दशरथ अजिर बिहारी।

मिथिलेश की प्राण आधार और सुनयना की प्यारी बन्नी सीता श्रृंगार करके ससुराल चली। तब माँ, सीता को नारी धर्म बताने लगी। कहा सीता! पति की आज्ञाकारी होना। तुमने गौरी की सेवा की है। मन वांछित वरदान पाया है। राघव की प्राणप्यारी बनना। ये दयासिन्धु रघुराज हैं। सेवक व संतन को सुख देते हैं। कौशल्या के पुत्र दशरथ के आंगन में विहार करने वाले हैं। सीता के लिए इस गीत में सीख दी गयी है।

राम बनरा सिया बनरी जनकपुर नीका लगै।
कंचन मौर रामजी के सोहै सियजी के माथे चुनरी। जनक...

वनरा पीताम्बर कांछि कांछनी सारी सिय सोहै पियरी। जनक.......
माथे चन्द्रिका हांथे मां कंगन पहिरे सिय मणि मुंदरी। जनक..........
श्रवण कुण्डल गल मोतिअन माला सोहै वदन सांवरी। जनक........
बाहु विशाल सोहै धनु सारंग बोल बोलत माधुरी। जनक.........
धन्य जनक अरू धन्य सुनैना धन्य जनक नगरी। जनक............

जनकपुर बहुत अच्छा लग रहा है, क्योंकि रामजी बन्ना बने हैं और सीताजी बन्नी बनी हुई है। राम जी के सिर पर कंचन (सोने) का मौर बंधा है और सीता जी के सिर पर सोने की चुनरी सजी है। दूल्हे ने पीताम्बर की कांछ लगा ली है। सीता की पीली साड़ी शोभित हो रही है। सिर में चन्द्रिका, हाथों में कंगन और मणि की मुद्रिका (अंगूठी) सीता ने पहन ली है। कानों में कुण्डल लहराता है, गले में मोतियों की माला है। शरीर तो साँवला सलोना है। बड़ी–बड़ी बाँहों में धनुष और बाण लिए हैं। मीठे–मीठे वचन बोल रहे हैं। सुनैना जी धन्य हैं और जनक जी भी धन्य हैं। साथ ही यह जनकपुरी भी धन्य है। यह गीत भी सीता–राम जी के दूल्हा–दुल्हन रूप का वर्णन करता है।

बने दूल्हा छवि देखो भगवान् की दुल्हन बनी सिया जानकी।
ठाढ़े राजा जनक के द्वार, संग में चारिउ राजकुमार।
दर्शन करते है नर नारि धूम छाई है डंका निशान की। दुल्हन बनी सिया.....
पंडित ठाढ़े सगुन विचारै कोउ–कोउ मुख वेद उचारै।
सखियां करती है न्योछावर, माया लुट गई सब हीरा के खान की। दुल्हन....
सिर पै क्रीट मुकुट है धारे, जामा बारंबार सम्हारें।
हो रही फूलन की बौछारें शोभा बरनी न जाय धनुष बाण की। दुल्हन...
सखियां फूली नहीं समाती दशरथ जी को गारी गाती।
गारी गाती है गीता और ग्यान की। दुल्हन..................
ठाढ़े जनक दोऊ कर जोरे सुनिए–सुनिए अवध किशोर।
किरपा करो हमारी ओर मो पै खातिर भई न जलपान की। दुल्हन....
बन्नी सिया बना रघुबीर, कैसे सुन्दर बना शरीर।
ये तो शोभा है सारे जहान की। दुल्हन.............
जैसे दूल्हा अवधबिहारी वैसी दुल्हन जनक दुलारी।
गाऊं तन मन से बलिहारी, मनसा पूरन भई सबके अरमान की। दुल्हन..

भगवान् दूल्हा बन गए हैं और जानकी सीता दूल्हन बनी है। यह छवि (शोभा) देखिए। जब सीता जी दूल्हन बनती हैं, उसका वर्णन है। राजा दशरथ जनक जी के

द्वार पर खड़े हैं साथ में चारों राज कुमार भी हैं। नर–नारी उनका दर्शन कर रहे है। बाजे गाजों की धूम मची हुई है। खड़े–खड़े पंडित लोग शकुन विचार करते हैं। कोई वेदपाठ कर रहे है। सखियाँ न्योछावर कर रही हैं, सब हीरे की खदान जैसी माया लुटायी जा रही है। सिर पर चमकता मुकुट रखा है, बार बार जामा सम्हाल रहे हैं, फूलों की बरसात हो रही है। धनुष और बाण की शोभा अवर्णनीय हो गयी है। सखियाँ आनन्द में फूली नहीं समा रही हैं। दशरथ जी को गाली दे रही हैं, गीता और ज्ञान की गाली देती जा रही हैं। जनक जी दोनों हाथ जोड़कर खड़े हैं। कहते हैं कि हे अवधेश जी कृपा करें। मैं जलपान भी ठीक से नहीं करा सका हूँ। सिया बन्नी है, राम बन्ने हैं सुन्दर शरीर सजा है। यहीं सारे संसार की शोभा बनी है। जैसे अवधबिहारी! दूल्हे हैं वैसी ही जनक दुलारी दूल्हन बनी है। सबकी इच्छा पूरी हो गयी। सब गीत गा रहे हैं। सीता और राम की शोभा का निरूपण किया गया है।

बखरी जड़ी है हीरा लाल कुसुम रंग फीका लागइ रे। कुसुम..........
उनके आजा है सरदार तो मौरे ढूढ़े न पावइं रे।
उनकी आजी है हुशियार तो मौरे जल्दी ले आवइं रे।
उनके पापा है सरदार तो कुण्डल ढूंढ़ि न पावइं रे।
उनकी मम्मी हैं हुशियार तो कुण्डल ढूढ़ि ले आवइं रे।
उनके भइया है सरदार त जूता ढूढ़ि न पावइं रे।
उनकी भाभी है हुशियार त जूता जल्दी ले आवइं रे।
उनके चाचा है सरदार तो फेंटा ढूढ़ि न पावइं रे।
उनकी चाची है हुशियार तो फेंटा ढूढ़ि ले आवइं रे।

गाँवों में चारों ओर बने हुए अट्टालिकाओं वाले घर को बखरी कहा जाता है। बखरी में लाल–लाल हीरे जड़े हुए हैं, जिससे कुसुम्भी रंग फीका लग रहा है। उनके दादा जी तो सरदार भी हैं। मौर भी ढूंढ नहीं पा रहे हैं, परन्तु उनकी दादी जी समझदार होने से मौर ढूंढ कर ला रही हैं। उनके पिताजी भी सरदार हैं लेकिन कुण्डल नहीं खोज पा रहे हैं, परन्तु माँ समझदार है और कुण्डल ढूँढ कर ला देती है। इसी प्रकार सरदारपन के कारण भाई जूता नहीं खोज पाता, चाचा फेंटा नहीं खोज पाते। समझदार भाभी और चाची दोनों ढूँढकर दे देती हैं। इसमें मौर, कुण्डल, जूता, फेटा सभी प्रकार से दूल्हे के श्रृँगार का वर्णन किया गया है।

बना के बखरी हीरालाल कुसुम रंग फीका लागइ रे।
बना के आजा सजिगै आजी सजिगै सजिगै सकल बरात पतुरिया, छम–छम नाचै रे।
बना के बाबुल सजिगै आजी सजिगै सजिगै सकल बरात पतुरिया, छम–छम नाचै रे।

बना के चाचा सजिगै चाची सजिगै सजिगै सकल निशान, पतुरिया...
बना के भइया सजिगै भाभी सजिगै सजिगै सकल निशान, पतुरिया...

बन्ना के महल में लाल–लाल हीरे जड़े हुए हैं, तब कुसुम्भी रंग फीका लगने लगा है। इनकी बारात में आजा–आजी, पिता–माता, चाचा–चाची, भइया–भाभी सभी सज–सँवर के चल रहे हैं, बारात सज गयी है। सभी सेवादार (सेवक) सजे हुए हैं। विशिष्ट लोगों का छम–छम आवाज वाला नृत्य होने लगा है। इसमें बारात की सजावट का वर्णन किया गया है।

बखरी जड़ी रिसालेदार हजारों बिजली लागी रे।
ऊंची अटरिया आजा सोवइं उनकी आजी लगी जगावै रे। बखरी....
उठहु न राजा महाराजा सो नतिया व्याहि ले आवहुं रे। बखरी.........
ऊंचे अटरिया उनके पापा सोवइं उनकी मम्मी लगी जगावइं रे। बखरी.....
उठहु न राजा महाराजा से पुतवा व्याहि ले आवहुं रे। बखरी..............
ऊंचे अटरिया मां उनके चाचा सोवइं उनकी चाची लगीं जगावइ रे। बखरी.....
उठहु न राजा महाराजा सो भतीजा व्याहि ले आवहुं रे। बखरी...........
ऊंची अटरिया में भइया सोवइं भाभी लगी जगावइं रे। बखरी...............
उठहु न राजा महाराजा सो भाई व्याहि ले आवहुं रे। बखरी............

ऊँचा और भव्य भवन सजाया गया है, जिसमें हजारों बिजली के दीप झिलमिला रहे है। ऊँची अटारी में आजा (दादा जी) सो रहे हैं और दादी उन्हें जगा रही हैं। कहती है उठो, राजा महाराजा की भाँति (नाती) पोते का विवाह कर ले आओ। ऊँची बनी हुई अटारी में उनके पिता जी सो रहे हैं और उनकी माँ उन्हें जगाने में लगी है। उठो और राजा महाराजा की भाँति और बेटे महाराजा का विवाह कर के आ जाओ। इसी प्रकार ऊँचे अटारी में सोने वाले चाचा को चाची जगा रही है और कहती है कि राजा महाराजा जैसे उठकर भतीजे का विवाह कर ले आओ। इसी प्रकार ऊँची अट्टालिका में भाई सो रहे है और भाभी उन्हे जगाती रही है और कहती है कि राजा–महाराजा जैसे उठो और भाई का विवाह कर ले आओ। इसमें भी बारात सजावट और तैयारी का वर्णन किया गया है।

बना के अरुझे सोनवन केश बना निरुआरत आवइं रे।
बना के आजा सजे है बरात बड़ी दरबार ले आवइं रे। बन्ना के अरुझे...
बना के चाचा सजे हैं बरात कोइलिया कूकत आवइं रे। बन्ना के अरुझे.....
बना के भइया सजे है बरात बड़ी परिवार ले आवइं रे। बन्ना के अरुझे........
बना के फूफा सजे है बरात बना का साथ ले आवइं रे। बन्ना के अरुझै.......

दूल्हे के सोने जैसे केश उलझ गए हैं, जिन्हें वह सुलझाता हुआ आ रहा है। बन्ना या दूल्हा के दादा जी बारात में सजे हैं, बड़ी दरबार या सभा में ले आ रहे हैं। दूल्हे के चाचाजी बारात के लिए सज गए हैं और कोयल कूक लगाती हुई आ रही है। दुल्हे का भाई दूल्हा का सज सँवरकर बड़े परिवार के साथ आ रहा है बन्ना या दूल्हा के फूफा बारात में सजे हैं जो बन्ना को साथ ही ले आ रहे हैं।

इस गीत में बनरा अर्थात् दूल्हे का श्रृंगार वर्णन किया गया है।

मेरे बन्ना को कोई मत देखो नजरिया लगि जइ है।
अंग बन्ने के जामा सोहै, पटुकै पै नजरिया लगि जइ है।
शीस पगे जे फूलों का सेहरा, कलंगी पै नजरिया लगि जइ है।
आंखो बन्ने के सुरमा सोहइ, काजल पै नजरिया लगि जइ है।
मुख में बन्ना के बीड़ा सोहइ, लाली पै नजरिया लगि जइ है।
संग बन्ने के डोला सोहइ, बन्नी पै नजरिया लगि जइ है।

मेरे बन्ने या दूल्हे को कोई मत देखो भाई, नजर लग जायेगी। उसके अंग में जामा सुशोभित हो रहा है, परन्तु पटुका को नजर लग सकती है। सिर में फूलों का सेहरा सजा है, परन्तु कलंगी में नजर लग जाएगी। आँखों में सुरमा (काजल) लगा है, नजर न लग जाय। मुँह में बीड़ा दबा है लाली पर नजर लग जायेगी। बन्ने के साथ डोला भी शोभा पा रहा है, बन्नी पर नजर लगने की शंका है। बन्ना अर्थात् दूल्हे का सौन्दर्य वर्णन किया गया है।

बना की लम्बी–लम्बी केश गोलारी आंखें रे।
बना को मौरें जनि पहिरइयो नजरिया लागि जइहै रे।
नजरिया लागि जइहै रे, झरइया साथ जइ है रे।
बना को कुण्डल जिन पहिरइयो नजरिया लागि जइहै रे। नजरिया........
बना को जामा जिन पहिरइयो नजरिया लागि जइहै रे।
बना को फेंटा जिन पहिरइयो नजरिया लागि जइहै रे।
बना को घड़ियाँ जिन पहिरइयो नजरिया लागि जइहै रे।
बना को जूता जिन पहिरइयो नजरिया लागि जइहै रे।

दूल्हे के केश लम्बे–लम्बे हैं और उसकी आँखें भी गोल–गोल हैं। उसे मौर मत पहना देना, क्योंकि नजर लग जाएगी। नजर लग जायेगी तो नजर झाड़ने वाला साथ ले जाना होगा। बन्ना या दूल्हा को कुण्डल मत पहनाना, नहीं तो नजर लग जाएगी और ऐसा हुआ तो झाड़–फूँक करने वाला साथ ले जाना होगा। दूल्हा को जामा नहीं

पहनाएँ नहीं तो नजर लग जाएगी और साथ में नजर झाड़ने वाला ले जाना होगा। इसी प्रकार फेंटा, घड़ी और जूता नहीं पहनाना, नहीं तो नजर लग सकती है और तब झांड़–फूंक करने वाला साथ ले जाना होगा। गाँवों में नजर लगने के लिए झाड़–फूँक कराना पड़ता है, यही गीत में भी गाया गया है।

काशी केर पढ़इया लालन कब घर अपने अइहइं रे।
माया चलो हमारे साथ अकेले हम ना जाबइ रे।
लालन ले लो बाबुल साथ सो नेंगवा ओइं चुकइहै रे।
चाची चलो हमारे साथ अकेले हम ना जाबइ रे।
लाला ले लो चाचा साथ सो नेंगवा ओइं चुकइहै रे।
मामी चलो हमारे साथ अकेले हम ना जाबइ रे।
लाला ले लो भइया साथ सो नेगवा ओइं चुकइहै रे।
जीजी चलो हमारे साथ अकेले हम ना जाबइ रे।
लाला ले लो जीजा साथ कि नेगवा ओंइ चुकइहै रे।
फूफू चलो हमारे साथ अकेले हम ना जाबइ रे।
लाला ले लो फूफा साथ सो नेगवा ओंइ चुकावइं रे।

माँ–बेटे से कहती है कि काशी में पढ़ने वाले बेटा कब आओगे। बेटा कहता है कि माँ मेरे साथ चलो, मैं अकेला नहीं जाऊँगा। तब माँ कहती है कि बेटा पिता जी को साथ ले लो, वही नेग चुकाएंगे। फिर चाची से साथ चलने का आग्रह करता है, क्योंकि वह अकेले नहीं जाना चाहता है। फिर दूल्हा भाभी से साथ चलने का आग्रह करता है और भाभी ने भी भइया को साथ लेने का आग्रह किया, क्योंकि वही नेग देंगे। इसी प्रकार जीजी और फूफू को साथ चलने का आग्रह करता है और वे दोनों भी क्रमशः जीजा और फूफा को साथ लेने का आग्रह करती हैं, क्योंकि विवाह में नेग वे ही लोग देंगे। इसमें भी दूल्हे का वार्तालाप वर्णन किया गया है।

मोरा चन्द्रवदन उजियारा बनरा का का मांगइं जू।
मोरा हांथी मंगै महाउत ओहमां अंकुश मांगै जू।
मोरा ऊंटा मांगै कलूटा ओहिं पै जीना मांगै जू।
मोरा घोड़ा मांगै पलैचा ओहिं पै चाबुक मांगै जू।

बनरा या दूल्हा का मुँह चन्द्रमा जैसा उज्ज्वल है, परन्तु वह क्या मांगता है। महावत हाथी मांगता है और अंकुश मांगता है और काला ऊँट मांगता है, जिस पर चढ़ने का जीन या हौदा मांग रहा है। घोड़ा मांगता है और उसमें चढ़ने का पलैचा या

घुड़सवार का आसन मांगता है, साथ ही चाबुक भी मांगता है। इसमें वनरा सवारी मांगता है।

वेगि करो तैयार बनरा को बेलमायो रे।
आजी ने बिलमायो बनरा आजी अंग लगायो रे।
जल्दी करो तैयार वनरा को बेलमायो रे।
अम्मा ने बिलमायो बनरा दाऊ अंग लगायो रे। जल्दी करो...
काकी ने बिलमायो बनरा काका अंग लगायो रे। जल्दी करो.....
भौजी ने बिलमायो बनरा भइया अंग लगायो रे। जल्दी करो.........

दूल्हे को शीघ्र तैयार करो, उसे किसने रोक लिया है। आजी (दादी) ने दूल्हे को रोक लिया और उसे दादाजी गले से लगा रहे हैं। माँ ने दूल्हे को बैठा लिया या रोक लिया है, पिता जी ने गले से लगा लिया है या प्रीति लगा ली है। काकी दूल्हे को रोक लेती है और काका प्यार से उसे गले लगा रहे हैं। इसी प्रकार भाभी ने दूल्हे को रोक लिया है और भाई ने गले लगा लिया है। सभी से मिलते हुए दूल्हे को विलम्ब होता जा रहा है।

मोरा चन्द्रवदन उजिआरा बनरा को बिलमायो रे। बनरा........
उनके माथे मौरे सोहइ कलंगी अजब बनायो रे। बनरा...
उनके कान में कुण्डल सोहइ मोती अजब बनायो रे।
उनके अंग में जामा सोहइ पटुका अजब बनायो रे।
उनके पायन जूता सोहइ मोजा अजब बनायो रे।
उनके संग में म्याना सोहइ त परदा अजब बनायो रे।

मेरा बन्ना या दूल्हा चन्द्रमा के समान उजले मुख वाला है। उसे किसने बहका दिया है? उनके माथे पर मौर बंधी है और कलंगी बहुत सुन्दर बनी हुई है। उनके शरीर में जामा अच्छा लग रहा है, उसमें पटुका बहुत सुन्दर लग रहा है। उनके पैरों में जूता अच्छा लग रहा है, जिसमें मोजा बहुत अच्छा लग रहा है। उनके साथ में म्याना या पालकी सुन्दर सजी है, जिसमें परदा सुन्दर लगाया गया है। इसमें बनरे की सजावट वर्णित है।

मोरे रामलखन से बनरा आली को बिलमायो रे।
उनके बाबुल ने बिलमायो माता कण्ठ लगायो रे। मोरे ......
उनके चाचा ने बिलमायो चाची कण्ठ लगायो रे। मोरे ......

उनके मामा ने बिलमायो मामी कण्ठ लगायो रे। मोरे ......
उनके फूफा ने बिलमायो फूफू कण्ठ लगायो रे। मोरे ......
उनके जीजा ने बिलमायो जीजी कण्ठ लगायो रे। मोरे ......
उनके मौसा ने बिलमायो मौसी कण्ठ लगायो रे। मोरे ......
उनके नाना ने बिलमायो नानी कण्ठ लगायो रे। मोरे ......

राम और लक्ष्मण जैसे दूल्हा बने हैं, परन्तु उन्हें देर कहाँ हो रही है। उनके पिता जी ने रोक लिया और माँ गले से लगा रही है। चाचा ने रोका तो चाची ने, मामा के रोकने पर मामी, फूफा के रोकने पर फूफू, जीजा के रोकने पर बहन, मौसा के रोकने पर मौसी और नाना के रोक लेने पर नानी ने क्रम से गले लगा लिया है। पिता, चाचा, मामा, फूफा, जीजा, मौसा और नाना बन्ना को थोड़ा रोकते हैं और माँ काकी, मामी, फूफू, जीजी, मौसी, नानी सब उन्हें गले से लगाकर प्यार करती जाती हैं।

बना फुल गेंदवा ना मारो हमारे लागि जइहैं रे। रस गेंदिया...
हमारे लागि जइहैं रे गगरिया फूटि जइहैं रे।
गगरी मोरि फूटि जइहै रे चुनर मोरी भींजि जइहैं रे।
चुनरि मोरी भींजि जइहै रे सासु मोरी बाते कहिहैं रे।
सास मोरी बातें कहिहै रे त हमसे सहि ना जइहैं रे। बना रस गेंदवा...
गगरिया फूटि जइहै रे चुनरिया भीगि जइहैं रे।
चुनरिया भीगि जइहै रे ननद मोरी ताना मरिहैं रे।
ननद मोरी ताना मरिहै रे त हमसे सहि ना जइहैं रे। बना रस गेंदवा...
गगरिया फूटि जइहै रे चुनर मोरी भीगि जइहैं रे।
चुनरिया भीगि जइहै रे जेठनियां बाते कहिहैं रे।
जेठनिया बाते कहिहै रे हमसे सहि ना जइहै रे। बना फुल गेंदवा...

इस गीत का एक और प्रकार मिलता है –

बना रस गेंदिया न मारो हमको लागि जइहैं रे।
हमको लागि जइहै रे गगर मोरी फूटि जइहैं रे।
गगर मोरी फूटि जइहैं रे चुनर ढिंग भीजि जइहैं रे।
चुनर ढिंग भीजि जइहैं रे सास मोरी रूठ जइहैं रे।
सास मोरी रूठ जइहैं रे रसोइयां छूटि जइहैं रे।
रसोइयां छूटि जइहैं रे बलम मोरा रूठि जइहैं रे।
बलम मोरा रूठि जइहैं रे सिजरिया छूटि जइहैं रे। बना रस....

दूल्हे को कहा गया है कि फूल की गेंद या रसभरी गेंद मत मारो, क्योंकि हमको लग जाएगी। इसके लगने पर मटकी फूट जायेगी। मटकी के टूटने से मेरी चुनरी गीली हो जायेगी, चुनरी के गीली होने से सास मुझे भला–बुरा कहेगी और वे बातें हमसे सही नहीं जायेंगी। चुनरी भींगने पर ननद भी व्यंग्य वचन कहेगी, जो नहीं सह सकूँगी। इस पर जेठानी भी कुछ कहेगी और मुझसे सहन नहीं होगा।

दूसरा गीत और भी सरस है, जिसमें चुनरी का किनारा भींगने पर सास रूठ जायेगी और इस रूठने से रसोई छूट जायेगी। रसोई छूटने पर मेरा पति रूठ जायेगा और उसके रूठ जाने से सेज या शयन छूट जायेगा। नई नवेली बहू अपने लोगों से भयभीत रहती है, यह वर्णित है।

मोरो छोटा सा नादान सो बनरा व्याहन जइहैं रे।
आजी चलो हमारे साथ अकेले हम ना जाबइ रे।
बेटा आजा को ले लो साथ बराती ओईं कहामइ रे। मोरो छोटा......
माया चलो हमारे साथ अकेले हम ना जाबइ रे।
बेटा बाबू को ले लो साथ बराती ओई कहामइ रे। मोरो छोटा......
चाची चलो हमारे साथ अकेले हम ना जाबइ रे।
बेटा चाचा को ले लो साथ बराती ओई कहामइ रे। मोरो छोटा......

अपना बेटा विवाह के लिए जा रहा है, परन्तु माँ को नादान (अबोध) ही लग रहा है। इसलिए उसे विवाह कर ले आने के लिए बारात जायेगी। वर दादी को साथ चलने को कहता है, क्योंकि वह अकेले नहीं जाना चाहता है। आजी कहती है कि बेटा साथ में आजा या दादा जी को ले जाओ, वे ही बाराती कहे जायेंगे। इसी प्रकार वह माँ के साथ चलने को कहता है, परन्तु माँ पिताजी को ले जाने हेतु कहती है, क्योंकि वे ही बाराती होंगे। अब वह चाची को साथ चलने को कहता है, परन्तु चाची भी चाचा को साथ ले जाने हेतु कहती है, क्योंकि वे ही बाराती होंगे। दूल्हा माताओं को साथ ले जाना चाहता है, परन्तु वे पिता–चाचा आदि को ले जाने की राय देती हैं, क्योंकि बाराती वे ही होते हैं, पुरुष ही होते हैं, स्त्रियाँ नहीं होती हैं।

बनरा है अति सुकुमार बैठ कलस के आगे रे।
आजा उनके छत्र तनावैं सो आजी अंचरा ओढ़ामइं रे। बनरा है.....
बाबा उनके छत्र तनावैं सो माया अंचरा ओढ़ामइं रे। बनरा है.....
चाचा उनके छत्र तनावैं सो चाची अंचरा ओढ़ामइं रे। बनरा है.....
भइया उनके छत्र तनावैं सो भाभी अंचरा ओढ़ामइं रे। बनरा है.....

अत्यन्त सुकुमार बन्ना या दूल्हा है, वह कलश के आगे बैठ गया है। उसके ऊपर आजा, पिताजी, चाचाजी, भइया जी क्रमशः छत्र तना देगें या लगा देंगे और तब क्रमशः दादी, माता, चाची, मामी क्रमशः आँचल ओढ़ा कर रखेंगी। इसमें दूल्हे की सुकुमारता का उल्लेख है।

मेरी बन्नी अभी है नादान सयानी हो जाने दो।
उनके ससुरू ने भेजा है तार बिदा अभी होने दो।
बन्नी के बाबुल ने खींच दिया तार बिदा अब होने दो।
उनके जेठा ने भेजा है तार बिदा अभी होने दो।
बन्नी के भइया ने खीच दिया तार बिदा अब हो जाने दो।
उनके देवर ने भेजा है तार भाभी जी को आने दो।
बन्नी के भइया ने खींच दिया तार बिदा मुझे होने दो।
उनके सासू ने भेजा है तार बिदा अभी होने दो।
बन्नी के अम्मा ने खीच दिया तार बिदा अब होने दो।

मेरी बन्नी अभी नासमझ है, उसे थोड़ी बड़ी या समझदार हो जाने दीजिए। उसके ससुर ने तार भेज कर विदाई कराना चाही है, परन्तु उसके पिता जी ने तार ले लिया है। जेठ ने भी तार द्वारा विदाई चाही है, भाई ने तार स्वीकार कर लिया है। देवर और सास ने भी तार द्वारा विदाई चाही है, भाई और बन्नी की माँ ने तार को खींच लिया है और विदा करने के लिए सहमत हो गए हैं। रेवांचल में कम वयोमान में विवाह कर देने पर लड़कियों के गौने या विदाई के लिए हाँ– ना चलती थी, उसी का चित्र इस गीत में दिखाई दे रहा है।

द्वारे मां ठाढ़ बन्नी सोचै, नादान बन्ना कैसे के मिलिहैं।
आजा बन्नी की करते तैयारी, आजी को सोच बड़ा भारी । नादान.............
बाबुल बनी की करते तैयारी, माया रानी को सोच बड़ा भारी। नादान.........
चाचा बनी की करते तैयारी, चाची रानी को सोच बड़ा भारी। नादान.........
भइया बनी की करते तैयारी, भाभी रानी को सोच बड़ा भारी। नादान.........

दरवाजे में खड़ी–खड़ी बन्नी यही सोचती रहती है कि उसका बन्ना अर्थात् भावी पति नादान है। कैसे मिल पाएगा। बन्नी की सजावट दादा जी करते हैं, परन्तु दादी चिन्तित हो जाती है। पिता जब बेटी की तैयारी करते हैं तो माँ चिन्तित हो जाती है। जब चाचा बेटी की विदाई की तैयारी करते हैं तो चाची चिन्तित हो जाती है। भाई जब बहन की विदाई की तैयारी करता है, तब भाभी की सोच बढ़ जाती है ।

यह गीत भी रेवांचल के बाल विवाह का ही दृश्य प्रकट कर देता है। दुल्हन की विदाई की तैयारी करने पर महिलाएँ चिन्तित हो जाती हैं।

मोही धानी चुनरिया मंगाय दो पिया।
धानी चुनरि देखि अगर सासु जलेगी, सासू को धीरज बंधा दो पिया। मोही....
मोरी चुनरि देखि अगर जेठनी जलेगी, उन जेठनी को न्यारी करा दो पिया। मोही
धानी चुनरि देखि अगर ननंदी जलेगी, ननदी को गौना करा दो पिया। मोही...
मोरी चुनरि देखि अगर छोटी जलेगी, उन छोटी को मइके पठइ दो पिया। मोही.

कोई नवोढ़ा वधू कहती है कि– हे प्रिय तुम! मुझे धान के रंगवाली चुनरी मंगवा दो, यदि मेरी पीताभ वर्ण की साड़ी को देखकर सासू को ईर्ष्या होगी तो उन्हें हे प्रिय! धीरज बंधवा देना। यदि कभी जेठानी को ईर्ष्या हो गयी तो उन्हें प्रिय अलग करा देना। यदि ननद को जलन होगी तो उसका गमन गौना या द्विरागमन हे प्रिय! करा देना। यदि मेरी चुनरी देखकर देवरानी को जलन होने लगे तो हे प्रिय! उसे मायके भेज देना।

इसमें नई दूल्हन पीली चुनरी चाहती है और यदि सासू, ननद, जेठानी, देवरानी कोई जलने लगे तो उनकी भी व्यवस्था कर देना, परन्तु चुनरी हमें चाहिए ही।

जोड़ी की जोड़ी बन्नी पिया के नगरिया,
लेने को आए तुझे सारे बरतिहा।
आजी ने पाला पोसा बड़े लाड़ प्यार से,
आजा ने बिदा किया आंसुओं की धार से,
अम्मा ने पाला पोसा बड़े लाड़ प्यार से,
पापा ने बिदा किया आंसुओं की धार से।
चाची ने पाला पोसा बड़े लाड़ प्यार से,
चाचा ने बिदा किया आंसुओं की धार से,
भाभी ने पाला पोसा बड़े लाड़ प्यार से,
भइया ने बिदा किया आंसुओं की धार से।

बन्नी या वधू जोड़ी बनी हुई है। प्रियतम की नगरी में सारे बारात के लोग लेने आए हुए हैं। दादीजी ने पालन पोषण किया और दादाजी ने आँसुओं की धारा बहाते हुए विदा कर दिया है। इसी प्रकार माँ ने पालन–पोषण किया, पिताजी ने रो–रोकर विदा कर दिया है। चाची भी बड़े ही दुलार से पालन–पोषण तो किया, परन्तु रोते हुए चाचा ने विदा कर दिया है। भाभी के प्यार दुलार में पली–पुसी हुई बेटी को भइया ने रो–रोकर विदा कर दिया है।

बेटी की विदा के साथ ही उसकी ममता टूटने लगती है, गलने लगती है, आँखों से झरने लगती है और इनकी धाराओं में बहती हुई ममता की मूर्ति मानों विदा हो जाती है।

बन्नी चलो न हमारे साथ नौ रंगिया ले दूं रस की भरी।
बन्ना कैसे चलूं मै तुम्हारे साथ आजा मेरे द्वारे खड़े। बन्नी.........
छोड़ो–छोड़ो कुटुम्ब परिवार कलियुग में साथी दोइ जने।
बना कैसे चलूं मै तुम्हारे साथ बाबुल मेरे द्वारे खड़े।
छोड़ो–छोड़ो कुटुम्ब परिवार कलियुग में साथी दोइ जने।
बनी कैसे चलूं मै तुम्हारे साथ चाचाजी मेरे द्वार खड़े।
छोड़ो–छोड़ो कुटुम्ब परिवार कलियुग में साथी दोइ जने।
बना कैसे चलूं मै तुम्हारे साथ भइया जी मेरे द्वार खड़े।
छोड़ो–छोड़ो कुटुम्ब परिवार कलियुग में साथी दोइ जने।

यह गीत बन्ना–बन्नी का संवाद है। बन्ना कहता है कि– अरी बन्नी! तुम तो मेरे साथ चलो। मैं नौ रंगो वाली रसभरी तुम्हे खरीद दूँगा। वह कहती है कि मैं दादा जी के दरवाजे पर खड़े रहते हुए तुम्हारे साथ कैसे चल सकूँगी। वह फिर शिक्षा देता है कि कुटुम्ब परिवार सब छोड़ दो। कलियुग में दो जन ही साथी हैं, शेष व्यर्थ है। फिर वह कहती है पिताजी द्वार पर खड़े है। मैं कैसे तुम्हारे साथ चलूँगी। इसी प्रकार वह चाचा और भइया को भी द्वार पर खड़े रहने का बोलती है, परन्तु बन्ना सदैव उसे समझाता है कि यह कलियुग है, इसमें दो ही लोग साथ–साथ रहते हैं, अस्तु तुम्हें कुटुम्ब और परिवार का बहुत ध्यान नहीं रखना चाहिए।

इस गीत द्वारा परिवार की अपेक्षा पति–पत्नी दो ही इस कलियुग में साथ रह सकते हैं यही वर्णन किया गया है।

काली–काली बदरिया गोरा चन्दा मैं तारो बीच आज मिलूंगी।
बन्ना दूर न जइयो नदी नाले में मैं रास्ता कैसे पार करूंगी।
बन्ना जो तुम मौरी पहनो मैं कलंगी की सम्हाल करूंगी।
बन्ना जो तुम कुण्डल पहनो मै मोती की सम्हाल करूंगी।

वधू कहती है कि आकाश में काला बादल रहता है, चन्द्रमा गोरा रहता है, परन्तु वह तारों में मिलना चाहती है क्योंकि चन्द्रमा ही तारा पति है। बन्ने या दूल्हे से कहती है कि तुम नदी–नालों में न जाओ, क्योंकि मैं मार्ग कैसे पार करूँगी। तुम मौर पहन

लो मैं कलंगी सम्हालती रहूँगी। कुण्डल पहन लो, उसके मोती को मैं सम्हालती रहूँगी। उसमें दूल्हा–दुल्हन के वार्तालाप हैं।

बन्नी ठाढ़ी अटा पै रूमाल मांगै।
बन्नी ठाढ़ी होइ द्वारे सोहाग मांगै।
अपने बाबा से रुपया हजार मांगै।
दादी रानी से सोलह सिंगार मांगै।
अपने पापा से नौलखा हार मांगै।
मम्मी रानी से अचल सोहाग मांगै।
अपने चाचा से मधुर ओ प्यार मांगै।
चाची रानी से अचल दुलार मांगै।
अपने ताऊ से मोटर कार मांगै।
ताई रानी से सोलह सिंगार मांगै।
अपने भइया से सुखी परिवार मांगै।
भाभी रानी से मृदु व्यवहार मांगै।
अपने फूफा से रुपया हजार मांगै।
फूफू रानी से सोलह सिंगार मांगै।
अपने जीजा से मधुर व्यवहार मांगै।
जीजी रानी से अचल सोहाग मांगै।

इसमें बन्नी अपने परिवार से मांग कर रही है। अटारी में चढ़कर रूमाल मांग रही है। दरवाजे पर खड़ी होकर सोहाग मांगती है। बाबा या दादा जी से हजार रुपया मांगती है। दादी से सोलह सिंगार, पिता से नौलखा हार, माँ से अचल सौभाग्य, चाचा से मधुर प्यार, चाची से अपना दुलार, ताऊ से मोटर कार, ताईजी से सोलह सिंगार, भाई से सुखी परिवार, भाभी से सुन्दर व्यवहार, फूफा से हजार रुपया, फूफू से सोलह श्रृंगार, जीजा से मीठा व्यवहार मांगती है और जीजी से अविचल सौभाग्य मांगती है। बेटी अपने घर से विदाई के पूर्व सौभाग्य और श्रृंगार की वस्तुएँ मांगती है।

बन्नी ने भेजा है तार बन्ना तुम सज धज के आना।
भेजी खबरिया बना चुड़िया लेके आना
कंगना ले आना मीनादार। बन्ना तुम...
भेजी खबरिया बना झुमका लेके आना
माला ले आना झोंपे दार। बन्ना तुम...

भेजी खबरिया बना चुनरी लेके आना
चादर ले आना गोटेदार। बन्ना तुम...
भेजी खबरिया बना डोली लेके आना
लागे है बत्तिस कहार। बन्ना तुम...

यहाँ बन्नी ने बन्ना को तार से सूचना दी है। बन्ना तुम सज–धज के आ जाना, खबर दे रही हूँ कि चूड़ियाँ, कंगन, झुमका, माला लेकर आना–चुनरी, चादर, डोली सब लेकर आना। कंगना में मीना जड़ा हो, माला में झोंप लगी हो, चादर में गोटे लगे हों, डोली में बत्तीस कहार लगे हों, ऐसी व्यवस्था करके आना। वधू वर के लिए संदेश भेजकर वस्तुएं मांग रही है।

नल पर ना खेलो लाड़ली भीगे तेरा रूमाल।
बिन्दिया तो तेरी लाख की लड़िया हजार की।
तुम पहनो मेरी लाड़ली कहती हूं बार–बार। नल पर ना.....
झुमके तो तेरे लाख के मोती हजार के।
तुम पहनो मेरी लाड़ली कहती हूं बार–बार। नल पर ना............
हरवा तो तेरे लाख का चैनें हजार की।
तुम पहनो मेरी लाड़ली कहती हूं बार–बार। नल पर ना............
कंगना तो तेरे लाख के चुड़ियां हजार की।
तुम पहनो मेरी लाड़ली कहती हूं बार–बार। नल पर ना............
जोड़ी तो तेरी लाख की फोटो हजार की।
तुम पहनो मेरी लाड़ली कहती हूं बार–बार। नल पर ना............

इसमें बिटिया की सजावट की बातें गायी जाती हैं। माँ लाड़ली बेटी को अनेक आभूषण पहनने का आग्रह कर रही है। कहती है कि नल के पास बेटी मत खेलो, तुम्हारी रूमाल गीला हो जाएगा। हजार लड़ियाँ और लाख में एक बिन्दी तुम पहन लो। लाख का झुमका और हजार का मोती पहन लो। मैं बार–बार कहती हूँ कि लाख रुपये का हार, हजार रुपयों की चेन पहन लो। कंगन लाखों का, चूड़ियाँ हजारों की पहन लो। इसी प्रकार हजार की तुम्हारी फोटो होगी, परन्तु जोड़ी लाखों की होगी। बेटी बार–बार कहती हूँ कि सब पहन कर सज जाओ।

देखो बन्नी बनी है बांकी दुल्हनिया।
बन्नी के सिर पै सेहरा चमकै झलमल झमकै ओढ़निया।
आज मोरी बन्नी की नाजुक उमरिया बाजे पैर में पैजनिया।

आज मोरी बन्नी ससुर घर जइहंइ बन्ना से होइहंइ मिलनिया।
कहै हरि भक्त बन्ना के संग मां सुख से कटी जिन्दगनियां।

देखिए, बन्नी आज सुन्दर दुल्हन बनी है। बन्नी के सिर पर मौरी चमक रही है। ओढ़नी झिलमिल चमक रही है। आज मेरी बन्नी की उमर (आयु) कम है। पैर में पायल बज रहे हैं। आज मेरी बिटिया ससुराल जाएगी और दूल्हे से मिलन होगा। हरि भक्त कहते हैं कि बन्ना के साथ सुखपूर्वक जीवन कट जायेगा। बिटिया जब दुल्हन बनती है, उस समय का श्रृंगार वर्णन किया गया है।

ले लो–ले लो ये दाने अनार के मेरी बन्नी के दिन ये बहार के।
माथे बनी के बेंदी सोहै, बेंदी को लाना प्यार से। मेरी बन्नी................
काने बनी के कुण्डल सोहे, कुण्डल पहनना बड़े प्यार से। मेरी बन्नी......
गले बनी के हरवा सोहे, हरवा पहनना बड़े प्यार से। मेरी बन्नी......
हाथे बनी के कंगन सोहे, कंगन पहनना बड़े प्यार से। मेरी बन्नी......
अंग बनी के चुनरी सोहे, कुण्डल पहनना बड़े प्यार से। मेरी बन्नी......

मेरी बन्नी के ये आनन्द के दिन हैं, इसलिए ये अनार के दाने ले लो। बन्नी के माथे पर बेंदी अच्छी लग रही है, उसे बड़े प्रेम से सजाना। इसी प्रकार कुण्डल, हार, कंगन और चुनरी बहुत अच्छी लगती है, अस्तु इन सजावट का बड़ी रुचि से, प्रीति से सजाने का आग्रह है। इसमें भी बन्नी या दूल्हन का श्रृंगार वर्णित है।

ससुराल जा के बन्नी हमको ना भुलाना।
मम्मी की याद भूली सासू हंइ तोरे पास।
चाची की याद भूली जेठी हंइ तोरे पास।
भाभी की याद भूली छोटी हंइ तोरे पास।
बहना की याद भूली ननदी है तोरे पास।
भइया की याद भूली देवर है तोरे पास।

बेटी, ससुराल जाकर मुझे मत भूल जाना। मम्मी तो भूल जाती है, क्योंकि सास माँ पास में रहती है। चाची भी भूलती है, क्योंकि जेठानी के पास रहती है। भाभी भूल जाती है क्योंकि देवरानी पास रहती है। बहन भी ननद के कारण भूल जाती है। भाई देवर के कारण भूल जाता है।

रूठ गई बन्नी मचल गई रात को हाय मेरी मम्मी न जाऊं ससुराल को।
माथे बनी जी के बेंदी सोहइ टीका को मोती मचल गई रात को।

हाय मोरी चाची न जाऊँ ससुराल को।
कानों बन्नी के कुण्डल सोहै कुण्डल की मोती मचल गयी
रात को हाय मेरी भाभी न जाऊं ससुराल को।
गले बन्नी के हार भी सोहइ हार की मोती मचल गयी
रात को हाय मोरी मामी न जाऊं ससुराल को।
रूठ गई बन्नी मचल गयी रात को, हाय मोरी मम्मी न जाऊं ससुराल को।

रात का समय था। बन्नी रूठ गयी है और माँ से कहती है कि हाय! मैं ससुराल नहीं जाऊँगी। बन्नी के माथ (मस्तक) में बेंदी सुशोभित हो रही है, परन्तु वह टीका के लिए मचल रही है। चाची से ससुराल न जाने हेतु कह रही है। उसके कानों में कुण्डल सुहाना लग रहा है, परन्तु वह मोती के लिए रूठ रही है। भाभी से ससुराल न जाने को कह रही है। बन्नी के गले में हार तो सजा है, परन्तु वह मोती का हठ कर रही है और भाभी को ससुराल के लिए मना कर रही है।

बना दो दुल्हनिया प्यारी बनी को।
प्यारी बनी को मुकुट बंधा दो कुंकुम केशर हल्दी चढ़ाइ दो,
ओढ़ाय दो ओढ़निया प्यारी बनी को। बना दो..........
प्यारी बनी को लगाइ दो कजरा, जूड़ों में गुहि दो फूलों का गजरा,
पहना दो नथनियां प्यारी बनी को। बना दो ....
बनी के कानों में झुमका पहना दो, रूप की रानी को जी भर सजा दो।
सजाओ बहिनियां प्यारी बनी को। बना दो............
बनी अपने सजने के संग जायगी गोरी लगेगी जैसे चंदन चकोरी।
सजना की सजनियां प्यारी बनी को ....

प्यारी बिटिया को सजाकर दुल्हन बना दो। मुकुट बंधा कर कुंकुम, केशर और हल्दी चढ़ा दो। साथ ही ओढ़नी (चुनरी) ओढ़ा दो। काजल लगाकर जूड़ों में फूलों का गजरा गूंथ दो और नथ पहना कर उसे सजा दो। कानों में झुमका पहना दो और जी भर कर श्रृंगार कर उसे सजा दो। वह चन्द्र की चकोरी जैसे लगने लगेगी और अपने प्रियतम के साथ चली जाएगी।

बड़ी बनरी है वर नादान दद्दाजी से अरज करै।
दद्दा ऐसे घर रचियो विवाह जहां बेटी राज करै।
बेटी कतरै महोबे के पान दुलैंचन पांव धरै।
जहां ब्राह्मण रचत रसोई कहरवन पानी भरै।

चाचा ऐसे घर रचियों विवाह जहां बेटी राज करै। बड़ी बनरी...........
भइया ऐसे घर रचियो विवाह जहां बेटी राज करै।
बहिनी कतरै महोबे के पान दुलैंचन पांव धरै। जहां ब्राह्मण...........

यहाँ बहू दादाजी से निवेदन कर रही है कि बन्नी बड़ी है और बन्ना नासमझ है। बेटी की माँ निवेदन कर रही है कि दादा जी ऐसे घर में विवाह करना, जहाँ अपनी बेटी राज करती रहे। बिटिया महोबा के पान कुतरती रहे और गलीचे में पैर रखती रहे। ब्राह्मण भोजन बनाते हैं और कहार पानी भरते रहते हैं। यही बात चाचा से, भाई से आग्रह करती है कि बेटी का विवाह वहाँ करो, जहाँ वह सुखी रहे।

भाभी करि सोलह सिंगार लला के तिलक लगावे रे।
लला के तिलक लगावे रे लला को खूब सजावै रे।
मैया लेती लाल बलैया हँसि–हँसि छटा निहारै रे।
भाभी चन्दन बन्दन धूप कपूर की थाल सजावे रे।
बन्ना बनठन ठाढ़े द्वार सुरतिया मन को भावै रे।
लाला ऐसी लाओ दुल्हनियां सब के मन को भावे रे।

भाभी ने सोलह श्रृंगार किया और बेटे के तिलक लगा दिया, साथ ही उसे खूब सजा दिया। माँ अपने बेटे को पुचकारती, सराहती हुई उसकी सुन्दरता या शोभा देखती रहती है। भाभी चन्दन से, वन्दनवार से, धूप और कपूर से थाली सजाती रहती है। इस प्रकार सजे–सँवरे दूल्हे का रूप सबको अच्छा लग रहा है। अपेक्षा है कि दूल्हन भी ऐसी लाओ जो सबको अच्छी लगने वाली हो।

अब जिन जइयो अवधपुरी बनरे।
राजा जनक ने प्रतिज्ञा ठानी पूरी तुम कर दइयो रे। अवधपुरी बनरे.......
देश–देश के भूप जुड़े भूपन मान घटइयो रे। अवधपुरी ....
सीता व्याहि अवधपुरी जइयो अवध में खुशियां मनइयो रे। अवधपुरी.............
राजा जनक की क्वांरी है बेटी धनुष तोड़कर जइयो रे। अवधपुरी.................

अरे बन्ना जी! अब अवधपुरी मत जाना। राजा। जनक ने प्रतिज्ञा की है, जिसे तुम पूरा कर देना। देश विदेश से राजा यहाँ इकट्ठा हो गए हैं। उनका सबका मान–सम्मान भी घटा देना, क्योंकि जनक का प्रण पूरा कर दोगे। सीता से विवाह करने के बाद ही अयोध्या जाना और वह खुशियाँ मना लेना। राजा जनक जी की बिटिया अभी कुमारी ही है, उसको पाने के लिए धनुष तोड़कर ही जाना।

सोहाग

सोहाग सौभाग्य का अपभ्रंश रूप है, रेवांचल में सिन्दूर को ही सौभाग्य का उपलक्षण माना जाता है, क्योंकि कन्या की मांग का सिन्दूर उसके सौभाग्य का सूचक है। यह सिन्दूर दान उसका पति या वर करता है, अस्तु पति भी सौभाग्य होता है। विवाह संस्कार में सिन्दूर दान सब से अन्त की प्रक्रिया है और इसके बाद कन्या का वधूत्व हो जाता है। इस सोहाग की मांग मंदिर के भगवान्, सौभाग्यवतियों से–सुहागिनों से की जाती है। एक विशेष धुन राग में ये गीत विवाह के प्रसंग में सदा गाए जाते रहते हैं। इनका आकर्षक ढंग और शब्द चित्र विवाह के परिदृश्य को अंकित करता है। रेवांचल में प्रचलित कुछ सोहाग गीतों को यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। कुछ वर पक्षीय होते हैं जो 'राजा के सोहागवा' की टेक में गाए जाते हैं, परन्तु कन्या पक्षीय सोहाग गीतों में 'रानी के सोहागवा' की टेक होती है।

इहइ रे शहरबा के सांकरि गलिया (2)
धनी रे सेहुड़वा की बारी कि राजा के सोहागबा।
ओहीं होइके निकरे है दुलहे दुल्हेरुआ (2)
कलंगी अरुझि ओकी डारि कि राजा के सोहागबा।
नंचिउ का कलंगी निरुआरा मोरी धनियां (2)
कलंगी अरुझि मोरी डारि कि राजा के सोहागबा।
अरे कइसे के कलंगी निरुआरी मोरे स्वामी (2)
देखत हंइ शहरबा के लोग कि राजा के सोहागबा।
अरे कैसे जावइ लैके हम चन्दन पिंडलिया (2)
देखत है मोर भाई और बाप कि राजा के सोहागबा।

अरे इतने लजोर रहिउ तू माया के अपने (2)
अरे काहे हमसे मंगिया भराऊ राजा के सोहागबा।
अरे कैसे के कलंगी निरुआरउं मोरे स्वामी (2)
अरे देखै चाचा चाची शहरबा के लोग राजा के सोहागबा।
अरे इतनी लजोर रहिउ मोरी धना घर मां (2)
त काहे बइठू सेजिया हमार राजा के सोहागबा।
अरे कैसे के कलंगी निरुआरउं मोरे स्वामी (2)
अरे देखे भइया भाभी शहरबा के लोग राजा के सोहागबा।
अरे इतनी लजोर रहिउं धना माया के अपने (2)
अरे काहे भइउ धनियां हमार राजा के सोहागबा।

छोटा नगर, सँकरी गलियाँ, कँटीले दूध वाले वृक्ष सेहुड़ की बारी बनी हुई है। उसी से दूल्हा निकल जाता है और उसकी मौर की कलंगी उलझ जाती है। दूल्हा दुल्हन को फँसी हुई कलंगी सुलझाने का आग्रह करता है, परन्तु वधु या दुल्हन नगरवासियों के देखते यह करने में लज्जित होती है। संकोच में हो जाती है। वह चंदन की पिंडली भी लेकर जाना चाहती है, परन्तु माता–पिता के देखते कुछ नहीं कर पाती है। दूल्हा कहता है कि यदि इतनी लजीली हो तो हमसे मांग में सिन्दूर क्यों भरवाया था। वधु पुनः कहती है कि चाचा–चाची देख रहे हैं, अतः मैं कलंगी कैसे निरुआरूँगी। पुनः दूल्हा कहता है कि इतनी लज्जाशीला हो तो मेरी सेज अर्थात् शैय्या में क्यों बैठी थी। भाई भाभी और नगरवासी देख रहे हैं, तब मैं कैसे कलंगी निकाल सकूँगी। पुनः दूल्हा कहने लगता है कि अपनी माँ के यहाँ यदि इतनी ही तुम लज्जालु हो जाने वाली थी तो मेरी धनिया (पत्नी) क्यों हुई थी। विवाहिता होने पर भी लज्जाशीलता को न छोड़ना रिमही नारी की विशेषता है।

कहना केर बाग बगइचा, कहना केर फुलवार कि राजा के सोहागवा।
धौं तुम लेवे बाग बगइचा, धौं तुम लेवे फुलवार कि राजा के.....
सोने के पिंजरा से उड़ा रे सुअनमा, कहां लेवइ सुअना बसेर कि राजा के.
ना हम लेवइ बागा रे बगइचा, अरे नहीं बाबुल लख आम राजा के.....
हम ता लेवइ फलाने राम के अंगने/मड़ए, अरे जिन्हकर बहिनी बेटी कुआंरि।

कहाँ का बाग बगीचा है और कहाँ की फुलवारी बनी हुई है। राजा का सोहाग होना है। क्या तुम बाग–बगीचा लोगे या पुष्पवाटिका लोगे? इसी बीच एक तोता जो सोने के पिंजड़े में बन्द था। वह उड़ जाता है। वह बसेर अर्थात् रात्रि विश्राम कहाँ लेता

है। सौभाग्यकामी वर कहता है कि हमें बाग–बगीचे से क्या लेना देना है। फूलबगिया और पिता जी के लाखों आम भी हमें लेकर क्या करना है। वह कहता है जिनकी बहन या बेटी कुमारी है, मैं तो उन्ही के आंगन में या मण्डप में कन्यादान लूँगा और हमें कुछ नहीं करना है।

सोने के पिंजरे से उड़ने वाला तोता कोई और नहीं है। वह वर है, दूल्हा है जो न बागों में रुकता है, न बगीचों में रमता है और न ही फुलवारी में बसता है। वह तो कुमारी कन्या बेटी के घर के मण्डप में रहना चाहता है, बसना चाहता है। यही गीत का प्रतिपाद्य है, चरम है और सन्देश भी है।

अरे बागन–बागन फिरइं रे दुल्हेरुआ (2)
काहे धना रोवत जायं राजा के सोहागवा।
अरे धौ सुधि आई धना गुड़िया पुतरिया (2)
धौ भइ कलेउना के जून, राजा के सोहागवा।
अरे धौ सुधि आई धना माया बाबुल की (2)
धौं सुधि सखिया सहेली, राजा के सोहागवा।
अरे नहीं सुधि आई स्वामी गुड़ई पुतरिया (2)
अरे नहीं भइ कलेउना के जून, राजा के सोहागवा।
अरे सोवत रहेउं अपनी माया जी के कोरवा (2)
बाबू के दुलार सोह अपार, कि राजा के सोहागवा।
अरे रोवत छाड़िउ माया बाबुल कहं (2)
गोतिनी आंगन भरि ठाढ़ि, कि राजा के सोहागवा।

ससुराल में नववधू रोती चली जा रही थी। दूल्हा एक बाग से दूसरे बाग में घूमता जा रहा था और उसकी प्रियतमा पत्नी रोती–रोती चल रही थी। दूल्हे से नहीं देखा जाता, वह पूछने लगता है कि क्या बचपन के पुतली गुड़िया आदि के खेल तुम्हें याद आ रहे हैं जो रो रही हो, क्या तुम्हारे कलेवा करने का समय हो गया है और न मिलने से रोना आ रहा है। पता नहीं कि क्या माता–पिता की याद आ रही है? अथवा सखी सहेली याद आ रही है? हमारे कलेवा का समय अभी नहीं हुआ है। मैं माँ की गोदी में सोती रहती थी, पिता जी का प्यार–दुलार भी अपार मिलता था। जब मैं आई थी तो माता जी और पिता जी दोनों रो रहे थे और गोतिनिया गोत्र की महिलाएँ आँगन में खड़ी हुई थीं। यही दृश्य उसे बार–बार याद आ रहा होगा और वह भी रोती जा रही थी।

यह गीत दुल्हन के ममत्व को प्रकट करता है। जैसे किसको याद करती रोती

हो पूछने पर उसने यही कहा कि माँ और पिता जी को और गोत्र की महिलाओं को मैं रोता हुआ छोड़कर आई हूँ, इसलिए उनकी याद में ही रो रही हूँ।

अरे ऊँची टिकुरिया सोहागिया के बगिया (2)
सोहागिया के लम्बे लम्बे पात। राजा के सोहागबा...
ओही होइके निकले है दुलहे फलाने राम, बांधे केशरिया रंग पाग कि राजा
भितरे से निकरी है ढेरिया फलाना देई, पूंछै दुल्हेरुआ से बात कि राजा.....
काहे रंगी साहेब तुम्हारी पगड़िया, काहे रंगे दांत तुम्हार कि राजा...
कुसुम रंग रंगी धना हमरी पगड़िया, पनवा रचे मोरे दांत राजा.......
कउने रंग रंगी धना तुम्हारी चुनरिया, कउने रंग भरी तुम्हारी मांग कि राजा.
पियरी रंगी है साहब हमरी चुनरिया, सेन्दुरा भरौ मोरी मांग कि राजा .

टीले पर एक बगीचा है, जिसमें सोहाग का पेड़ लगा हुआ है। इस सोहाग (सौभाग्य) के पेड़ के पत्ते लम्बे–लम्बे हैं। उसी रास्ते से दूल्हा निकलता है और उसके सिर पर केशरिया रंग का पागा बंधा हुआ है। घर के भीतर से बेटी (वधु) निकलती है और दूल्हे से बात पूछने लगती है– श्रीमान् आपकी पगड़ी किस रंग से रंगी हुई है और आपके दाँत किससे रंगे हुए हैं। वह कहता है कि श्रीमती जी मेरी पगड़ी कुसुम्भी रंग से रंगी हुई है और मेरे दाँत पान से रचे हुए हैं। फिर दूल्हा भी पूछने लगता है कि तुम्हारी चुनरी कौन से रंग से रंगी हुई है और तुम्हारी मांग किस रंग से भरूँ? तब उत्तर मिलता है कि पीले रंग से मेरी चुनरी रंगी हुई है और मेरी मांग सिन्दूर से भरना।

इस गीत के द्वारा दूल्हा और दुल्हन के वस्त्रों का रंग पीला होना प्रकट हो रहा है। दूल्हे को पगड़ी बांधने और दुल्हन को चुनरी पहनाने का उल्लेख किया गया है।

अरे कहवां तू मोरे राजा जनम लिहे तइ (2)
अरे कहवां लिहे अवतार कि राजा के सोहागवा।
अरे अवधपुरी मां जनम लिहेन तइ, कौशिलिया कोखि लिहे अवतार कि राजा के
अरे बिनतिन बइठे है राजा जनकजी, अरे सुना रामा बिनती हमारि राजा....
अरे अति सुकुमारी है सीता हमारी, पै राम गले डारइ जयमाल कि राजा...
अरे बिनतिन बइठे हैं राम और लछिमन, पै सुना साहब बिनती हमार कि राजा.
अरे अति सुकुमारी है सीता तुम्हारी, पै राम का लिखा है बनवास कि राजा ..
अरे बारह बरिस लौ बनहिं मारहिहंइ, पै लउटि के अइहंइ रनिवास कि राजा.

प्रश्न से गीत उठता है कि मेरे दूल्हा राजा कहाँ तुम्हारा जन्म हुआ था और कहाँ अवतार लिया है? दूल्हा उत्तर देता है कि अयोध्यापुरी में जन्म लिया था और कौशल्या

की कोख में अवतार लिया है। राजा जनक जी विनती करने लगते है कि– हे श्रीरामजी! मेरी विनती सुन लो। मेरी सीता बिटिया तो अत्यधिक सुकुमारी है परन्तु वह राम के गले में जय माला डालेगी। राम और लक्ष्मण दोनों जनक राजा से प्रार्थना कर रहे हैं कि श्रीमान् जी हमारी विनती सुन लेना। आपकी सीता बहुत सुकुमारी है, परन्तु राम को वनवास लिखा हुआ है। वे बारह वर्ष तक वन में ही रहेंगे, इसके बाद लौट कर रनिवास में आएंगे। इस गीत में राम–सीता के विवाह का और उनके वनवास का वर्णन किया गया है।

अरे लीले–लीले घोड़वा कुमर असवरवा (2)
अरे लीली–लीली घोड़े कै लगाम कि राजा के सोहगवा।
अरे एक बन गए है दुसर बन गए है (2)
तिसरे मालिन फुलवरिया।
अरे ओही असवरवा होइ दुलरे दुल्हेरूआ (2)
अरे गलिया गलिया ढूढइं ससुरार, राजा के..........
अरे आइके मिलिगें सारवा फलाने राम (2)
अरे भरि लिहिनि घोड़े के लगाम, राजा के ....
अरे धौ तुम उतरेउ बारी रे बगइचा (2)
अरे धौ हों मालिनि फुलवारि, राजा के ....
अरे नाही हम उतरेन बारी रे बगइचा (2)
अरे नाही हम मालिनि फुलवारि, राजा............
अरे हम ता उतरि गएन ससुरजी के मड़ए (2)
पै जिनकी ढेरिया बारी है कुंआरि.....................

नीले–नीले रंग का घोड़ा है। सवारी करने वाला कुँवारा है। घोड़े की लगाम भी नीली–नीली है। घोड़े पर सवार होकर एक वन में पहुँचते हैं, फिर दूसरे वन में और तीसरे वन में पहुँचते है, जहाँ मालिन की फुलवारी है। रास्ते में आकर उनके साले श्रीमान् जी मिल जाते हैं और वे घोड़े की लगाम पकड़ लेते हैं, आप बाड़ी बगीचा में उतरने वाले हैं अथवा मालिन की फुलवारी में उतरेंगे। दूल्हा बोलता है कि न तो हम बाड़ी में और न ही बगीचे में उतरेंगे। न ही मालिन की फुलवारी में ही उतरेंगे। हम तो ससुर जी के मण्डप में उतरे हैं, जिनकी कन्या अभी कुमारी ही है।

घुड़सवार ही दूल्हा है और वह मण्डप में आया है। यद्यपि रेवांचल में पालकी में सवार होकर ही दूल्हा जाता था, परन्तु इन दिनों कारों में जाता है। घुड़सवारी करता हुआ दूल्हा राजे–रजवाड़ों में जाता है।

जउने बन सिंकिया न डोलै मोरे रामा (2)
अरे कोइली न लेइ बसेर राजा के सोहागवा।
अरे हमरे बाबुल केर घनी अमरइया (2)
कोयली के गदगद बोल, राजा के सोहागवा।
सोने के कटवा तोहि देइहंउ रे पसिया (2)
अरे जियतइ कोइली घर लाउ, राजा के सोहागवा।
डारिन–डारिन पशिया फिरत हंइ (2)
पातन कोइली फिरात कि राजा के सोहागवा।
अरे काहेन बनाइ देत जाल रे पिअसवा (2)
कौन बनाए ओढ़नारू, राजा के सोहागवा।

जिस वन में हवा के नहीं चलने से सीक भी, घास भी, तिनका भी नहीं हिलता–डुलता, जहाँ कोयलें रात में नहीं वास करती हैं, उसमें हमारे पिता जी की सघन आम्रवाटिका (अमराई) है, इसमें कोयल गद्गद सरस और मीठी बोली बोलती है। उसके बोलने से आकृष्ट होकर बेटी कहती है कि– अरे पासवान के पुत्र! मैं तुम्हें सोने का कटवा आभूषण दे दूँगी, परन्तु तुम जीवित कोयल ही पकड़ कर मुझे दे दो। यह सुनकर डाल–डाल में वह घूमता है, परन्तु कोयल पत्ते–पत्ते में चली जाती है, पूछती है। कि अरे! तुम्हारा पक्षी पकड़ने का जाला किसका बनाया है और उत्तरीय या ओढ़ना किसका बनाया है।

कोयल अमराई में ही रहती है और बोलती है। उसे रति की दूती कहा गया है अर्थात् उसके बोलने पर काम का आवाहन हो जाता है। इसीलिए कोई युवती–बहू नायिका चाहती है कि चाहे सोने का कटवा (गले का आभूषण) ही देना पड़े, परन्तु कोई पासवान कोयल को पकड़कर ला दे। वह आएगी और कूकेगी तो काम आएगा ही और काम तो संयोग का देवता है। उसके आने पर वह अकेली नहीं रह सकेगी। इसी लोभ से कोयल चाहती है।

गोरा बदन मुख चुअइ रे पसीनमां (2)
पै गरमी से जिया अकुलाइ राजा के सोहागबा।
नंचि का बेनियां डोलावा मोरी धनिया, पै गरमी से जिया अकुलाइ राजा के .
कैसे के बेनियां डोलाऊं मोरे स्वामी, पै मड़ए तरी आजा आजी ठाढ़। राजा के .
नंचि का बेनियां डोलावा मोरी धनिया, पै गरमी से जिया अकुलाइ। राजा के ....
कैसे के बेनिया डोलाऊं मोरे स्वामी, पै मड़ए तरी अम्मा बाबुल ठाढ़। राजा के .

नंचिका बेनियां डोलावा मोरी धनिया, पै गरमी से जिया अकुलाइ। राजा के...
कैसे के बेनियां डोलाऊं मोरे स्वामी, पै मड़ए तरी चाची चाचा ठाढ़। राजा के..
नंचिउ का बेनियां डोलावा मोरी धनियां, पै गरमी से जिया अकुलाइ। राजा के .
कैसे के बेनियां डोलाऊं मोरे स्वामी, पै मड़ए तरी भाभी भइया ठाढ़। राजा के ..

पति शरीर गोरा है। गर्मी से व्याकुलता हो रही है, मुँह से पसीना टपक रहा है। वह पत्नी से कहता है कि थोड़ा सा पंखा चला दो मेरी देवी, क्योंकि गर्मी से जी में अकुलाहट हो रही है। पत्नी कहने लगी– स्वामी जी! मण्डप में दादा–दादी खड़े हैं तो मैं अब किस प्रकार बेना या पंखा चलाऊँ। फिर वह कहता है कि जी व्याकुल है थोड़ा पंखा झल दो। इस बार वह कहती है माता पिता दोनों मण्डप में खड़े हैं। मैं कैसे पंखा चलाऊँ? पति तीसरी बार पुनः पंखा करने का आग्रह करता है। अब उत्तर में चाचा–चाची के मण्डप के नीचे होने की बात कह देती है। अगली बार के आग्रह में भाभी–भइया के मण्डप के नीचे खड़े रहने की बात कहती है।

पति–पत्नी का संबंध कितना भी ऐक्य का, तादात्म्य का, अखण्ड दाम्पत्य का होगा, परन्तु मायके के लोगों के सामने वह बहू होकर भी बिटिया ही रहती है। उसका सारा संकोच उमड़ पड़ता है और वह भयंकर गर्मी में भी पति के पंखा झलने के आग्रह को नहीं मानती है और कभी दादा–दादी, कभी माता–पिता, कभी चाचा–चाची और कभी भाभी–भइया को देखती है और पंखा करने में संकोच करती है, मना करती है।

अरे एक मूंठी जिरिया बोवावा मोरे बाबू (2)
गलिया–गलिया झंउडे डारि, रानी के सोहागवा।
अरे ओहीं होइके निकले है दुलहे फलाने राम (2)
कचरैं जिरिया केरि डारि, रानी के सोहागवा।
अरे जिरिया के ओटे होइके बोली दुलारी देई (2)
अरे सुना स्वामी बिनती हमारि, रानी के सोहागवा।
अरे जिरिया के मोल चुकावा मोरे राजा (2)
अरे तब निज निवसवा का जाहु, रानी के सोहागवा।

यह गीत जीरक या जीरा के प्रसंग से प्रारंभ होता है। बेटी की अपेक्षा अपने पिता से यह है कि एक मुठ्ठी भर जीरा बो दें या बोवाई करा दें, जिससे उसकी डाल गली–गली में फैल जाये। जब गलियों से दूल्हा निकलेगा और तब उसी पेड़ के छिटके होने से उसे पैरों से कुचलने लगेगा, तब उसी पेड़ के पीछे छिपकर बिटिया या भावी वधू बोलने लगती है कि– हे स्वामी! हमारी प्रार्थना सुन लो! आपने जीरे का पेड़ या

डाल कुचल दिया है, अस्तु उसका मूल्य हमें दे जाओ, उसके बाद अपने घर के लिए जाओ। यह गीत केवल इस उपक्रम में बना है कि दूल्हा गलती करने को बाध्य हो और दुल्हन इसी बहाने उससे बात कर सके।

लड़कियों के सौभाग्य की अपेक्षा में लोक कभी—कभी देव मंदिरों में भी पहुँच जाता है, परन्तु वहाँ भी वह अपनी इच्छा की पूर्ति ही करना चाहता है।

अरे खोरिनि—खोरिनि फिरै महादेव (2)
अरे डमरू बजावैं झंकार कि रानी के सोहगवा।
अरे मोही जग्यकर्ता के बखरी बतावा (2)
अरे जे के घरे बिटिया कुमारि रानी के सोहागवा।
अरे नरियर मोतिया हम तोहई देबै शंकर (2)
अरे देवइ भंगिया बिचारि रानी के सोहागवा।
अरे भंगिया औ नारियल न लेबै मोती माला (2)
अरे लेबै हम ढेरिया तोहार रानी के सोहागवा।

भगवान् शिव जो दाम्पत्य के, सौभाग्य के या पति—पत्नी के मध्य प्रीति के देवता माने जाते हैं। विद्या के देवता भी माने जाते हैं। वे गली—गली में घूमते रहते हैं और अपना डमरू बजाकर झंकार कर देते है। वे अपनी भावी ससुराल कांपता ढूंढ रहे हैं उस यजमान या यज्ञकर्त्ता की पत्नी कहने लगती है कि— हे शंकर जी! हम आपको नारियल और मोती देंगे। सोच समझकर माँग भी दूँगी, मेरी बेटी को सौभाग्य दे दो। शिव ने कहा कि न तो मैं माँग लूँगा, और न ही नारियल लूँगा साथ ही मैं मोती की माला भी नहीं लूँगा। मैं तुम्हारी कुमारी कन्या को ही लूँगा।

यह गीत दूल्हा शिव के द्वारा दुल्हन माँगने का ही है। शिव कल्याण के देवता हैं और पार्वती पर्वत की बिटिया है। इन दोनों का अखण्ड दाम्पत्य प्रसिद्ध हैं। लोक—जीवन यही कल्पना करता है कि दूल्हा शिव बनकर, दुल्हन पार्वती बनकर रहे जिससे अखण्ड दाम्पत्य बना रहे।

यह सौभाग्य गीत बेटी के खान—पान में दुलार को प्रकट करता हुआ आयाम लेता है।

अरे खोरिनि—खोरिनि फिरइ ग्वालिनिया (2)
अरे को लेइ दहिआ हमार रानी के सोहागबा।
अरे भीतर से निकली है माया दुलहिन देई (2)

अरे हम लेबइ दहिआ तोहार कि रानी के सोहागबा।
अरे हमरेनि घर हइ बेटिया लोलारी (2)
अरे बिन दही खिचड़ी न खाइ कि रानी के सोहागबा।

घनी बसाहट वाले गाँवों में गलियाँ होती हैं, जिन्हें बघेली में 'खोरि' कहा जाता है। अहीरन गली–गली में दही बेचने के लिए घूमती है, आवाज देती रहती है कि कोई तो मेरा दही खरीद लो। उसकी आवाज सुनकर कोई नहीं निकलता, परन्तु वधु बेटी की माँ निकल आती है और कहने लगी कि अरे ग्वालिन! मैं तुम्हारा दही खरीद लूँगी, क्योंकि मेरी बिटिया रानी का सोहाग होने वाला है। हमारे घर में बेटी कुँआरी है, दुलार की है, लालन पालन करके बढ़ी है। उसे खिचड़ी में दही अच्छा लगता है और वह बिना दही के खिचड़ी नहीं खाती है।

को आ लगाइनि आमुन जामुन कोआ लगाइनि लख आम। रानी के सोहागबा।
को आ लगावैं सोहाग के बिरिया, सेन्दुर महंग बिकाय रानी के सोहागबा।
बाबुल लगावै आमुन जामुन, चाचा लगावै लख आम। रानी के सोहागबा।
भइया लगावै सोहाग की बिरिया, सेन्दुर महंग विकाय। रानी के सोहागबा।
भइया मोही दीन्हिन हांथी औ घोड़िला, भौजी सेन्दुर भरी मांग। रानी के सोहागबा।
अरे नौ मन सोनवा नवै दिन रहि है, फट जैहे लहर पटोर। रानी के सोहागबा।
भइया के घोड़िला से नगर घुमउबै, रहिगै सेन्दुर भरी मांग। रानी के सोहागबा।
सेन्दुर–सेन्दुर मोरे जनम के साधी, सदा रहिहै बलम हमार। रानी के सोहागबा।

इसमें भी सोहाग के पेड़ लगाने की बात आती है। सौभाग्य एक मनः स्थिति, युवावस्था की अनुकूलता है। युवा और युवती दोनों को युवावस्था में सहनिवास की जीवन पर्यन्त आश्वस्ति मिल जाये, यही सौभाग्य की उपलब्धि है। इसी सौभाग्य को पेड़ का रूपक देकर प्रकट किया गया है। इस गीत में किसने आम के लाखों पेड़ लगाये। किसने जामुन के पेड़ लगाये और किसने सोहाग का पेड़ लगाया, क्योंकि सिन्दूर बहुमूल्य हो गया है। पिताजी ने जामुन आदि के पेड़ लगाये और चाचा ने लाखों आम के पेड़ लगाये और भाई ने सोहाग का पेड़ लगाया, परन्तु सिन्दूर महंगा बिक रहा है। भाई ने बहन को हाथी और घोड़ा दहेज में दिया, परन्तु भाभी ने सिन्दूर से मांग भर दी थी। सोना भी नौ मन की राशि में मिलेगा तो भी वह कुछ दिन ही रहता है, लहर पटोर पहनने पर फट जाता है, भाई का घोड़ा नगर में घुमा देगा, परन्तु मांग में भरा हुआ सिन्दूर सदा रहा आएगा। सिन्दूर सदा साथ रहता है और कन्या या वधू के प्रियतम का प्रतीक होता है। यह सिन्दूर स्नेह का अनुराग का, दाम्पत्य का, विवाह का, जोड़े

का, प्रतीक है। पत्नी के सिर का सिन्दूर पति के साहचर्य, साधर्म्य और सहधर्म का सूचक होता है। यही इसी से सौभाग्य का भी सूचक होता है।

इस गीत की शुरुआत चम्पा के फूल से की गयी है और अन्त के विवाह पर बेटी में पूरा होता है।

अरे इतनी दूर तुम फूली काहे चम्पा (2)
मैं तुम ही तोड़न को जायं। रानी के सोहागबा।
अरे हम हीं तोड़न जइहै मालिन के लड़िका (2)
अरे जिनका है फूलन की चाह कि रानी के सोहागबा।
अरे इतनी दूर तुम काहे व्याही बेटी (2)
अरे तोहइं लेवन को जाय कि रानी के सोहागबा।
अरे इतनी दूर हम बेटी का व्याहेन (2)
अरे भइया लेइ बहिन का जायं रानी के सोहागबा।

चम्पा के फूल से प्रश्न है कि तुम इतनी दूरी पर क्यों फूली हो? इतनी दूर तुम्हें तोड़ने या लेने कौन आएगा? इसका उत्तर गीत में ही मिलता जाता है कि माली को फूलों की पहचान भी और चाह भी रहती है, अस्तु वह तो चम्पा का फूल तोड़ने के लिए जायेगा ही, अर्थात् जिसके विषय में जो जानता है, वही उसके लिए प्रयासरत होता है। बेटी का विवाह दूर नहीं करने की भावना में गीत कहता है कि इतनी दूरी पर बिटिया का विवाह क्यों किया है, उसको बुलाने के लिए कौन जाएगा? इसी बेटी का सोहाग होने वाला है। इसी का उत्तर भाई देता है कि मैंने ही बहन का इतनी दूर पर विवाह किया है और उसे बुलाने भी मैं ही जाऊँगा। प्राकृतिक वर्णन से क्रमशः बेटी के विवाह पर आ जाना प्रस्तुति का आकर्षक ढंग है।

यह गीत भी सीता के नाम से ही आकार लेता है, इस अंचल की कन्याओं को सीता का रूप माना जाता है।

अरे खेलत–खेलत गई ढेरिया सीता (2)
अरे देखन लागी अपनी बरात कि रानी के सोहागबा।
अरे हँसमुख पूछइं आजी दूल्हन देई (2)
अरे कैसी नातिन तोहरी बरात रानी के सोहागबा।
अरे बाजा के शहनइया से सजी रे बरतिया (2)
अरे दूल्हा राजा मोतिन के हार कि रानी के सोहागबा।

विवाह में तो लक्ष्मी स्वरूपा कन्या का श्रीधर स्वरूपी वर के साथ विवाह किया ही जाता है। सभी कन्याएँ अपने–अपने घर में सीता ही होती हैं। बेटी सीता खेलती–कूदती जा रही थी और अपनी बारात देखने लगती है। जब वह बारात देखकर लौटकर आ जाती है तो दादी ने हँसते हुए पूछा कि बेटी या दूल्हन जी, तुम्हारी बारात कैसी आई है? वह बताने लगती है कि बारात में बाजे बज रहे हैं– परन्तु उनमें शहनाई से सजावट हुई है। दूल्हा राजा ने हार पहन रखा है जो मोतियों से बना हुआ है। इस प्रकार दूल्हा मोती का हार पहने हुए है।

इस गीत से रेवांचल में होने वाले बाल विवाह का एक चित्र प्रस्तुत किया गया है।

यहाँ सीता नाम से कन्या का संबोधन किया गया है, जिसको सोहाग प्राप्त होने वाला है।

अरे भटवा तोड़न गई ढेरिया सीता देई (2)
अरे भटवा में बैठे काले चोर कि रानी के सोहागबा।
अरे इतना जो सुनिन है भइया फलाने राम (2)
अरे चोरबा बंधन हम जाब रानी के सोहागबा।
अरे खंभा के ओट होइके बोली सीता देई (2)
अरे सुना भइया बिनती हमार रानी के सोहागबा।
अरे धीरे–धीरे फुंदना लगाए मोरे भैया (2)
पै चोरबा है अति सुकुमार कि रानी के सोहागबा।

भावी पति कन्या के घर उससे मिलने के लिए जाता है। वह जानता है कि उसकी भावी पत्नी बैंगन तोड़ने के लिए आएगी और वहीं भेंट हो जायेगी, परन्तु यह रहस्य कन्या को नहीं ज्ञात रहता। गीत उठता है बेटी के भटे या बैंगन तोड़ने के लिए जाने पर उसे कोई बैठा दिखता है, जिसे वह चोर समझ बैठती है और शोर मचा देती है। उसके भाई को आवाज सुनाई पड़ती है और चोर को पकड़ने, बांधने के लिए तैयार हो जाता है। तब तक सीता जी अर्थात् सौभाग्याकांक्षिणी ने चोर को पहचान लिया। उसकी ममता, पक्षपात या स्नेह प्रकट होने लगता है। खम्भे की आड़ में खड़ी हो जाती है और भाई से कहने लगती है कि भाई साहब सुनो हमारी एक प्रार्थना है कि वह चोर बहुत सुकुमार है, सुकोमल है, अस्तु जब बांधना तब बन्धन की गाँठे धीरे–धीरे लगाना, जिससे उसे अधिक कष्ट न हो।

रीवा क्षेत्र में गाए जाने वाले गीतों में बेटे राम या कृष्ण होते हैं और बेटियाँ सीता

ही होती हैं वहा तो किसी भी नाम के आगे–पीछे राम ही लगाने की परम्परा रही है इसमें भावी दूल्हा दुल्हन के परस्पर ममत्व की एक झलक मिलती है।

सिकिया कै डड़िया सजावा मोरे भइया (2)
कि लै चला कमरू के देश, रानी के सोहागबा।
कमरू के देशवा चन्दन बड़ा विरवा (2)
कि ओही तरी जोगवा बिकाय कि, रानी के सोहागबा।
अगतन औतिउ फलाने राम की ढेरिया (2)
कि अब जोग गयउ बिकाय कि, रानी के सोहागबा।
कुछ जोग गठिया कि कुछ जोग मुठिया (2)
कि कुछ योग बैल लदाय कि, रानी के सोहागबा।

गीत में बहन अपने भाई से अपेक्षा करती है कि सींक की डड़िया सजा दे, पालकी बनवा दे और कामरूप देश ले चले, उस कामरूप देश में चन्दन का एक बड़ा सा पेड़ है जिसके नीचे योग क्रिया की बिक्री होती है। उसी योग के लिए अग्रिम रूप से या पूर्व में ही पहुँच जाना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि जाते–जाते योग क्रिया पूरी हो जाये। इस योग को कुछ पोटली में ले लेते है कुछ मुठ्ठी भर कर ले लेते है और कुछ बैलों पर लाद कर ले लेते हैं, जिससे कोई कमी न रह जाये।

योग के बिना विवाह नहीं होता है और यही योग चन्दन के पेड़ के नीचे मिलता है। प्रकारान्तर से कामरूप जाकर योग प्राप्त हो सकने का संकेत किया गया है।

चिरई रे सोवइ चुनूगुन रे सोवइ (2)
सोइगे नगरवा के लोग कि, रानी के सोहागबा।
एक नहीं सोए हैं अजबा फलाने राम (2)
जेखे घरे नतिनी कुंआरि कि, रानी के सोहागबा।
एक नहीं सोए है बपवा फलाने राम (2)
जेके घरे बिटिया कुंआरि कि, रानी के सोहागबा।
एक नहीं सोवइं भइया फलाने राम (2)
जेके घर बहिनी कुंआरि कि, रानी राजा के सोहागबा।

विवाह होने के समय सारी दुनिया सो जाती है, पशु–पक्षी भी सो जाते हैं परन्तु नगर के सो जाने पर भी कुमारी कन्या के दादा जी नहीं सो पाते हैं, क्योंकि उनको अपनी पोती की चिन्ता है। पिता नहीं सोते हैं, भाई नहीं सोता है, क्योंकि उनकी बेटी और बहन कुमारी है, उसका विवाह करना है।

पुत्रीति जाता महतीह चिन्ता, कस्मै प्रदेयेति महान् वितर्कः।
दत्ता सुखं यास्यति वा न वेति, कन्यापितृत्वं खलु नाम कष्टम्।।

बिटिया का होना ही चिन्ता का विषय होता है। कन्यादान किसे करें, यह पहली चिन्ता है और कन्यादान करने पर भी सुखी रहेगी या नहीं रहेगी, यह दूसरी चिन्ता रहती है। इसी चिन्ता में सब सो जाते होंगे, परन्तु पिता, भाई कैसे सोएँगे। दहेज अब तीसरी चिन्ता होने लगी है।

पाँच बंधनवा के टटिआ बंधावा हो (2)
मड़ए मां दिहे ओढ़काय कि, रानी के सोहागवा।
टटिया ओलटे होइके आई अजिया फलाना देई (2)
देखि लेउ नतिनी सोहाग कि, रानी के सोहागबा।
नतिनी सोहागबा बहुत नीक लागइ (2)
जुग जुग बढ़इ सोहाग कि, रानी के सोहागबा।
टटिया ओलटे होइ के देखै आई माया फलानी देई (2)
देखिलेउं बिटिया सोहाग कि, रानी.....
बिटिया सोहागवा बहुत नीक लागइ (2)
जुग–जुग बढ़इ अहिवात कि, रानी के सोहागबा।
टटिया ओलटे होइ के देखै आई काकी फलानी देई (2)
देखिलेउं बिटिया सोहाग कि, रानी.....
बिटिया सोहागवा बहुत नीक लागइ (2)
जुग–जुग बढ़इ अहिवात कि, रानी के सोहागबा।

यह किसी विवाह प्रसंग की अभिव्यक्ति विषयक गीत है। पाँच बन्धनों से टटिया या घास की टट्टी बंधन कराने का उल्लेख है, जिसे मण्डप में टिकाकर रख देना है। यही टट्टी के ओट में (आड़ में) छिपकर बेटी की दादी अपनी पोती का सोहाग देखती है। पोती का सोहाग बहुत अच्छा लगता है। वह युगों–युगों तक सुहागिनी रहे यही चाहती है। यही सोहाग माँ भी आड़ में खड़ी होकर देखती रहती है और युगों–युगों तक सौभाग्य की कामना करती है। इसी टटिया की आड़ में काकी/भाभी सब बेटी का सौभाग्य देना देखती रही है और उसी सुहाग को युगों के लिए अमर होने की इच्छा करती हैं। इस गीत में अखण्ड सौभाग्य की कामना की गयी है।

खिड़किन बइठी फलानी देई (2)
सुना माया बिनती हमारि कि, रानी के सोहागबा।
अरे ओहीं होइके निकले है भइया निरमोहिया (2)

त पठइउ विदेशिया के साथ कि, रानी...
अरे विनतिन करिहीं ढेरिया फलानी देई (2)
सुना आजी विनती हमारि कि, रानी के सोहागबा।
अरे ओहीं होइके निकले है भइया निरमोहिया (2)
त पठइउ विदेशिया के साथ कि, रानी...

खिड़की में बेटी बैठी है और अपनी माँ से विनती करती है कि मेरे सौभाग्य के लिए मेरे भइया लगता है कि मोह रहित हो गए थे और अनजाने, अन पहचाने व्यक्ति के साथ (विदेशी के साथ) हमें भेज दिया है। यही विनती वह अपनी माँ से भी करती है कि मेरे भाई ने दूसरे देश में रहने वाले किसी के साथ मुझे सौभाग्य के कारण भेज दिया है।

यहाँ बिटिया की ममतावश अबोधता प्रकट होती है। उसे नहीं ज्ञात है कि विवाह होने वाले दूल्हे का पूर्ण परिचय नहीं होता है। यह शिकायत वह माँ और दादी से ही कर सकती है। उसकी सरलता और सहजता का उल्लेख हुआ है।

हमरे दुअरबा है शंकर जी के मंदिर (2)
अरे गौरा जी से मंगवै वरदान, रानी के सोहागबा।
पांच रुपैया हमहीं दे तूं आजी (2)
अरे गौरा जी के करतिउं श्रृंगार कि, रानी के सोहागबा।
उहइ श्रृंगार हमहिं मिले आजी (2)
अरे जुग–जुग बढ़इ अहिवात कि, रानी के सोहागबा।
अरे पांच रुपैया हमही देतिउ माया (2)
अरे गौरा जी के करतिउं श्रृंगार कि, रानी के सोहागबा।
उहइ श्रृंगरबा हमहि मिलइ माया (2)
अरे जुग–जुग बढ़इ अहिवात, रानी के सोहागबा।
अरे पांच रुपैया हमही देतिउ चाची (2)
अरे गौरा जी के करतिउं श्रृंगार कि, रानी के सोहागबा।
उहइ श्रृंगरबा हमहि मिलइ चाची (2)
अरे जुग–जुग बढ़इ अहिवात, रानी के सोहागबा।
अरे पांच रुपैया हमही देतिउ भउजी (2)
अरे गौरा जी के करतिउं श्रृंगार कि, रानी के सोहागबा।
उहइ श्रृंगरबा हमहि मिलइ भउजी (2)
अरे जुग–जुग बढ़इ अहिवात, रानी के सोहागबा।

बिटिया को अपने सोहाग या सौभाग्य की चिन्ता रहती है। वह बताती है कि मेरे ही दरवाजे पर शिवजी का मंदिर बना हुआ है, वहाँ गौरी जी भी हैं। उन्हीं से सौभाग्य का वरदान मांगने हेतु कन्या जाना चाहती है। वह अपनी दादी से पाँच रुपया मांगती है और उन पैसों से गौरा जी का ही वह श्रृंगार करेंगी। वह माँ पार्वती का श्रृँगार इस भावना से कर रही है, जिससे उसे वे सभी श्रृंगार मिले। ऐसा वह दादी से कहती है और इसका परिणाम वह चाहती है कि युगों तक उसका अखण्ड सौभाग्य रहे। इसी सुदी अहिवात अर्थात् दाम्पत्य जीवन या अखण्ड सौभाग्य की कामना करते हुए वह अपनी दादी, माँ, चाची और भाभी से क्रमशः पाँच—पाँच रुपये मांगती है और उससे माँ पार्वती का श्रृगार करना चाहती है, बदले में सौभाग्य की कामना से।

कुँआरी लड़कियाँ शिवजी की पूजा करके अपना सौभाग्य वरदान में मांगती रहती हैं। इसी का गीत के माध्यम से उल्लेख किया गया है।

फुलवा बिनन सीता गई दुपरिया (2)
हाथे डलिया मुख पान, रानी के सोहागबा।
या फुलवा हम गंगा मां चढ़उबै हो (2)
पै जहां रहइं ससुर हमार के, रानी के सोहागबा।
या फुलवा हम बद्री मां चढ़उबै हो (2)
पै जहां रहइं जेठवा हमार के, रानी के सोहागबा।
या फुलवा हम काशी मां चढ़उबै हो (2)
पै जहां रहइं देवरा हमार के, रानी के सोहागबा।
या फुलवा हम जगन्नाथ मां चढ़उबै हो (2)
पै जहां रहइं सजना हमार के, रानी के सोहागबा।

दोपहर का समय था। सीता जी ने हाथ में डलिया (टोकनी) ले लिया, मुँह में पान रख लिया और फूल बीनने या चुनने या उतारने फुलवारी में चली गयीं। उनकी भावनाओं का प्राकट्य हुआ है। वे गाने लगती है कि इस मातृ गृह (मायके) के फूल को मैं गंगा जी में चढ़ा दूँगी, क्योंकि वहाँ हमारे ससुर जी रहते हैं। फिर कहती हैं कि इस फूल को मैं बद्रीनाथ में चढ़ा दूँगी जहाँ हमारे जेठ (पति के बड़े भाई) रहते हैं। आगे कहती हैं यही फूल मैं काशी विश्वनाथ में चढ़ा दूँगी। जहाँ हमारे देवर (पति का छोटा भाई) रहते है, परन्तु अंतिम पुष्प मैं जगन्नाथ जी में चढ़ाऊँगी, जहाँ हमारे प्रिय पति रहते हैं।

ये भावना के पुष्प हैं जो नववधू अपने पूरे परिवार की चिन्ता करने के बाद अपने

पति की चिन्ता कर रही है। डलिया में चुने हुए फूल किसी मंदिर के देवता के लिए नहीं हैं। प्रवाह पूर्ण गंगा जी के लिए हैं, जहाँ उनके ससुर हैं। हिमालय में बद्रीनारायण जैसे उसके जेठ हैं, विद्या स्थली काशी में देवर के लिए तथा सुदूरपूर्व में जगन्नाथ स्वामी के लिए अपने पति की भावना से पुष्प चढ़ाने का गीत है। धार्मिकता और सामाजिकता दोनों का प्राबल्य है और सामंजस्य भी है।

अरे कौन ग्रहण परी दिन दुपहरिया (2)
और कौन ग्रहण आधी रात कि, रानी के सोहागबा।
अरे सूर्य ग्रहण परी दिन दुपहरिया (2)
और चन्द्रग्रहण आधीरात कि, रानी के सोहागबा।
अरे सूर्य ग्रहण बीच मड़ए तरी (2)
अरे केकर उग्रह होइ, रानी के सोहागबा।
अरे ढेरिया ग्रहण बीच मड़ए तरी (2)
अरे बाबुल उग्रह होइ, रानी के सोहागबा।

यह भी छोटा सा गीत है, जिसमें बातें ग्रहण से शुरू की गयी हैं। प्रश्न है कि दिन में दोपहर को कौन सा ग्रहण पड़ेगा, साथ ही आधी रात को कौन सा ग्रहण पड़ेगा, जिससे रानी के सौभाग्य में प्रभाव न पड़ सके। उत्तर होता है कि दिन में दोपहर को सूर्यग्रहण पड़ता है। इसी प्रकार मण्डप के नीचे कौन सा ग्रहण होगा और उग्रह अर्थात् ग्रहण मोक्ष किसका होगा। बेटी का मण्डप के नीचे ग्रहण होता है तथा इस पाणिग्रहण से बेटी के पिताजी का उग्रह अर्थात् ग्रहण मोक्ष होता है। उसका अभिप्राय यही है कि पिता की मुक्ति तभी होती है। जब वह कन्यादान करके उसका वर द्वारा ग्रहण करा देता है। इस प्रकरण को ग्रहण से उपमित किया गया है।

अरे हम ता जावइ शंकर जी के मंदिर (2)
गौरा मैया देती हंइ सोहाग कि, रानी के सोहागवा।
अरे पहिला मांगन मंगवै मांग के सेन्दुरा (2)
सेन्दुरा अमर होइ जाय कि, रानी के सोहागवा।
अरे दुसरा मांगन मंगवै माथे की बिन्दिया (2)
अरे बिन्दिया अमर होइ जाय कि, रानी के सोहागवा।
अरे तिसरा मांगन मंगवै हाथे की चुड़िया (2)
चुड़िया अमर होइ जाय कि, रानी के सोहागवा।
अरे चौथा मांगन मंगवै पायन की बिछिया (2)

अरे बिछिया अमर होइ जाय कि, रानी के सोहागवा।
अरे पांचवा मांगन मंगवै पायन के महाउर (2)
अरे महाउर अमर होइ जाय कि, रानी के सोहागवा।
अरे हम ता जावइ शंकर जी के मंदिर (2)
गौरा मैया देती हंइ सोहाग कि, रानी के सोहागवा।

इस गीत में भी शिव–पार्वती के मंदिर में जाकर अखण्ड सौभाग्य के चिह्नों की मांग की जाती है। वस्तुतः श्रीमद् भागवतकार ने भी 'दाम्पत्यार्थं उमां सतीम्' कहकर यही बताया है। दाम्पत्य जीवन की अखण्डता और परस्पर स्नेह पूर्ति के लिए उमा जी, गौराजी या पार्वती जी ही पूज्य रही हैं। गीत यही कहता है कि सौभाग्यकांक्षिणी बेटी कह रही है कि वह तो शिवजी के मंदिर में जायेगी और वहाँ गौरी देवी सोहाग का दान करती हैं। वह कहती है पहले क्रम पर मैं मांग में सिन्दूर मांग लूँगी, जिससे वह सिन्दूर या उपकल्पक मेरा पति अमर हो जायेगा। इसी प्रकार दूसरे क्रम पर मैं माथे की बिन्दी मांग लूँगी। जिससे बेंदी भी अमर हो जायेगी। तीसरे क्रम में हाथों की चूड़ियाँ मांग लूँगी, वे भी अमर हो जायेंगी। चौथे क्रम में पैर की बिछिया मांग लूँगी, जिससे बिछिया अमर हो जायेगी। पाँचवें क्रम में पैरों का महावर माँगूगी, जिससे महावर (आलता) अमर हो जायेगा।

सिन्दूर, बिन्दी, चूड़ी, बिछिया और महावर ये पाँचों श्रृंगार की वस्तुएं है, जिन्हें कोई सौभाग्यवती स्त्री ही धारण करती है। इनकी पार्वती जी से मांग करना उनकी अमरता का सूचक है। ऐसी स्थिति में पार्वती जी उक्त सौभाग्य वस्तुओं का दान दें, यही कामना की गयी है।

अरे हमरे दुअरवा है शंकर जी के मंदिर (2)
खोलि किवड़िया दरशन लेब कि, रानी के सोहागवा।
अरे जब मैं भइउं तै तीनि बरिस कै (2)
अरे पियउं तै माया जी के दूध, रानी के सोहागवा।
अरे जब मै भइउं तै पांच बरिस कै (2)
अरे खेलउं रे फरिकवा मां धूल कि, रानी के सोहागवा।
अरे जब मै भइउं तै बारह बरिस कै (2)
अरे चलेउं रे विदेशिया के साथ कि, रानी के सोहागवा।

रेवांचल की कन्या आप बीती गाती है और बाल विवाह का बयान कर देती है। हमारे द्वार पर ही शिवजी का मंदिर बना हुआ है। खिड़की खोल कर दर्शन लेती रहूँगी।

जब मैं तीन वर्ष की हो गयी थी, तब तक माँ का ही दूध पी रही थी। परन्तु पाँच वर्ष तक मैं तो घर–आँगन में ही खेल खेलती रहती थी। धीरे–धीरे बारह वर्ष की हो गयी और तब मैं ब्याह दी गयी और घर छोड़कर विदेशी अर्थात् दूर देश वाले के साथ चल दी।

विवाह के बाद बहू बन चुकी बेटी अपना पूर्व जीवन याद करती हुई गीत गाती है। उसे घर पर ही खिड़की से शिव दर्शन का लाभ होता है। बचपन की शिव पूजा शिवोपासना ही उसके जीवन निर्माण में कारक बनी है।

कौन दिशा से उठी रे बदरिया (2)
कौन दिशा चलि जाइ कि, रानी के सोहागवा।
पूरब दिशा से उठी रे बदरिया (2)
पश्चिम दिशा चली जाइ कि, रानी के सोहागवा।
विनतिन बइठी है बेटी फलानी देई (2)
सुना मेघा बिनती हमार कि, रानी के सोहागवा।
निंचिउ क बुंदिया क्षमा करो मेहा (2)
मंगिया सेन्दुर बहि जाइ कि, रानी के सोहागवा।
माघ मैं परिखेउं फागुनलइ परिखेउं (2)
परिखेउ है जेठबइशाख कि, रानी के सोहागवा।
अब कैसे बुन्दिया क्षमा करै मेघवा (2)
कि घुमड़ि के लगिगा अषाढ़, रानी के सोहागवा।

बेटी का विवाह निश्चित हो गया है और घर में सबको चिन्ता पानी बरसने की है। इसी भावना से गीत शुरू हो जाता है कि बदली कौन सी छा रही है। यह बदली पूर्व दिशा से उठी है और पश्चिम की ओर जा रही है, पुरवाई हवा बह रही है। तभी बिटिया मेघ से प्रार्थना करती है कि– हे मेघा! मैं मण्डप में हूँ, मांग में सिन्दूर सजा है, थोड़ी भी बूंद आप न बरसाएँ, क्योंकि बूंदों से ही मेरा सिन्दूर बह जायेगा। मेघ भी कहने लगा कि माघ में नहीं बरसा, फागुन भी नहीं बरसा, तब विवाह नहीं किया। चैत्र तो खर मास है, पर मैं वैशाख और जेठ के महीने मे भी नहीं बरस पाया, अब तो आषाढ़ का महीना लग गया है, अब तो बरसने दो। यहाँ मेघ को नववधू की प्रार्थना उसकी सरसता के कारण है।

रेवांचल की बहुओं को सिन्दूर की महिमा सर्वोत्कृष्ट लगती है। वे सिन्दूर को ही सौभाग्य (सुहाग) का उपलक्षण मानते हैं उसकी रक्षा की उन्हें बहुविध चिन्ता रहती है।

वहाँ द्विरागमन के लिए वरपक्ष से सिन्दूर ही लेकर कोई कन्या के यहाँ जाता है। अगर सिन्दूर ले लिया तो बहू का द्विरागमन मुहूर्त निश्चित कर लिया जाता है। गीत गाने वाली बहू बादल को रोक देती है और आषाढ़ तक रोके रहती है। यही बहुओं का श्रृंगार है, यही सौन्दर्य है, यही जीवन है और यही पातिव्रत्य भी है।

गिनतिन बइठी है ढेरिया चन्दा देई (2)
सुन मेघा बिनती हमार, रानी के सोहागवा।
एक घरी बदरी क्षमा करो मेघा (2)
सो आजी मोरी देती है सोहाग, रानी के सोहागवा।
एक घरी बदरी क्षमा करो मेघा (2)
सो माता मोरी देती है सोहाग, रानी के सोहागवा।
एक घरी बदरी क्षमा करो मेघा (2)
सो चाची मोरी देती है सोहाग, रानी के सोहागवा।
एक घरी बदरी क्षमा करो मेघा (2)
सो फूफू मोरी देती है सोहाग, रानी के सोहागवा।

इस गीत में भी बिटिया को अपने विवाह में सोहाग के समय कहीं बरसात न हो जाये, इसकी चिन्ता हो गयी है। वह गिनती हुई बैठी रहती है, मेघ से प्रार्थना करती है कि हे मेघ! मेरी बिनती सुन लो। कृपया एक घड़ी तक क्षमा कर दो, पानी मत बरसाना, क्योंकि मेरी दादी माँ सौभाग्य दे रही हैं फिर माँ के सोहाग देने, चाची और फूफू के सोहाग देने के लिए भी प्रार्थना करती है कि पानी नहीं बरसना नहीं तो सोहाग का सिन्दूर पानी की बूंदों से बह जायेगा।

यह गीत भी सोहाग चाहने वाली की प्रार्थना का विषय बना हुआ है। वह बादल से कहती है कि एक घड़ी के लिए क्षमा कर देना, पानी मत बरसाना, क्योंकि मेरी दादी, माता, चाची, फूफू सभी सोहाग दे रही हैं। सिन्दूर अमर रहे, धुल न जाये इसलिए वह मेघ से प्रार्थना करती है, क्यों वही तो सताए हुए, तपाए हुए लोगों को धरती के प्राणियों को सुख–शान्ति देता है। यही मेघ भारत भूमि को कृषि प्रधान बना देता है,सारी जनता और प्राणियों की प्रार्थना सुनता है। यही समझती हुई मानो क्वांरी कन्या बादल से भरोसा करती है, न बरसने की एक घड़ी रुक जाने की प्रार्थना करती है, क्योंकि वह सोहाग का समय है।

इतनी दुःखित हइ सोइ हमारी लाड़ली बेटी (2)
चली है विदेशिया के साथ, रानी के सोहागवा।

बाप के रोए से गंगा बहति है (2)
माया रोवइं जलधार, रानी के सोहागवा।
चाचा के रोए से गंगा बहति है (2)
चाची रोवइं जलधार, रानी के सोहागवा।
भइया के रोए से छतिया फटति है (2)
पइ भउजिउ मन बउराइ, रानी के सोहागवा।

यह गीत बेटी की विदाई का है। उसकी विदाई एक ऐसे लड़के के साथ हो जाती है जो दूसरी जगह जन्मा, पला—पुसा और बड़ा हुआ, दूसरे स्थान पर रहता भी है। हमारी लाड़ली बिटिया इतनी दुःखी है कि वह अब विदेशी अर्थात् दूसरे स्थान पर रहने वाले के साथ जा रही है। उसके जाने पर माता—पिता, चाचा—चाची और भाई—भाभी सभी रोते हैं। उनके रोने का वर्णन यहाँ किया गया है। पिता के रोने से आँसुओं की ऐसी धारा बह रही है, लगता है गंगा जी वह निकली हैं परन्तु माँ के रोने से ऐसा लगता है जैसे जल की धारा बह चली है। यही दशा चाचा के रोने से गंगा प्रवाह की है, चाची भी रो—रोकर जल की धारा बहा रही है। भाई का दुःख इतना है कि छाती फटी जा रही है और भाभी भी रोती है, मन को बहलाती भी जाती है।

पिता और चाचा के रोने में पवित्रता है स्नेह की, बन्धन की विवेक की और बिछुड़ने की। अस्तु उसे गंगा की धारा ही कहा है परन्तु माँ और चाची का रोना—बिलखना व्यवहार का, वात्सल्य का, ममता का, दुलार का, प्यार का, सहचारित्व का है। उसे जलधार कहा है, यह निरन्तर फूटता—बहता रहता है। भाई साथ में रहा, खेला, खाया, लड़ा—झगड़ा, रोया, हँसा पर अब उसकी पीड़ा दुःख, असहय वेदना, मर्मन्तुक व्यथा सब रोने में समाई है। गीत में भाई के रोने से छाती फटती है, कहकर वहाँ तक पहुँचने का अनुराग है, परन्तु भाभी का मन बावला हो रहा है। वह हँसी व मजाक व्यंग्य व विनोद, क्रोध व मनुहार अब किससे कर पाएगी। ऐसा सोचती वह बावली हो रही है। इसमें ममता के आँसुओं को कई प्रकार से व्यक्त किया गया है।

अरे हमरे पछितिया है नउआ बेटउना (2)
अरे हमरे ससुर नउआ जायं, रानी के सोहागवा।
अरे सासुजी से कहबै भेंट अकबरिया (2)
अरे ससुरू से कहबै समझाइ कि, रानी के सोहागवा।
अरे झिलमिल चुनरिया न लाए मोरे सासुजी (2)
अरे देत सोहाग झरि जाइ, रानी के सोहागवा

अरे जेठनी से कहे नउआ भेंट अकबरिया (2)
अरे जेठा से कहे समझाइ, रानी के सोहागवा।
अरे झिलमिल चुनरिया न लाए मोरी जेठनी (2)
अरे देत सोहाग झरि जाय, रानी के सोहागवा।

यह गीत भी बेटी की भावनाओं से भरा हुआ है, बेटी गीत गाती है कि हमारे घर के पीछे नाई का बेटा रहता है और हमारे ससुर जी नाई के घर की ओर जाते हैं। सन्देश देती है, कि मेरी सास जी से भेंट अंक बार या गले लगाना कहना और ससुर जी को समझा देना सासुजी मेरे लिए झिलमिलाती चुनरी नहीं लाएँ है नहीं तो सोहाग देते समय झर जायेगी। यही बात जेठानी के लिए भी कहती है कि उन्हें मेरा गले से मिलना अंकमाल देना– कह देना और जेठ जी को समझा कर कह देना कि मेरे लिए झिलमिलाती चुनरी नहीं लाएँ हैं, इससे सोहाग देते ही सब झर जायेगा।

अभी–अभी रिश्ता बना है, परन्तु अपनापन ऐसा कि साड़ी झिलमिलाती नहीं लाने के लिए कह रही है, क्योंकि इसमें से सिन्दूर झड़ जायेगा, गिरता रहेगा। वह सोहाग के लिए काम नहीं आएगी। होने वाली बहू को सिन्दूर की ही चिन्ता हो रही है।

अरे काहे का आही मलयागिरि चन्दन (2)
त काहे के बेलहरी के पान, रानी के सोहागवा।
अरे काहे का सेआवै आपन ढेरिया (2)
पै चली है विदेशिया के साथ, रानी के सोहागवा।
धरम का आहीं मलयगिरि चन्दन (2)
रचवइ बेलहरी के पान, रानी के सोहागवा।
जाइ का सेआवइं आपनि ढेरिया (2)
पै जइहै रे विदेशिया के साथ, रानी के सोहागवा।

इस गीत में सेवन, लालन–पालन की गयी बेटी को पराए के साथ भेजने का अकाट्य सत्य कहा गया है। यह मलयागिरि चन्दन किस के लिए होता है? इसी प्रकार बेलहरी (पान रखने का पात्र) का पान किसके लिए होता है? यही प्रश्न है कि बेटी का लालन–पालन किसके लिए किया जाता है? उत्तर है कि मलयागिरि चन्दन तो धरमाचरण के लिए है और मुँह रचाने के लिए बेलहरी का पान है। अपनी बेटी पालने पोसने के लिए है। वह तो अवश्य ही दूसरों के साथ ही जायेगी।

इस गीत में बिटिया की सेवा का सत्य प्रकाशित हुआ है। मलयागिरि चन्दन

लगाओगे, तो पूजा करोगे, लगाकर पान बेलहरी में रखोगे तो पान खाकर मुख रच लोगे, परन्तु बेटी की बचपन से सेवा करना, पालन पोषण करना, बढ़ाना, खिलाना, पिलाना और सजाना इसलिए ही है कि वह किसी की बहू बनेगी।

छम–छम घोड़िला हाथिन केरी पतिया (2)
कि साजि लाए डोलिया कहार, राजा के सोहागवा।
सिर मउरिया सुरुज उजियरिया (2)
औ चान्दी जैसे चमकै लिलार, राजा के सोहागवा।
सोने अइसी देहिया कमल मुख रनिया (2)
कि चन्दन जइसन आवइ सुवास, रानी के सोहागवा।
जामा है केशरिया पियर परदनिया (2)
और बांधे हमैं फेंटा औ कटार, राजा के सोहागवा।

सजा हुआ घोड़ा छम–छम करता हुआ चल रहा है, हाथी अपनी पात में ही चल रहे है। इसी बीच कहार डोली सजा कर ले आते हैं। सिर में मौर बंधी है जो सूर्य के समान चमक रही है, ललाट तो चाँदी जैसे चमक रहा है। शरीर भी सोने जैसा गोरा है और मुँह कमल के समान सुन्दर और कोमल बना हुआ है। चन्दन जैसी सुन्दर गन्ध आ रही है। पीली–पीली धोती पहने हैं और केशर रंग का जामा पहने हुए हैं। कमर में फेंटा बंधा हुआ है, जिसमें कटार लगी या बंधी हुई है। यही दूल्हे का श्रृंगार है। इसमें केवल दूल्हे की सजावट का वर्णन किया गया है।

अरे लाली लाली डोलिया जड़े रे हीरा मोतियां (2)
अरे लपकत आवै रे कहार, रानी के सोहागवा।
अरे बाप उनके रोमै उरमाल मुख पोंछैं (2)
अरे माता उनकी रोवैं निराधार, रानी के सोहागवा।
अरे चाचा उनके रोमै उरमाल मुख पोंछैं (2)
अरे चाची उनकी रोवैं निराधार, रानी के सोहागवा।
अरे भइया उनके रोमै उरमाल मुख पोंछैं (2)
अरे भाभी उनकी रोवैं निराधार, रानी के सोहागवा।
अरे मामा उनके रोमै उरमाल मुख पोंछैं (2)
अरे मामी उनकी रोवैं निराधार, रानी के सोहागवा।
अरे संगी उनके रोमै उरमाल मुख पोंछैं (2)
अरे गुइयां उनकी रोवैं निराधार, रानी के सोहागवा।

उस डोली (पालकी) का निरूपण है, जिसे लाल–लाल रंगों से सजाया गया है। उसमें हीरे–मोती जड़े हुए हैं, कहार लोग जो डोली लेकर आ रहे हैं, वे चमक रहे हैं। बिटिया की विदाई में उसके पिता जी रोते हैं, आँसू रुमाल से पोंछते हैं, उनकी माता भी रोती हैं, उनकी आधार बेटी की विदाई हो रही है। अस्तु निराधार होकर वे रो रही हैं। उनके चाचा भी रोते हैं और रुमाल से मुंह पोंछ रहे हैं चाची निराधार होकर रो रही है। इसी प्रकार बेटी के भाई, मामा और साथी सब रोते जाते हैं और रुमाल से आँसू पोंछते जाते हैं तथा भाभी, मामी और सखियाँ निराधार होकर रोने लगती हैं।

एक बिटिया माता–पिता, चाचा–चाची, भाई–भाभी, मामा–मामी, सहेली सबसे हिलमिल कर आधार बनी रहती है। अतः उसके जाने पर सभी निराधार होकर रोते रहते हैं, यही गीत बन गया है।

इतनी कठिन अंसुअन की घड़ी है (2)
डोलिया लै के चले हां कहांर कि, रानी के सोहागवा।
अरे आजा उनके रोमइं रूमाल मुख पोछइं (2)
आजी उनकी रोमइं निरधार कि, रानी के सोहागवा।
अरे बाबू उनके रोमइं रूमाल मुख पोछइं (2)
अम्मा उनकी रोमइं निरधार कि, रानी के सोहागवा।

प्रथम पंक्ति ही इसमें अलग है पूर्व गीत शेष जैसा ही है। यह गीत बेटी की ममता का– स्नेह का अलग होते समय घर–परिवार के लोगों की दशा का है। बेटी की विदाई पालकी में होती थी। पालकी को कहार लेकर चलते थे। जैसे ही डोली लेकर वे चलते हैं, वैसे ही बेटी रो पड़ती है। उसकी आँसुओं की धारा इतनी कठिन है कि वह बड़ी मार्मिक है। यह दृश्य परिवार के फूटने का है, रोने का है। दादा जी फूट–फूट कर रो पड़ते हैं। रुमाल या अंग पोंछणी से मुख पोंछते हैं, आँसू पोंछते हैं, परन्तु बिटिया की दादी बिलख बिलख कर निराधार रूप से रोने लगी। यही दशा बेटी के पिता की भी है, वे रोते हैं, रुमाल से आँख–मुँह पोंछते हैं, परन्तु बेटी की माँ की रोने की स्थिति बेहाल है।

अरे सोने के पिंजरबा से उड़ा रे सुअनवा (2)
अरे कजली बन डाले हइ बसेर, रानी के सोहागवा।
अरे पिता उनके पोथिया बांचत हइं (2)
अरे अम्मा उनकी अरथ लगाइं, रानी के सोहागवा।
अरे चाचा उनके पोथिया बांचत हइं (2)

अरे चाची उनकी अरथ लगाइं ,रानी के सोहागवा।
अरे मामा उनके पोथिया बांचत हइं (2)
अरे मामी उनकी अरथ लगाइं, रानी के सोहागवा।
अरे भइया उनके पोथिया बांचत हइं (2)
अरे भाभी उनकी अरथ लगाइं, रानी के सोहागवा।

एक सोने से बनाया गया पिंजड़ा है, उसी में तोता पाला गया है। वह तोता पिंजड़े से उड़ जाता है और चलकर कजली वन में पहुँच जाता है, वहीं निवास करता है। बेटी के पिता जी पुस्तक पढ़ते हैं और उनकी माता जी उसका अर्थ बताती जा रही हैं। इसी प्रकार चाचा के पुस्तक पाठ का चाची, मामा के पुस्तक पाठ का मामी और भाई की पुस्तक पढ़ने का उनकी भाभी अर्थ लगाती जाती है।

संभवतः वह तोता ही दूल्हा है। कजलीवन उसकी ससुराल है। वहाँ पिता, चाचा, मामा, भाई की पोथी में जो भी लिखा हो, परन्तु माँ, चाची, मामी और भाभी यही अर्थ लगा रही होगी कि बिटिया रानी को विदा कर दो।

कहंमय उपजी लहालह दुबिया (2)
कहंमइ उपजे हैं पान, रानी के सोहागवा।
कहंवा उपजे हैं दुलरे दुलेरूआ (2)
मुखवन चुअइ ओगार, रानी के सोहागवा।
कोलिया मां उपजी लहालह दुबिया (2)
बरई बरेजे मां पान, रानी के सोहागवा।
कोखवा मां उपजे हैं दुलरे दुलेरूआ (2)
मुखवा चुअय ओगार, रानी के सोहागवा।

छोटा सा गीत है जो दूल्हे के जन्म की पृच्छा की शान्ति के साथ ही पूरा होता है। दूब लम्बे–लम्बे फुनगों के साथ कहाँ पैदा होती है और पान के बड़े–बड़े पत्ते कहाँ पैदा होते हैं। प्यार–दुलार से भरे पूरे दूल्हे ने कहाँ जन्म लिया है, क्योंकि उसके मुख से रस झर रहा है। यह दूब तो घर के पीछे के खाली पड़े खेत या कोलिया में पैदा हो जाती है और बरई या तमोली के बरेज अर्थात् पान के पेड़ों के समूह से पत्ता प्राप्त होता है। दुलारा दूल्हा कोख में पैदा हुआ है, जिसका मुख अत्यन्त सरस या रसीला है। दूर्वा में रस सदा रहता है और पान मुँह में जाकर सरस बनता है। दूब सदा हरी रहती है, जेठ की तपन व धूप में भी वह हरी–भरी बनी रहती है। गृहिणी सदा दूब की भाँति पोर–पोर से जड़ जमाती है, विस्तार करती है, पैदा हो जाती है, परन्तु पान तो

थोड़ी सी गर्मी में ही सूख जाता है और उसे मुँह में रखने पर सरसता हो जाती है। यह उस व्यक्ति के समान है, जो बहुत संभाल कर सरस हो पाता है।

सिकिया के डड़िया फंदाबा मोरे भइया (2)
हो चला कमरू के देश, रानी के सोहागवा।
कमरू के देशबा बहुत दूरि बहिनी (2)
मरि जाबइ भुभुरू अउ घाम, रानी के सोहागवा।
गलिअइ गलिअइ भइया छत्र तनउबइ (2)
पइनहिं लागी भुभुरी औ घाम, रानी के सोहागवा।
कमरू के देशबा बहुत दूरि बहिनी (2)
मरि जाबइ भुखिया पियासि, रानी के सोहागवा।

बेटी अपने भइया से आग्रह कर रही है कि सींक अर्थात् पतली फुनगी या घास का टुकड़ा सजा–सजाकर डोली बनवा लो और कामरूप के देश चले चलो। भाई कहता है बहन कामरूप का देश तो बहुत दूर पड़ेगा। इतनी धूप में तप जायेंगे और धूप में गर्म हुई, जलती हुई धूल या भूभुरि में झुलस जायेंगे। तब बहन ने कहा कि सारे रास्ते भर अर्थात् गली–गली में मैं छत्र लगवा दूँगी। जिससे न घाम ही लगेगा और न ही जलती हुई धूल (भूभुरि) ही पैर जला सकेगी। दूसरी बात भाई फिर कहता है कि बहन जी कामरूप बहुत दूर है। भूख और प्यास से दोनों मर जायेंगे। इसमें विवाह के बाद बहन भाई से शिकायत करती है कि कामरूप इच्छित ससुराल बहुत दूर है, धूप ताप भी है, तब वह अपनी ममता से बहन की रक्षा की बात करता है।

दमना औ ममरी के टटिया बंधाइनि (2)
जमरे दिहिनि ओंढ़काइ, रानी के सोहागवा।
ओहि चढ़ि बइठी हंइ बेटी कइ आजी (2)
देखइं लागीं नतिनी सोहाग, रानी के सोहागवा।
हमरा सोहागवा तूं का देखबू आजी (2)
पइ देखि लेतू भउजी सोहाग, रानी के सोहागवा।
ओहि चढ़ि बइठी हंइ बेटी के माया (2)
देखइ लागीं ढेरिया सोहाग, रानी के सोहागवा।

बेटी का सोहाग देखने के लिए दादी को कोई न कोई स्थान या आड़ चाहिए। दमना और ममरी नामक घास के पेड़ों से टटिया बनाकर किनारे में रख दी जाती है और उसी में चढ़कर या छिपकर दादी जी बैठ जाती है। वहीं से पोती का सुहाग देखने

लगती है। पोती कहती है कि दादी तुम हमारा सोहाग क्या देखोगी, भाभी का सोहाग देख लेना। उसी टटिया में चढ़कर बेटी की माँ भी बैठ जाती है और अपनी बेटी का सोहाग देखने लगती है। बिटिया का सोहाग शुभ विवाह का उत्सव सब देखना चाहती है। ऐसा अभिप्राय समझ में आता है।

अरे देहु न मोरी माया सोने के घइलबा (2)
अरे सियका हम लेबइ नहबाय, रानी के सोहागवा।
अरे देहु न मोरी माया सोने के गुलुइया (2)
अरे फुलबा तोड़न हम जाब, रानी के सोहागवा।
अरे फुलवा बिन चुन शिव का चढ़उवै (2)
अरे शिव जी क लेबइ मनाय, रानी के सोहागवा।
अरे देहु न मोरी माया भांग धतुरबा (2)
अरे शिव का हम देई चढ़ाय, रानी के सोहागवा।
अरे देहु न मोरी माया चूरी चुनरिया (2)
अरे गौरा माई से मंगबै सोहाग, रानी के सोहागवा।

विवाह के पूर्व बेटी माँ से कहती है कि माँ मुझे सोने का लोटा या कलश दे दो। हम शंकर जी को स्नान कराने जा रही हैं। फिर माता से टोकरी या छोटा वंशपात्र मांगती है कि माँ गुलुई दे दो। हम फूल तोड़ने या चुनने के लिए जा रहे हैं। ये फूल बीनकर, चुनकर मैं शिव जी को चढ़ाऊँगी और शिव जी को प्रसन्न कर लूँगी। मेरी माँ मुझे भांग और धतूरा भी दे दो, जिसे मैं शिवजी को चढ़ा दूँ। चूड़ियाँ दे दो, चुनरी दे दो, दोनों गौरा जी या पार्वती जी को चढ़ा दूँगी और उन्हीं से सोहाग मांग लूँगी।

सोने के कलश में जल, बाँस की टोकनी में फूल, भांग और धतूरे से शिव की उपासना, पूजा करना, परन्तु चूड़ी और चुनरी चढ़ाकर पार्वती को प्रसन्न करना चाहती है और यह उनसे सोहाग मांगना चाहती है।

लखियों लखन लाल नन्दिनी जनक जू की (2)
गिरिजा पूजन चली जायं, रानी के सोहागवा।
कंकण किंकिणि नूपुर बाजत (2)
कामदेव दुन्दुभी बजाय, रानी के सोहागवा।
बाग मां आइ लीन्हे संग सहेलियां (2)
फुलवा तोड़न चली जायं, रानी के सोहागवा।
फुलवा चुनि–चुनि गजरा बनाए (2)

दियो माथे गौरा के चढ़ाय, रानी के सोहागवा।
समली सुरतिया सिया के मन बसि गै (2)
गिरिजा सन अरजी लगाय, रानी के सोहागवा।
हमरे मनोरथ पुरवहुं माता (2)
राखौ तुमसे कुछ ना छुपाय, रानी के सोहागवा।
दशरथ सुत प्यारे कौशिल्या नन्दन (2)
मेरो मन लियो है चोराय, रानी के सोहागवा।
सुन्दर चितवनि अति मन भावति (2)
कामदेव गयो है लजाय, रानी के सोहागवा।
सुन्दरता है कहं लगि बरनउं (2)
वर चाही मोहिं रघुराय, रानी के सोहागवा।
सत्य असीस दियो सिय गौरा (2)
वर मिलि हैं दिल में जे समाय, रानी के सोहागवा।

श्रीराम ने लक्ष्मण जी से कहा कि– हे लक्ष्मण! देखो, जनक जी की बिटिया गिरिजा या पार्वती की पूजा करने के लिए चली जा रही है। उसके पैर में नूपुर, हाथ में कंकण और कमर में किंकिणी बज रही है। ऐसा लगता है यह कामदेव का नगाड़ा बज रहा है। साथ में उनकी सहेलियाँ भी हैं, वे बगिया में फूल चुनने के लिए चली जा रही हैं और यह गजरा गौरा के सिर पर चढ़ा दिया। कहने लगती है कि मुझ सीता के मन में तो साँवली–साँवली सूरत वाले राम बस गए हैं। माता पार्वती को याचना पत्र दे रही है। कहती है, माँ मेरी इच्छा पूरी कर दो, तुमसे कुछ भी छिपा कर नहीं रखा था। दशरथ के पुत्र और कौशल्या के नंदन ने मेरा मन चुरा लिया है। उनकी सुन्दर चितवनि दृष्टिपात मनभावनी है। उससे कामदेव भी लज्जित हो जाता है। सीता कहती है कि श्रीराम की सुन्दरता का वर्णन मैं कहाँ तक करती रहूँ, मुझे तो श्रीराम ही वर के रूप में, पति के रूप में चाहिए। गौरा जी ने सच में आशीर्वाद दे दिया कि जो तुम्हारे मन में प्रवेश कर गया है। वही पति तुम्हें मिलेगा।

इस गीत में जनक जी की पुष्पवाटिका का प्रसंग है, जहाँ श्रीराम और लक्ष्मण पूजा के फूल लेने गए है और सीता मिल गयी है।

जनकराज कै जनक नगरिया, जहं शिव धनुष कठोर। रानी के सोहागवा।
अजब धनुष सीय कर उठि गयो, तनिक लगा नहिं जोर । रानी ....
यह रहस्य काहू नाहि जानत, जानत है बस त्रिपुरारी। रानी के सोहागवा।

या जानत हैं परम परमेश्वर, जिनकी महिमा अपार। रानी के सोहागवा।
ज्ञान शिरोमणि जनक राज मुनि, कीन्हो प्रण सोच विचार। रानी के सोहागवा।
जो कोउ तोड़इ शिव की धनुहियां, ओईं लेइं सिय का विआहिं। रानी .....
सुनि प्रण देश के भूपति आए, सुर किन्नर तनु धारि। रानी के सोहागवा।
शंकर धनुष जमीं नहिं छोड़त सब नृप गए बल हारि। रानी के सोहागवा।
आखिर में धनुष खण्ड कियो हैं रघुवर, जासो सिय की प्रीति अपार। रानी .....
बरसि सुमन सुर जय–जय गावत, बाजत मृदंग सितार। रानी के सोहागवा।

राजा जनक की जनकपुरी नगरी है। वहाँ शिव जी का कठोर धनुष रखा हुआ है। यह अद्भुत धनुष सीता के हाथों उठा लिया गया। इसमें थोड़ी भी ताकत नहीं लगती है। इसका रहस्य कोई भी नहीं जान सकता, केवल शिवजी ही जानते है अथवा परमेश्वर प्रभु जानते हैं, जिनकी महिमा अपार है। ज्ञानियों में श्रेष्ठ श्री जनक जी हैं, जिन्होंने सोच–समझ कर ही प्रतिज्ञा की है। वे कहते हैं कि जो कोई शिव का धनुष तोड़ेगा। वही सिया का विवाह करेगा। यह प्रतिज्ञा सुनकर देश–विदेश के राजा आ गए। उनमें देवता भी थे, किन्नर भी थे जो मनुष्य जैसा रूप बनाकर आ गए थे परन्तु शंकर जी का धनुष धरती ही नहीं छोड़ रहा था। सारे राजाओं का बल पराजित हो गया है। अन्त में रामजी ने धनुष को टुकड़े–टुकड़े कर दिया। उन्हीं से सीता की अपार प्रीति थी। उस अवसर पर देवों ने फूलों की वर्षा की। सब ने जय–जयकार किया। सब ओर मृदंग सितार बजने लगते हैं।

इस गीत में भी सीता–राम विवाह प्रसंग गाया गया है।

बरसइ लागी सोहाग बदरी हो सोहाग बदरी।
अंगने बरसइ सोहाग बदरी, बहिरे बरसै सोहाग बदरी हो, रानी के सोहागवा।
दादी देयं सोहाग भरि मांग, बरसै सोहाग बदरी, रानी के सोहागवा।
चाची देयं सोहाग भरि मांग, बरसै सोहाग बदरी, रानी के सोहागवा।
अम्मा देयं सोहाग भरि मांग, बरसै सोहाग बदरी, रानी के सोहागवा।
भउजी देयं सोहाग भरि मांग, बरसै सोहाग बदरी, रानी के सोहागवा।

सोहाग का बादल बरसने लगता है। यह आँगन में भी बरसता है, बाहर भी बरसता है। यह सोहाग कन्या को दादी जी देती है, चाची देती है, माता देती है, भाभी देती है ऐसा लगता है चारों ओर से सौभाग्य की वर्षा हो रही है। यह वर्षा बादलों से ही होती है और सोहाग के बादलों की बरसात हो रही है।

इस गीत में बादल को ही सोहाग कहा गया है ओर वह चारों और से बरस रहा है।

चन्दन के बिरबा रे बाबा, हीरा जड़ी है किवाड़ कि, रानी के सोहागवा।
सोउते हइकि जगते है दादा, द्वारे पै आड़ी है बारात कि, रानी के सोहागवा।
न सोइत हन न जागत हन हम बेटी, लागी है चिन्ता तुम्हार कि, रानी के सोहागवा।
सोइत है कि जागित हए चाचा, द्वारे पै अड़ी है बारात कि, रानी के सोहागवा।
न सोइत है न जागित है हम बेटी, लागि है चिन्ता तुम्हार कि, रानी के सोहागवा।
सोउते है कि जगते है भइया, द्वारे में अड़ी है बारात कि, रानी के सोहागवा।
न सोइत हइ न जागित है हम बहिनी, लागी है चिन्ता तुम्हार कि, रानी के सोहागवा।

चंदन का पेड़ लगा हुआ है और दरवाजे पर, किवाड़ों पर हीरे जड़े हुए हैं। बिटिया पूछती है कि दादा जी तुम सोते हो कि जागते हो दरवाजे पर बारात आ गयी है। वे बोले मैं न तो सो रहा हूँ, न ही जग रहा हूँ, बिटिया, तुम्हारी ही चिन्ता हमें लगी हुई है। वही प्रश्न चाचा से करती है कि सोते हो या जागते हो? द्वार पर बारात खड़ी है। चाचा ने भी कहा कि तुम्हारी चिन्ता से न सो पा रहा हूँ और न ही जग रहा हूँ। यही प्रश्न भाई से करती है और उसका भी वही उत्तर था। यह गीत बताता है कि बेटी के विवाह की चिन्ता से परिवार के लोगों को नींद नहीं आती है। उन्हें सदैव बेटी के विवाह विषयक विविध चिन्ताएँ सताती हैं।

सोइ गइ चिरैया सोइ गइ मुनैया, पै सोइगे शहरबा के लोग, रानी के सोहागवा।
एक नहिं सोए है बेटी के आजा, जिन घर नतिनी कुमार, रानी के सोहागवा।
एक नहिं सोए है बेटी के बाबू, जिन घर बेटी कुमार, रानी के सोहागवा।
एक नहिं सोए है बेटी के चाचा, जिन घर भतीजी कुमार, रानी के सोहागवा।
एक नहिं सोए है बेटी के भइया, जिन घर बहिनी कुमार, रानी के सोहागवा।

रात आ गयी, चिड़िया सो गयीं, बेटियाँ सो गयी हैं, नगर के लोग भी सो गये हैं पर बेटी के दादा जी नहीं सोए हैं, जिनकी पोती कुँआरी है। बेटी के पिता, चाचा और भइया नहीं सो सके हैं, क्योंकि उनकी बिटिया, भतीजी और बहन कुँआरी है।

यह गीत भी यही प्रमाणित करता है कि बेटी के विवाह की चिन्ता में घर के लोगों को नीद नहीं आती है। पशु–पक्षी भी सो जाते हैं, परन्तु परिवार जन इसी चिन्ता में नहीं सोते कि बिटिया का विवाह कहाँ, कब और कैसे हो पाएगा। विवाह होने पर भी इसकी सुख–सुविधा क्या और कैसे रहेगी। इसी प्रकार की चिन्ता में घर वाले परेशान रहे आते हैं और उन्हें नींद ही नहीं आती है।

इंटिया पथाया बाबू बंगला छवाया हो।
कि बंगला के चारिउ कइती झींझरी लगाया हो।
बंगला छवाया बाबू झींझरी लगाया हो।
कि बंगला के आस पास बसिगे सोनार हो।
बंगला के आस पास बसिगे सोनार हो।
कि गढ़ि सोनरा माथ बेदी बेटी का सोहाग हो, इंटिया...........
सींकिया के डड़िया फंदाबा मोरे भइया हो।
कि चले आवै कामरू के देश, रानी के सोहागवा।
कामरू के देशवा न जाहु मोरी बहिनी।
कि मरि जइहे भुंखवा पियास हो, रानी के सोहागवा।
बाबा के दुआरे हवै चन्दन केर बिरबा।
कि ओही तरी सेन्दुरा विकाय, रानी के सोहागवा।
पहिले जो अउतिउ ढेरिया बांटि चोटि देइत तोहऊं का देइत भरि मांग, रानी के...
ओहीं तरी ठाढ़ी हुई ढेरिया फलानी देई
ठाढ़े–ठाढ़े गई कुम्हिलाय हो कि, रानी के सोहागवा।
एतना किहिन हमै भइया फलाने राम झारि पोछि
लिहिन उचाय, रानी के सोहागवा।
अपनौ सोहाग बहिनी दइ राखा कि
बहिनी सोहगइली होइ जाय रानी के सोहागवा।

ईंट बनवाया, बंगला छवाया–बनवाया, बंगले के चारों ओर खिड़की (सच्छिद्र) लगवायी, बंगले के ही आस–पास सोनार बस गए। सोनार जी माथ बेंदी बना दो; जो बेटी का सौभाग्य है। बेटी अपने भइया से अपेक्षा करती है कि सींक की डड़िया बनवाओ, जिससे मैं कामरूप देवी चली जाऊँगी। भाई मना करता है कि कामरूप मत जाओ भूख प्यास से मर जाओगी। दादाजी के घर के दरवाजे पर ही चंदन का पेड़ है, जहाँ सिन्दूर बिक रहा है। संभवतः भाभी कहती है कि पहले आ जाती तो बाँट कर ले लेते और तुम्हें मांग भर कर सेन्दुर दे देते । वहाँ खड़ी–खड़ी बेटी तो सूख गयी। यह देखकर भाई ने बहन को उठा लिया। पत्नी से कहा कि अपना सोहाग बहन को भी दे दो। वह भी सौभाग्यवती हो जाय।

इसमें सोहाग सिन्दूर का ही बोधक है और सौभाग्यवती स्त्रियाँ ही सोहाग देती हैं। भाई बहन को सोहाग देने का आग्रह करता है।

मैं न जानू रे सोहाग होने लगा, चली है दुलारी बेटी पारबती पास (2)
पारबती का सोहाग मोरी बारी होइके लागा चन्द्र बदनियां होइ के लागा।
राज दुलारी होइ के लागा मैं ना जानूं रे सोहाग होने लागा (2)
चली है दुलारी बेटी पारबती पास, पारबती का सोहाग।
गढ़ कस्तूरी होइके लागा चोवा चन्दन होइ के लागा, अंतर गुलाबी होइ के लागा।
मैना चली है दुलारी बेटी पारबती पास, पारबती का सोहाग।
मंगिया सेन्दुर होइ के लागा हांथे मेहंदी होइ के लागा।
पांव महाउर होइ के लागा मै ना जानूं रे सोहाग होइ के लागा।

यह सोहाग गीत पारम्परिक नहीं लगता, परन्तु यह सोहाग विषयक वर्णन ही करता है। बहू बनना बेटी के स्वरूप को बदलना है। बेटी को समझ में नहीं आता कि कब उसमें सौभाग्य उदय होने लगता है, वह प्यारी बेटी पारबती के पास चल देती है, पारबती का सोहाग उसे मिलता है। चन्द्रवदन बना देता है। सारे सौन्दर्य के उपक्रमों को निखार देता है, राजदुलारी बना देता है। गढ़ कस्तूरी के समान, चोवा चन्दन के समान, गुलाब के इत्र के समान, यह सोहाग कन्या में समाहित हो जाता है। हाथ में मेहंदी लग जाती है। सिर में सिन्दूर आ जाता है। पैरों में महावर लग जाता है। यही तो सोहाग या सौभाग्य के लक्षण हैं। कन्या से बहू बन जाने में ये ही सोहाग क्रियाएँ कारक होती हैं। पहले से अब यही अन्तर आ जाता है। सोहाग या सिन्दूर ही बहू की पहचान है। यह रेवांचल का पारम्परिक सोहाग गीत नहीं है। सोहाग के समय कहीं–कहीं गाया जाने वाला यह गीत है।

कैसे घुमड़त आवइ सोहाग विरवा।
कैसे चमकत आवइ सोहाग विरवा।
तेरे बाबा जी के आंगन सोहाग विरवा।
दादी रानी ने सींच दिया भर गेंडुआ।
तेरे दादा जी के आंगन सोहाग विरवा।
ताई रानी ने सींच दिया भर गेंडुआ।
तेरे बाबू जी के आंगन सोहाग विरवा।
अम्मा रानी ने सींच दिया भर गेंडुआ।
तेरे भइया जी के आंगन सोहाग विरवा।
बहू रानी ने सींच दिया भर गेंडुआ।
तेरे चाचा जी के आंगन सोहाग विरवा।

चाची रानी ने सींच दिया भर गेंडुआ।
तेरे फूफा जी के आंगन सोहाग विरवा।
फूफू रानी ने सींच दिया भर गेंडुआ।
तेरे नाना जी के आंगन सोहाग विरवा।
नानी रानी ने सींच दिया भर गेंडुआ।
तेरे मामा जी के आंगन सोहाग विरवा।
मामी रानी ने सींच दिया भर गेंडुआ।
तेरे मौसा जी के आंगन सोहाग विरवा।
मौसी रानी ने सींच दिया भर गेंडुआ।

सोहाग एक मानसिक दशा है, परन्तु इसे पेड़ के रूपक से समझा गया है। घर–घर की बेटी सौभाग्य पाकर बहू बन जाती है और इस सारे नाते–रिश्ते हैं। यह सोहाग का पेड़ घुमड़ते–चमकते आता है। बाबा के सौभाग्य वृक्ष को दादी ने सींचकर बड़ा किया है, दादा जी और ताई रानी, पिता और माता, भाई और भाभी, चाचा चाची, फूफा–फूफू, नाना–नानी, मामा–मामी, मौसा–मौसी सब अपने आंगन में पली–बढ़ी बिटिया का सोहाग के पेड़ के समान लालन–पालन करते हैं और स्नेह जल से सींचते बढ़ाते रहते हैं। वही लोटे का जल सौभाग्य के समय विवाह के समय संकल्प जल हो जाता है और बिटिया सौभाग्य कांक्षिणी से सौभाग्यवती बन जाती है। यह गीत भी पारम्परिक सोहाग गीत नहीं है।

सो ऐसी री सोहाग मैंने घोर–घोर पाई।
सुहगवा की क्यारी उनके आजा ने लगाई।
सींचे उनकी आजी सिचावै बेटी लाड़ली। सो ऐसी.........
सुहगवा की क्यारी उनके दद्दा ने लगाई।
सीचैं उनकी माता सिंचावै बेटी लाड़ली। सो ऐसी...........
सोहगवा की क्यारी उनके चाचा ने लगाई।
सींचे उनकी चाची सिंचावै बेटी लाड़ली। सो ऐसी...........

यहाँ भी सोहाग का क्यारी से संबंध निरूपित किया है। पितामह और दादी ने मिलकर बेटी को क्यारी के समान सम्हाल कर बढ़ाया है। माता पिता और चाचा–चाची ने भी उसे प्यार से सींच कर बढ़ाया है। यह सोहाग विषयक गीत तो है परन्तु पारम्परिक नहीं है।

नीले–नीले घोड़िला पतर असबरवा, बांधे कुसुम रंग पाग, राजा के सोहागवा।

घोड़िला कुदावत निकले दुल्हेरूआ, ठाढ़े जनक जी के द्वार राजा ....
भितरे से निकली है बेटी लाड़िला देवी, करत दुल्हेरूआ से बात कि राजा..
की तुम जाबै हो राजा दरबजवा, की तुम ठकुर दुआर, राजा के सोहागवा.
ना हम जाबइ त राजा दरबजवा, ना हम ठकुर दुआर राजा ....
हम तौ जाबइ जनक जी के द्वारे, जे के घरे सीता कुमार राजा ....

पतले शरीर का दुल्हा नीले रंग के घोड़े पर सवार होकर पीली पगड़ी बांध कर आ रहा है। अपने घोड़े को कुदाते हुए, दौड़ाते हुए दूल्हा जनक जी के दरवाजे पर आ जाता है। घर के भीतर से प्यार–दुलार से भरी हुई बिटिया निकलती है और दूल्हे से बातचीत करने लगती है कि दूल्हा जी, तुम राजा के दरबार या सभा में जा रहे हो अथवा ठाकुर के द्वार पर जा रहे हो? तब वह कहता है कि मैं कहीं नहीं जाऊँगा। मैं तो जनक जी के दरवाजे पर जाऊँगा, जिनकी बेटी सीता अभी भी कुँआरी है।

गोड़रा खिंचाय रामा बनका चले है गोडरा नमन होइ जाइ। रानी के सोहागवा
बन से लउटे हैं राम औ लछिमन कहां गयी सीता हमार। रानी के सोहागवा
की मोरी सीता रानी धरती समानी की रे धरे है सिंह बाघ। रानी के सोहागवा
ना मोरी सीता देवी धरती समानी ना रे धरेसि सिंह बाघ। रानी के सोहागवा
पूरब दिशा से आओ एक जोगिया सीताहरण होइ जाय। रानी के सोहागवा
अस नहिं आए कोउ धरम नगरिया सीता की पता लगि जाय। रानी के सोहागवा
धरम नगरिया है हनुमत भइया सीता के पता लगि जाय। रानी के सोहागवा

श्रीराम जी सीता को घेरे के अन्दर करते हुए वन की ओर चल देते हैं। वह घेरा ही नमस्कार योग्य हो जाता है। राम और लक्ष्मण वन से लौटते हैं और ढूंढने लगते हैं कि मेरी सीता कहाँ गयी हैं। क्या मेरी सीता देवी धरती में प्रवेश कर गयी है अथवा उन्हें सिंह–व्याघ्र आदि पशुओं ने खा लिया है। न तो सीता धरती में प्रविष्ट हुई है और न ही बाघ, शेर ने उन्हें खाया है। पूर्व दिशा से एक योगी आया था और सीता को चुरा ले गया है। इस धर्म की नगरी में कोई भी ऐसा नहीं है कि सीता का पता चल जाय। इस धर्म की नगरी में केवल भाई हनुमान ही है जो सीता का समाचार ले जाएंगे।

बेलनहाई गारी

रेवांचल में किसी भी शुभकार्य में भोजन कराने की उदात्त परम्परा रही है। गाँव के घरों से महिलाएँ बेलन और पीढ़ा लेकर पूड़ी या सोहारी बेलने के लिए आ जाती हैं और कण्ठ से मंगलगान गाती हैं और हाथ से पूड़ी बेलती हैं। इन गीतों में संबोधन सूचक एजी को बार–बार दोहराया जाता है। सारी रात इन गीतों से गुंजारित होती रहती है। पूड़ी बनती जाती है। अगले दिन भोज होता है। कभी–कभी उसी दिन भोजन बनता है और भोज भी उसी दिन होता है। इस उत्सव में होने वाले इन गीतों का सरस संगीत वातावरण में रचता–बसता रहता है और बनने वाले भोजन में मिठास घोलता रहता है।

रेवांचलीय शुभ कार्यों की यही विशेषता है, जिसमें लोकरस बरसता है। यहाँ श्रीराम से अनुप्राणित सोहर तो होती ही है। बधाइयाँ तो गायी ही जाती हैं, बरुआ में भी राम ही रिसाने में गाए जाते हैं। पूड़ियाँ इष्ट मित्रों, ब्राह्मणों, बन्धुओं के भोजन हेतु बनती हैं, तब भी 'सिया ऐसी सुन्दर नारि रमैया संग बन का गयी' गीत में राम कथा ही झरती है। कभी जनक के यहाँ कड़ाही में पूड़ी सेंकने के लिए लकड़ी लाने बढ़ई जाता है, पर वह पीपल में भगवान् के बसने, तुलसी को भगवान् को चढ़ाए जाने से, चन्दन के भगवान् की पूजा में लगने से लकड़ियों का निषेध भी है और उनका अर्थात् वनस्पतियों का महत्व भी लोकगान ही बना देता है। ये बेलनहाई गीत ही नहीं, बल्कि लोक जीवन में रस की वर्षा कराते हैं। इनमें कभी रामकथा, तो कभी श्रीकृष्ण लीला, कभी परिवार का उल्लास तो कभी लोकविश्वास को प्रकट किया जाता है। ऐसा लगता है कि इन गीतों में लोक चित्र, लोकजीवन, लोक वृत्तियाँ और लोकविश्वास साद्यन्त गुम्फित रहता है। नाते रिश्ते इन्हीं में दिखते–बढ़ते हैं, लोक ममत्व यहीं बिम्बित होता

है। लोक प्रवृत्ति यहीं अपने भावों, धुनों, कथ्यों, सम्बोधनों में तरंगित होती रहती है। बालिकाएँ, बहुएँ, माताएँ सब जी भर कर अपने अपने सुरों का अभ्यास इन्हीं गीतों के सुरों में करती हैं इनका स्वर, धुन और यति लय सब कुछ लोककेन्द्रित है, लोक प्रेषित है और उन्हीं का ही है।

ए जी सिया ऐसी सुन्दरि नारि रमइया संग बन का चली।
ए जी उलटि निहारै श्रीराम कि आजी उनकी रोवति खड़ी।
मोरी आजी का दिहे समुझाइ त धीरज धरि के रहैं।
ए जी उलटि निहारैं श्रीराम कि माया उनकी रोवति खड़ी।
मोरी माया का दिहेउ समुझाइ त धीरज धरि के रहइं।
ए जी उलटि निहारैं श्री राम कि चाची मोरी रोवति खड़ी।
मोरी चाची का दिहे समुझाइ त धीरज धरि के रहइं।
ए जी उलटि निहारैं श्री राम कि भाभी उनकी रोवति खड़ी।
मोरी भाभी का दिहे समुझाइ त धीरज धरि के रहइं।
ए जी उलटि निहारैं श्री राम कि भाभी उनकी रोवति खड़ी।
मोरी भाभी का दिहे समुझाइ त धीरज धरि के रहइं।

परस्पर सखियाँ पूड़ी बेलते समय गाते–गाते कुछ ऐसा कहने लगती हैं कि सीता जैसी सुन्दर स्त्री रामजी के साथ वनवास को चली गयी। जाते समय श्रीराम जी पीछे मुड़कर देखते हैं तो पाते हैं कि उनकी दादी रोती–रोती खड़ी है। तब वे कहते हैं कि मेरी दादी को समझा देना, जिससे वे धीरज से रहें। इसी प्रकार वे पीछे मुड़कर देखते हैं तो उनकी माँ, चाची, भाभी, मामी सब रोती हुई खड़ी दिखती हैं और सबको समझाने के लिए– धीरज पूर्वक रहने के लिए श्रीरामजी ने अनुरोध किया है।

यह गीत एक ओर राष्ट्र कार्य के लिए सीता व राम के वनवास का विवरण देता है तो दूसरी ओर सारे संबंधों की परवाह भी करता है सीता का राम के साथ वन जाने का लोकादर्श भी प्रस्तुत करता है। तटस्थ भाव से सीता और राम का घर से बाहर जाना संबंधियों को रुलाता है और राम उन्हें धैर्य बंधाने का सन्देश देते हैं, क्योंकि उनका जाना लोक जीवन, लोक संस्कृति और लोक आस्था की रक्षा के लिए बहुत आवश्यक है।

ए जी गो द्विज विप्र देव हित कारण राम लिहिनि अवतार।
ए जी मनु शतरूपा प्रभु के कारण किहिनि कठिन तप भार।

ए जी तिन्ह कहं प्रभु जी वचन दिए हैं हम सुत होवइ तुम्हार।
ए जी ओईं दशरथ कौशिल्या बने हैं जब जनमें है चारि कुंआर।
ए जी राम भरत लछिमन रिपुसूदन हैं शेषा अवतार।
ए जी रावण कुम्भकरण खल जनमें बढ़े बहुचोर जुआर।
ए जी मानै मात पिता नहिं देवता मुनि कर करैं जेउंनार।
ए जी गौआ रूप धरि धरा अकुलानी सुर पुर करिसि पुकार।
ए जी मानुस तनु धरि जनम लियों प्रभु निशिचर कीन्ह संहार।

गाय, ब्राह्मण, द्विजाति और देवताओं का कल्याण होता रहे; यह सोच–समझ कर ही श्रीराम ने मनुष्य के रूप में अवतार लिया था। मनु और शतरूपा ने भी प्रभु के कारण ही बहुत तपस्या की थी। उन्हें भगवान् ने वचन दिया है कि हम तुम्हारे पुत्र होगें। वे ही आकर दशरथ और कौशल्या हुए हैं। उन्हीं के चार लड़के पैदा हुए हैं, उनके नाम राम, भरत, लक्ष्मण, और शत्रुघ्न हैं। रावण, कुम्भकर्ण आदि दुष्टों ने जन्म लिया और चारों ओर चोर और जुआरी बढ़ गए हैं। वे माता–पिता, देवता, मुनि किसी को नहीं मानते हैं। मुनियों का ही भोजन करते हैं। गाय का रूप धारण कर धरती व्याकुल हो उठी और देव लोक में पुकार करने लगती है। मनुष्य रूप में जन्म लेकर प्रभु ने निशाचरों का संहार कर दिया।

यह गीत रामकथा परक है, परन्तु धरती अपना कष्ट प्रकट करने के लिए गाय बन जाती है, एक तो धरती जो सर्वं सहा है, सब सहती रहती है, क्षमा करती रहती है और अपना सब कुछ देती रहती हैं। वह भी अपनी सन्तानों से उनके आचरणों से दुःखी हो जाती है। गाय भी अपना सब कुछ धरती के लिए, उसकी सन्तान के लिए समर्पित कर देती है। स्वयं धरती का चारा–घास खाती है। अनाज धरती की सन्तति खाती हैं वह भूसा खाती है, परन्तु वही दुःखी होती है तो भगवान् भी मनुष्य बन जाते हैं और मनुष्य रूप में अनाचारी–कदाचारी राक्षसों का विनाश करते हैं।

मुनि जी के संग बालक दुइ आए शोभा बरनि न जाई जी।
माथे तिलक काने कुण्डल सोहै गले वैजन्ती की माला जी।
हांथे औ गोड़े चूड़ा भल सोहे कमर सोहइ चौरासी जी।
छोटे–छोटे गोड़िला खड़ाऊं भल सोहै ठुमुकि–ठुमुकि पगु धारइं जी।
गोड़ धोवन कहं कोपरी मंगाइनि सही गंगा बहि आवै जी।
रुचि–रुचि के मैं जेवना बनायउं परसिनि कंचन थारी जी।

मुनि विश्वामित्र के साथ दो बालक आए हैं, जिनकी सुन्दरता का वर्णन नहीं किया जा सकता है। उनके मस्तक पर तिलक लगा है। कानों में कुण्डल का आभूषण है और गले में वैजयंती की माला पड़ी हुई है। हाथों और पैरों में सुन्दर चूड़े सुशोभित हो रहे हैं। छोटे–छोटे पैरों में खड़ाऊँ (पादुकाएँ) बहुत अच्छे लग रहे हैं। वे ठुमकते हुए पैर भी रखते जा रहे हैं। पैर धोने के लिए कोपर बड़ी थाल मंगायी गयी हैं ऐसा लगा कि गंगा जी ही पैर धोने के लिए चली आयी हैं। अनेक रुचि पसन्द या स्वाद के भोजन बनाए गए और सोने की थाल में ही परोस कर खिलाया गया है।

गीत में रामायण का प्रसंग अंकित है। दो बालक ही श्रीराम और लक्ष्मण हैं। उनका श्रृंगार वर्णन करने के बाद पैर धोने के लिए पवित्रता के निरूपण में गंगा का वर्णन कर दिया और विविध भोजन को सोने की थाली में सजा देने का विधान वर्णित है।

धनुष यज्ञशाला में मुनि जी आए दो बालक ले आए।
श्री श्यामल रघुराई गोरे लछिमन हैं भाई शोभा बरनि न जाई तनि दूर से देखाई।
धन्य उनकी माता जिन गोद में खिलाई दुइ बालक ले आए। धनुष ....
बोले लछिमन से राम, होने लगी धूम धाम, करो इतना सा काम।
शेष नाग जी को तुम जाके बचाओ दो बालक ले आए । धनुष................
धनुही तोड़ने को काम धनुही कोप से उठाए, धनुही तोड़े न टूटी।
धनुही तोड़े श्रीरामचन्द्र जी ने जो बाजे बधाई, दो बालक ले आए। धनुष ....
सीता भीतर से आईं साथें जेवर लैके आईं सीता जेवर लगी पहिनावै।
प्रेम वश जेवर पहिनाय न जाईं, दो बालक ले आए। धनुष यज्ञ............

धनुष यज्ञ की शाला में जब मुनि विश्वामित्र जी आते हैं तो बालक भी लेकर आते हैं। श्रीराम चन्द्र जी सांवले रंग के हैं, भाई लक्ष्मण जी गौर वर्ण के हैं। उनकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता है, वे दूर से ही दिखाई पड़ रहे हैं। उनकी सुन्दरता देखकर ऐसा लगता है कि उनकी माता जी भी धन्य है, जिन्होंने अपनी गोद में उन्हें खिलाया है। श्री रामजी लक्ष्मण जी से बोलते हैं कि धूम–धाम हो रही है, इसलिए तुम इतना काम कर दो कि शेष नाग जी को बचा लो, क्योंकि ये दोनों बालक आ गए है। इनका काम धनुष तोड़ना है। क्रुद्ध होकर धनुष उठाते हैं परन्तु वह तो तोड़ने से नहीं टूटता है, परन्तु श्रीराम चन्द्र जी ने धनुष को तोड़ दिया और बधाइयाँ बजने लगती हैं। भीतर से सीता जी आती हैं, साथ में आभूषण लेकर आती हैं। सीता आभूषण पहनाने लगती हैं, परन्तु प्रेम के कारण गहने पहनाए नहीं जा रहे हैं। यह गीत भी श्रीराम विवाह के धनुर्भंग प्रसंग को उद्धृत करता है।

रामलषन तपसी दोउ भइया साधू बनय चले जायं मोरे राम।
चलत–चलत साधू कुंअना मां पहुंचे कहरिन के जिया घबड़ाइ मोरे राम।
ऐ साधू भइया जरा तुम ठहरो घइला डुबाइ लिहे जाउं मोरे राम।
तोर भरा पानी न पिअउं कहरिन साधू धरम घटि जाइ मोरे राम।
चलत–चलत साधू बगिया मां पहुंचे मालिन के जिया घबड़ाइ मोरे राम।
ऐ साधू भइया जरा तुम ठहरो गजरा गुहाइ लिहे जाहु मोरे राम।
तोर गुहा गजरा न लेबइ मालिनि साधू धरम चला जाय मोरे राम।
चलत–चलत साधु तालाब पहुंचे धोबिन के जिया घबराइ मोरे राम।
ऐ साधू भइया जरा तुम ठहरो कपड़ा धुलाए लिहे जाहु मोरे राम।
तेरा धुला कपड़ा मै न लेबइ धोबिन साधू धरम चला जाय मोरे राम।

दोनों भाई श्रीराम और लक्ष्मण हैं और दोनों भाई साधू बनने के लिए चले जा रहे हैं। चलते हुए दोनों साधू कुँए में पहुँच जाते हैं तो कहारिन का जी घबड़ाने लगता है। कहने लगती है कि साधु भइया थोड़ा रुक जाओ, मैं एक घड़ा डुबाकर पानी ले लेती हूँ, तब वे साधु बोले–कहारिन तुम्हारा भर कर लाया गया पानी हम नहीं पीएंगे, क्योंकि मेरा साधु धर्म कम हो जायेगा। इसी प्रकार चलते हुए साधु लोग पुष्प वाटिका में पहुँच जाते हैं, तब मालिन का जी घबड़ाने लगता है। कहती है कि– हे साधु भाई! तुम थोड़ा रुक जाओ गजरा गूँथ देती हूँ, लेकर चले जाना, परन्तु तपस्वी साधु कहते है कि मालिन मैं तुम्हारा गूँथा हुआ गजरा नहीं लूँगी, क्योंकि मैं साधू हूँ, मेरा साधु धर्म नष्ट हो जायेगा। इसी प्रकार तपस्वी साधु वेशधारी राम–लक्ष्मण पुनः तालाब में पहुँच जाते हैं। उन्हें देख कर धोबिन का जी घबराने लगता है। वह कहती है कि– हे साधुओं! थोड़ी देर तुम रुक जाओ। मैं तुम्हारा कपड़ा धो देती हूँ, परन्तु वे साधु कहने लगते हैं कि तुम्हारा धुला हुआ कपड़ा मैं नहीं पहनूँगा, क्योंकि इससे हे धोबिन! मेरा साधु धर्म नष्ट हो जायेगा।

तपस्वी वेशवाले राम–लक्ष्मण को क्रमशः कहारिन, मालिन, धोबिन ने पानी, गजरा और कपड़ा धोकर देने का आग्रह किया, परन्तु इससे साधुत्व में कमी आने की बात कही गयी। तपस्वी गृहस्थों से सम्पर्क नहीं रखें या महिलाओं से संदर्भ न रख स्वयं अपना कार्य करें यही सन्देश मिलता है।

ना करो हरी से बैर पहुंचा दो सइयां जानकी।
खरदूषण तुम्हरे भाई, जिन्हें जीत सके
न कोई जब उनहि को डारो मार। पहुंचा ....ना करो।

पहला वानर आयो सो अक्षय कुमार को मारो फिर लंका गयो जलाय। पहुंचा.
दूजा वानर आयो तेरी सभा में पैर जमायो सब जोधा माने हार। पहुंचा ....
हरी से बैर जो करिहौं या लंका दूर मिटैहों तुम मानो कही हमार। पहुंचा ....

पति देव! हरि से, ईश्वर से विरोध मत करो। जानकी को राम के पास पहुँचा दो। तुम्हारे भाई खर और दूषण हैं, जिन्हें कोई हरा नहीं सकता, परन्तु उन्हें इन राम ने मार डाला है। सबसे पहले एक बन्दर आया था जिसने अक्षय कुमार को मार डाला और वह लंका को भी जलाकर गया था। दूसरी बार जो बन्दर आया, उसने तुम्हारी सभा में पैर जमा दिया था और कोई उठा नहीं पाया था। सभी योद्धा हार मान गए थे। इसलिए यदि आप हरि से, प्रभु राम से बैर–विरोध करोगे तो लंका को नष्ट कर दोगे, इससे मेरा कहना मान जाओ। इस गीत के माध्यम से मन्दोदरी ने रावण को राम से बैर न करने की शिक्षा दी है।

कौन तपस्या कीन्हिउ जानकी ई वर पायउं हो रघुराई।
कमल के फूल सुभा अति सुंदर नारायण के माथ चढ़ायउं। ई वर...
आठ कातिक नौ माघ नहायउं निरफल हो इतवार उपासेउं। ई वर.....
मोतिआ के दान सबइ कोउ देथां कपिला का दान कोउ नहि देत।। ई वर....
हम तौ कपिला के दान दिहेन तइ तौ ई वर पायउं हो रघुराई।। कौन.........

अरी जानकी! तुमने कौन सी तपस्या की थी कि राम जैसा वरदान पाया। उन्होंने कहा कि कमल का सुंदर फूल लेकर अत्यन्त श्रद्धापूर्वक नारायण के मस्तक पर चढ़ा दिया। आठ बार कार्तिक मास का और नौ बार माघ मास का स्नान किया और रविवार का व्रतोपवास भी निष्काम भाव से किया है। सबने मोती का दान किया, परन्तु मैंने कपिला का दान किया और वरदान में राम को पाया।

इसमें इच्छित वर प्राप्ति के उपाय कहे गए हैं। नारायण को कमलपुष्प चढ़ाना, कार्तिक मास का स्नान, माघ स्नान, रविवार व्रत, मोती का दान और कपिला गाय का दान करने से अभीष्ट वर या पति की प्राप्ति होती है। श्रीराम जैसे पति की प्राप्ति होती है।

रतनारे नैना बांके मुनि संग कुंवर दोउ काके।
शिला शाप बस भई अहिल्या तरी चरण रज पाके।
नृप सुवेश की सुता ताड़का मारे ताड़क बन में जाके।
रण मारीच सुबाहु संहारो है दोउ कुंवर लड़ाके।

सीय स्वयंबर देखन आए है वर योग्य सिया के।
श्याम सरूप सोह धनु सारंग लागत है अति नीके।

लालिमा लिए हुए दोनों की सुन्दर सी आँखें हैं ऐसे दोनों राजकुमार किसके हैं? अहिल्या तो शाप के कारण पत्थर हो गयी थी, वह श्रीराम के चरण रज पाकर तर गयी। सुवेश राजा की बेटी ताड़का थी, जिसे ताड़कावन जाकर मार दिया। युद्ध में मारीच और सुबाहु का संहार कर दिया गया। ये दोनों कुंवर लड़ाके थे। सीता का स्वयंवर जो देखने आए हैं, वे ही सीता के योग्य वर हैं। इनका साँवला रंग है। सारंग धनुष सुशोभित होता रहता है और अत्यन्त अच्छे लग रहे हैं।

इस गीत में भी विश्वामित्र के साथ राम और लक्ष्मण दोनों के चरित्र का वर्णन किया गया है।

आंगन सून चौक चन्दनबिन कोयल बिन अमराई जी।
रामा बिना मोरी सूनी रे अयोध्या लछिमन बिना चौपाल जी।
सीता बिना मोरी सूनी रे रसोइयां ललन बिना अंगनाई जी।
आंगन भरि गा ललन के आए कोयल मा अमराई जी।
रामा के आए मोरी भरिगै अयोध्या लछिमन से चौपाई जी।
सीता जी के आए मोरी भरिगै रसोइयां ललन खेलइं अंगनाई जी।

चन्दन के पेड़ के बिना आँगन और चौक दोनों शून्य रहते हैं, आम की वाटिका कोयल के बिना सूनी रह जाती है। राम के बिना अयोध्या सूनी रहती है और चौपाल लक्ष्मण के बिना सूनी रहती है। सीता के बिना रसोई सूनी रहती है और बेटे के बिना आँगन सूना रहता है। आंगन बेटे के आने से भर जाता है और कोयल के आने से अमराई जाती है। राम के आने से अयोध्या हरी–भरी हो जाती है और लक्ष्मण से चौपाल भर जाती है। सीता के आने से रसोई भर जाती है और ललन आँगन में खेलते हैं।

इस गीत में अन्ततः पुत्र की बात कही गयी है। जीवन की अयोध्या में राम चाहिए, परन्तु बातचीत को भाई भी चाहिए, सहयोग हेतु भाई जरूरी है। रसोई घर में पत्नी आवश्यक है, परन्तु आँगन में बालक होना चाहिए। जैसे कोयल से आम्रवाटिका अच्छी लगती है, वैसे ही ये सब घर में शोभावर्द्धक होते हैं।

बेटी व्याही जनक जी के सामने धनुष तोड़ा सबके सामने।
कोमल अंग उमर के बारे, ये तो दशरथ जी के प्यारे।
तोड़े धनुष जनक के द्वारे सीता माला ले चली है डालने।। धनुष............

माला रामचन्द्र गले डारे सारे राजन के मद मारे।
उनके चेहरे हो गए कारे, मारे लाज के भूप लगे भागने। धनुष ....
पाती जनक तुरत पठवायो, धावन मिथिलापुर से आयो।
राजा दशरथ को बुलवायो, समधी आयो अवधपुर से ब्याहने। धनुष.........
राजा दशरथ बांची पाती, तुरतै हो गयी ठण्डी छाती,
भारी खुशी कही ना जाती, हाथी घोड़ा रात लगे साजने । धनुष.............

सबके सामने धनुष तोड़ दिया और जनक जी के सामने उनकी बेटी का विवाह कर लिया। कोमल–कोमल अंगों वाले, आयु में छोटे–छोटे ये दशरथ जी के प्रिय बेटे हैं। जनक जी के द्वार पर धनुष तोड़ दिया है और सीता जी माला लेकर उनके गले में डालने चली है। श्रीराम जी के गले में माला डाल दी और सारे राजाओं का घमण्ड चूर–चूर कर दिया। उनके चेहरे काले–काले हो गए हैं। लज्जा के कारण सभी राजा लोग भागने लगे हैं। जनक जी ने पत्रिका शीघ्र ही भिजवा दी है। मिथिलापुर से दूत आ गया है, राजा दशरथ को बुलवाया है। समधी अयोध्या से विवाह करने के लिए आ गए हैं। राजा दशरथ ने पत्रिका पढ़कर सुना दी है, शीघ्र ही छाती ठण्डी हो गयी, इतनी खुशी हुई कि कह पाना कठिन था। वे हाथी और घोड़ा बारात के लिए सजाने–सजने लगे हैं।

रामविवाह हेतु धनुष भंग से प्रसंग आरंभ किए गए हैं और बारात तक का वर्णन किया गया है।

भाइन्ह सहित रामचन्द्र आए ससुरारी मगन जनकपुर की नारी।
कीन्ही मुनि मख की रखवारी, रण में निशिचर दल संहारी।
देखो गौतम की नारी अहिल्या है तारी। मगन जनक.............
पाती जनकराज की पायी मुनि संग चल दिए दोनों भाई।
आए रंगभूमि जहां धनुष रखा त्रिपुरारी। मगन जनकपुर............
राजा देश–देश से आए सबको जनकराज बुलवाए।
लागे धनुही उठावन सके नाहिं टारी। मगन जनकपुर...............
आए देवदनुज नर नारी शंकर धनुष कोउ नाहिं टारी,
ग्लानि से विदेह जी बचन है उचारी। मगन जनक.................
सुनि कै जनकराज की बानी, विश्वामित्र कहे मुनि ग्यानी,
जाय राम तोरेहु धनुष अति भारी।। मगन जनक..............
लै के गुरुआज्ञा रघुराई पल मे लीन्हो धनुष उठाई,
तोरेहु धनुष शंकर का शोर भयो भारी। मगन जनक.............

सीता माला राम उर डारी अस्तुतिकरत देव जयकारी।
सजि–सजि आरती करहि नरनारी ।। मगन जनक..................

अपने भाइयों के साथ श्रीराम जी अपनी ससुराल आते हैं। यह देखकर जनकपुर की स्त्रियाँ प्रसन्न हो जाती हैं। इन्होंने पहले मुनि के यज्ञ की रक्षा की, युद्ध में निशाचरों के समूह का संहार किया और तो और देखिए गौतम की नारी अहिल्या का भी उद्धार किया है। वे जनक जी की पत्रिका पाकर मुनि विश्वामित्र के साथ दोनों भाई चल देते हैं और रंगभूमि में आते हैं। सभी को जनक राजा ने बुलवाया है, सभी धनुष उठाने लगते हैं, परन्तु उठा नहीं सके हैं। देवता, दानव और बहुत अधिक मनुष्य लोग आए हैं, शिव के धनुष को कोई हटा भी नहीं सका है। ग्लानि में भरकर जनक जी बोलने लगते हैं और उनकी बातें सुनकर ज्ञानी विश्वामित्र कहने लगते हैं कि हे राम! जाओ भारी धनुष को तोड़ दो। गुरु की आज्ञा पाकर श्रीराम ने क्षणभर में धनुष उठा लिया। शिव का धनुष तोड़ दिया, तब बहुत शोर हो गया। अब सीता ने श्रीराम के गले में माला डाल दी, देवता जय–जय करते हुए स्तुति करने लगते हैं। आरती सजा–सजा कर नर–नारी आरती करने लगते हैं।

इसमें भी रामकथा का विवाह प्रसंग धनुष यज्ञ का है।

ए जी वृन्दावन के सुघर बढ़इया सुघर लिए हथियार।
ए जी एक बन नाकि दुसर बन नाकेउं तिसरे मां चन्दन के पेड़।
ए जी चन्दन के पेड़ न काटे रे बढ़इया चन्दन लगाएं भगवान्।
ए जी एक बन नाकि दुसरवन नाकेउं तिसरे मां तुलसी के पेड़।
ए जी तुलसी के पेड़ न काटे रे बढ़इया तुलसी चढ़ै भगवान्।
ए जी एक वन नाकि दुसर बन नाकेउ तिसरे में निमिया के पेड़।
ए जी निमिया के पेड़ न काटे रे बढ़इया निमिया की शीतल छांह।
ए जी एक बन नाकि दुसर बन नाकेउं तिसरे मां फुलवा के पेड़।
ए जी फुलवा के पेड़ न काटे रे बढ़इया फुलवा चढ़इ भगवान्।

वृन्दावन का सुन्दर बढ़ई है, उसके पास सुन्दर हथियार भी है। उसे भोजन या धार्मिक कार्यों के लिए पेड़ काटना है। एक वन से दूसरे वन जाते हुए तीसरे वन में पहुँचने पर वहाँ चन्दन का पेड़ मिल जाता है। परन्तु बढ़ई से आग्रह है कि वह चंदन का पेड़ न काटे, क्योंकि चन्दन भगवान् लगाते हैं। इसी प्रकार एक से दूसरे और तीसरे वन में पहुँचने पर तुलसी का पेड़ मिलता है। उसे भी काटने का बढ़ई को निषेध किया है, क्योंकि तुलसी भगवान् को चढ़ायी जाती है। इसी प्रकार एक से दो, दो से तीन वन जाने पर नीम का पेड़ मिलता है, परन्तु उसकी शीतल छाया होने से उसे भी काटने

का निषेध किया गया है। पुनः तीसरे वन में फूल का पेड़ मिलता है, वह भगवान् की पूजा में चढ़ता है, अस्तु काटने का विरोध किया गया है।

यह लोक–गीत पर्यावरण की रक्षा के लिए मानों पेड़ों को काटने का निषेध कर रहा है। सभी पेड़ों का उपयोग भगवान् के लिए किया जाता है, यही कारण गीत में गिनाया जाता है। वस्तुतः सारी वनस्पतियों का स्वामी तो अमृत वर्षा वाला भगवान् ही है। कभी वे सूरज बनते हैं तो कभी चन्द्रमा बने रहते हैं। सारी मानवीय जाति के लिए ये ही वनस्पतियाँ अपना जीवन देती हैं और औषधि बन जाती हैं। कभी मनुष्यों के जीवन के लिए तो कभी पशुओं–पक्षियों के लिए ये ही औषधि बनकर उनका रोग भी दूर कर देती हैं और जीवन भी अनामय करती है।

ए जी रंगमहल मां सोवै रे राधिका तुम बिन रह्यों न जाय।
ए जी खिड़की महल कै खोला राधिका तुम बिन रह्यों न जाय।
ए जी बदलख लहंगा ले आवा मोरे रसिया तब खुली खिड़की हमार।
ए जी कपड़ा होइ ता बेउंतौ रे दरजी बदला बेउंति ना जाय।
ए जी फुलवा कै अंगिया ले आवा मोरे रसिया तब खुली खिड़की हमार।
ए जी रंग महल मां सोवै रे राधिका श्याम निहारैं चहुं फेर।

राधिका जी रंग महल में सो रही हैं, तब गीत कहता है कि श्याम जी (श्रीकृष्ण जी) कहते हैं कि राधे! तुम्हारे बिना हमसे रहते नहीं बन रहा है। अपने महल की खिड़की तो खोल दो। राधा कहती है कि यदि लहंगा मेरे लिए ले आओगे तभी– हे रसिक! मेरी खिड़की खुल पाएगी, यह बदले में लूँगी। दरजी से वे कहते है कि कपड़ा तो मैं नाप दूँगा, परन्तु बदले का क्या करूँ। उसकी माप तौल हमें नहीं आती। फिर राधा कहती है कि फूलों से बनी हुई अंगिया, अंगवस्त्र या उत्तरीय परिधान चोली जैसा जब रसिया जी ले आओगे, तभी मेरी खिड़की खुल पाएगी। रंगमहल में श्री राधा सो रही थी, परन्तु श्री कृष्ण उन्हें चारों ओर से देख रहे थे।

यह राधामाधव की जोड़ी एक लोकदम्पति का प्रतीक है। लोक में युगल इसी बतरस से श्रृंगार की अभिव्यक्ति करते हैं। दोनों एक दूसरे से इस प्रकार आकृष्ट और आसक्त रहते हैं कि उन्हें अलग–अलग करना ही कष्ट कारक होता है। नायिका नायक से खिड़की खोलने के बहाने लहंगा मांगती हुई मानों लोक लज्जा की रक्षा का प्रतीक चाहती है। लोक लज्जा की रक्षा करते हुए ही ग्राम्य स्नेह, ग्राम्यदम्पति आकर्षक और आवर्जक बना रहता है। आज नागर संस्कृति ने इसे झकझोर दिया है। आज लहंगे

और अंगिया की जगह अंग प्रदर्शन करने वाले कपड़ों ने ले ली है। रस को रसाभास में, वासना को निर्वस्त्र करने में कोई कमी नहीं की जा रही है।

चितचोर नन्द के चीर हमारी दै देहु मोहन मुरारी जी।
तुम तो नन्द के कुंवर कहावहु मैं वृषभान दुलारी जी।
चोली और चीर कदम्ब चढ़ि बइठे जल बिच राधा उघारी जी।
चोली औ चीर हमहिं दै दो राधा जल से होउ तूं न्यारी जी।
कैसे के जल से होउ मै न्यारी लोग हँसे दै तारी जी।
कैसे के लोग हँसे दै तारी मै हूँ पुरुष तुम नारी जी।
पुरइनि पात पहिनि राधा निकली श्याम हँसे दै तारी जी।

अरे नन्द के चित्त को चुराने वाले कृष्ण मोहन मुरारी! तुम हमारे वस्त्र वापस दे दो। तुम नन्द के कुमार कहलाते हो और मैं वृषभानु की पुत्री हूँ। चोली और कपड़े कदम्ब में लेकर बैठ गए हो और राधा यमुना जल के बीच वस्त्रहीन खड़ी हुई है। हमारी चोली और कपड़ा दे दो और राधा जी तुम जल से बाहर हो जाओ। राधा कहती है कि मैं जल से बाहर किस प्रकार आऊँ। मुझे देखकर लोग ताली बजाकर हँसने लगेंगे। कृष्ण ने कहा कि लोग कैसे हँसेंगे। मैं तो पुरूष हूँ और तुम तो स्त्री हो। राधा कमल का पत्ता पहनकर बाहर निकलती है और यह देखकर कृष्ण ताली बजाकर हँसने लगते हैं।

इस गीत में श्रीकृष्ण की चीर हरण लीला का वर्णन है। राधा के मांगने पर कृष्ण ने चीर (कपड़ा) देने की शर्त रखी है और एक हास्य प्रस्तुत किया है। यह कृष्णलीला की कथा सर्वत्र प्रसिद्ध है।

ए जी मथुरा मां लागी बजरिया कि मेहंदी आई बिकाय।
ए जी जइहै देवरवा मेहंदी लै अइहैं रुपिअइ सेर बिकाय।
ए जी मेहंदी रचि गई कोइली परिगइं देखन वाले विदेश।
ए जी काह फारि मैं कागज बनाऊं काहेन कइ मसि लेउं।
ए जी काहि बनाऊं मै असल कइथवा हरि जू के पाती लै के जाय।
ए जी आंचर फारि के मैं कागद बनाऊं नैनन से मसि लेउं जी।
ए जी देवरा बनाऊं असल कयथवा कि हरि जी के पाती लै जाय।

मथुरा में बाजार लगा और वहाँ मेहंदी बिकने के लिए आई है। देवर जी जायेंगे और मेहंदी खरीद कर ले आएंगे जो कि एक रुपये की सेर भर बिक रही है। मेहंदी लाने के बाद उसे रचा लिया। कोइली भी पड़ गयी है, परन्तु यह सौन्दर्य निहारने वाला

ही अपने देश में नहीं है। विदेश में रह रहा है। क्या फाड़कर मैं कागज बना लूँ और किसकी स्याही बना लूँ और मैं किसको कायस्थ बना दूँ कि चिट्ठी लिख दे और हमारे स्वामी अर्थात् हरि जी को पत्र लेकर जाय। तब वह कहती है कि मैं आँचल फाड़ कर कागज बना लूँगी और आँखों से मसी अर्थात् स्याही ले लूँगी और देवर को सही–सही कायस्थ बना लूंगी वही हमारे भगवान् (हरि जी) पति जी को चिट्ठी ले जायेगा।

गाँव की नववधू मेहंदी से अपना श्रृंगार तो रचा लेती है, परन्तु वह सजती–सँवरती है, अच्छी लगती है तो अपने पति के लिए जो कि परदेश में रहता है। यह सजने का भाव पति को कैसे भेजे। उसके पास अपना आँचल है, वही कागज बन जायेगा। उसकी आँखों में काजल मिश्रित आँसू की बूंदे हैं जो स्याही बन जायेंगी, परन्तु वह चिट्ठी नहीं लिख सकती है, अतः यह चिट्ठी तो उसका देवर ही लिख देगा। पहले गाँवों में कायस्थ ही लिखने का काम करते थे, परन्तु यह लेख कायस्थ नहीं, अपितु उसका देवर लिखेगा। इस गीत में ग्रामबाला के सौन्दर्य श्रृंगार के साथ ही उसकी पातिव्रत्य स्थिति का भी निरूपण है।

गोदनारी का वेष धरे नन्द के कन्हाई कोई लेहु गोदाई।
धरे गोदनारी का वेष मोहन गोकुल चलि देत, द्वार–द्वार में टेर देत कोइ लेहु गोदाई।
अरे टेर सुनत राधा दरवाजे लौ आई कोई लेहु गोदाई। गोदनारी.........
राधा भीतर गईं लेवाई बातै पूंछे हरषाई, सखी मन में सकुचाई कोई लेहु गोदाई। गोद..
अरे कहना के आए सखि देहु तो बताई कोउ लेहु तो गोदाई।
हम तो आए जमुना पार, हमने सीखा नया व्यापार,
अभी आए तुम्हारे द्वार कोइ लेहु गोदाई । गोद..........
अरे नैनों से नैनो की हो गई लड़ाई कोई लेहु तो गोदाई।
माथे लिख दो कृष्णमुरारी, भुजन में मोर पपीहा भारी।
बाहन में लिखो नन्द कन्हाई कोई लेहु गोदाई।
अरे अंगियन में चन्दा चकोर की सोहाई कोइ तो लेहु गोदाई।

नन्द के कन्हैया ने गोदनारी अर्थात् गोदने वाली का वेश धारण कर लिया है और कोई तो गोदना गोदवा लो। गोदने वाली का वेश धारण कर मोहन गोकुल के लिए चल देते हैं। दरवाजे–दरवाजे पर जाकर आवाज लगाते हैं कि– अरे! कोई तो गोदवा लो। यही तेज आवाज सुनते ही राधा दरवाजे पर आ जाती है। राधा गोदनारी को भीतर लेकर जाती हैं, खुश होकर बातें पूछने लगती है और सखी मन ही मन संकोच करने

लगती हैं। कहती है कोई तो गोदवा लो। अरी सखी! तुम कहाँ से आई हो, बता दो। उत्तर देती है गोदनारी कि– अरी सखी! मैं तो जमुना पार से आई हूँ, मैंने नया व्यापार सीख लिया है। अभी तुम्हारे दरवाजे पर आई हूँ, कोई गोदना तो गोदवा लो। इसी समय दोनों के नयन परस्पर मिल जाते हैं। कहा– मस्तक में कृष्ण मुरारी, भुजाओं में मोर और पपीहा लिख दो, बाँहों में नन्द के कन्हैया को लिख दो, अंगिया में चन्दा चकोर लिख दो तभी अच्छा लगेगा।

यह गीत लोक विश्वास पर आधारित है, इसका प्रमाण लोक ही है। राधा–कृष्ण की लीला में इस प्रकार के प्रसंगों का वर्णन लोक में प्रचलित है, जो श्रीकृष्ण की भक्ति का ही निरूपण करता है।

क्या शोभा बनी है न्यारी जब श्याम बने गोदनारी।
चुड़ियां पहन लिए हांथन, करन फूल पहने कानन में।
गले बीच मोतियन की माला कागज की छवि न्यारी। क्या शोभा.....
बरसाने जा टेर लगाई लेहु सखी गोदना गोदवाई।
शब्द सुनत राधा बुलवाई महलन में गोदनारी। क्या शोभा.....
कहत राधिका सुनु गोदनारी श्यामल मूरति गोदौ प्यारी।
दांतन में दामोदर लिख दो कानन कुंजबिहारी। क्या शोभा............

जब श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण गोदनारी अर्थात् गोदना गोदने वाले बने थे, तो उनकी कितनी सुन्दर शोभा बनी हुई थी। उन्होंने हाथों में चूड़ियाँ पहन ली, कानों में कर्णफूल भी पहन लिया, गले में मोतियों की माला पहन ली और काजल भी आंज लिया था। यह काजल की शोभा निराली ही लग रही थी। बरसाने जाकर आवाज लगाते हैं कि हे सखी! गोदना गोदवा लो। आवाज सुनते ही राधा ने बुलवा लिया और उनके महलों में गोदना गोदने वाली आ गई। राधा ने कहा कि अरे! गोदनारी, प्यारी–प्यारी साँवली मूर्ति गोद दो। दाँतो में दामोदर लिख दो और कानों में कुंजबिहारी गोद दो।

इस गीत में भी श्रीकृष्ण की लीला का ही लोकप्रचलित रूप का वर्णन किया गया है।

मैं जमुना जल भरन गइउं तै पहिनि कुसुम रंग सारी जी।
गलियन मिलि गए कुंअर कन्हाई हांथे लिहे पिचकारी जी। मैं..........
पहली पिचकारी मोरे माथे बीच मारी बेदी की झरी है खारी जी। मैं..........
एतना सुनिनि है जो सासू हमारी देन लगी है बड़ी गारी जी। मैं..................

मैं तो यमुना जी में जल भरने हेतु अर्थात् यमुना जी से जल लेकर आने के लिए गयी थी और कुसुम्भी रंग की साड़ी पहन ली थी। गलियों में कुँअर कन्हाई मिल जाते हैं और वे हाथ में पिचकारी लिए हुए थे। उन्होंने पहली पिचकारी मेरे मस्तक के बीच में मार दी, जिससे बेंदी की खारी झड़ गई थी। यह सुनते ही मेरी सास ने गाली देना प्रारंभ कर दिया।

श्री कृष्ण की होरी खेलने की लीला का वर्णन भी लोकप्रचलित रूप है, उसी का वर्णन इस गीत में हुआ है।

मैं जमुना जल भरन जात रहौं पहिने कुसुम रंग सारी जी।
कृष्ण त जाइ कदम चढ़ि बइठे हांथे लिए पिचकारी जी।
भरि पिचकारी कान्हा सनमुख मारइं भींज गई तन सारी जी।
जान जो पइहैं ससुरू हमारे क्या गति करिहैं तुम्हारी जी।
सारी के बदले हम सारी देवइ लाख रुपैया गुन गारी जी।
सारी के बदले मां आग लगउबइ बज्र परइ गुन गारी जी।
जान जो पइहैं स्वामी हमारे क्या गति करि हैं तुम्हारी जी।
सारी के बदले हम सारी देवइ लाख रुपैया गुन गारी जी।
सारी के बदले हम आग लगउवै बज्र परइ गुन गारी जी।
जान जो पइहैं देवरा हमारे क्या गति करिहै तुम्हारी जी।
सारी के बदले हम सारी देवइ लाख रुपैया गुन गारी जी।
सारी के बदले मां आगि लगउबइ बज्र परइ गुन गारी जी।

मैं तो कुसुमी रंग की साड़ी पहनकर जमुना जल लेने के लिए जा रही थी और श्रीकृष्ण जी जाकर कदम्ब के पेड़ पर चढ़कर बैठ गए और हाथ में पिचकारी लिए हुए थे। कृष्ण पिचकारी में रंगभर लेते हैं और सामने रंग की पिचकारी चला देते हैं, जिससे साड़ी भीग जाती है। इस पर गोपी ने कहा कि यदि मेरे ससुर यह सब जान पाएंगे तो तुम्हारी क्या गति करेंगे। श्रीकृष्ण ने कहा कि मैं साड़ी के बदले में साड़ी दे दूँगा और गाली के लिए एक लाख रुपया भी दूँगा। वह कहती है कि बदले में मिलने वाली साड़ी में मैं आग लगा दूँगी और वज्र डाल दूँगी। लाख रुपयों में यही बात अपने पति और देवर के जानने पर भी क्या गति करने की बात कहती है और गोपी का भी वही उत्तर होता है।

पिचकारी से रंग डालने से कोई गोपी अपने ससुर के असन्तुष्ट हो जाने की बात कहती है। साड़ी को बदले में लेने से अस्वीकार करती हुई अपने पति द्वारा उनकी

दुर्दशा का भी वर्णन करती है। उसका परिवार अर्थात् ससुर, पति, देवर सभी इस कृत्य का अनुमोदन नहीं करेंगे। इससे यही प्रकट होता है कि पर स्त्री के साथ रंग खेलना समाज में विहित नहीं है जो कि इस गीत से पता चलता है।

ए जी संकरी जलहली है तोहरी महादेव गौरा जी का सांकर जाय।
ए जी सांकर–सांकर ना करा मोरी गौरा जाना है नैहर तुम्हार।
ए जी बाबू तुम्हारे पोथिया बांचत हइं माया अरथ लगायं।
ए जी भइया तुम्हारे गोरुआ चरामैं भौजी कलेउना लइ जायं।
ए जी बाबू हमारे बेद पढ़त हइं माया जी अरथ लगायं।
ए जी भइया हमारे राज करत हइं भौजी रचइं जेउनार।

हे महादेव! तुम्हारी जलाधारी संकीर्ण है, इसमें गौरी जी का स्थान कम हो रहा है, सँकरा हो रहा है। शिव ने कहा कि– हे गौरी! तुम 'संकरी है–संकरी है' ऐसा मत कहो, तुम्हारा मायका हम जानते हैं। तुम्हारे पिता जी पुस्तक पढ़ते हैं और माता अर्थ लगाती है। तुम्हारे भाई पशु चराते हैं और भाभी कलेवा (प्रातः का भोजन) लेकर जाती है। तब गौरी जी कहती हैं कि– अरे! मेरे पिता जी वेदपाठ करते हैं और माया अर्थ बताती है। मेरे भाई राज्य करते हैं और भाभी जेवनार या भोजन बनाती हैं।

यह गीत भी पूर्ववर्ती गीत जैसा ही स्त्री स्वाभिमान एवं पति–पत्नी के नोंक–झोंक का ही है। वही गीत थोड़े भेद से इस प्रकार भी गाया जाता है।

ए जी संकरी जलहली है तोहरी महादेव गौरा का सांकर होय।
ए जी सांकर–सांकर ना करा गौरा रचि लेबइ दुसरा विआह।
ए जी दुसरा विआह न रचा शिव बाबा हम नैहरे चली जाव।
ए जी नैहर–नैहर ना करा गौरा जाना है नैहर तोहार।
ए जी बाबू तोहारे गोरुआ बसत है माया बसैं खलिहान।
ए जी भइया तुम्हारे गोरुआ चरावैं भाभी बिआरी लै के जायं।
ए जी फटही लंगोटी तुम्हारी महादेव उलटा है नैहर हमार।
ए जी बापू हमारे तीनो लोक के ठाकुर माया बसै रनिवास।
ए जी भइया हमारे पोथिया बांचत है भउजी रचै जेउनार।

हे शिवजी! महादेव! आपकी जलाधारी संकरी है। गौरी देवी को भी स्थान कम ही पड़ रहा है शिव ने कहा कि– अरे गौरी! बार–बार 'संकरी–संकरी' ऐसी बात मत करो, मैं दूसरा विवाह कर लूँगा। पार्वती बोली कि– हे शिव बाबा! दूसरा विवाह न करो,

मैं अपने मायके (मातृ गृह) चली जाऊँगी। शिव ने कहा कि– हे गौरी! नैहर–नैहर जाने की धमकी मत दो। मैं तुम्हारे मायके के विषय में सब जानता हूँ। तुम्हारे पिताजी पशुओं की रक्षा में वहीं निवास करते हैं, पशुपति या पशुरक्षक हैं। माता तुम्हारी खलिहान में निवास करती है, तुम्हारे भाई पशुओं को चराते हैं और भाभी उन्हें शाम का भोजन ले जाती है। शिवजी तुम्हारे पास तो लंगोटी भी फटी–फटी सी है, परन्तु मेरा मायका इसके विपरीत है, मेरे पिताजी तो तीनों लोक के राजा हैं, माताजी रनिवास में रहती हैं, मेरे भाई ग्रन्थों का अनुशीलन, अध्ययन करते है, साथ ही भाभी भोजन निर्माण करती हैं।

यहाँ शिव–पार्वती के बहाने एक ऐसा ग्राम्य चित्र उपस्थित होता है जो पति–पत्नी के मध्य नोंक–झोंक का उपलक्षण है। पत्नी–पति द्वारा परेशान करने पर मायके जाने के लिए कहने लगती है, तब पति उसे मायके की बुरी स्थिति का वर्णन करता है, परन्तु स्त्री या पत्नी अपने मायके की बढ़–चढ़कर प्रशंसा करती है। रेवांचल की नारी अपने मायके के विरोध में कुछ भी सुनने को तैयार नहीं होती है। यह उसके स्वाभिमान का प्रश्न रहता है। इसी प्रसंग में अनेक कलह भी उत्पन्न होते हैं।

छोटी सी पारबती पतला शरीर चलो देखन चलिए।
सोने की थाली में जेमना परोसउं जेवइं न पारबती निरखइ शरीर। चलो..........
सोने के करोला मां गंगा जल पानी घूंटइ न पारबती निरखइं शरीर । चलो.....
लौग इलायची के बीरा लगायउं चाबइं न पारबती निरखै शरीर। चलो...............
पान फूल रचि सेजा लगायउं सूतै न पारबती निरखइं शरीर। चलो.................

पार्वती जी छोटी सी हैं। उनका शरीर भी दुबला पतला है, अस्तु चलो देखने के लिए चलते हैं। सोने की थाल में ही भोजन परोस दिया, परन्तु पार्वती भोजन नहीं कर रही है, अपना शरीर देख रही हैं। सोने के ही लोटा करोला में गंगा जल पीने के लिए दिया है परन्तु पार्वती उसे पी नहीं रही है, अपना शरीर देख रही है। लौंग और इलायची से पान का बीड़ा लगाया है, परन्तु पार्वती पान नहीं चबाती है, और अपना शरीर ही देखती रहती है। इसी प्रकार पान–फूल की पत्र–पुष्प की शैय्या लगायी परन्तु ये पार्वती वहाँ सोती नहीं है, शरीर ही देखती रहती हैं।

यहाँ पार्वती एक ऐसी कन्या का प्रतीक है, जो सद्यः यौवनारूढ़ा है। उसके शरीर में वयोमान से परिवर्तन होता जा रहा है और उस शरीर को देखने समझाने में लग जाती है। भोजन, पानी, पान का बीरा, शयन बिस्तर सब उसके लिए अब उतना आवश्यक नहीं लगता, जितना शरीर का बदलता हुआ क्रम। इसी भाव को सखियाँ समझाती हैं और उसे देखने के लिए गीत गाती हैं।

ए जी कहना से आई दुर्गा मइया कहना डेरा डाल दिहिन।
ए जी सरग से आई दुर्गा मइया मंदिर मां डेरा डाल दिहिन।
ए जी का चढ़ि आई दुर्गा मइया कहना डेरा डालि दिहिन।
ए जी रथ चढ़ि आईं दुर्गा मइया मंदिर मां डेरा डालि दिहिन।
ए जी का लैके आई दुर्गा मइया कहना डेरा डालि दिहिन।
ए जी फूल लैके आई दुर्गा मइया मंदिर मां डेरा डालि दिहिन।

अरे दुर्गा जी! कहाँ से आयी और कहाँ डेरा डाल दिया। दुर्गा जी स्वर्ग से आई और मंदिर में डेरा डाल देती हैं। अरे! दुर्गा माता किस वाहन में चढ़कर आई और कहाँ डेरा डाल दिया? रथ पर चढ़कर आई हैं दुर्गा मैया और मंदिर में रहने लगती है। ये दुर्गा जी क्या लेकर आयीं और कहाँ निवास करने लगी। वे फूल लेकर आई और मंदिर में रहने लगी है। यह गीत दुर्गा की पूजा का है।

ए जी ऐसे हीरालाल जड़े है चमक रहेंचहुं ओर।।
ए जी ऐसे सुन्दर समधी हमारे नित नए होवै।
या कलियुग में दुइ रे बड़े हैं एक धरती दूजे मेघ।
ए जी मेघा के बरसै धरती छलकै दूब लहरिया लेय।
या कलियुग में दुइ रे बड़े है इक माता दूजे सास।
ए जी माता मोरी जनम दिहिन हइं सासु दिहिनि अहिवात।
या कलियुग में दो ही बड़े हैं इक घोड़ी दूजे गाय।
ए जी गाय का बछड़ा हरे मां चलत हइं घोड़ी रण फहराय।

चारों ओर लाल–लाल हीरे जड़ दिए गए हैं जो चारों ओर चमक फैला रहे हैं। अरे ! हमारे समधी जी इतने सुन्दर लग रहे हैं कि रोज–रोज नए नए लग रहे हैं। इस कलियुग में दो ही बड़े होते हैं एक बादल और दूसरी घर की माता। जब मेघ बरसते हैं तो धरती पानी से छलकने लगती है और दूब लहर लेने लगती है। और भी इस कलियुग में दो बड़े होते हैं एक माँ और दूसरी सास (पति की माँ), क्योंकि जन्म तो मेरी माँ ने दिया है और सासू ने मेरे सौभाग्य या पति को जन्म दिया है। इसके बाद भी इस कलियुग में दो ही बड़े हैं इनमें एक घोड़ी है और दूसरी गाय है। गाय का बेटा या बछड़ा हल में चलाया जाता है और घोड़ी युद्ध में सफलता देती है। गीत की पहली दो पंक्तियाँ विकल्प से गायी जाती हैं।

इस गीत में पहले प्रकृति में धरती और बादल दोनों को श्रेष्ठ बताया, क्योंकि पृथ्वी में जल होने से ही सृष्टि और जनता दोनों सुखी रह सकते हैं। सृष्टि के बिना माँ नहीं

बनती, वही माँ सास भी बनती है। एक जन्मदात्री है दूसरी भी जन्म दात्री है, परन्तु सौभाग्य की अर्थात् सभी के लिए पति की जन्मदात्री है। गौ माता कृषि प्रधान देश के लिए अपनी सन्तति देती है और घोड़ी गमनागमन का साधन होती है, अस्तु इन दोनों की प्रशंसा की गयी है। यह गीत विशिष्टों और वरिष्ठों को उपयोगी शिक्षा देता है।

ए जी हमरे ससुर केरा बाग बगइचा फूलै फलै हर डारि।
ए जी को आ लगावैं बेला चमेली को आ लगामैं अनार।
ए जी को आ लगावैं अंतर केर बिरवा बगिया महक रही छाय।
ए जी रामा लगावैं बेला रे चमेली लछिमन लगाए अनार।
ए जी सीता लगावैं अंतर केर बिरवा बगिया महक रही छाय।
ए जी काहे मां सींचउं बेला रे चमेली काहे मां सींचउं रे अनार।
ए जी काहेनि सींचउं अंतर केर बिरवा बगिया महक रही छाय।
ए जी दुधवा मां सींचउं बेला रे चमेली छहियां मां सीचउं अनार।
ए जी अमृत सींचउं अंतर केर बिरवा बगिया महक रहीं छाय।

गीत कहता है कि किसी सुहागिन के ससुर का बाग–बगीचा है। उसके पेड़ों की प्रत्येक डालों में फूल और फल लगे हुए हैं। प्रश्न उठता है कि किसने बेला–चमेली लगाया और कौन अनार का पेड़ लगा रहा है। न जाने कौन इत्र का पेड़ लगाता है, जिससे पूरे बगीचे में महक या सुगन्ध छायी दिख रही है। रामजी ने बेला और चमेली के पेड़ लगाये तथा लक्ष्मण जी ने अनार का पेड़ लगाया, सीता जी ने तो इत्र का पेड़ लगाया था। इसी की सुगन्ध सारे बगीचे में आने लगी थी। बेला–चमेली की सिंचाई किससे की गयी और अनार का पेड़ किससे सींचा गया। इत्र का पेड़ किस से सींचा गया है, जिसकी सुगन्ध चारों ओर फैल रही है। दूध से बेला और चमेली सींची गयी। दही से अनार को सींचा गया। साथ ही इत्र के पेड़ को अमृत से सींच दिया, जिसकी सुगंध सारी बगिया में छा रही है, फैल रही है।

यह गीत बगीचे की सुगन्ध के लिए गाया गया है। जीवन की बगिया को सुगंधित करने के लिए बेला, चमेली और अनार तब तक सुगन्धित नहीं हो सकते हैं, जब तक सीता अपने हाथ से कुछ नहीं लगाती हैं। राम और लक्ष्मण से बगीचे की शोभा नहीं बढ़ती, यह तो सीता से ही बढ़ती है। जीवन की बगिया तब तक नहीं महकती है, जब तक कोई बहू या वधू या नारी उसे नहीं सींचती। स्नेह, ममता और सृष्टि उसी के अधीन होती है।

ए जी अमवा गौर कचनार पातरि धना क्यों रे खड़ी।
ए जी धौ तोरा नइहर दूर धौ रे तोरी सासु लड़ी।

ए जी धौ तोरा पिया परदेश गलिया सूरत क्यों रे खड़ी। ए जी अम्बा..........
ए जी ना मोरा नैहर दूर नहीं रे घर सास लड़ी।
ए जी चले जा तू मूरख गंवार त मोसे रार काहे का पड़ी। ए जी अम्बा.........
ए जी मोरा पिया गए परदेश उनहिं सूरत ठाढ़ रही।
ए जी आइगे है राम भवनमां उठाइ लइगें गज ओवरी। ए जी अम्बा............
ए जी लइगे है अपनी दोहरिया ननदिया तोहरी कब से खड़ी। ए जी अम्बा...

इस गीत में आम में बौरें कचनार जैसी आ जाने पर भी पतली अंगयष्टि वाली नारी क्यों खड़ी हुई है? उसके खड़े होने की मनः कल्पनाएँ की गयी हैं कि क्या तुम्हारा मायका दूर है अथवा सासू झगड़ालू मिली है, जिससे तुम गली निहारती खड़ी हो। क्यों तुम्हारा पति परदेश में तो नहीं है? बहू कहने लगती है न तो मेरा मायका दूर है और न ही घर में सास से झगड़ा हुआ है। तू मूर्ख है— गँवार है। तुम तो दूर हटो। मुझसे झगड़ा क्यों कर रहे हो। मेरे प्रियतम तो परदेश गए हैं, उन्हीं को देखती, याद करती मैं खड़ी हुई हूँ। वे अब मेरे घर आ गए हैं, मुझे उठा कर अटारी में ले गए हैं, वे अपनी प्रियतमा को ले गए हैं, परन्तु तुम्हारी ननद जी कब से खड़ी हुई है।

आम में बौर आना प्रकृति के वनस्पतियों के बौराने का समय है। उनके बौराने पर भी नारी का, सृष्टि की कर्त्री का उदास रहना, प्रतीक्षा कुल रहना गीत का प्रश्न है। सब अपने प्रियतम के साथ ही बौराते हैं, बसन्त मनाते हैं। प्रिय के बिना कैसे बौराए। यह न जानने के कारण पृच्छक को गीत में मूर्ख कह दिया गया है। प्रतीक्षा पूरी हो जाती है, बौरा भी जाती है और अटारी में चली जाती है। अब ननद प्रतीक्षारत रहती है। यह गीत उमंग—उल्लास के लिए बसंत की अपेक्षा प्रियतम अधिक आवश्यक है, यही उपदेश देता है।

ए जी बारह बरिस का मोर पिय गे हैं दइगे हैं बजुर केमार।
ए जी अंगने मां बइठे है जेठ ददाजी खोलि लेहु लहुरी केमार।
ए जी कैसे के कमरा खोलउं ददा जी हम लहुरी तुम जेठ।
ए जी दोष पाप सब गंगा बहउबइ झुलनी गढ़उबइ झोकेदार।
ए जी बरहों बरिस मां पिय बहुरे हंइ बइठे कदम केरि छांह।
ए जी पनियां पिबत हंइ आँख मुँहधोबइं झुलनी निरखि रहि जाइं।
ए जी ना हम मारब ना गरिआउब लौटि बिदेशिया का जाब।
ए जी स्वामी तुम कमाने हा रुपिया औ पइसा हम बिढ़यन नन्दलाल।
ए जी रुपिया औ पइसा खरच होइ जइहीं राज करइं नन्दलाल।

गीत में कोई विवहिता गाती है कि 'बारह वर्ष के लिए मेरे पति गए हैं और वज्र कपाट देकर गए हैं। आँगन में बैठे हुए जेठ अर्थात् पति के बड़े भाई हैं, जो कहते हैं कि छोटी बहू, तुम दरवाजा तो खोल दो। वह बहू कहती है कि दादा जी, मैं कैसे दरवाजा खोलूँ आप बड़े हो, जेठ हो और मैं छोटी हूँ, आपकी बहू हूँ। दोष लगेगा। जेठ ने कहा कि दोष पाप तो सब गंगा जी में बहा देंगे और झोप देने वाली झोपेदार झुलनी (आभूषण) बनवा दूँगा। इसके बारह वर्ष बाद पति आता है। वे साथ रहते हैं, पानी पीते है, हाथ मुँह धोते हैं और अपनी पत्नी की झुलनी देख–देख कर चुप रह जाते हैं। पति कहने लगता है कि न तो मैं मारूँगा, न ही गाली दूँगा, मैं तो फिर से लौटकर विदेश चला जाऊँगा। पत्नी ने कहा कि स्वामी जी तुम तो रुपया पैसा कमाने में लगे रहे और मैंने बेटा कमाया है। रुपया पैसा तो खर्च हो जायेगा, परन्तु बेटा ही राज्य करेगा।

यह गीत स्वाभाविकता का निरूपण है। कोई बहू बारह वर्ष से पति के विदेश जाने के कारण दरवाजा लगा कर रहती थी, परन्तु उसके जेठ ने उसे दरवाजा खोलने का आग्रह किया और झुलनी देने को कहा। बहू ने पाप का उदाहरण दिया तो उससे गंगा स्नान से दूर करने की बात करता है। बारह वर्ष के बाद आया पति जब यह समझता है तो वह पुनः विदेश जाने की बात कहता है। वधू का कहना है कि रुपये–पैसों की अपेक्षा बेटा अधिक जरूरी है। इससे लोक की अपवाद दशा का ज्ञान होता है। बारह वर्ष तक प्रतीक्षा के बाद, कोई भी नारी पर पुरुष से संगम करती है, पुत्र पैदा करती है।

ए जी हमरे बाबुल जी के नीचे रे घिनउची फूलि रहे फुलवारी।
ए जी कहंना लगाऊं बेला रे चमेली कहनां लगाऊं अनार।
ए जी कहंना लगाऊं अंतर केरा बिरवा महक रहे संसार।
ए जी अंगना लगाऊं बेला रे चमेली फरिका लगाऊं अनार।
ए जी दुअरा लगाऊं अंतर केर बिरवा महकि रहे संसार।

अरे! मेरे पिता जी के नीचे घिनौची अर्थात् पानी के घड़े रखने का स्थान जो थोड़ा ऊँचा होता है। अरे! कहाँ बेला का फूल लगाऊँ और कहाँ चमेली का फूल लगाऊँ तथा कहाँ अनार का पेड़ लगाऊँ? (अतर) इत्र का पेड़ कहाँ लगाऊँ, जिससे सारा संसार सुगंधित होता रहे। आँगन में बेला चमेली लगाऊँगा और द्वार के मैदान में अनार लगाएंगे तथा द्वार पर अतर (इत्र) का पेड़ लगाऊँगा, जो सारे संसार में सुगन्धि फैलाता रहेगा।

यह गीत देवों को प्रसन्न करने के लिए सुगन्ध की खेती करता है। बेला–चमेली

आँगन में रहने से अन्तःपुर सुगन्धित रहेगा, और इत्र दरवाजे पर रहने से घर का बाहरी भाग भी सुगन्धित रहेगा परन्तु फल अनार को घर के बाहर लगाने हेतु निर्देश हुआ है। 'सुगन्धप्रिया देवाः' अर्थात् देवता लोग सुगन्ध से ही आकृष्ट रहते हैं। वे वहीं आते हैं, जहाँ सुगन्ध रहती है।

उड़ि जातिउ सोना चिरैया ननद मोरी उड़ि जातिउ सोना चिरैया।
अपने ननदी का बेसर बनवाय देवइ झुमकी ले अउबइ बड़ि बांकी। ननद....
अपने ननदी का कंगना बनवाय देवइ पहुंची ले अउबइ बड़ि बांकी। ननद....
अपने ननदी का बहुंटा बनवाय देवइ बाजू ले अउबइ बड़ि बांकी। ननद....
अपने ननदी का चुरबा बनवाय देवइ पइरी ले अउबइ बड़ि बांकी। ननदमो....
अपने ननदी का खोंसवा बनवाय देवइ ढरकुलिया ले अउबइ बड़ि बांकी। ननद ..
अपने ननदी का तिलरी बनवाय देवइ बेंदी ले अउबै बड़ी बांकी। ननद मोरी...

यही गीत इस प्रकार भी मिलता है –

उड़ जतिउ सगुन चिरइया ननद मोरी उड़ जाती सगुन चिरइया।
अपने ननद का ही बहुंटा गढ़उबै चुरबा गढ़ावै तोरो भइया। ननद उड़....
अपने ननद का ही ककना गढ़उबै दोहरी गढ़ावै तोरो भइया। ननद उड़....
अपने ननद का ही खोंसबा गढ़उबै बेसर गढ़ावै तोरो भइया। ननद उड....
अपने ननद का ही छन्नी गढ़उबै बेंदी गढ़ावै तोरो भइया। ननद उड़....
अपने ननद का ही संकरी गढ़उबै पायल गढ़ावै तोरो भइया। ननद उड़....

यह गीत भाभी द्वारा ननद के लिए गाया गया है। सोने की चिड़िया के समान हे ननद रानी! तुम उड़ जाती। मैं अपनी ननद के लिए नथ बनवा दूँगी और बहुत सुन्दर–सी झुमकी ले आऊँगी। अपनी ननद जी को हाथ का कंगन बनवा दूँगी और सुन्दर पहूँची भी बनवा कर दूँगी। कोहनी में पहनने के लिए बहुँटा बनवाऊँगी और भुजाओं में बांधने के लिए भुजबन्द या बाजूबन्द बनवा दूँगी। पैरों का आभूषण चूड़ा बनवाऊँगी और पैरों के लिए ही जेहरी या पैरी बनवाऊँगी। कमर के लिए खोंसबा बनवाऊँगी और कान के लिए सुंदर ढरकुलिया भी बनवा दूँगी। तीन लड़ी की करधनी बनवा दूँगी, साथ ही आकर्षक बेंदी भी बनवाऊँगी।

दूसरे गीत में भी क्रमशः बहुँटा, चुरबा, कंगन, दोहरी, खोंसबा, बेसर, छन्नी, बेंदी, संकरी और पायल आभूषण देने की बात की गयी है, परन्तु इसमें सगुन चिरैया कहा गया है, साथ ही भाभी और भइया दोनों को मिलकर गहना बनवाने हेतु गीत में कहा गया है।

इस गीत में ननद के प्रति स्नेह एवं सम्मान का वर्णन किया गया है। भाई और भाभी दोनों उसके लिए अपेक्षित गहने बनवाने का वर्णन कर रहे हैं।

बारा बरिस लरिकइयां अवधि मोरी बारा बरिस लरिकैयां।
पहले लेबौआ ससुर मोरे आए देखिगे है खेलत धुधुरिया। अवध........
दुसरे बुलौआ जेठ मोरे आए देखिगे है करत कलेउना।। अवध ....
तिसरे बुलौआ देवर मोरे आए देखिगे है घूमत बजरिया। अवध.........

मैं बारह वर्ष तक बचपन की उम्र का आनंद उठा रही हूँ। पहली बार जब मेरे ससुर बुलाने आए तो हमें धूल में खेलते हुए देखकर गए थे। दूसरी बार जब मेरे जेठ बुलाने आए तब मुझे कलेवा (प्रातराश) करते हुए देख कर गए थे। जब तीसरी बार मेरे देवर बुलाने के लिए आए, तब उन्होंने मुझे बाजार में घूमते हुए देखा था।

यह गीत क्षेत्र में बाल विवाह की झाँकी प्रस्तुत कर देता है। बाल्यावस्था में विवाह होने के बाद गौना करने की परम्परा है, परन्तु वह इतनी छोटी है कि तीसरी बार जाने पर ही उसे इस योग्य पाया जाता है।

ए जी प्यारी बहिनियां चिठिया लिखि भेजइं चले आवइं भइया हमार।
ए जी तुम्हारे देशवा मां भूंख लगत हइ कैसे आवइं देश तुम्हार।
ए जी गलियन कंदुआ बैठाइ देवै खात आवइं भइया हमार।।

इस गीत में बहन ने चिट्ठी लिखकर भइया को बुलाया है परन्तु भाई कहता है कि तुम बहुत दूर रहती हो, मुझे भूख लगती है। कैसे आऊँ? तब बहन ने कहा कि गली गली में कंदुआ (हलवाई) बैठा दूंगी, तब मेरे भइया आ जायेंगे। भाई के आने का उत्साह इस गीत में प्रकट है।

लाला कैसन सुन्दर गारी गामां सरकत जाइ सोहारी।
कहंना केरा तोरा पिढ़वा रे बेलना कहंना केर बेलनहारी। लाला...........
रीवा केर मोरा पिढ़वा रे बेलना सतना केर बेलन हारी।
कहना केर तोरी छन्नी रे करहिया सीधी के सेंकन हारी। लाला..............
ऐसन सुन्दर गारी गावा जल्दी सेकरैं सोहारी।
ऐसन सुन्दर मोरी छन्नी रे करहिया जल्दी सेकरैं सोहारी। लाला.............
कहंना केर मोर जुरे रे खवइया कहंना केर जेवनारी।
सगले रिमहां जुरे रे खवइया ओइंन हइं जेउनारी। लाला..............

कोई बेटे को संबोधित करती हुई कहती है कि इतनी सुन्दर गारी गीत गा रही है कि पूड़ी स्वयं ही बेलाती जा रही है, बनती जा रही है। गीत में प्रश्न है कि कहाँ का तुम्हारा बेलन और पीढ़ा है तथा कहाँ की बेलने वाली है। मेरा बेलन और पीढ़ा रीवा से बनवाकर लाया गया है। ये सभी बेलने वाली सतना की हैं। तुम्हारी कड़ाही कहाँ की है और छन्नी (करछुली सच्छिद्र) कहाँ की है। पूड़ी सेकने वाले, पकाने वाले तो सीधी से आए हैं। अच्छी–अच्छी बेलनहाई गारी गाओ, जिसमें सोहारी अर्थात् बड़ी–बड़ी पूड़िया जल्दी–जल्दी सिक जायें, पक जायें– मेरी कड़ाही और छन्नी इतनी अच्छी है कि पूड़ी जल्दी बनी जा रही है। भोजन करने वाले कहाँ से जुड़े हुए हैं और कहाँ के लोग जेवन (भोजन) बनाने वाले हैं। रीवा के ही लोग खाने वाले इकट्ठा हो गए हैं और वे ही जेउनार (भोजन बनाने) करने वाले भी हैं।

रेवांचल में सामान्यतया रीवा, सतना और सीधी जिले ही आते हैं। इस गीत में इन्हीं जिलों का वर्णन किया गया है।

ए जी आंचर छोरि अटारी मां चढ़ि गयीं तपै लागी राम रसोई जी।
ए जी जो सुधि आई अपने प्रभु जी की मरइ बिसूरि बिसूरी जी।
ए जी काहेन केर मैं कगदा बनाऊं काहेन केर मसि लेऊं जी।
ए जी आंचर फारि मैं कागदा बनाऊं नैनन के मसिआनी जी।
ए जी अंगुरी काटि मैं कलम बनाऊं लिखि देउं दुइ–दुइ बोल जी।
ए जी कयथा बेटउना लहुरा देवरबा वहै चिठिया देइ देई जी।
ए जी हरि जी के पाला है रे सुगना चरेरू वहै चिठिया देइ देई जी।
ए जी लइके चिठिया कदम चढ़ि बइठा बोले लाग बचन सुहात जी।
ए जी ओहीं तरी हरि मोरे पांसा जो खेलइं चिठिया गिरि छहराइ जी।
ए जी चिठिया जो बांचिनि मन मुसुकाने अंसुअन की झरि लागि जी।
ए जी दै देहो साहब हमरी नौकरिया आज घरे हम जाबइ जी।
ए जी आज न देवइ कालि न देवइ परसो देवइ चुकाई जी।
ए जी अगिया लगै तोरे आज औ काल्हिन बजुर परै तोरे परसों जी।
ए जी दै देउ साहब हमरी नौकरिया आजु घरे हम जाबइ जी।
माया मोरी लाई हैं बैठइ का पिढुलिया बहिनी गंगाजल पानी जी।
बहिनी मोरी बहिनी तुहिनि गोरी धना देआ बताई जी।
तुंहरिनि धनियां ताला गई तै हुंअइ लगावै बड़ि देरी जी।
ताला के ईरे तीरे घोड़वा कुदावैं गोरी धना कबहुं न देखानी जी।
बहिनी तुहिंनि मोरी बहिनी मोरी गोरी धना देइहउं बताई जी।

तोंहरिनि धनिया कुंअना गई तै उहंना लगावै बड़ी देरी जी।
कुंअना के ईरे तीरे घोड़िला कुदावै गोरी धना कहौ न देखानी जी।
बहिनी तुहिनि मोरी बहिनी मोरी गोरी धना देहु बताई जी।
तोहरिनि धनियां बागा गई तै बगिया लगावै बड़ी देरी जी।
बागा के तरे तरे घोड़िला कुदावैं गोरी धना कहउं न देखानी जी।
बहिनी तुहिनि मोरी बहिनी मोरी गौरी धना देहु बताई जी।
तुम्हारी धना नैहर गई तौ उहइं लगावै बड़ि देर जी।
ससुररिया के ईरे तीरे घोड़िला कुदावैं गोरी धना कहउं न देखानी जी।
सारी रे देखेउं सरहज देखेउं गोरी धना कहौ न देखानी जी।
बहिनी तुहिनि मोरी बहिनी मोरी गौरी धना देहु बताई जी।
आंचर छोरि अटारी मां चढ़ि गई तपै लागी राम रसोई जी।
जो सुधि आई अपने प्रभुजी की मरइं बिसूरि बिसूरीजी।
जा भइया जाहु त अपने अटरिया मिलि जइहीं भउजी हमारी जी।

घर की बहू आँचल खोलकर अटारी में चढ़ जाती है और राम रसोई बनाने लगी। इसी समय जब उसे अपने हरि या पति की याद आती है तो वह याद करके मरने लगती है। सोचा कि कागज किसका बनाऊँ, स्याही किसकी लूँ। मन में कहती है कि आँचल को फाड़कर मैं कागज बना लूँगी और नेत्रों की स्याही दवात बना दूँगी। छोटा देवर ही कायस्थ का बेटा बन जायेगा, वही चिट्ठी लिख देगा। घूमने वाला तोता मेरे पति ने ही पाल कर रखा है, वही चिट्ठी लेकर जायेगा। वह तोता चिट्ठी लेकर जाता है और कदम्ब के पेड़ पर चढ़कर बैठ जाता है। मीठे–मीठे वचन बोलने लगता है। उसी पेड़ के नीचे पति जी पाँसा खेल रहे थे और ऊपर से चिट्ठी छहराकर गिर जाती है। वह चिट्ठी लेकर वे पढ़ते हैं। मन ही मन मुस्कराते हैं और उनके आँखों से आँसुओं की झड़ी लग जाती है। वह अपने नौकरी देने वाले से कहने लगते हैं कि आज मैं घर जाऊँगा, मेरी नौकरी की रक्षा करना। अधिकारी ने कहा कि नौकरी का पैसा न आज दूँगा, न कल दूँगा, परन्तु परसों दे ही दूँगा। वह कहने लगा कि तुम्हारी नौकरी के आज और कल में आग लग जाए तथा परसों में व्रज पड़ जाए। हमारी नौकरी का मूल्य श्रीमान् जी दे दें, मैं अब घर जाऊँगा। जब लौट कर घर आया तो माँ ने बैठने का पीढ़ा लाकर दे दिया, बहन गंगा जल पीने के लिए ला देती है। वह अपनी बहन से कहता है कि– हे प्यारी बहन, अपनी भाभी कहाँ है, बता दो। बहन ने कहा कि तुम्हारी धन्य पत्नी तालाब गई है, वहीं देर कर रही है। वह तालाब के किनारे घोड़े से उछलता सा गया, पर वह नहीं मिलती। फिर वह बहन से अपनी गोरी पत्नी का पता पूछता है। वह

कहती है कि तुम्हारी प्रियतमा कुँए पर गयी थी। वहीं बड़ी देरी कर रही है। तब वह घुड़सवारी करता हुआ कुँए के आस–पास जाता है, परन्तु पत्नी नहीं दिखती। फिर वह बहन से पूछता है, वह कहती है कि भाभी बगीचे में गई थी और वहीं बड़ी देर हो रही है। वह घुड़सवारी करता हुआ बगीचे में चला जाता है, पर गोरी पत्नी नहीं दिखती। फिर बहन से पूछा, तब वह मायके जाने का कहती है। पति ससुराल गया वहाँ भी गोरी पत्नी नहीं दिखती। साली दिखती है, सरहज दिखती है, पर गोरी पत्नी नहीं दिखती। फिर बहन से पूछता है तो उसने कहा कि आँचल खोलकर भाभी अटारी गयी थी। वहीं रसोई बना रही थी। आपकी याद आयी और वह याद करती तड़पती रहती, भाई जी अटारी में जाओ भाभी मिल जायेंगी।

ए जी बन के करेली आंगन बिच बोई बौड़ी ओवरिया के पास।
ए जी जौने दिन बेटी तुम्हरो जनम भयो है होइ गई बज्र की रात।
ए जी सास ननद उठि दिया ना जलावैं ससुरू बजरिया न जायं।
ए जी सइयां बेदरदी बेनिया न डोलावैं या दुःख कहना समाय।
ए जी जौने दिन बेटा तुम्हारे जनम भयो है होइ गई सोनमन की रात।
ए जी सास ननद उठि दिअना जलावइं ससुरू बजरिया का जाइं।
ए जी सइयां बेदरदी बेनिया डोलावइ यह सुख कहना समाइ।

वन में होने वाली करेली आँगन में बो दी गयी जो कि अटारी के पास ही बेल के रूप में फैल गयी है। बेटी का जिस दिन जन्म होता है, वह रात वज्र की हो जाती है। सास और ननद उठकर दीपक नहीं जलाती है और ससुर बाजार नहीं जाते हैं। पति भी निर्दयी होकर पंखा नहीं झलता है, तब वह दुःख कहाँ समाहित होगा। परन्तु– हे बेटी! जिस दिन तुम्हारे बेटा पैदा हुआ था। वह सोने की रात हो गयी थी। सास और ननद दिया भी जलाती है और ससुर बाजार भी जाते हैं। पति निर्दयी भी पंखा करता है, तब का यह सुख कहाँ समाहित होगा।

भारत के ग्रामीण अंचलों में व्याप्त विडम्बनाओं का चित्रण इस गीत में किया गया है। बिटिया के पैदा होने पर परिवार क्या, पति का भी व्यवहार अनुकूल नहीं रहता है, परन्तु जब बेटा पैदा होता है तो रात सोने की हो जाती है, सास ननद सभी सक्रिय हो जाते हैं। ससुर बाजार में उत्सव हेतु सामग्री लेने चले जाते हैं और पति भी पंखा झलने लगता है। बेटी ही आगे चलकर पुत्र को जन्म देती है, माँ बनती है, घर में आमोद प्रमोद का वातावरण पैदा कर देती है। इसी बेटी के जन्म में उदासीनता होना दुःखप्रद है इसी से भारत में बेटियों का अनुपात कम हो गया है।

सखी फूलइ कहां कचनार चमेली कहां फूल रही।
सखी बगिया मां फूली कचनार, चमेली कहां फूलि रही।
सखी कुइनी कमल कइसे फूलइ भमर पाती फूलि रही।
सखी बेला फूलइ आधीरात चमेली भोरै फूलि रही।
देखे सुरिजा कमल मुसुकाय पे कुइनी चन्दा चूम रही।

अरे सखी! कचनार कहाँ फूली है और चमेली कहाँ फूल रही है? बगिया में कचनार और चमेली फूल रही है। कुमुदिनी और कमल कैसे फूलते हैं? उनमें भौरों की पंक्तियाँ फूली जा रही हैं। आधी रात में बेला फूलता है और चमेली सुबह–सुबह फूलती है। सूरज को देखकर कमल मुस्कराता है यानी फूलता है तथा चन्द्रमा को देखकर कुमुदिनी फूलती है।

यह गीत फूलों के माध्यम से घर–परिवार के उल्लास–आनन्द का विवेचन कर रहा है। कचनार, कमल बेटों के प्रतीक हैं परन्तु बेला, चमेली और कुमुदिनी सब बेटियों के सूचक हैं। दिन में कमल मुस्कुराता है, कचनार हरषाता है, परन्तु बेला अर्द्धरात्रि में, सुबह–सुबह चमेली और रात भर कमलिनी हँसती बिलसती रहती है। बेटियाँ शील एवं संकोच से भरी रहती हैं, अस्तु उन्हें रात में खिलने की बात गीत में की गयी है। बेटे तेज और शौर्य के प्रतीक होते हैं अस्तु उन्हें सूर्य से जोड़ दिया गया है।

ए जी खेलत रहेउं बालू रेत मुदरिया मोरी उहइं गिरी।
ए जी ससुरा जगाएउ आधी रात ससुइया गारी देत उठी। ए जी..............
ए जी जेठा जगायो आधी रात जेठनिया गारी देत उठी । ए जी ....
ए जी देवरा जगायो आधी रात देवरनिया गारी देत उठी। ए जी ....

बालू रेत का खेल–खेल रही थी, जिससे हमारी अंगूठी वहीं पर गिर गयी। यह जानकर ससुर को आधीरात में जगाकर बताया गया और सास भी गाली देते हुए उठ जाती है। आधी रात में जेठ को जगा दिया तथा जेठानी भी गाली देती हुई उठ जाती है। इसी प्रकार देवर को आधी रात उठाया और देवरानी गाली देती हुई उठ जाती है।

किसी ग्रामीण सुन्दरी की अंगूठी गिर गयी है, यह जानकारी परिवार में सबको हो गयी। ससुर, जेठ, देवर सभी आधी रात को जग गए और सास, जेठानी, देवरानी सभी गालियाँ देने लगती हैं कि तुम्हारी अंगूठी कहाँ गयी है। वह कहती भी है कि मैं बालू रेत में खेल खेल रही थी और मेरी अंगूठी वहीं गिर गयी है। संभवतः उसकी इस बात का घर–परिवार के लोग नहीं विश्वास कर रहे होंगे।

पतली सी धनियां पनियां को गयी थी फोरइं घइल घर जायं मोरे राम।
सासु ओंकी मारै ननद गरियावैं देवरा देश निकालै मोरे राम।
गलियां में मिलि गए उनहूं के राजा पूंछै लागे घरहूं के हाल मोरे राम।
मां तोहरी मारइ बहन गरिआवइं भइया देश निकालइं मोरे राम।
माता तो आहीं धना बन की लकड़िया आज जलै चाहे काल मोरे राम।
बहिनी त आहीं धना बन की चिरइया आज उड़ै चाहे काल मोरे राम।
भइया त आहीं धना हीसा के बंटइया आज बंटै चाहे काल मोरे राम।
पतली सी धनियां पनियां को निकली फोरइ घइल घर जायं मोरे राम।

दुबले–पतले शरीर वाली महिला पानी भरने के लिए जाती है, परन्तु घड़ा फोड़ देती है और अपने घर चली जाती है। उसकी सास मारती–पीटती है, ननद गालियाँ देती है, उसका देवर देश से निकाल देता है। रास्ते में ही उसके पति मिल जाते हैं और घर का हाल समाचार पूछने लगते हैं। तब पत्नी ने बताया कि तुम्हारी माता मारती है, बहन गाली देती है और भाई देश निकाला कर देता है। पति ने समझाया कि प्रिये! माता तो वन की लकड़ी जैसी है, चाहे आज जल जायें, उड़कर चली जायें, चाहे कल चली जायें। भाई भी हिस्सेदार है, चाहे आज बँटवारा हो जाए, चाहे कल बँटवारा हो जाये, इससे इन लोगों की बात को सही समझकर रहना चाहिए।

ग्रामीण क्षेत्र में नवागता वधू के साथ इस प्रकार का व्यवहार स्त्री स्वाभिमान का ध्यान न रखते हुए किया जाता है। उसकी पीड़ा केवल पति सुनता है, वही समझाता भी है और समझता भी है। पानी भरने जाने पर घड़े का टूट जाना एक सामयिक घटना है, परन्तु उसमें अपशब्दों का प्रयोग बाहुल्य और उसका जीना–रहना कठिन कर देना असामाजिक–सा है।

ए जी छोटी सी गोरी धना पनिया का निकली फोड़ गगर घर जाय।
ए जी दाए हांथे लोटिया बाएंनि हांथे धोतिया गोरी धना नैहर चली जाय।
ए जी बीच में मिलि गए पिया के पियारे गोरी धना कहां चली जाय।
ए जी सासु मोरी मारै ननद गरियावै देवरा मोरा दिहिनि निकार।
ए जी माया त आही चन्दन लकड़ियां आज जलैं चाहे काल्हि।
ए जी बहिनी त आहीं बन की चिरैया आज उड़ै चाहे काल्हि।
ए जी भइया त आहीं आधे के हिसदारी आज बटै चाहे काल्हि।
ए जी तुम तो हमारी घर की घरौतिन तुम काहे जाबू रिसाइ।

अरे! छोटी सी गोरी वधू पानी के लिए गयी थी, परन्तु घड़ा फोड़कर घर चली

गयी। दाएं हाथ में लोटा और बाएँ हाथ में धोती लेकर वह गोरी मायके चली जा रही थी। बीच में ही प्रियतम मिल गए, पूछने लगे कि– हे गोरी प्रिये, कहाँ जा रही हो? कहने लगती है कि सास मेरी मारती है, ननद गाली देती है और मेरे देवर ने घर से निकाल दिया है। वह समझाता है कि माँ तो चंदन की लकड़ी जैसी है, चाहे आज जल जायें और चाहे कल जल जायें। बहन भी वन की पक्षी जैसी है, चाहे आज उड़ जाये चाहे कल उड़ जाये। भाई तो आधे का हिस्सेदार है, आज बँटवारा हो जाये, चाहे कल बँटवारा हो जाये। तुम तो मेरी घर की मालकिन हो, क्यों नाराज होकर जा रही हो।

यह गीत आंशिक परिवर्तन के साथ पूर्व में भी आया है। इसमें यह विशेष है कि दाएं हाथ में लोटा और बाएं हाथ में धोती लेकर वह नव–वधू मायके जा रही थी क्योंकि पानी भरने में घड़ा टूट गया था, जिससे घर के लोग उसे गालियाँ दे रहे थे।

ए जी नवल बहुरिया बैठी अटरिया खेलत पुतरी बनाय।
ए जी जब सुधि आवै अपने वीरन कै नित केरी पुतरी नसाय।
ए जी काहेनि भइया मै कगजा बनाऊं काहेनि मसिया बनाय।
ए जी अंचला के मै कगजा बनाऊं नयनन मसिया बनाय।
ए जी पिंजड़ा के पालेन पर्वत सुगना लइ चिठिया पहुंचाय।
ए जी एक हांथे मोरे वीरन चिठिया का बांचइ एक हांथे आंसू पोंछ।
ए जी सांझै मोरे विरना घोड़िला साजिन चले है सवेरे के आय।

नई–नई बहू अट्टालिका में बैठी है और पुतली बनाने का खेल–खेल रही है। जब उसे अपने भाई की याद आती है तो नित्य की पुतली नष्ट कर देती है। वह सोचती है कि मैं कागज और स्याही कहाँ पा जाऊँ। तब वह अपने आँचल को ही कागज बना डालती है और आँखों को स्याही बना देती है। पिंजरे में पला–पुसा तोता वह लिखी हुई चिट्ठी लेकर जाता है। मेरे भाई ने एक हाथ से चिट्ठी पढ़ी और दूसरे हाथ से आँसू पोंछने लगा। भाई ने शाम को ही घोड़ा सजा लिया और सुबह तक आ पहुँचा।

यह गीत नई बहू को अपने बचपन के भाई के साथ खेलने की याद में भाव पूर्ण पत्र लिखने का वर्णन करता है। पत्र पाते ही भावुक होता हुआ भाई शीघ्र ही बहन के पास आ जाता है। यह गीत भाई–बहन के उत्कृष्ट स्नेह का उदाहरण है।

जेवनार गारी

बारातियों के भोजन के समय गारी गान का प्रचलन तो उत्तर भारत में मिलता ही है, परन्तु अवध के अंचल में इसका महत्त्व और भी बड़ा है। जनकपुर के नाम से ससुराल का उल्लेख करने की परम्परा उत्तर भारत में है, रेवांचल में तो है ही।

जेवंत देहि मधुर धुनि गारी। लै–लै नाम पुरुष अरु नारी।
समय सुहावनि गारि विराजा। हँसत राउ सुनि सहित समाजा।।

यह प्रसंग तो जनकपुर का है, श्रीरामविवाह में गारी गान हुआ था। शिवविवाह में भी गारीगान हिमांचल में हुआ था –

नारि वृन्द सुर जेवत जानी। लगी देन गारी मृदु बानी।

गारी मधुर स्वर देहि सुन्दरि विंग्य बचन सुनावही।
भोजन करहि सुर अति विलंबु विनोद सुनि सचुपावही।।

इस प्रकार भोजन काल में वर पक्षीय पुरुषों व स्त्रियों के नाम ले–लेकर गाली दिए जाने की परम्परा लोकगीतों के हास्य एवं स्वारस्य को आज भी बढ़ाती रहती है। रेवांचल की मांगलिकता में राम का अन्योन्याश्रय संबंध है। नाम में राम, कान में राम, संस्कार में राम, शुभकार्य में राम के नाम के बिना कुछ भी संभव नही हो पाता है। यहाँ यज्ञों, अनुष्ठानों का स्थान तुलसी के रामायण और नाम संकीर्तन ने ले लिया है। संध्यावन्दन के समय भी वही पाँच दोहा रामायण पढ़ने की प्रथा है। काज विवाह, मण्डप बरुआ या छठी बरहों का प्रसंग हो तो भी राम ही गाए जाते हैं। तिलक, फलदान, द्वारचार, बन्नी, बन्ना, विवाह, चढ़ाव, अंजुरी सब जगह लोकगीत राममय हैं। यहाँ भोजन

मन्त्र नहीं पढ़े जाते। वे तो मंदिरों–पूजाघरों और विशेष अवसरों में ही पढ़े जाते हैं, परन्तु भोजन परोसने पर सीताराम बोलने हेतु कहा जाना, अर्थात् भोजनारम्भ का पर्याय बन गया है। जीने–मरने, सुख–दुख, उराव–उछाह सब राम से अनुप्राणित हैं।

रिमहों के घर बारात आती है। उनके पैर धोने, पानी पीने, नहाने सब में गंगा–यमुना उछलती कूदती रहती है। भोजन में लोग क्रमशः खाद्य सामग्री परोसने लगते है कि आँगन या भीतर के कमरे से ढोलक की थाप के साथ नारी कण्ठ गा उठता है।

'जय बोलो सीताराम जनक मंदिर मां'। वहाँ भी गाली देने का मानों मंगलाचरण कर देते हैं कि जय सीताराम बोलो। लड़की का हर घर जनकपुरी है। समधी जनक और दशरथ होते हैं।

जय बोलो सीताराम जनक मंदिर मां।
सोने की थारी में जेमना परोसेउं जय जेवइ सीताराम। जनक..जय
सोने के लोटा गंगा जल पानी जय घूंटै सीताराम। जनक......
लौगन लंयची का बीड़ा लगायउं जय रचवै सीताराम। जनक..........
फूलन चुनि–चुनि सेजा लगायउं सोवइ सीताराम। जनक मंदिर....

जनक जी के घर–आँगन में भोजन प्रारंभ करने के लिए जय सीताराम बोलो। सोने की थाली में भोजन परोस दिया गया है और जनक निवास में सीता और राम भोजन कर रहे हैं। सोने के लोटे में गंगाजल पानी के रूप में लाया गया है और उसे सीतारामजी पी रहे हैं। लौंग और इलायची से पान का बीड़ा लगाया गया है और उसे खाकर मुँह रचाने वाले श्रीसीतारामजी ही हैं। फूलों को चुन–चुन कर बिस्तर लगा दिया, परन्तु सोने को सीतारामजी हैं।

यह सीता–राम भोजन के आरंभ का मंत्र है। जनकपुरी में बेटी के मायके में भोजन हो रहा है और भोजन का स्वाद रामरस ही है। सोने की थाल का भोजन, सोने के लोटे का पानी सब सीताराम के नाम से ही सुस्वादु अमृत जैसा होता है। चाहे बीड़ा खाना हो और चाहे बिस्तर में सोना हो, सब कुछ सीताराममय ही है।

यह गारी गान का मंगलाचरण है। रेवांचल का गारी गायन इसी से आरंभ होता है। विवाह का भोजन गारी गीतों के बिना न तो पचता है, न ही स्वादिष्ट हो पाता है। बिना गारी गान के भोजन भी अधूरा लगता है। यह परम्परा आज भी रेवांचल में प्रचलित है। आधुनिकता एवं विकसित समाज के बहाने अब इन पर चोट होने लगी है, जिसका प्रभाव परम्पराओं, लोकगीतों और लोक विश्वासों पर होने लगा है।

जेंवन बैठी बरात जनकपुर राम जी करइं जेउनारी कि हां जिउ राम (2)
गोड़ धोवन कहं कोपरी मंगाइनि सही यमुना चलि आई कि हां जिउ (2)
पांतिन पांतिन मां परिगैं पतरिया बैठे सब जन जोरी कि हां जिउ (2)
ताहि समाज बैठे राजा दशरथ संग मां चारिउ भाई कि हां जिउ (2)

जनकपुरी में बारात भोजन करने बैठी है और श्रीरामजी भोजन कर रहे हैं। पैर धोने के लिए कोपरी (बड़ी थाली) मंगायी, जिसमें यमुना ही चली आयीं। पंक्ति में पत्तल लगा दिए गए और सब लोग इकट्‌ठा होकर बैठ गए हैं। उसी समाज में राजा दशरथ चारों भाइयों के साथ भोजन करने बैठे हैं।

यह गीत श्रीरामजी के विवाह के प्रसंग का स्मरण कराता है। भोजन से पूर्व पैर धोने की परम्परा है, उसके बाद पंक्ति में भोजन करने बैठना, पत्तल में भोजन करना। पिता दशरथ के साथ चारों बेटे बैठकर भोजन करते हैं, इसका विवेचन है।

आज का 'स्नेह भोज', 'प्रीतिभोज', 'स्वरुचि भोज' नगरों से गाँव तक पहुँच गया है। सार्ववर्णिक भोज हो गया है। न क्रम, न परम्परा, न गारी के गीत और न ही सीता–राम का बोलना। सब जूँठा–कूँठा और सब एक साथ, धक्का मुक्की, खड़े–खड़े, चलते फिरते भोजन करने की परम्परा–सी चल पड़ी है। चाहे जो खाएँ, चाहे जो छोड़ें या फेंक दें सब स्वैच्छिक हो गया है। संस्कारों का आए दिन लोप होता जा रहा है, संस्कारगीत पढ़े लिखे लोगों में अब नहीं बचे हैं। इस प्रकार गाँवों में एक सांस्कृतिक संकट है। भारतीय आस्था और पहचान का रूप बदलने लगा है सभ्यताओं के स्वरूप बदलने लगे हैं। ये गीत उन्हें याद कराते से लगते हैं, समझाते हैं और सन्देश दे रहे हैं कि हम तुम्हारे पूर्वजों की धरोहर है। हमें सम्हालना पड़ेगा, तभी भारत की सांस्कृतिक विरासत अक्षुण्ण रह सकेगी।

राजा जनक चिठिया लिखि भेजै आवा ललन ससुरारी, कि हां जिउ....
कंचन बखरी बनी है राजा जनक की शोभा बरनि नहिं जाई, कि हां जिउ.......
चारिउ भाइ गए ससुरारी बाजैं लागी अवध बधाई, कि हां जिउ.................
रानी सुनैना आरती उतारैं जनक लिहिनि अगुआई, कि हां...........
जेमन बइठे है चारिउ भइया देइं सखी सब गारी, कि हां जिउ..........
गारी ता सुनि के लखन मुसुकाने हमही न चाही कुछ गारी, कि हां...........
जो तुम रहे तीनउ लोक के ठाकुर काहे आए लला ससुरारी, कि हां............

राजा जनक श्री रामजी को पत्र लिख कर भेज देते हैं कि बेटा ससुराल आ जाओ। राजा जनक का सोने का बड़ा महल बना हुआ है, जिसकी शोभा का वर्णन नहीं

किया जा सकता है। चारों भाई ससुराल गए और अयोध्या में बधाई बजाई जाने लगती है। जनक जी ने अगवानी की, रानी सुनैना ने आरती उतारी। चारों भाई भोजन करने बैठते हैं। सभी सखियाँ गालियाँ देने लगती है। गाली सुनकर लक्ष्मण मुस्कराने लगते हैं और कहते हैं कि हमें गाली नहीं चाहिए, तब सखियों ने कहा कि यदि तुम त्रिलोकीनाथ हो तो बेटा ससुराल क्यों आए हो?

रेवांचल की इस गीत ने यही वर्णन किया है कि जामाता के ससुराल जाने पर उसके सम्मान में बधाइयाँ बजती हैं, उनकी आरती भी उतारी जाती है। भोजन में यही गारी के गीत गाए जाते हैं। यह गारी सुनने के लिए कोई मना नहीं कर सकता है, क्योंकि ससुराल में सबको गारी मिलती ही है।

पांतिन–पांतिन पड़ि गय पतरिया जेवन बैठे चारिउ भाई, कि हां जिउ...........
विष्णु भोग के चावल बना है दाल का दिए है बघारी, कि हां जिउ...........
मैदा केरी रोटी बनी है घी सुरहिन की सोधाई, कि हां जिउ................
पुरइन पात की पतरी बनी है लौंगन खीला लगाई, कि हां जिउ..................
जेवन बैठे हैं चारिउ भइया देती सखीं सब गारी, कि हां जिउ ....

पाँत में पत्तल डल गयी है और चारों भाई भोजन करने बैठ गए हैं। विष्णु भोग का चावल बना दिया गया है और दाल बघार दी गयी है। रोटी मैदा की बनी है और गाय के घी से चुपड़ दी गयी है। कमल के पत्तों की पत्तल है। लौंग के खीले लगे हुए हैं। चारों भाई भोजन करने बैठै हैं और सब सखियाँ गाली दे रही हैं।

यह गीत भी चारों भाई राम–लक्ष्मण–भरत और शत्रुघ्न के भोजन के समय गाली गान का विवरण करता है। परन्तु यह भोजन कैसा है, इसको भी बताया गया है। चावल विष्णुभोग का, बघारी हुई दाल, मैदा की रोटी घी लगी हुई। लौंग के कीलों से बनी कमल के पत्तों की पत्तल का वर्णन है। कच्चा भोजन रेवांचल में इसी प्रकार बनाया जाता है।

राम लषन दूनौ व्याहन आये भरि गा है जनक दुआर, कि हां जिउ................
गंगा जी से जल भरि लावैं पांव पखारै नौआ बारी, कि हां जिउ..............
चन्दन काठ की बनी रे पिढुलिया पांतिन पांति बिछाई, कि हां जिउ...............
पान के पत्ता की पतरी बनाई लौंगन डोभ डोभाई, कि हां जिउ...............
जिरिया के भात जतन से रांधेउं मुंगवा के दाल बघारी, कि हां जिउ...............
मैदा की रोटी जतन से सेंकिउं घियना मां दिहेउं चभोरी, कि हां जिउ.............

आमा औ भाटा कढ़ी और रसाजै परवर की तरकारी, कि हां जिउ................
निहुरे–निहुरे परसै जनक जी धोतिया धूमिल होइ जाई, कि हां जिउ...........
धोतिया त हमरी धोबिया घर जइहैं अइसे छयल कहं पाई, कि हां जिउ..........
जेवन बइठे है राम और लछिमन देत सखियां सब गारी, कि हां जिउ............
अइसे ललन का गारी न दीजै एक बाप तीनि महतारी, कि हां जिउ.............
ई गारी केर माख न मानहु गारी लगइ अति प्यारी, कि हां जिउ....................

राम और लक्ष्मण दोनों विवाह करने आए हैं, जिससे द्वार भर गया है। गंगा जी से जल भर कर ले आते हैं और नाई बारी सब पैर धोते रहते हैं। चन्दन की लकड़ी का पीढ़ा बनवाया है, जिसे पंक्तिबद्ध बिछा दिया गया है। पान के पत्तों की पत्तल लौंग की सींक से सिल दी गयी है। जीरे का भात बनाया, बघार लगी। मूंग की दाल भी बनी है। मैदा की रोटी प्रयास करके सेंक दी, जिसमें खूब घी लगा दिया है। आम, भाटा, कढ़ी, रसाज और परवर की सब्जी बनायी गयी है। झुक–झुक कर जनक जी परोसते हैं, जिससे उनकी धोती धूमिल हो जाती है। वे कहते हैं कि मेरी धोती तो धोबी के घर धुल जाएगी, पर इस प्रकार सुन्दर लड़के कहाँ मिलेंगे। राम और लक्ष्मण भोजन करने बैठे हैं और सखियाँ सभी गालियाँ दे रही है। इतने अच्छे बेटे को ऐसी गाली मत देना कि एक पिता है– तीन माताएँ है, परन्तु इस गाली से बुरा भी मत मानना, क्योंकि गाली बहुत प्रिय लगती है।

बारातियों के सम्मान पूर्वक भोजन में स्वयं जनक का लग जाना, उदात्त सम्मान का निदर्शक है। गाली देने में राम के बहाने एक पिता और तीन माँ कह देना स्वयं एक गाली ही है। साथ में ऐसी गाली के लिए बुरा नहीं मानने का आग्रह भी हास परिहास की स्वस्थ परम्परा है।

सोवत राम का लखन जगावैं चला भइया चली ससुरारी, कि हां जिउ चला......
राम के माथे तिलक भल सोहै कानन कुण्डल झारी, कि हां जिउ.......
गल सोहैं वैजन्ती माला मोहर कै बलिहारी, कि हां जिउ..........
एहि विधि राम जनकपुर आए सखी झरोखे लागी, कि हां जिउ........
एक–एक से सखियां आई मनही मनहिं मुसुकाती, कि हां जिउ..........
एक से लाख तुम्हार महतारी एक पुरुष की नारी, कि हां जिउ.........
नेग धरम उनका कैसे के निबहै साल भरे मां दुइ पारी, कि हां जिउ........
हँसि मुसुकाइ बोले मनमोहन सुनौ मिथिला की नारी, कि हां जिउ...........
लेहु परीक्षा हमरे पिता जी के लै जाहुं अपनी अटारी, कि हां जिउ............

राम जी सोते रहते हैं तो लक्ष्मण जी जगाकर कहते हैं कि भइया ससुराल चलो। राम जी के मस्तक में सुन्दर तिलक सुशोभित हो रहा है और कानों में कुण्डल सजा है, गले में वैजयंती माला पहने हैं, मोहर पहने हैं जो सुन्दर लग रही है। इस प्रकार राम जी जनकपुर आते है। सखियाँ खिड़कियों से झाँकने लगती हैं। एक–एक कर सखियाँ आ रही हैं और मन ही मन मुस्करा भी रही हैं। एक से लाख तक तुम्हारी माताएँ हैं, वे सब एक पुरुष की ही नारी है। उनका नियम धर्म किस प्रकार से निर्वाह होता है। एक वर्ष में दो पारी खेलती हैं। मुस्कुराते हुए मनमोहन श्रीराम जी बोलते है कि– अरी मिथिला की नारियों! सुनो, हमारे पिताजी की परीक्षा ले लो, अपनी अटारी में उन्हें ले जाओ।

इस गीत में जामाताओं से होने वाली हँसी–मजाक का दृश्य उपस्थित होता है। इसमें श्रीराम ने भी हास–परिहास किया है जो लोक जीवन का प्रभाव है।

करन कलेवा बैठे है चारिउ भइया सखी सब देवइं गारी, कि हां जिउ.....
हंसि–हंसि बतियां करै सब सखियां तोहरे तीन महतारी, कि हां जिउ..........
खाय भभूत करै सुत पैदा ऐसी पतिव्रता नारी, कि हां जिउ ऐसी....................
बहिनी तोहार लइ गया सन्यासी कुल मरयाद बिगारी, कि हां जिउ...............
योगी जती का जीजा बनाएउ अजबै रीति निकारी, कि हां जिउ....................
करन गएउ तुम मख रखवारी दिहेउ ताड़का मारी, कि हां जिउ....................
चरण छुआइ अहल्या तारेउ पत्थर से बनाएउ नारी, कि हां जिउ...................
तोहरी बड़ाई कहां लगी गाई सुना सुना अवध बिहारी, कि हां जिउ..............
कहै हरिभक्त विकल कइ डारेउ मारि के नैन कटारी, कि हां जिउ...............
ऐसा रसरंग कहां तुम सीखेउ दुनिया की दुनियादारी, कि हां जिउ................

चारों भाई कलेवा करने के लिए बैठे हैं तथा सभी सखियाँ गाली दे रही हैं। सभी सखियाँ हँस–हँस कर बातें कर रही हैं कि तुम्हारी तीन–तीन माताएँ हैं। भभूती खाकर पुत्र पैदा करती है ऐसी पतिव्रता नारियाँ हैं। तुम्हारी बहन को संन्यासी भगा ले गया और कुल की मर्यादा को भ्रष्ट कर दिया है। योगी यति को जीजा बनाकर अजब रीति निकाली है, यज्ञ की रक्षा करने गये थे और वहाँ ताड़का को ही मार डाला। पैर स्पर्श करा कर अहिल्या का उद्धार किया और पत्थर से नारी बना दिया। अरे अवधबिहारी जी! तुम्हारी बड़ाई कहाँ तक गाऊँ। नैन की कटारी मार कर व्याकुल कर दिया। यह रस रंग तुम कहाँ से सीखकर आए हो और यह दुनियादारी कहाँ से सीख ली है।

इसमें भी श्रीराम की कथा विषयक बातें गारी के रूप में प्रकट हुई हैं।

उतरत माघ लगत दिन फागुन राम जी चले है ससुरारी, कि हां जिउ
जाइ के पहुंचे जमुना जी के तीरे जमुना धरे है दूनउ पार, कि हां............
हांथ हिरौदी मैं तोहि देवइ केवटा रामजी का पार उतारू, कि हां..............
जाय के पहुंचे जनक जी के द्वारे चन्दन खाट बिछाई, कि हां.................
धाउ रे नउआ धाउ रे बरिया रामजी के कपड़ा उतारू, कि हां.......................
गोड़ धोवन का पराति मंगाइनि सहि जमुना ढुरि आई, कि हां.................
गोड़ धोइ चरणोदक लीन्हिनि अति बड़ि भाग हमारी, कि हां.......................

श्रीरामजी माघ महीने के बीतते–बीतते फाल्गुन महीने के लगते ही ससुराल के लिए चल देते हैं। जाते हुए यमुना जी के किनारे पहुँच जाते हैं, परन्तु यमुना जी दोनों पार पूरी बढ़ी हुई हैं। केवट मैं तुम्हें हाथ का आभूषण हिरौदी दूँगी, तुम रामजी को पार उतार दो। जाते हुए जनक के दरवाजे पर पहुँच जाते हैं। वहाँ चंदन की चारपाई बिछा दी जाती है। नाई–बारी दौड़ो, रामजी का कपड़ा उतार दो, पैर धोने के लिए परात (बड़ी थाली) लेकर आओ। इसमें यमुना जी ही आ गयी हैं, पैर धोये, चरणामृत ले लिया और मेरी भाग्य बड़ा है, ऐसा अनुभव करने लगते हैं।

इस गारी गीत में केवट प्रसंग का लोकजीवनीकरण कर दिया गया है। माघ के बाद फागुन में ससुराल के लिए जाना, यमुना में बाढ़ रहना, फिर केवट का नाव से पार उतारना, जनक राजा के दरवाजे में चारपाई बिछाकर बैठाना, नाऊ बारी द्वारा दौड़कर कपड़े उतारना, परात में पैर धोना, चरणोदक लेना और भाग्य की सराहना करना आदि व्यवहार आज भी रेवांचल के गाँवों में जामाता के घर आने पर किए जाते हैं।

ज्यो रे हथिनिया मां हउदा कसा है चढ़ि के चले चारिउ भाई, कि हां जिउ......
जाइके पहुंचे जमुना जी के तीरे कि मुंज–मुंज करत मुखारी, कि हां जिउ......
कहरा के लड़िका धोतिया लै आवै कि धोबिया के धोती पखारै, कि हां ......
बम्हना के लड़िका चन्दन गारै कि दुआदश तिलक चढ़ावइ, कि हां ......
जाइ के पहुंचे जनक जी के द्वारे कि जेजम फरश बिछाई, कि हां ......
गोड़ धोवन का कोपरी मंगाइनि कि सहि गंगा–यमुना ढुरि आई, कि हां ......
बस नहिं आए कोउ जेवनहारी कि राम जी रचइं जेवनारी, कि हां ......
सुघर हुई हां राधा औ रुक्मिनि कि राम जी का रचै जेउनारी, कि हां ......
जिरिया के भात उइं रुचि रुचि रांधिनि कि मुंगिया के दार बघारी, कि हां ......
बरा औ मुगौरा दधिआ मथि बोरिनि कि रिकमच लौंग बघारिन, कि हां ......
मैदा की रोटी झलामलि बेलिनि कि घिउ सुरहिनि का सुहाई, कि हां जिउ.....

कुंदुरू औ करेला आलू औ भांटा परवरि केरि तरकारी, कि हां जिउ
अरहर कटहर आलू रे करेला परवर केरि तरकारी, कि हां जिउ........
अपना त जेवइं भरत जी का पूंछइं कि कैसी लगी लाला जेउनारी, कि हां .....
चारिउ भाई जेमन बइठे कि सखियां गावइं सब गारी, कि हां जिउ.......
हम तौ आहेन तीनउ लोक के ठाकुर हम ही न चाही ऐसी गारी, कि हां......
जौ तुम आहे तीनउ लोक के ठाकुर काहे आए ससुरारी, कि हां जिउ........

जैसे ही हथिनी पर हौदा कस दिया है कि चारों भाई चढ़कर चल देते हैं। जमुना जी के किनारे गए और मुखारी करते हैं। कहार का लड़का धोती लेकर आता है। धोबी धोती धोता है। ब्राह्मण पुत्र चन्दन उतारता है और बारह प्रकार का तिलक लगाता है और सजधज कर जनक जी के दरवाजे पर पहुँच जाते हैं। पैर धोने के लिए बड़ी थाल (कोपरी) मंगाते हैं। गंगा या यमुना भी पानी की जगह चली आती हैं। राम जी की रसोई या जेवनार बनाने के लिए कोई नहीं आता है। राधा और रुक्मिणी आती हैं जो भोजन बना देती हैं। जीरे जैसा पतला चावल पकाया, बघार लगायी हुई मूँग की दाल बना दी गयी। बड़ा और मूंगबड़ा दही को मथकर डुबा दिया और लौंग से बघार दी गयी है। उसमें गाय का घी लगाया गया है। कुंदरू, करेला, आलू, भॉटा और परवर की सब्जी बनायी गयी। इस सब्जी में कटहल और करेला भी सम्मिलित किए गए हैं। स्वयं श्रीराम भोजन कर रहे हैं और भरत जी से पूछते हैं कि कैसा भोजन बना है। चारों भाई भोजन करने बैठे हैं, सभी सखियाँ गारी गीत गा रही हैं। श्रीरामजी ने कहा कि हम तो तीनों लोक के ठाकुर हैं, मालिक हैं और हमें ऐसी गाली नहीं चाहिए। परन्तु सखियाँ गाती कहती हैं कि यदि तुम त्रिलोकीनाथ हो तो ससुराल क्यों आए हो? इस गीत में भोजन की वस्तुओं की गणना करायी गयी है और गाली सुनने के लिए कहा गया है। ससुराल में गाली सुननी ही पड़ती है।

पंचवटी में कुटी बनाई राम लखन दूनउ भाई कि हां जिउ राम लखन दूनौ भाई।
राम लखन दूनउ मिलकर बइठे सीता ने बात सुनाई कि हां जिउ सीता ने बात सुनाई।
ताही समय तक हिरना आया कंचन वदन दिखाई कि हां जिउ कंचन वदन दिखाई।
यह मिरगा तो अति सुन्दर है खाल मोरे मन भाई कि हां जिउ खाल मोरे मन भाई।
इतना बचन सुने रघुबर जी धनुहा बाण उठाई कि हां जिउ धनुहा बाण उठाई ।
सीतहिं छोड़ कहीं नहि जाना जीव जन्तु अधिकाई कि हां जिउ जीव जन्तु अधिकाई।
मृगा भगा तुरत छलकारी पीछे चले रघुराई कि हां जिउ पीछे चले रघुराई।
डाल–डाल में मिरगा भागे पात पात रघुराई कि हां जिउ पात पात रघुराई।
सम्मुख मिरगा आइ खड़ा भयो रघुबर बान चलाई कि हां जिउ रघुबर बान चलाई।

राम–राम कहि मिरगा गिर गयो भनक शिवा ने पाई कि हां जिउ भनक शिवा ने पाई।
मरती बार कपट छल त्यागा राम–राम धुन लाई कि हां जिउ राम रामधुन लाई
राम शब्द जब सुना जानकी लछिमन करो सहाई कि हां जिउ लछिमन करो सहाई।

राम और लक्ष्मण दोनों भाइयों ने पंचवटी में कुटिया बनायी है। जब राम और लक्ष्मण दोनों मिलकर बैठते हैं तो सीता ने बात सुनायी। उसी समय एक हिरण आया और अपना सोने का शरीर दिखाया। उसे देख सीता ने कहा कि यह हिरण तो बहुत सुन्दर है, इसका मृगचर्म हमें अच्छा लग रहा है। यह सुनते ही श्रीराम ने धनुष–बाण उठा लिया और लक्ष्मण से कहा कि सीता को छोड़कर कहीं नहीं जाना, क्योंकि यहाँ जीव–जन्तु अधिकाधिक है, छल करने वाला हरिण भाग चला और पीछे–पीछे राम जी चले जा रहे हैं, हरिण डाल–डाल तो श्रीराम पात–पात की गति से भाग रहे हैं। हिरण सामने आकर खड़ा होता है और श्रीराम ने बाण चला दिया। मृग ने राम–राम कहा और गिर पड़ा। यह आवाज सीता को सुनाई पड़ी। मृग ने मरते समय छल–कपट त्याग दिया और राम–राम की धुन लगा लेता है। जब जानकी ने राम शब्द सुना तो लक्ष्मण से सहायता करने का आग्रह किया।

यह गीत भी रामकथा परक ही है। इसमें पंचवटी की लीला का निरूपण किया गया है।

राजिन राजि के घोड़िला मंगाइनि रामा चले ससुरारी कि हां जिउ......
जाइ के उतरें जनक जी के द्वारे चन्दन खाट बिछाई कि हां जिउ.....
गोड़ धोवन कहं कोपरी मंगाइनि भागिनि अपने सराही कि हां जिउ....
अस नहिं आए कोउ राधा रूक्मिणि राम जी के खाइ जेवनारी कि हां जिउ....
भाजी औ भांटा करू रे करैला नेबुआ सेधान कै फांकी कि हां जिउ.......

रामजी सज–धज के ससुराल चले जा रहे हैं। वे राज्यों से घोड़े मंगा लेते हैं और उन्हीं पर चढ़कर जाते हैं। वे जाकर जनक जी के दरवाजे पर उतरते हैं, जिसमें चन्दन की चारपाई बिछाई गयी है। पैर धोने के लिए बड़ी थाल मंगाते है और अपने भाग्य की प्रशंसा करते हैं। कोई राधा और रुक्मिणी राम जी के यहाँ भोजन करने नहीं आती हैं। भाजी, भटा और कड़वा करेला तथा नींबू के अचार की फाँकी भोजन में परोस दी गयी है।

यहाँ भी भोजन का विवरण करते हुए एक दो के न आने का उल्लेख मिलता है।

राजतिलक की भई है तयारी बजै लगी अवध बधाई जी।

नगर नगर चहुंओर अयोध्या शोभा बरनि नहिं जाई जी।
रानी सुमित्रा चौक पुरावैं सखियां मंगल गाई जी।
कोप भवन सुनि राजा सकुचाने देखहु काम बड़ाई जी।
सोने के खड़ाऊं राजा दशरथ पहिनें चले आवइं कैकई मनावै जी।
जौन मांगन तुम मांगा रानी केकई तौन मांगन हम देवइ जी।

अयोध्या में बधाइयाँ बजने लगी हैं और राजतिलक की तैयारियाँ हो रही हैं। अयोध्या के नगर में चारों ओर सजावट हो रही है। शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता है। सुमित्रा रानी चौक बना रही हैं और सखियाँ मंगल गीत गाने में लगी हैं। जब राजा ने कोप भवन की बात सुनी तो संकोच करने लगते हैं, देखिए कामदेव का महत्त्व कितना बढ़ा हुआ है। राजा दशरथ सोने की खड़ाऊँ (पादुका) पहने हुए हैं और कैकेयी रानी को प्रसन्न करने हेतु चले आ रहे हैं। वे कहने लगे कि कैकेयी रानी जो भी वरदान तुम मांगोगी, मैं दे दूँगा।

राजतिलक की तैयारी का वर्णन करते हुए कैकेयी के कोप भवन का प्रसंग यहाँ गारी गीत में बताया गया है।

मुनि संग चल दिहिन राजकुंवर दोउ मुनि की करन रखवारी जी।
मग मंहं मिलि गयीं शिला अहिल्या चरण धूलि से तारी जी।
जग्य कियो पूरन मुनिवर की निशिचर दल संघारी जी।
करि असनान सुरसरि मां प्रभु जनकपुरी पगु धारी जी।
सीय स्वयंबर देखन के हित आए जनक फुलवारी जी।
नाम राम श्यामल जो सजनी कर में सारंग धारी जी।
लछिमन नाम राम के पाछे हंइ शेषा अवतारी जी।
देश–देश के भूपति आए शिव धनु कोउ न टारी जी।
तहां राम रघुवंश विभूषन धनुष तोरि महि डारी जी।
सिय जयमाल राम गले डाली हरषित पुर नर नारी जी।
दुलहिनि वेष सोह मड़ए तर जनक की राज दुलारी जी।
रानी सुनैना नृप विदेह दोउ रघुवर चरण पखारी जी।
चरण परवारि चरणोदक लीन्हीं अति बड़ भाग्य हमारी जी।
रवि शशि कोटि देखि छवि लाजैं मोहे रूप निहारी जी।

मुनि विश्वामित्र के साथ दोनों ही राजकुमार मुनि–यज्ञ की रक्षा हेतु चल दिए, मार्ग में पत्थर की अहल्या मिली। उसका धूलि से उद्धार कर दिया। मुनि–यज्ञ पूरा

किया। निशाचरों के दल का संहार कर दिया। गंगा स्नान किया। जनकपुरी पहुँचे, सीता स्वयंवर देखने के लिए जनक की फुलवारी में आ गए थे। सखियाँ कहती हैं कि श्यामल रंग का जो सारंग धनुषधारी है, उसका नाम राम है। उसके पीछे शेषावतार लक्ष्मण है। देश देश के राजा आए थे, पर शिव धनुष कोई नहीं उठा सके। परन्तु श्रीराम ने धनुष तोड़कर धरती में डाल दिया। सीता ने जयमाला राम के गले में डाल दी। सभी नगर वासी प्रसन्न हो गये। मण्डप में दुलही सीता सुन्दर लग रही थी। सुनैना रानी और राजा विदेह दोनों ही राम के पैर धोते हैं। चरणामृत लेते हैं। यही हमारा बड़ा भाग्य है कि करोड़ों सूर्य और चन्द्रमा जिनकी शोभा देखकर लजा जाते हैं और रूप देखकर मोहित हो जाते हैं।

श्रीराम विवाह के प्रसंग का निरूपण इस गीत में किया गया है।

गारी गावइं जनकपुर की नारियां दूल्हा श्रीराम जी लला।
आए दशरथ महाराज, व्याहन लछिमन रघुराज।
देखन आई जनकपुर की नारियां दूलह श्रीरामजी लला।
राज दशरथ के कुमार बइठे जेवइ जेउंनार।
मिलिजुलि के गावइं सबइं नारियां दूलह श्रीरामजी लला।
ऐसी करनी की उदार सब अयोध्या की नारी।
पैदा करती है लाल खीर खाइयां दूलह श्रीरामजी लला।
एक मैने सुनी हाल, बहन तुम्हारी है कुचाल।
श्रृंगी ऋषि से करी जाय सादिया दुलहा श्रीरामजी लला।
बात सच्ची दो बताय, मोरे मरम को देहु भगाय।
इसमें तुम्हारी या बहन जी की गलतियां दूलह श्रीरामजी लला।
सुनी कैकयी छिनार, करै वन का बिहार,
घूमै जंगल मां बनिकें हिरनियां, दूलह श्रीरामजी लला।

दूल्हा श्रीरामजी के लिए जनकपुर की नारियाँ गाली गान कर रही हैं। महाराजा दशरथ जी लक्ष्मण और श्रीराम का विवाह करने आए हैं, जिन्हें जनकपुर की नारियाँ देखने के लिए आयी है। दशरथ के बेटे भोजन करने के लिए बैठ गए हैं। सभी नारियाँ मिलकर गीत गा रही हैं। अयोध्या की सभी नारियाँ ऐसी करनी में उदार हैं कि खीर खाकर बेटा पैदा करती हैं। मैंने एक समाचार सुना है कि इनकी बहन कुमार्गी है और श्रृंगी ऋषि से विवाह कर लिया। सही बात बता कर मेरा भ्रम दूर कर दो। तुम्हारी गलती थी या तुम्हारी बहन की गलती थी। सुना है कि कैकेयी वन में घूमती है, हिरनी जैसी भटकती है ।

इस गीत में भी जनकपुर की मैथिलानियाँ गालियाँ दे रही हैं।

हरि की पतली कमर नाजुक बहियां धनुष कैसे तोड़ेंगे सइयां।
कोमल गात सिरी भगवान् कर पै सोहइ लाल कमान भारी महादेव का बान।
हारे बड़े–बड़े बलवान् कौनो जोधा से धनुष उठत नहिंया। धनुष ...हरि की.....
हरि की सुनि–सुनि मधुरी बानी मेरे दिल में प्रीति समानी।
राजा प्रणहुं धनुष को ठानी प्यारे प्रीतम की लरम कलाइयां। धनुष....हरि की....
हरि के अधिक रसीले नैना चित से टारे नाहिं टरै ना।
जो कोउ जोधा धनुष उठावै खाके मरूं जहर का बैन।
देवर लछिमन की उमर लरिकइयां। धनुष..... हरि की......
सुमिरौ शिवशंकर कैलासी, मै हूं रामचन्द्र की दासी।
होइ है सुखी अयोध्यावासी तीनउ लोकन में कीर्ति प्रकाशी।
हांथ जोड़ हरि के पडूं पइयां। धनुष.... हरि की पतली...........

प्रभु की कमर पतली–सी हैं, बाँहें कमजोर–सी हैं, तो स्वामी धनुष किस प्रकार तोड़ पाएंगे। श्री भगवान् का शरीर कोमल है, हाथों में लाल धनुष सुशोभित हो रहा है। बड़े–बड़े बलशाली हार मान चुके हैं किसी योद्धा से भी धनुष नहीं उठ पा रहा है। प्रभु की मीठी बातें सुन–सुन कर मेरे हृदय में प्रीति भर गयी है, परन्तु राजा ने धनुष की प्रतिज्ञा कर दी है। मेरे प्रियतम की कलाइयाँ कोमल हैं। प्रभु के नेत्र सरस हैं। चित्त से हटाए नहीं जा रहे हैं, श्रीराम के अलावा कोई भी वीर धनुष को उठा लेगा तो मैं विष खाकर मर जाऊँगी। देवर लक्ष्मण की आयु भी लड़कों कशवासी शिवशंकर का स्मरण कर रही हूँ, कि मैं तो रामचन्द्र की दासी बन गयी हूँ सारे अयोध्यावासी सुखी हो जायेंगे। तीनों लोकों में कीर्ति प्रकाशित हो जाएगी। मैं प्रभु के हाथ जोड़कर पैर पड़ रही हूँ।

धनुष तोड़ने के बिना विवाह संभव नहीं है और यह रामजी कैसे करेंगे, इसी तर्क वितर्क के लिए यह गारी गीत बन गया है।

राजा जनक के बरात बोलबाई, चलो मिथिलापुर भाई।
पाती माता ने पाई खुशी आनन्द छाई।
बाजै रहसऔ बधाई मोती देत है लुटाई।
अरे धन्य घरी आज खबर रघुवर की पाई, चलो मिथिलापुर भाई।
नेउता देने पठाए सबइ मुनिगन जुरि आए।
संग शंकर जी आएं अपने वाहन चढ़ि आए।

अरे सजिगै बारात शोभा बरनि न जाई, चलो मिथिलापुर भाई।
पीनस पालकी मंगाई हाथी घोड़ा सजाई।
बजै शंख शहनाई शोभा बरनिउ न जाई।
अरे चार छड़ी पंख उपर छत्र की तनाई, चलो मिथिलापुर भाई।

राजा जनक ने बारात बुलवायी है तो भाई लोगों मिथिलापुरी चलते है। माँ ने यह पत्रिका प्राप्त की, तो आनन्द उल्लास चारों ओर छा गया है। बधाई बज रही है, रास नृत्य हो रहा है। मोती लुटाए जा रहे हैं। आज की घड़ी भी धन्य है कि राम का समाचार मिला है। भाई मिथिलापुरी चलो। निमन्त्रण देने भेजा तो सभी मुनिगण इकट्ठा हो गये हैं। अपने वाहन में चढ़कर शिवजी भी आ गए हैं, बारात सज गयी है, जिसकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता है। बड़ी सी पालकी मंगायी, हाथी और घोड़ा सजा दिया, शंख–शहनाई बज रहे हैं, ऊपर छत्र लगवा दिया गया है और पंखे के लिए चार छड़ी चल रही हैं, इसकी शोभा का कौन वर्णन करे अवर्णनीय है। कौन–कौन बारात में गए थे, यही वर्णन करते हुए गीत बन जाता है।

धनुष यज्ञशाला में मुनि जी आए दुइ बालक ले आए।
देखो सांवले है राम, लखन गोरे हैं भाई शोभा बरनी न जाई।
धन्य उनकी माता जिनने गोद में खिलाए दुइ बालक ले आए। धनुष....
जुड़ी राज की समाज बड़े–बड़े महाराज, आए लंकाधिराज।
धनुष जोर से उठाए धनुष डोले न डुलाए दो बालक तो आए। धनुष.....
कहंइ लछिमन से राम भइया धरती लो थाम मची बड़ी धूमधाम।
शीस मुनि के नवाए, धनुष लिए हैं उठाए, दो बालक ले आए। धनुष...........
तोड़ शंकर धनुभारी जाको शब्दभयो भारी हरषित हुए नर नारी।
सुनि के सुरमुनि हैं आए और फूल हैं बरसाए दुइ बालक ले आए। धनुष..........
देखो जानकी जी आई, सखी संग में ले आई हांथे माला है सुहाई।
प्रेम के विवश पहिराइ न जाई, दो बालक ले आए। धनुष ....

धनुष यज्ञ की यज्ञशाला में मुनि विश्वामित्र जी आए और साथ में दो बालक भी लेकर के आए हैं। रामजी सांवले रंग के हैं। लक्ष्मण जी गौर वर्ण के हैं। दोनों की शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता है। उनकी माता जी को धन्यवाद है, जिन्होंने गोद में खिलाया है। राजाओं का समाज जुड़ आया है। बड़े–बड़े महाराजा आए हैं, लंका का राजा भी आया है। वे सब जोर लगाकर धनुष उठा रहे हैं, परन्तु धनुष हिल भी नहीं पा रहा है। राम ने लक्ष्मण से कहा कि भइया धरती को संभाल लेना, बड़ी धूमधाम मची

हुई है, मुनि विश्वामित्र को सिर झुकाकर राम ने प्रणाम किया और धनुष को उठा लिया है। शिव का विशाल धनुष तोड़ दिया और उसका बहुत जोर का शब्द हुआ। सभी नर–नारी प्रसन्न हो गए। यह सुन कर देवता, महात्मा आए, फूलों की बरसात करने लगते हैं। सखियों को साथ में लेकर जानकी जी आती हैं। हाथों में माला उठाए हुए हैं, परन्तु प्रेम से पराधीन होकर माला पहनाई नहीं जा रही है, ऐसे दो बालक आए हैं।

इस गीत में भी धनुष यज्ञ के प्रसंग का ही वर्णन है और जयमाल की स्थिति में प्रेम की विवशता का वर्णन किया गया है।

रामके रेंगे लछिमन रेगें रेंगि चले चारिउ भाई।
आगे के घोड़िला गुरुजी का साजिनि पीछे सजन चारिउ भाई।
जाय बरात जमुनातट पहुंची यमुना धरे दूनउ पाट।
हांथे हिरौदी मैं तोहि देवइ केवटा राम जी का पार उतारु।
राम के उतरे लछिमन उतरैं उतरि परे है चारिउ भाइ।
नौआ के लड़िका चन्दन उतारैं तिलक सम्हारैं चारिउ भाइ।
अच्छे–अच्छे लड़िका चन्दन उतारैं तिलक सम्हारैं चारिउ भाइ।
जाइ बारात जनक द्वारे पहुंची फूलि उठी फुलवारी।

बारात का वर्णन मिलता है कि राम चल पड़ते हैं, फिर लक्ष्मणजी चल देते हैं और अब चारों भाई चल देते हैं। सबसे आगे गुरुजी का घोड़ा सजा देते हैं और उनके पीछे चारों भाइयों के घोड़े सजे रहते हैं। यह बारात जाकर यमुना के किनारे पहुँच जाती है और यमुना जी दोनों पाट पर जल से पूरी हो गयी हैं। राम जी को पार उतारने के लिए केवट को हिरौदी (गहना) देने हेतु कहा गया और जब राम जी पार उतरे, तब लक्ष्मण जी भी उतरते हैं और चारों भाई उतर जाते हैं। नाई का लड़का दातून तोड़ता है और धोबी कपड़े धोता है। अच्छे–अच्छे लड़के चंदन तैयार कर देते हैं और चारों भाई तिलक लगा लेते हैं। जनक के दरवाजे पर यह बारात पहुँच जाती है और फुलवारी फूल उठती है।

सारी सरहज की प्यारी लगै गारियाँ जनकपुर की गावैं नारियां।
बैठी रनवासे में नारी, गावैं गीत समय की गारी।
सबके आनन्द होइ रहा भारी, जनक राजा रचाएं जेउनारियां। जनक.......
भोजन कई किसम बनवाए भारी इन्तजाम करवाए।
राजा दशरथ समधी आए अवधपुर से आई है बरातियां। जनक.............
ठाढ़े हांथ जनक जी जोड़े सुमिरत नाथ आए है दौड़े।

राखे बात धनुष के तोड़े राम लछिमन की सब बलिहारियां। जनक............
ऐसा लगे बीत गए बरसन, पाए बड़े भाग से दरशन।
तन मन करै जनक जी अर्पण जिनकी नजरों में भरी किलकारियां। जनक.......

जनकपुर की नारियाँ गाली गा रही हैं। साली और सरहज की गालियाँ प्यारी लगती हैं। स्त्रियाँ रनवास में बैठी हैं। समय के अनुसार गारी गीत गा रही हैं। सभी के यहाँ बहुत आनन्द हो रहा है और राजा जनक ने भोजन बनवाया है। कई प्रकार के भोजन जनकजी ने बनवाये है, बहुत प्रबन्ध करवाया है। राजा दशरथ जी समधी होकर आ गए हैं और बारात अयोध्या से आ गयी है। जनक जी खड़े होकर दोनों हाथ जोड़े हुए हैं। याद करते ही स्वामी दौड़कर आ गए हैं, धनुष के तोड़ने से बात रख ली है और राम तथा लक्ष्मण पर सब बलिहारी हो रहे हैं। ऐसा लग रहा है कि बरसों बीत गए हैं, बड़े भाग्य से दरशन पा गए हैं। शरीर और मन जनक जी को सौंप दिया है। उनकी नजरों में किलकारियाँ भरी हैं।

यह गीत भी रामविवाह प्रसंग को ही प्रकट करता है।

सरयू के तीर खड़े राम लखन भाई आवाज तो लगाई।
सुनो केवट भइया इस पार लाओ नइया, उस पार के जवइया।
केवट पहचान लियो नाव न ले आई आवाज तो लगाई। सरयू..............
तुम कौन हो कि घर के तुम लाल कौशिला के।
तुम बहुत हो चलांके तुम आज तक न झांके।
चाहे लषन मारो बाण तीर हिल जाई आवाज तो लगाई। सरयू.............
जनक पुर की डगर में शिला पड़ती बगल में
पत्थर की नारी नाथ कैसे बनाई आवाज तो लगाई सरयू.................
रामलषन सीता पग धोवत भई गीता,
तुससीदास सेवक ने गारी बनाई। आवाज तो लगाई। सरयू......................

राम और लक्ष्मण दोनों भाई सरयू नदी के किनारे खड़े हुए हैं और आवाज लगा रहे हैं कि अरे केवट भैया! नौका इस पार ले आओ, हम उस पार चलेंगे। केवट ने उन्हें पहचाना और नौका नहीं लाया। कहने लगा कि तुम कौन हो, किधर से आए हो, कौशिल्या के पुत्र हो, तुम बहुत चतुर हो, आज तक कभी नहीं आए। तो अब लक्ष्मण चाहे तो बाण मार कर किनारा ही हिला दे, परन्तु मैं नाव नहीं लाऊँगा। जनकपुर के रास्ते में चट्टान बगल में पड़ती है, उसे पत्थर से औरत कैसे बना दी है? राम, लक्ष्मण और सीता के पैर धोते ही कैसे लायी गयी? सेवक तुलसीदास ने यह गारी बनायी है।

इस गीत में वन यात्रा में गंगा तट का केवट प्रसंग ही उद्धृत है, परन्तु गंगा के स्थान पर सरयू का नाम लिया गया है।

सासुरे के जातन में बड़ी कठिनाई मैं रहिके देखि आई ।
पहली बार मैं ससुर घर गई थी सइयां ने मुझे तो बरफी खिलाई। मैं रहि......
संझा के बइठी सबेरे चली आई मैं रहिके देख आई।
ऊंची अंटारी लगे चन्दन किंवारी जहां पलंग बिछे चार,
अरे खिड़की से झांकी सबति देखि आई। मैं रहिके देखि आई।
सासुरे न जइहौं मैं इहैं रहि अइहौं मैं चार बेर खइहौं।
मोरी सइयां से कह दो कर ले दूसरी लोगाई। मैं रहि...............

ससुरार जाने में बड़ी कठिनाई है। मैं तो वहाँ रहकर देख आई हूँ। जब मैं पहली बार ससुराल गयी थी तो मेरे पति ने मुझे बरफी खिलायी थी, मैं वहाँ रही और सब देखकर आ गयी हूँ। शाम को बस में बैठ गयी और सुबह चली आयी हूँ। ऊँची अटारी बनी है, चन्दन के दरवाजे लगे हैं। वहाँ चार पलंग बिछे हुए हैं, खिड़की से झाँक कर देखा तो सौत (सपत्नी) दिख गयी। अब मैं ससुराल नहीं जाऊँगी। यहीं पर रही आऊँगी, चार बार खाऊँगी, मेरे स्वामी (पति) से कह दो कि दूसरी औरत कर लें, मैं अब नहीं जाऊँगी।

विवाहिता वधू ससुराल का समाचार कहती है कि वहाँ सपत्नी देखकर आयी है। सपत्नी के कारण कहती है कि मेरे पति को दूसरी औरत करने के लिए कहो, क्योंकि वह कभी सौत का दुःख सहन नहीं कर सकती है।

पनघट मां झोका खा गई लाला नीला लहंगा वाली।
चढ़ी झपट के गिरी रपट के शान बिगड़ गई सारी। पनघट में..........
नैन कटीली क्या छवि बरनौं सुन्दर गोरी नारी। पनघट में...................
कदम चढे श्याम वंशी बजावैं ग्वाल हँसै दै तारी। पनघट में..............
भुकुरत कुढ़त नन्द घर आई राधा जैसी नारी। पनघट में....................
बरजा यशोदा तूं लाला का वा छेंकै गैल हमारी। पनघट में....................

आज पनघट में अर्थात् पानी भरने के घाट में नीला लहंगा पहनने वाली झोंका खा गयी थी। जब वह झपट कर अर्थात् तेजी से चढ़ रही थी, रपट कर या फिसल कर गिर गयी थी, जिससे सारी शान अर्थात् सजावट बिगड़ गयी थी। उसके नैन कटीले थे, शोभा अवर्णनीय थी, सुन्दर थी, गौर वर्ण की स्त्री थी। श्रीकृष्ण भी कदम्ब के पेड़

पर चढ़े हुए थे, बंसी बजा रहे थे और ताली बजाकर ग्वाल बाल हँसे जा रहे थे। श्री राधा जी नाराज होती हुई, कुढ़ती हुई नन्द के घर पहुँच जाती हैं और यशोदा से कहती है कि तुम अपने बेटे को मना कर दो, वह मेरे मार्ग में आता है और रोकता भी है।

इसमें राधा–कृष्ण के हास्य का विवेचन किया गया है। पनिहारिन के पनघट में गिर जाने से कृष्ण ने वंशी बजा दी और ग्वाले ताली बजाकर हँसने लगे। वह क्रोध में आयी और यशोदा को कहा कि अपने बेटे को मना करो, वह मेरा रास्ता रोकता है।

करैं बोकइयां–बोकइयां ललन तोरी कबहूं न गय लरकइयां।
सफरैं बोकइयां–बोकइयां ललन तोरी कबहूं न गइ लरकइयां।
सोने की थारी मां जेमना बनायों जेमइं बोकइयां–बोकइयां
ललन तोरी कबहूं न गइ लरकइयां। करैं............
लौंगन खील–खील बीरा लगायउं कतरैं बोकइयां–बोकइयां। ललन तोरी..........
फूलन बिन–बिन सेजिया लगायों सोवइं बोकइयां–बोकइयां। ललन तोरी..........

घुटने के बल चलने को बोकइयां करना कहा जाता है। गीत में दूल्हे को बचपन की आदत के अनुसार बोकइयां करने की बात की गयी है। सोने की थाल में भोजन बनाया जाता है, परन्तु वे घुटनों के बल ही बैठकर भोजन कर रहे हैं। उनकी बचपन की आदत नहीं छूट सकी है। लौंग की कील लगाकर पान का बीड़ा लगाया, परन्तु उसे खाने के लिए बोकइयां करते हुए ही चबाते हैं। शय्या भी फूलों को बीन–बीन कर लगायी गयी हैं परन्तु ये घुटनों के बल ही सोते रहते हैं।

इस गीत में दूल्हे की प्रकृति को लेकर बातें की गयी हैं।

गंगा बनी गुलजारी मालिन तोरी बागा बनी गुलजारी।
लउंगइं त बोई गईं लइंची तो बोइ गईं जइफर बोई गईं निनारी। मालिन.........
लउगैं त सिंचि गई लइंची भी सींचि गई जइफर सिंची है निनारी। मालिन.......
लउगैं त जम गई लइंची जम गईं जइफर जमगईं निनारी। मालिन.................
लउगैं त फर गई लइंची भी फर गई जइफर फर गईं निनारी । मालिन...........
लउगै त कट गई लइंची जो कट गई जइफर कट गई निनारी। मालिन.........

मालिन को संबोधन करता हुआ यह गीत कहता है कि– हे मालिन! तुम्हारी बगिया गुलजार हो गयी है। लौंग बो दी गयी है, इलायची बो दी गयी है और जायफल भी अलग से बोयी गयी है। इसी प्रकार अलग–अलग लौंग, इलायची और जायफल

को सींच दिया गया है। सींचने के बाद लौंग, इलायची और जायफल अंकुरित हो गयी है। लौंग में, इलायची में और जायफल में पृथक्–पृथक् काट ली गयी हैं। इस गीत में मसाले की खेती का वर्णन किया गया है।

जबहिं गोपाल चले मधुबन का घर अंगना ना सोहाई जी।
जाइ के पहुंचे हैं जमुना जी के तीरे जमुना धरी है दोनउ पार जी।
काठे नइया ले आया मोरे केवट जमुना देहु मोहि उतारी जी।
चरण छुअत जमुना भई नीचे उतरिगे कृष्ण मुरारी जी।
जाइ के पहुंचे जनकपुर द्वारे भीड़ जहां पर भारी जी।
चरण धोवन कहं कोपरी मंगाइनि सह जमुना चलि आई जी।
चरण धोइ चरणामृत लीन्हिनि अति बड़ि भागि हमारी जी।
जेवन बइठे है चारिउ भइया देती सखी सब गारी जी।
को आहीं लाला तुम्हारे बाप महतारी को आहीं तुम्हारे बहिनी जी।
राजा दशरथ है बाप हमारे रानी कौशिल्या महतारी जी।
बहिनी हमारी है रानी सुभद्रा सीता लगै भौजाई जी। जबहि.....

जब गोपाल जी मधुवन के लिए चल दिए तब घर–आँगन अच्छा नहीं लगता था। वे यमुना जी के पास पहुँचे तो वे दो पाट जल पूर में थी। अरे केवट! लकड़ी की नौका ले आओ और हमें उस पार उतार दो में यमुना जी ने कृष्ण के पैर छुए और पानी उतर गया तो कृष्ण मुरारी जी पार उतार गए। जाते–जाते जनकपुरी पहुँच गए, जहाँ भारी भीड़ इकट्ठा थी। पैर धोने के लिए कोपरी (बड़ी थाली) मंगायी साथ में स्वयं यमुना जी ही चली आईं। पैर धोया, चरणामृत लिया, कहा कि मेरा बड़ा भाग्य है। चारों भाई भोजन करने बैठ जाते हैं। सभी सखियाँ गाली देने लगती है। बेटा तुम्हारे माँ बाप और बहन कौन हैं? कहते हैं कि पिता राजा दशरथ हैं। माता कौशल्याजी हैं। बहन सुभद्रा जी है। सीता भाभी लगती है।

इस गीत में श्रीकृष्ण और राम दोनों के प्रसंग को एक साथ लिया गया है। इससे लगता है कि लोक में इसका महत्त्व कम है कि नाम कौन सा है। श्रीराम के विवाह के बाद ही ब्राह्म विवाह की परम्परा का सूत्रपात हुआ है, अस्तु अधिसंख्यक विवाह गीत श्रीराम को ही समर्पित मिलते हैं, परन्तु इन्हीं में अनेक गीतों में श्री कृष्ण विषयक वर्णन भी मिल जाते है।

जबहिं गोपाल चले मधुबन का घर अंगना न सोहाइ, कि हां जिउ.........
मुरली बजावत धेनु चरावत बसै जमुना जी के तीर, कि हां जिउ ....

नावै नाव गोपिन चढ़ि आए कृष्ण गरुड़ चढ़ि आए, कि हां जिउ ....
उतरि परे जमुना जी के तट पर द्वादश तिलक चढ़ाई, कि हां जिउ.............
चार पाव सुख पाले के फुलना बिच बिच घुंघुरू लगाई, कि हां जिउ...........
गिरि पर्वत से खंभा मंगाइनि पातन मड़वा छवाई कि हां ....
सोने के कलशा गंगा जल पानी गज मोती चौक पुराई, कि हां जिउ...........
तेहिं चढ़ि बइठे हैं कृष्ण कन्हैया चमर ढुरै अधिकाई, कि हां जिउ.................
राधा रुक्मिणी ललिता विशाखा सब सखि रचैं जेवनारी, कि हां जिउ............
दाल भात मैदा की रोटी तेहिं पर घिउ चहकोरी, कि हां जिउ...................
बरा रे मुगौरा दही रे दधिबोरइं रिकमच लौंग बघारी, कि हां ....
अरहर कटहर आलू करैला परवर की तरकारी, कि हां जिउ.....................
जेवन बैठे है कृष्ण कन्हैया देइं सखीं सब गारी, कि हां जिउ..........

जब गोपाल जी मधुबन के लिए चलते हैं तो घर–आँगन ठीक नहीं लगता। वे मुरली बजाते हुए, गाय चराते हुए, यमुना जी के किनारे निवास करते हैं। गोपियाँ नौकाओं में चढ़कर आईं और कृष्ण जी गरुड़ में चढ़कर आए थे। यमुना जी के किनारे उतर पड़ते हैं। बारह प्रकार के तिलक लगा कर रखते हैं। चारों पैरों में सुख रूपी फूलों का श्रृंगार बना हुआ है। बीचों–बीच घुँघरू लगाए गए हैं। पहाड़ से खंभा मंगाया फिर पत्तों से मण्डप छा दिया। सोने के कलश में गंगाजल भरा और गजमुक्ता की चौकें बना दी गयी हैं। उसी में कृष्ण कन्हैया चढ़कर बैठ गए हैं। बहुत से चँवर चलाए जा रहे हैं। राधा, रुक्मिणी, ललिता, विशाखा आदि सभी सखियाँ मिलकर जेवनार बना रही हैं। दाल–भात, मैदा की रोटी जिसमें घी खूब लगा हो। बड़ा, मूंगबड़ा, दही, दही में डुबाई लौंग से बघारी गयी रिकमच, आलू, कटहल, करेला, परवर की सब्जी बनायी गयी है। कृष्ण कन्हैया भोजन करने बैठे हैं और सारी सखियाँ गाली दे रही हैं।

इस गीत के द्वारा श्रीकृष्ण की सखियों के द्वारा रचे गए भोजन का विवरण दिया गया है।

जबहि गोपाल चले बरसाने धरि मनिहारी का वेष।
नाक मां बेसरि माथे मां बेदिया कानन कुण्डल धारी।
अड़ा छड़ा पायन पैजनियां पहिरे है सुन्दर सारी।
सज डलिया चुड़ियन कै धरिकै गलियन जाइ पुकारी।
अपने महलिया से राजा पुकारैं इधर आओ मनिहारी।
ऐसी चूड़ी हमहीं पहिनाओ श्याम को लगैं अति प्यारी ।
चूड़ी के पहिरत मन मुसुकाने समझ गई ब्रजनारी।

मनिहारी अर्थात् चूड़ी पहनाने वाले का वेश धारण कर कृष्ण बरसाने के लिए चल देते हैं। उन्होंने नाक में नथ पहन लिया है और मस्तक में बिन्दी लगा ली है, साथ ही कानों में कुण्डल पहन लिया है। चौड़ा छड़ा और पैंजनियाँ पैर में पहन रखा है और सुहावनी साड़ी भी पहन ली है। एक डलिया में चूड़ियाँ सजा ली है और उसे सिर पर रख लिया तथा गलियों में जाकर आवाज लगाने लगते हैं। राजा ने अपने महल से पुकारा कि– अरे मनिहारी जी! इधर तो आओ। ब्रजनारी ने कहा कि हमें ऐसी चूड़ियाँ पहना दो कि श्री कृष्ण को प्रिय लगने लगे। चूड़ियों के पहनते ही मन में मुस्कराने लगते हैं और ब्रजनारी राधा सब समझ जाती है।

यद्यपि यह प्रसंग संभवतः किसी पौराणिक अभिमत के अनुकूल नहीं है, फिर भी लोक में यह मनिहारी लीला बहुत लोकप्रिय है। इसी लीला का वर्णन करता हुआ यह गारी गीत है।

चितचोर नन्द के चीर हमारी दीजिए कृष्ण मुरारी, कि हां जिउ............
तुम्हारे सिर पर मुकुट कन्हैया मेरे सोहइ सारी, कि हां जिउ...............
तुम तौ नन्द जी के पुत्र कहावउ मैं वृषभानु दुलारी, कि हां जिउ..........
चोली औ चीर हमारी दे देहु मोहन जल बिच ठाढ़ उघारी, कि हां जिउ..........
चोली औ चीर तबइ हम देवइ जल से होहु तूं न्यारी, कि हां.................
कैसे के जल से मैं होउ न्यारी लोग हँसै दे तारी, कि हां.................
कैसे के लोग हँसइं दै तारी मै हूं पुरुष तुम नारी, कि हां जिउ.................
पुरइनि पात पहिरि राधा निकली कृष्ण हँसै दै तारी, कि हां..........................

अरे नन्द के चित्त चोर कृष्ण मुरारी जी! हमारे कपड़े दे दो। तुम्हारे सिर पर कन्हैयाजी मुकुट अच्छा लग रहा है और हमारे शरीर में साड़ी ठीक लग रही है। तुम नन्द जी के पुत्र कहे जाओगे, पर मैं तो वृषभानुजी की प्यारी बेटी हूँ। हमारी चोली और कपड़े दे दो। हम पानी में निर्वसन खड़ी हैं। मोहन ने कहा कि चोली और साड़ी मैं तभी दूँगा, जब तुम पानी से बाहर आओगी। राधा ने कहा कि मैं कैसे बाहर आऊँ, लोग ताली बजा–बजा कर हँसी करेंगे। कृष्ण ने कहा कि क्यों हँसेंगे? मैं पुरुष और तुम स्त्री तो हो। कमल का पत्ता पहन कर राधा निकलती है और श्रीकृष्ण ताली बजा–बजा कर हँसने लगते हैं।

यह गीत बेलन हाई गारी के रूप में भी गाया जाता है, परन्तु कहीं–कहीं इसे जेवनार गारी के रूप में भी गाने की परम्परा है। इसमें श्री कृष्ण की प्रसिद्ध चीरहरण लीला का हास्य विनोद के रूप में वर्णन मिलता है।

जेमन बइठे हैं किसन कन्हइया देंय सखी सब गारी, कि हां जिउ.............
माथे मुकुट पीताम्बर सोहइ गरे बैजयन्ती की माला, कि हां.............
ओरियन ओरियन पतरी परति गई भात परोसयं सारी, कि हां..................
दाल भात औ गेहूं की रोटी सुरहिन घिउ चहकोरी, कि हां ....
भांति–भांति कै बनी तरकारी किसन भएं रस भोगी, कि हां..........
माया तोहारी कहयं यशोदा मथुरा मां आई उधारी, कि हां ....
बाप तोहार कहायें नन्द जी घर–घर मांगय देहारी, कि हां ....
बहिनी तोहारी कहिए सुभद्रा अरजुन संग सिधारी, कि हां ....
बुआ तोहारी कहिय जो कुन्ती सोमै पांच भतारी, कि हां जिउ ....
महुआ के डारी भंवरा गुंजय बिछियन कै झंकारी, कि हां ....
बाजूबन्द कंगन सब सोहइ मोतियन मांग संवारी कि हां जिउ..................
हँसि–हँसि पूंछइं माता यशोदा कइसी ललन ससुरारी, कि हां ....
बोलन लागे किसन कन्हइया सुन मां बचन हमारी, कि हां ....
सारी रे सरहज बहुत पिआरी सास गंगा जल पानी, कि हां जिउ.................
नौ महिना पूर कोखि मां राखेउं कबहूं न कीन्ह बड़ाई, कि हां जिउ......
एक महीना पूतबा गए ससुररिया सासु की करै बड़ाई, कि हां जिउ............
तोहरी दुहाई नन्द बबा हैं अब न जाब ससुरारी, कि हां जिउ....................
हमहीं तुमहीं नन्द बबा कहं देयं सखी सब गारी, कि हां जिउ......जेमन...........

कृष्ण कन्हैया भोजन करने बैठ गए हैं और सखियाँ सब गालियाँ दे रही हैं। माथे में मुकुट, अंग में पीताम्बर, गले में वैजयन्ती माला पहने हैं। ओरिया के नीचे पत्तल परोस दी गयी है। उसमें भात परोसा है। दाल, भात और गाय के घी लगी हुई गेहूँ की रोटी, अनेकविध सब्जियाँ कृष्ण सब रस का भोग कर रहे हैं। तुम्हारी माँ यशोदा मथुरा में उधार लायी गयी थीं। पिता नन्द जी घर–घर भीख माँगते थे। बहन सुभद्रा अर्जुन के साथ भाग गयी थी। तुम्हारी बुआ कुन्ती के पाँच पति थे। महुआ की डाल में भ्रमर गुंजन करता है और बिछुआ पायल की झंकार सुनाई पड़ रही है। बाजूबन्द, कंगना सब सुशोभित हैं, मोतियों की मांग सजी है। हँसती हुई माँ यशोदा पूछ रही है कि लाला ससुरार कैसी है? तब कन्हैया ने कहा कि माँ सारी सरहज बहुत प्रिय है कि सास तो गंगाजल सी हैं। यह सुनकर यशोदा सोचती है कि नौ माह पेट में रखकर भी कभी मेरी बड़ाई नहीं की, परन्तु एक माह के लिए बेटा ससुराल गया तो सास की प्रशंसा कर रहा है। माँ के मन की बात समझकर कष्ण कहते हैं कि हे नन्दबाबा! तुम्हारी शपथ है कि अब ससुराल हम नहीं जायेंगे। हमें, तुम्हें, नन्द बाबा को भी सभी सखियाँ गाली दे रही हैं।

इस गीत में गारी गीत में कृष्ण को नन्द यशोदा के लिए दी जाने वाली गालियाँ ठीक नहीं लगती हैं और वे इसका उल्लेख माँ से करते हैं।

होने न पाई पूरी सन्ध्या श्याम रसिया बनिके आई गए हो।
कुंअना गई तै पनिया भरन को भरने न पाई दो घइला।
श्याम कहरा बनके आइ गए हो। होने न पाई.................
ताला गई थी कपड़ा धोवन को धोने न पाई चार कपड़ा।
श्याम धोबिया बन के आय गए हो। होने न पाई.........
बागा गयी थी कलियां चुनन को चुनने न पाई दो कलियां
श्याम भौंरा बनके आए गए हो।
महलों गई थी रनिया से मिलने करने न पाई दो बतिया
श्याम रसिया बनिके आय गए हो।
करने न पाई पूरी संध्या श्याम रसिया बनके आ गए हो।

संध्या पूरी नहीं होने पाती है, परन्तु श्यामजी रसिया बनकर आ जाते हैं। पानी लाने के लिए कुँए में गई थी, परन्तु दो घड़ा पानी नहीं भर पाई थी कि श्यामजी कहार बनकर आ गए। तालाब कपड़े धोने गई और चार कपड़े नहीं धो पाई और श्याम तो धोबी बनकर आ गए। बगीचे में कली चुनकर लाने गयी थी, परन्तु दो कली भी नहीं चुन पायी श्यामजी भौरा बनकर आ गए। महल में रानी से मिलने गयी थी, परन्तु दो बातें भी नहीं करने पाई और ये श्याम तो रसिया बनकर ही आ गए।

यह गीत पारम्परिक गाली गीतों में तो नहीं है, परन्तु नायिका अपने नायक का वर्णन इस प्रकार करती है, जैसे वह उसका सदा पीछा करता है। जहाँ भी जाती है, वहीं वेश बदल कर आ जाता है। यह राधा व कृष्ण की लीला का गीत है।

यशोदा तेरो लाला री वंशी मां देबइ गारी।
जब हम जाबइ पनिया भरन को रोंकत गइलि हमारी। जशोदा.........
जब हम जाबइ दधि बेंचन को मांगै दान मुरारी। जशोदा......
जब हम जाबइ पनिया भरन को फोरै गगरी हमारी। जशोदा...............
उनके गुन हम कवन सुनावउं लागत लाज हो भारी। जशोदा................
तुम बरजहुं अपने कान्हा को नहिं तौ तजिहौं पुरी तुम्हारी। जशोदा.......

अरे यशोदा! तेरा बेटा वंशी में गाली देता रहता है। पानी भरने जाती हूँ तो रास्ता रोक देता है, दही बेचने जाते हैं तो दान मांगता है। पानी लेने जाते हैं तो घड़ा तोड़

देता है। उनका क्या गुण बताऊँ, लज्जा आने लगती है। तुम अपने बेटे को मना कर दो, नहीं तो तुम्हारा गाँव–नगर सब छोड़ दूँगी।

गोपियों द्वारा कृष्ण के नटखट आचरण की शिकायत यशोदा से की गयी है, ऐसे गीत, गाली–गीत तो नहीं कहे जा सकते, परन्तु उन्हीं प्रसंगों में गाए जाते हैं।

जमुना के तीरे–तीरे वंशी बजी रे बजी।
दधिबेचन ग्वोलिने निकली नार नई रे नई,
बंसी बजावैं ग्वालिन रिझावै गलिन रे गली।
ग्वालिन दहिया तोहरा हइ मीठा देय दही रे दही,
कान्हा तोरहु पात कदम खाहुं दही रे दही।
कदम के पत्ता लगे हंइ झाझा अंचरा मां खबाबहु दही रे दही।
कान्हा आंचर है मोर जूंठा लरिकन लार बही रे बही।
ग्वालिन लरिका कहां ते पाइय तुम तौ नारि नई रे नई।

यमुना के किनारे वंशी बज रही है। दही बेचने ग्वालिन निकली जो नई–नई स्त्री है। गली–गली वंशी बजाकर ग्वालिन को रिझा रहे हैं। ग्वालिन तुम्हारा दही मीठा है दे दो। कन्हैया, कदम का पत्ता तोड़ लो। उसी में दही खा लो। कदम के पत्तों में छेद ही छेद हैं। आँचल में दही खिला दो। कन्हैया मेरा आँचल जूठा है, लड़कों का लार बहा है, अरे ग्वालिन! तुम तो नई–नई हो, लड़का कहाँ से मिल गया है।

इस गीत में भी वंशी वाले की शिकायत ग्वालिन के द्वारा की गयी है।

चन्दन काठ कठए से बढ़इया पिढ़ुली गढ़ाए सौ सारी जी।
पांतिन–पांतिन परी रे पिढ़लिया बैठे सजन झकझोरी जी।
करो जेउनारी प्यार से समधी रुचि–रुचि बनी जेउनारी जी।
परुसन लागे है ठाकुर फलाने राम धोतिया धूमिल होइ जाइ।
धोतिया त हमरी नित नई होइहैं समधी सजन छठ मास।
पूरी कचौरी मगज के लड्डू खोवा अउर पकवान जी।
जिनसर चाउर चनसिर रांधेउ मुंगिया के दार बघारी जी।
मैदा की रोटी बजन कै बेली सुरभिन घिउ के चभोरी जी।
बरा औ मुगौरा दही औ दधि बोरी रिकमच लौंग बघारी जी।
अटहल कटहल करू रे करइला नींबू अस काटि रखायी जी।

चन्दन की लकड़ी से बढ़ई ने सैकड़ों पीढ़े (पाटा) बना दिये। पाँति में पीढ़ा रख

दिए गए, जिसमें सज्जन लोग, स्वजन लोग सोत्साह बैठ गए। विविध रुचि का भोजन बना है। समधी जी प्रेम से भोजन करें। भोजन परोसने वाले सज्जन की धोती धूमिल (गन्दी) हो गयी। वे कहते हैं कि मेरी धोती तो रोज नई हो जायेगी, परन्तु समधी जी तो छः महीने में आएंगे। पूड़ी, कचौरी, मगज के लड्डू, खोवा और पकवान्न बनाए गए। जीरा जैसा पतला चावल पकाया गया, मूंग की बघारी हुई दाल बनी, मैदा की पतली–पतली रोटियाँ जो कि गाय के घी से चुपड़ दी गयी हैं। बड़ा, मुगौरा मूंग से बना बड़ा, दही और दही में डुबायी गयी रिकमच जो कि लौंग से बघार कर बनायी गयी थी। कटहल और करैले की सब्जी जो कि नींबू को काटकर रख दी गयी थी।

इस गीत में भोजन व्यवस्था का वर्णन करते हुए समधी के लिए गारी तैयार की गयी है।

काहे की बखरी काहेन केर आंगन काहे के ठौर देवाई।
सोने की बखरी रूपेन केर आंगन मोतिअन ठौर देवाई।
काहे के पतरी काहेन केर दोना काहेन डोभ डोभाई।
सोने के पतरी फुलेन केर दोना लौंगन डोभ डोभाई।
जिरिया के भात बजन सिर राखिन मुंगिया के दार बघारी।

बखरी अर्थात् महलनुमा घर किससे बनाया गया है? आँगन किसका बना है, भोजन का स्थान किससे सजाया गया है? सोने की बखरी अर्थात् घर है और रूप अर्थात् चाँदी का आंगन बना हुआ है। मोतियों से भोजन का स्थान सजा दिया गया है। पत्तल किसके हैं? दोना किससे बने हैं और इन दोना–पत्तलों को किससे सिला गया है? पत्तल तो सोने की है। फूलों से दोना बनाए गए हैं और लौंग से सिल दिए गए हैं। जीरा जैसा भात बना कर मूंग की बघारी हुई दाल भात पर सिर के वजन की तरह रख दी गई है।

विवाह घर के सौन्दर्य को सोने जैसा निर्मल, आँगन को चाँदी जैसा उज्ज्वल और भोजन स्थान को मोती जैसे सजाने से सुन्दरता बढ़ी है। पत्तल सोने सा, दोना फूलों सा, लौंग की खीलों से बनी है। जीरा जैसा भात बना है। मूंग की बघारी हुई दाल का निरुपण करते हुए भोजन की खाद्य वस्तुओं का उल्लेख किया गया है।

उगतइ से सुरुज बहुत नीक लागइ अथवत छायी ललामी, कि हां जिउ......(2)
मइके के जात बहुत नीक लागइ जो घर होइ महतारी, कि हां जिउ...............(2)
माया कहइ बेटी नेरे बिअहवै बाबुल कहैं कुछ दूरी कि हां जिउ...................(2)

बहिनी कहइं बहिनी गंगा बिअहवै रोज करब असनान, कि हां जिउ...........(2)
माया कहइं बेटी रोज बुलउबै बाबू कहै कुछ देरीं, कि हां जिउ......................(2)
भइया कहइं जब अवसर होइ हैं भाभी न बोलइं बातें, कि हां ....(2)
माया के रोए गंगा बहति है बाबू के रोए तलाउ, कि हां ....(2)
भइया के रोए छतिया फटति है, भउजी के जिया है कठोर, कि हां ....(2)

उदय के समय का सूर्य बहुत अच्छा लगता है, परन्तु अस्त होने के समय का मलिन या लालिमा वाला रहता है। मायके में जाना बहुत अच्छा तभी लगता है, जब घर में माता हो! माँ कहती है कि बेटी, पास में ही विवाह करूँगी, परन्तु पिता जी कहते हैं कि कुछ दूर विवाह करेंगे। बहन कहती है कि गंगा के पास विवाह करूँगी, जिससे नित्य गंगा स्नान का पुण्य मिलता रहे। माँ–बेटी को प्रतिदिन बुलाने को कहती है, परन्तु पिता कुछ दिन में बुलाने को कहते हैं, परन्तु भाई कहते हैं कि जब कोई उत्सव प्रसंग होगा, तभी बुलाएंगे, परन्तु भाभी कोई बात नहीं कहती है। माँ के रोने से गंगा बहने लगती है, पिता के रोने से तालाब बन जाता है और भाई के रोने से छाती फट जाती है और भाभी का हृदय तो कठोर रहता है।

इसमें बेटी के लिए परिवार जनों की ममता का मूल्यांकन किया गया है। सभी को बेटी प्रिय है, परन्तु ममता के स्वरूप में भेद सा लगता है।

रसिया समधी राम बागा लगावैं समधिन करैं रखवारी कि हां जिउ.....
आम अमरूद केला और कटहल नेंबुआ लगाए आरी–आरी कि हां जिउ...
समधी त सोवइं अपनी महलिया समधिन सोवइ फुलवारी, कि हां जिउ (2)
हम तों हँसि–हँसि पूछौ हे समधी राम सुनि लेउ बात हमारी, कि हां जिउ....(2)
काहे न आपन तूं लउते बहिनिया करती वहीं रखवारी, कि हां जिउ.... (2)
दोनों जने मिलि बगिया रखउंतेउं सोउंते गोड़ पसारी, कि हां जिउ......(2)
जउन तो बारी बहुत मस्तानी लेतिउं जहर विष सारी, कि हां जिउ.....(2)
कहैं हरिभक्त हम सबका सुनाई सुन ले रसीली गारी, कि हां जिउ.....(2)

रसिया समधी ने बगीचा लगाया और समधिन उसकी रक्षा करती रहती है। आम, अमरूद, केला, कटहल, नींबू मेड़ में लगा रखा है। समधी अपने महल में सोते हैं और समधिन फुलवारी में सोती है। समधी जी मेरी बातें सुनो। अपनी बहन क्यों नहीं ले आते, जो रखवाली करती रहती। दोनों लोग मिलकर बगीचे की रखवाली करते और पैर फैलाकर सोते रहते। जो छोटी है वह तो बहुत मस्ती करने वाली है। वह विष जैसी साली भी है। ऐसी रसभरी गाली हम सबको सुना रहे हैं।

यह गाली गीत भी समधी के लिए विनोद भरी बातों से तैयार किया गया है।

माता की कोख मां जनम लिहे है रूप धरे भगवान भले जू।
झुमक–झुमक बेटी मण्डप डोलइ आजुल ने लिए है उठाइ भले जू।
की तुम बेटी हो कांच की ढारी की तुम सुघर सुनार गढ़े जू।
ना आजुल हम कांच की ढारी ना हमें सुघर सुनार गढ़े जू।

माँ की कोख से जन्म लेकर भगवान् ने सुन्दर रूप धारण कर लिया था। बिटिया झुमक–झुमक करती हुई मण्डप में चलती रहती है। दादा जी उसे उठा लेते हैं। पूछते हैं कि बेटी तुम काँच की बनी हो या सुनार ने गढ़ा है। वह कहती है कि न तो मैं काँच की बनी हूँ और न ही सुनार ने सुन्दर बनाया है।

यह भी मण्डप का ही गीत ह जो रेवांचल के कुछ भागों में गाया जाता है।

हमरे समधी के पूंछो न हाल मांगे दुल्हनिया सोलह साल।
जब हमरे समधी हो गए रिटायर घिस गए उनके जवानी के टायर
मांगै दुल्हनियां सोलह साल। हमरे..............
जब हमरे समधी गुस्सा में आएं साथ में उनके कोउ न आवे।
खीचैं अपने समधिन के बाल। मांगै....हमरे..........
जब हमरे समधी साइकिल चलावै सबके ऊपर रोज चढ़ावै,
कर रहे समधी समधिन से प्यार। मांगै.....हमरे......

हमारे समधी जी का हाल मत पूछो वे तो सोलह वर्ष की दूल्हन मांग रहे हैं। वे रिटायर हो गए, जवानी घिस गयी या पूरी हो गयी, फिर भी षोडशी चाहिए। वे गुस्से में आते हैं तो कोई साथ नहीं देता और वे भी अपनी समधिन के बाल खीचने में लग जाते है। जब वे साइकल चलाते हैं तो सबके ऊपर चढ़ा देते हैं। वे समधिन से प्यार मोहब्बत कर रहे हैं। यह गीत पारम्परिक नहीं है, परन्तु आज कल इस प्रकार के गीतों का भी चलन बढ़ गया है।

भाई रे, खा सोहारी करा तयारी राम के जने।
ओरिया–ओरिया पत्ता परसिगे भात परसि सुज सारी।
दार भात औ मइदा की रोटी तेहिया घिउ के चभोरी।
जेमन बइठे हैं किसन कन्हैया कइसे बनै तरकारी। भई रे खा सोहारी....
आप खांइ मुख नन्दन खवामइं कइसी बनी तरकारी।
आप खांइ मुँह बहिन खवामइं कइसी बनी तरकारी। भई रे खा......
आप खांइ मुँह फूफू खवावइं कइसी बनी तरकारी। भई रे खा.......

भाइयों पूरी खाओ और तैयार हो जाओ। ओरिया में पत्तल बिछ गए, भात परोसे गए। दाल—भात और मैदा की रोटी घी लगी खाने के लिए कृष्ण कन्हैया बैठ गए हैं। कैसी सब्जी बनी है। पूछते है, स्वयं खाते हैं, ननद को खिलाते हैं, बहन को खिलाते हैं, बुआ को खिलाते हैं और पूछते भी हैं कि सब्जी कैसी बनी हैं।

यह हास—परिहास से भरी हुई गारी भोजन का एक चित्र प्रस्तुत करती है।

देवरा भए पटवारी लिखनवारे।
बागा लिखिगे बगइचौ लिखिगे नेबुलौ लिखिगे निनारे। लिखन............
कुंअना लिखिंगे जगतिऔ लिखिगें गगरिउ लिखिगे निनारे। लिखन............
महला लिखिगे दुमहलौ लिखिगै खिरकिउ लिखिगे निनारे। लिखन.........
सेजा लिखिगे सुपेतिउ लिखिगे, तकिऔ लिखिगे निनारे। लिखन..........

लिखने वाले पटवारी देवर जी हो गए हैं। बाग—बगीचा सब लिख दिया। नीबू के पेड़ भी अलग से लिख दिये हैं। कुँआ और उसका बंध तथा घड़े भी लिख दिये। महल दुमहला दोनों लिख दिया और अलग से खिड़की भी लिख दी है। शैय्या लिखी सफेद चादर भी लिखी और तकिया भी अलग से लिख दिया है।

यह गीत भी गारी गान की परम्परा में तो नहीं है, परन्तु व्यंग्य विनोद होने के कारण इसी प्रसंग में गाया जाने लगा है।

बापौ पूत बिआहयं आएं उड़री महतारी रे।
काटे कूटे पान ले आंए खोखली सुपारी रे।
बापउ पूत बिआहइ आएं लंगड़ी फूफू लाए रे।
काटे कूटे पान ले आएं खोखली सुपारी रे।
बापऔ पूत विआहन आएं अंधरी महतारी रे। काटे कूटे....

पिता—पुत्र विवाह करने के लिए आए हैं और इनकी माँ कदाचारिणी है। कटे—फटे पान लेकर आए हैं और सुपाड़ी सारहीन लेकर आए हैं। विवाह करने में लंगड़ी बुआ लेकर आए हैं। माँ भी इनकी अन्धी है। यह गाली गीत भी रेवांचल में गाने की प्रथा है और भी अश्लील गीतों की परम्परा कहीं—कहीं मिलती है।

खरचा—खरचा मांगइं फलाने राम खरचा कोउं न देय हो। खर्चा......
नउआ के लड़िका सग बहनोइया खरचा उहइ दइ देय हो। खर्चा.......
बरिया के लड़िका सग बहनोइया खरचा उहइ दइ देय हो। खर्चा.......
ढिमरा के लड़िका सग बहनोइया खरचा वहै पुनि देय हो। खरचा.......

बारातियों के भोजन के बाद यह गाली गीत गाया जाता है। इसमें नाम लेकर गाली दी जाती है। अमुक नाम वाले बाराती दाँत साफ करने हेतु लकड़ी मांगते हैं, जिसे लोक भाषा में खरचा कहा जाता है, परन्तु कोई नहीं देता है। नाई का, बारी का, कहार का लड़का उनका सगा जीजा है। वही लाकर खरचा देता है। यह कहती नारियाँ गाली गीत सहास्य देती हैं।

भोजन समाप्त होने पर जब हाथ धोने सभी बाराती उठ जाते हैं तभी यह गीत गाया जाता है। यह गाली की पराकाष्ठा है, इसके बाद कोई भजन गाने की परम्परा है।

बैरिन हो गई जुंधैया मैं कैसे करौ।
दिन की बैरिन सासु ननंदिया और रात की बैरिन या जुंधैया। मै कैसी. बैरिन..
जैसे–तैसे जुंधैया डूबी सजना बड़े है सोवइया। मै कैसी करूं बैरिन...............
जैसे–तैसे मै सजने जगाऊं हां ललना बड़ा है रोवइया। मैं. बैरिन..............
जैसे–तैसे मै ललने सोवाऊं हां बोलन लागी चिरइया। मैं. बैरिन...................

चन्द्रमा शत्रु हो गया है। दिन में तो सास और ननद शत्रुता करती है। रात में यह चाँद शत्रु बन जाता है। जब चन्द्रमा किसी प्रकार डूब जाता है। तो मेरा पति सोने में मस्त रहता है। जब मैं पति को किसी प्रकार से जगा लेती हूँ तो बेटा बहुत रोने लगता है। यदि मैं बेटे को किसी प्रकार सुलाऊँ तो सुबह के पक्षी बोलने लगते हैं। सारी रात ऐसे ही बीत जाती है।

यह गीत भी हास्य गीत है। इसमें कोई ग्राम की महिला अपने पति से मिलना चाहती है। परन्तु उसका उद्योग सफल नहीं हो पाता है। क्योंकि सारी रात व्यवस्था में ही चली जाती है और सुबह हो जाती है।

ए जी छोटी बुदी चिरई त एक मूंठी पखना रेउंजा मां लेत बसेर।
ए जी ससुरा जो होते त रेउंजा कटउतें चिरई क देते उड़ाय।
ए जी जेठा जो होते त रेउंजा कटउतें चिरई क देते उडाय।
ए जी देवरा जो होते त रेउंजा कटउतें चिरई क देते उड़ाय।
ए जी सइयां जो होते त रेउंजा कटउतें पै ऊंता बसे परदेश।

छोटी सी चिड़िया का एक मुट्ठी मात्र पंख होता है। वह रेउंजा नामक पेड़ में बसती है। नायिका या वधू कहती है कि उसके ससुर जी होते तो रेउंजा का पेड़ कटा देते और चिड़िया को उड़ा देते। यही बात वह जेठ और देवर के लिए भी कहती है। साथ ही अपने पति से भी यही अपेक्षा करती है। याद भी करती है और कह देती है कि वे परदेश अर्थात् घर से बाहर रह रहे हैं।

एक पक्षी जो कंटीले पेड़ में रात को सोता है। उससे न जाने वधू को क्या परेशानी है। उसे वहाँ नहीं रहने देना चाहती है, परन्तु यह सब वह अपने ससुराल वालों से ही कराना चाहती है।

जनकपुरी में आ के लाला फिर से देना दर्शन।
अवधपुरी में जा के लाला बीत न जाए बरसन।
अवधपुरी से जो न आए जिया लागे तरसन। जनकपुरी.........
तुम बिन चैन पड़े न लाला रघुवंशी रघुनन्दन।
जनकपुरी से जब पगुधारे नर–नारी भए अनमन, लाला नर नारी भए अनमन।
कदम अगारी धरि नहि पाए, गिरे प्रभु के चरनन, लाला गिरे प्रभु के चरनन।
चलत–चलत में रुक–रुक जावे डाले प्रेम के बन्धन, लाला डाले प्रेम के बंधन।

बेटा जनकपुरी में आकर फिर से दर्शन देते रहना, अयोध्या में जाकर बरसों न बिता देना। यदि अयोध्या से नहीं आओगे तो जी तरसने लगेगा। अरे रघुवंश के रघुनन्दन जी! तुम्हारे बिना चैन नहीं पड़ रही है। जब तुम जनकपुरी से गए थे। तब सभी नर–नारी उदासीन मन के हो गए थे। वे आगे पैर नहीं रख पाए थे कि लोग उनके चरणों में गिर पड़े। चलते–चलते रुक जाते थे। प्रेम के बन्धन में डाल दिए गए थे।

जनकपुर से जाते समय श्रीराम से वहाँ की नारियों ने जो किया है। वही यहाँ पर गीत के रूप में अंकित कर दिया गया है।

रघुनन्दन फूले न समाय लगन आई मोरे अंगना।
आजा सजि गए आजी सजि गए सजिगै सकल समाज।
रघुनन्दन तो ऐसे सजि गए शोभा बरनि न जाय।
बाबुल सजि गए अम्मा सजि गए सजि गए सकल समाज।
रघुनन्दन तो ऐसे सजि गए शोभा बरनि न जाय।
भइया सजिगए भाभी सजि गए सजि गए सकल समाज।
जीजा सजि गए जीजी सजि गए सजि गए सकल समाज।
रघुनन्दन तो ऐसे सजि गए शोभा बरिन नहि जाय।

रामजी प्रसन्नता से भर गए हैं, फूले नहीं समा रहे हैं, क्योंकि उनके आँगन में लगन आई है। आजा, आजी और सारी समाज भी सज–धजकर बारात चले हैं। राम की अवर्णनीय सजावट है। पिताजी–माताजी,भाई, भाभी–जीजी–जीजा सभी समाज सज गया है, क्योंकि विवाह की लग्न आज घर आ गयी है।

बारात की तैयारी में कौन किस प्रकार सज रहा है, श्रृंगार कर रहा है, यही बात प्रकट करता हुआ यह गीत है।

जेमन बैठे जनक जी के द्वारे दशरथ लैके बारात मोरे लाल।
चांदी के पीढ़ा बैठइ के खातिर अंगना में आसन लगाए मोरे लाल।
सोने के करोला गंगा जल पानी पियइ के खातिर बनाए मोरे लाल।
सोने के सींकन दोनाऔ पतरी राजा जनक बनवाए मोरे लाल।
रुचि–रुचि भोजन परसइं जनकजी हँसि–हँसि करैं जेउनार मोरे लाल।
सारी औ सरहज गारी गावैं महलन बीच उछाह मोरे लाल।

जनक जी के दरवाजे पर राजा दशरथ जी अपनी बारात के साथ भोजन करने के लिए बैठ गए हैं। उनके आंगन में चाँदी के पीढ़ा में बैठकर आसन लगा लिया है। सोने के लोटे में गंगाजल पीने के लिए दिया है। दोना और पत्तल तो सोने की सीकों से राजा जनक ने बनवाये हैं। जनक जी अपनी रुचि से भोजन परोसने में लगे हैं और हँसते–हँसते राजा दशरथ सभी बारातियों के साथ खाए जा रहे हैं। साली और सरहज गाली गीत देने में लगी है। महलों में उत्साह भरा हुआ है।

यह गीत भी दशरथ के बारात सहित भोजन तथा भोजन हेतु व्यवस्था विषयक वर्णन किया गया है।

दोना औ पतरी मां सोने के सींका राजा जनक लगवाए मोरे लाल।
जेवन बइठे जनक जी के अंगना दशरथ लैके बारात मोरे लाल।
मैदा की रोटी झिलमिल बेलिन घी सुरही के सोधाई मोरे लाल।
बरा रे मुगउरा दही दधिबोरइं रिकमिच लौंग बघारी मोरे लाल।
राम के जेंवत लछिमन जेवइं–जेवइं चले चारिउ भाई मोरे लाल।
रामा जेवइं लखन जी से पूंछइं कैसी लला जेउनार मोरे लाल।

दोने–पत्तल में सोने की सींक राजा जनक ने लगवाया था। जनक जी के आँगन में दशरथ जी बारात लेकर भोजन करने बैठे हैं। मैदा की पतली–पतली रोटी में गाय का घी लगा दिया गया है। बड़ा, मूंगबड़ा दही और दही में डूबी हुई रिकमच बनी थी। राम–लक्ष्मण के साथ चारों भाई भोजन कर रहे हैं। राम भोजन करते हुए लक्ष्मण जी से पूछते हैं कि भोजन कैसा बना है।

इस गीत में भी बारात और भोजन का विवरण है।

धन्य हमारे बड़े भाग कोशल पति समधी मिले।
राजा दशरथ की तीन रानियां तीनौ बड़ी सयान।
खीर खायं सुत पैदा करती लोग करै बदनाम। धन्य...
राम लच्छिमन भरत शत्रुघन चारों सुत सुकुमार।
ऐसे हमको मिले जमाई सुन्दर राजकुमार। कोशल.....................
सिया स्वयंवर को प्रण सुनकर आए भूप किशोर।
शिव धनु तोड़ि जनक प्रण राखेउ हो रहा जन में शोर। कोशल..............
है सीता मोहि प्राण पियारी सबहीं राज को नेह।
आवत जात हमेशा रहियो विनती करत विदेह। कोशल पति................

हमारे बड़े भाग्य, हम धन्य हैं कि समधी दशरथ जी मिल गए हैं उनकी तीन रानियाँ हैं। बड़ी चतुर भी है। दामाद के रूप में राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न मिल गए हैं। सीता स्वयंवर का प्रण सुनकर राजा आए थे। शिवधनुष तोड़ा। जनक की प्रतिज्ञा की रक्षा कर ली। जनता में शोर मच गया है। सीता जी हमे प्राणों से प्यारी है। सभी राजा स्नेह करते हैं। विदेह जी कहते हैं, कि आते–जाते रहना, यही मेरी प्रार्थना है।

यह गीत जनकपुर वासियों की ओर से गाया गया है। आग्रह है कि वे आते रहें।

लाल कइसे के करौं बड़ाई मोर मन सकुचाई।
अवधपुरी की नारि गुणआगर बिन पति सुत उपजाई। मोर मन.........
ताड़क बन मुनि साथ गए जब देखि ताड़का आयी।
मोहित भई सूरत देखि तुम्हारी मारे काहे खिसिआयी।
एक बात हम पूंछी लालन हमसे ना राखे छिपाई।
अपनी बहन श्रृंगरिषि के संग कइसे दियो है विआही।
की आई मुनि संग सिधारी की तुम दियो भिजवायी।
सूरत देखि तुम्हारी लालन कामदेव हरषायी।
कइसे बची होइहैं तुमसे अवधपुरी की लोगाई।

बेटा बड़ाई कैसे करूँ? संकोच लग रहा है। अयोध्यापुरी की नारियाँ बड़ी गुणवाली हैं। बिना पति के ही पुत्र पैदा कर देती हैं। जब वन गए तो मुनि के साथ देखकर ताड़का आयी। तुम्हारा रूप देख मोहित हो गयी और खीझकर तुमने उसे मार ही डाला। लाला मैं एक बात पूछती हूँ। मुझसे मत छिपाना, अपनी बहन का श्रृंगी ऋिषि से कैसे विवाह कर दिया? क्या वही उनके साथ चली गयी अथवा तुमने ही भेज दिया?

तुम्हारी सूरत देखकर तो कामदेव खुश हो जाता है। अयोध्या की औरतें किस प्रकार बच सकी होंगी।

इसमें घटित घटनाओं को गीत बनाकर गाया गया है।

भाई रे राजा जनक जी रचे स्वयंवर राम के जना।
भाई रे देश–देश के राजा आएं राम के जना।
भाई रे धनुष कोई तिलभर न उठाएं राम के जना।
भाई रे राजा जनक जी भए उदास राम के जना।
भाई रे वीरों से अब पृथ्वी है खाली राम के जना।
भाई रे धनुष तोड़ दिए रघुराई राम के जना।
भाई रे लेकर माला सीता ठाढ़ी राम के जना।
भाई रे सीता जयमाला राम डाली राम के जना।
भाई रे राजा जनक जी रचे स्वयंवर राम के जना।

राजा जनक जी ने राम का स्वयंवर रचा है। देश–देश के राजा आए हैं, कोई तिल भर भी धनुष नहीं उठा सका। तो जनक जी उदास हो गए हैं, सोचते हैं धरती वीरों से खाली हो गयी है, तभी श्रीराम ने धनुष तोड़ दिया है। सीता जयमाला लेकर खड़ी है और रामजी के गले में डाल दी है।

सीता स्वयंवर विषयक बातें गीत में मिलती हैं।

मानो–मानो दशकन्धर मोरी बतियां, तुम्हरे हित की कहूं।
सीता माता को दो भिजवाई भज लो जगत पिता रघुराई।
जाओ तिरियां संग राम की शरनियां, तुम्हरे हित की कहूं।
ऊं हैं करूणा सिन्धु खरारी देइहैं गलती तेरी बिसारी।
काहे कुल की करत है पतनियां, तुम्हरे हित की कहूं।
छोड़ि है रामचन्द्र जब बान होइहंइ नष्ट तोर अभिमान।
उत्तम कुल तेरो विख्याती, तुम तौ हो पुलस्त्य करनाती।
तुम्हारी शोभा ना देत नारि चोरियां, तुम्हरे हित की कहूं।

अरे दशानन! मेरी बात मान लो, तुम्हारे कल्याण के लिए कह रही हूँ। सीता को वापस भिजवा दो और जगतपिता श्री राम का भजन कर लो। सपत्नीक राम की शरण चले जाओ। वे खरारि करुणासागर हैं। तुम्हारी गलती भुला देंगे। कुल का पतन क्यों कर रहे हो। जब श्रीराम जी बाण छोड़ेंगे तो तुम्हारा घमण्ड नष्ट हो जायेगा। दुष्ट मेरी

बात मान लो। तुम तो उत्तम प्रसिद्ध पुलस्त्य के वंश के हो, औरत चुराना तुम्हे शोभा नहीं दे रहा है। यही तुम्हारे हित की बात है।

हनुमान् की रावण को दी गयी शिक्षा ही इस गीत में फलित देखी जा सकती है।

राम आएं अपनी ससुरारी हो राम आए अपनी ससुरारी हो।
अगल बगल पुर बासिन्ह बैठे बीच मां अवध बिहारी हो।
भरत लखन रिपुसूदन सखि सन हास करत रस न्यारी हो।
रानी सुनैना के ढिंग बैठी लक्ष्मीनिधि की सारी हो।
मन्द–मन्द मुसुकाय राम आये कोमल वचन उचारी हो।
ऐ चित चोर किशोर सांवरो तुम्हारी सुरति पर वारी हो।
अबके गए कब दरशन देइहो आनन्द कन्द बिहारी हो।

राम जी अपनी ससुराल आ गए हैं। उनके अगल–बगल पुरवासी लोग बैठे हैं। बीच में अवध बिहारी श्री राम जी बैठे हुए हैं। भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न सभी सखियों से अलग अलग रस की हँसी मजाक कर रहे हैं। लक्ष्मीनिधि की साली रानी सुनैना के पास में बैठी है। धीरे–धीरे मुस्कुराते हुए राम आए और कोमल वचन कहने लगे। उन्हें देखकर अयोध्यावासी कहते हैं। ओ चित चोर किशोर साँवलिया तुम्हारी सूरति पर मैं तो बलिहारी हूँ। अब के जाने के बाद कब दर्शन दोगे, तुम तो आनन्द में विहार करने वाले हो।

यहाँ राम–लक्ष्मण आदि का जनकपुर में रहने का वर्णन किया गया है और उनके पुनः आने का आग्रह भी है।

हे रघुवर सुनलो हमारी गालियां तुम्हारे कुल की कहानी
हम जानी हो लला हम जानी।
हरिश्चन्द्र तुम्हरे कुल जनमें भरत डोम घर पनियां।
साठ भार सुवरन के कारण तिरिया सहित बिकानिया।
तौलत मांस कबूतर के नित शिबि अपनी जिन्दगानियां।
धनुष बनी दधीचि की हड़्डी सीय करत निगरानियां।
उनही के तुम कुंवर लाड़ले खीर की बनी जिन्दगानियां।
पाथर को तुम नारि बनावत देखत नारि लुभानियां।
तप कीन्हो सुरसरि के कारण भूप भगीरथ ज्ञानियां।
मनु शतरूपा सुत उपजावत जनमें अवध रजधानियां।

हे राम! मेरी गालियाँ सुन लो, तुम्हारें वंश का समाचार मुझे मालूम है। तुम्हारे वंश में हरिश्चन्द्र थे, जो डोम के घर में पानी भरते थे। साठ भार सोने के लिए औरत के साथ ही बिक गए थे। शिबि हुए वे अपनी जिन्दगी में कबूतर का मांस तौलते रहे। दधीचि की हड्डी का धनुष बना, जिसकी सीता देखभाल करती थी। तुम उन्हीं के प्यारे पुत्र हो, जिनकी जिन्दगी खीर से बनी थी। तुम पत्थर को औरत बनाते हो, देखकर औरतें लोभ में आ जाती हैं। गंगा के लिए तपस्या की भगीरथ राजा ने और ज्ञानी बन गए। मनु शतरूपा ने बेटा पैदा किया, जो अयोध्या की राजधानी में पैदा हुए।

इसमें व्यंग्य विनोद सहित रघुवंश की बातें गीत के रूप में गायी गयी हैं।

ऊँची अटरिया की झझरी दुअरिया पवन चलै पुरवाई, कि हां जिउ.......
ओहि चढ़ी सोवै राधा पियारी अंचरा उड़ि–उड़ि जाइ, कि हां जिउ ....
भोर भए भिनसारे के पहरा जागी है राधा पिआरी, कि हां जिउ ....
हँसि–हँसि पूंछइं सासु यशोदा काहे बहू अनमन ठाढ़ी, कि हां..............
सेज परे मोरी तिलरी हेरानी कि तिलरी के चोर न जानी, कि हां................
भोर भए भिनसारे के पहरा जागे हैं कुमर कन्हाई, कि हां जिउ............
हँसि–हँसि पूंछइं माता यशोदा काहे लाला अनमन ठाढ़, कि हां जिउ.........
सेज परी मोरी मुरली हेरानी मुरली के चोर न जानी, कि हां जिउ..............
जेकर लाला तुम तिलरी चोराए तेई तोहरी मुरली चोराई, कि हां जिउ........

ऊँची बनी अट्टलिका में खिड़कियाँ हवा देने वाली लगी हैं, जिनसे पूरब की ओर की हवा अन्दर आ जाती है। उसी में चढ़कर प्यारी राधा जी सो रही हैं, परन्तु उनका आँचल हवा से उड़ता जाता है। सुबह–सुबह राधा जी सोकर उठती हैं। हँसती हुई सास यशोदा ने पूछा कि बहू आज बेमन कैसे खड़ी हुई हो? वह कहती है कि मैं प्रगाढ़ निद्रा में थी और बिस्तर में मेरी करधनी (तीन सूत्रों वाली तिलरी) गुम गयी है, परन्तु उसके चोर को नहीं समझ पा रही हूँ। सुबह–सुबह ही कृष्ण कन्हैया की भी नींद खुलती है। उनके अनमन रहने पर माँ यशोदा पूछती है कि बेटा बेमन से कैसे खड़े हो? वे भी कहते हैं कि बिस्तर में ही मेरी बाँसुरी चोरी चली गयी है, परन्तु चोर कौन है? यह नहीं जान पा रहा हँ। तब यशोदा जी कहने लगती हैं कि बेटा तुमने जिसकी करधनी चुरा ली है। उसी ने तुम्हारी वंशी चुरा ली है।

मोरे राम से करो न ररिया जनकपुर की सखियां।
आतर परसी पातर परसी परस गयी दोनिया। जनकपुर........
आलू परसी रतालू परसी सो परस गयी घुइंया। जनकपुर........
पूरी परसी कचौरी परसी सो परस गयी गुझिया। जनकपुर.........

पेड़ा परसी जलेबी परसी सो परस गयी बुंदिया। जनकपुर.........
अटनी परसी सो चटनी परसी सो परस गयी अमिया। जनकपुर.....

अरे! जनकपुरी की सखियों! मेरे राम जी से झगड़ा मत करो। दूर–दूर तक पत्तल परोस दी गयी हैं और दोने भी परोसे गए हैं। इनमें आलू, रतालू और घुइयां की सब्जी परोसी गयी है। पूड़ी, कचौरी और गुझिया भी परसी गयी है। मिठाई में पेड़ा, जलेबी और बुंदिया परोस दी गयी है। आम के छोटे–छोटे टुकड़ों के अचार और चटनी परोसी गयी है।

अंजुरी (द्विरागमन)

रेवांचल में सामान्यतया विवाह के समय कन्या की विदाई नहीं की जाती थी। विवाह के बाद विषम वर्षों में वाम पृष्ठ, शुक्र स्थिति में शुक्र और गुरु के उदय रहने पर द्विरागमन या गमन या गौना किए जाने की परम्परा रही है। इसमें वर के साथ उसके सगे संबंधी ही आते थे और गणपति आदि पूजन के साथ दोनों पक्षों के अक्षत, फल, द्रव्य गुड़, मिष्ठान्नों से युक्त अंजुलि दान सात बार कराये जाने की प्रथा रही है। पंचलोक पालों या पंचदेवों की पूजा के बाद उनकी साक्षी में वर अंजुलि सामग्री लेकर कन्या की अंजलि में डालता है और ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सूर्य, पाण्डु, वासुदेव तथा चन्द्रमा के लिए अंजलिदान किया जाता है। इसमें क्रमशः इनकी पत्नियों सावित्री, इन्दिरा, पार्वती, छाया, कुन्ती, देवकी और रोहिणी का नाम भी साथ में लिया जाता है। गृहस्थ धर्म में यह अंजलि भरा अक्षत या चावल देवों को इसीलिए दान किया जाता है, जिससे उन देवों के आशीष से नव दम्पतियों का गृहस्थ जीवन प्रशस्त एवं शुभ हो जाय। इसके बाद हवन करने की परम्परा है। इस प्रसंग में एक बार पुनः कन्यादाता वर का पूजन करता है और उसके लिए कुछ दानादि करता है।

इसमें भी कलेवा, विदाई आदि प्रसंग यथावसर होते ही हैं, परन्तु मण्डप नहीं बनाया जाता है। यह क्रम वधू प्रवेश के बाद का है, परन्तु सामान्यतया रेवांचल में वधू प्रवेश की रस्म अदायगी (पियरी प्रतीक) पीली धोती के प्रतीक के रूप में ही होती है। संभवतः इसीलिए यह परम्परा चल पड़ी होगी, जिससे विवाह के व्यय के अतिरिक्त बेटी की विदाई के व्यय हेतु थोड़ा समय मिल जाये। यह भी संभव है कि धर्मशास्त्रों में कन्या की परिभाषा हेतु उल्लेख श्लोक का कारण बन गया होगा।

अष्टवर्षा भवेद् गौरी नववर्षा च रोहिणी।
दशवर्षा भवेत् कन्या अत ऊर्ध्वं रजस्वला।

इससे कन्यात्व दस वर्ष तक होता है और उस वयोमान में विवाह करने के बाद तारुण्यावस्था के आने पर गौना करने की परम्परा मिलती है। आज दहेज और महंगाई से ग्रस्त यहाँ का समाज भी पुरानी परम्पराओं को याद न करता हुआ एक दिवसीय विवाह ही करने लगा है तथा विवाह, वधू प्रवेश, द्विरागमन सब एक साथ ही सम्पन्न करने लगा है।

इसमें गाया जाने वाला लोकगीत करुणा स्नेह से पूर्णतः भरा होता है। बिटिया की ममता का उन्मीलन इन गीतों में शब्दों और धुनों दोनों स्तर पर होता है। सारी रात ये गीत होते रहते हैं। माँ, चाची आदि संबंधी महिलाएँ बेटी की विदाई हेतु वस्तुओं को सजाती रहती हैं, जिससे दूसरे परिवार में जाने वाली ममता की मूर्ति को महीनों तक की सभी सामग्री पूरी हो सके। ये गीत गाते ही पली–पुसी, रची–बसी ममता के विदा होने का चित्र खिंच जाता है। माता–पिता, भाई–भाभी क्या उपस्थित जनसमुदाय इस समय साश्रुनयन और गद्‌गद् कण्ठ होता रहता है। कण्व, शकुन्तला के प्रसंग दोहराए जाते हैं और तुलसी की सीता की विदाई में तोता मैना का आर्तस्वर, वैरागी जनक का धैर्य भंग याद आता रहता है। गोत्र बदलने का संस्कार तो विवाह ही होता है, परन्तु गोत्रान्तर में जाने, रहने और हो जाने का यही संस्कार होता है। भारतीय मनीषा का यह चिन्तन वियोग और संयोग का एक साथ होता है। बेटी बहू बन जाती है। दायित्व परिवर्तन हो जाता है और अपनी ममता दूसरे की ममता कुल की मर्यादा आदि बन जाती है। यही कन्या का स्त्रीत्व है, वधूत्व है और नारीत्व भी है। वह अब गृहिणी बन जाती है, गृह में चली जाती है। साथ ही सारी मर्यादाओं का वरण करती है।

जुगुर–जुगुर दिया बरइ–बरइ सगली राति हो
कि आज घरबा सूना लागइ ढेरिया विदेश हो
लुकि छिपि माता रोवइं बैठि रोवइं बाप हो
कि आज घरबा सूना लागइ ढेरिया विदेश हो
लुकि छिपि चाची रोवइं बाहरे से चाचा हो
कि आज घरबा सूना लागइ ढेरिया विदेश हो।

यह गीत एक ऐसे घर का चित्र प्रस्तुत करता है, जिसमें बेटी की विदाई दूसरे दिन होने वाली है। गाँवों में बिजली नहीं होती। दीपक जलते हैं, दिया टिमटिमाता रहता है। सारी रात वह जलता है। प्रकाश देता रहता है और बेटी के घर से बाहर

अर्थात् परदेश जाने से सारा घर सूना–सूना लग रहा है। घर में स्थिति यह है कि बेटी के न रहने के कारण सूनापन सहन नहीं हो रहा हैं। उसकी माँ लुक–छिपकर रोती रहती है, पिता जी एक स्थान पर बैठे–बैठे ही रोने लगते है। दोनों यही सोचते हुए रोते हैं कि आज बेटी के बाहर रहने से सारा घर सूना–सूना लग रहा है। बाहर बैठे–बैठे चाचा रोते रहते हैं और भीतर छिप–छिप कर चाची जी रोती रहती हैं। सबके मन में यही चिन्ता है कि बेटी बाहर चली गयी है।

यह ममता की विदाई का गीत है। शैशवावस्था से इस समय तक की जुड़ी हुई बेटी की यादें उसके न रहने पर और तीव्र हो जाती हैं। ममता, यादे, अनुभव सब आँखों से निकलने लगते हैं, आँसू बन जाते हैं और ममता की मूर्ति के लिए समर्पित होते रहते हैं, गीत चलते रहते हैं।

जुगुर–जुगुर दिया बरइ बाबा की चौपाल हो
कि आजी आपन नातिन साजइं–साजइं सगली राति हो
जुगुर–जुगुर दिया जलइ बाबू की चौपाल हो
कि माया आपन बेटी साजइं साजइं सगली राति हो
जुगुर–जुगुर दिया बरइ चाचा की चौपाल हो
कि चाची आपन बेटी साजइं–साजइं सारी राति हो
जुगुर–जुगुर दिया बरइ भइया की चौपाल हो
कि भाभी आपन ननदी साजइं–साजइं सारी राति हो
जुगुर–जुगुर दिया बरइ फूफा की चौपाल हो
कि फूफू आपन ढेरिया साजइं–साजइं सारी राति हो।

टिम–टिमाती हुई दीपक की लौ जलती जा रही है। बाबा की चौपाल का दृश्य है। उस मद्धिम प्रकाश में सारी–सारी रात दादी अपनी पोती को सजाती रहती है। यही दीपक पिता जी की चौपाल में जलता रहता है। माँ अपनी बेटी को सारी रात सजाती रहती है। यह चाचा की चौपाल में, दीपक के प्रकाश में चाची अपनी बेटी सजाती रहती है। भाई को चौपाल में यही दीपक का प्रकाश भाभी द्वारा ननद को सजाने के लिए उपयोगी होता है। फूफा की चौपाल में फूफू अपनी ढेरिया को सजाती है।

इस गीत में यही स्पष्ट किया गया है कि बिटिया की विदाई हेतु आजी–बाबा, माता–पिता, चाचा–चाची, भाई–भाभी, फूफू–फूफा सभी अपने–अपने निवास स्थानों पर दीपक की ज्योति जलाए रहते हैं और बिटिया के लिए वस्तुओं को सजाते रहते हैं। उक्त लोगों का बेटी से ममत्व पूरा कर दिया गया है।

केकर गुमान धनिया बीड़वो न लेइ हो
कि केकरे गुमान धनिया मुखहूं न बोल हो
संग में दुल्हेरू दुलहा कचरै ए पान हो
कि बाबा के गुमान धनिया बीड़वो न लेइ हो
भइया के गुमान धनिया मुखहूं न बोल हो
संग में दुल्हेरू दुलहा कचरै ए पान हो
चौका में है ऊनवा का आसन बिछाए हो
कि संग में दुलारी बेटी लट छिटकाए हो। संग में ....
लिहिन कौन बीड़ा दूलह उठाइ हो
कि लिहिन दुलारी धनिया कचरा ऊं पान हो। संग में ....
बीड़वो न लेव धना मुखहू न बोल हो
संग में है बइठे धनिया नैन डारे लोट हो। संग में ....

बेटी की विदाई का प्रसंग है। वह पान का बीड़ा नहीं ले रही है, मुख से भी नहीं बोल रही है, दूल्हा तो पान चबा रहा है। गीत यहीं से आरंभ हो रहा है कि किसके घमण्ड से बेटी आज न तो बीड़ा ले रही है और न ही मुख से बोल रही है, परन्तु उसके साथ में दूल्हा है। वे पान चबाए जा रहे हैं। अपने बाबा या दादा जी के बल पर घमण्ड पर बेटी बीड़ा नहीं ले रही है। मुँह से भी नहीं बोल रही है। चौका में, रसोई घर में ऊन में आसन और बिछा दिया गया है। साथ में बेटी, बहू, नववधू बैठी तो है, परन्तु लट या बालों का समूह फैलाये हुए है। वहाँ बीड़ा रखा था। उसे दूल्हे ने उठा लिया। अब वधू, बेटी ने भी पान का बीड़ा लिया और चबाने लगती है। अब वही बिटिया अपने नेत्रों द्वारा भी उत्तर दे रही है कि क्यों बीड़ा नही ले रही थी और क्यों वह मुँह से नहीं बोल रही थी।

विदा होने वाली बिटिया को दूसरे वातावरण में जाने की चिन्ता है, अस्तु वह दुःखी भी है, पान भी नहीं खा रही है। उसके पास दादा और भाई का बल अर्थात् भरोसा रहता है कि किसी भी संकट में दोनों समाधान कर लेंगे।

मचवा चढ़ि बइठे अजवा फलाने राम
कि कौने कारण रोई बेटी तू है लम्बी आँसू हो
चन्द्रपुर की ककई जबलपुर का तेल हो
कि केशवा सम्हार बेटी चुऐ लम्बी आँसू हो
एकै कारण सेयों आजा एक ही गुमान हो
कि कौन मोरे आई जई कौन देइ है सन्देश हो

गांव पंडित अइहीं जइहीं कहंरा सन्देश हो
बेटी तोहरा भइया आने जइहीं एतनिन दूर हो

माचा या चारपाई में श्रीमान् दादाजी बैठे हैं और बिटिया से पूछने लगते हैं कि बेटी तू किस कारण से इतनी लम्बी–लम्बी आँसुओं की धार से रो रही है। चन्द्रपुर की कंघी आई है, जबलपुर का तेल है, अब अपने बालों को सजा लो। बेटी लम्बी–लम्बी धार, बड़े–बड़े आँसू न रोना। बिटिया कहती है कि मेरा विवाह दूर देश कर दिया है। मैं इसलिए रोती हूँ कि हमारे यहाँ कौन आना–जाना करेगा और कौन सन्देश देगा। इतनी दूर कौन भाई आएगा। दादा कहता है कि गाँव के पण्डित जी आना–जाना करेंगे, सन्देश के लिए कहार आएगा और तुम्हारा भइया इतनी दूर भी तुम्हें आने ले जाने के लिए आएगा।

बेटी के रोने का कारण दूरस्थ देश में विवाह होना है, परन्तु उसकी ममता अभी बंधी है, अस्तु वह मायके आना जाना चाहती है। उसे लगता है कि इतनी दूर कौन आएगा–जाएगा, परन्तु उसे आश्वासन मिल जाता है। भाई, पण्डित और कहार तीन लोग–आने जाने, सन्देश आदि के लिए समर्थ होंगे।

बखरी बनवाए बाबू चूनवा पोताइ हो
कि चूनवा पोताइ बाबू अंतर छिड़काइ हो
अंतर छिड़काइ बाबू वेदिया बनवाइ हो
कि वेदिया बनवाइ बाबू कलशा धराइ हो
कलशा धराइ बाबू पंडित बोलाइ हो
कि पंडित बोलाइ बाबू वेदवा सुनाइ हो
वेदवा सुनाइ बाबू धिया का बैठाइ हो
कि धिया का बैठाइ बाबू अंजुरी भराइ हो
अंजुरी भराइ बाबू कुशवा धराइ हो
कुशवा धराइ बाबू संग का हो धिया का हो

पिता जी आपने बड़ा लम्बा–चौड़ा घर बनवाया है उसे चूने से पुताई करा दिया है, चूने से पुताई कराने के बाद इत्र छिड़का दिया है, अन्त तो छिड़का ही दिया है फिर वेदी बनवा दी है। वेदी वनवा कर कलश भी रखा दिया है, कलश रखा दिया और पंडित को बुलवा लिया है, पंडित आए और वेदपाठ कर दिया, वेद मन्त्र को सुनाने के बाद पिता जी ने बेटी को बैठा दिया और उसे बैठाकर अंजुरी भरवा दिया। अंजुलि से अक्षत, फल, द्रव्य से देवों को दान कर दिया अब कुश कन्या का दान कर दिया।

चूने से सफेद पुताई किया गया घर है, उसमें सुगंधित द्रव्यों का छिड़काव कर दिया गया है। वेदी में कलश रखकर वेद मंत्रोच्चार पंडित कर रहे हैं। तभी कन्या की अंजलि भरा दी जाती है, कुशाक्षत जल से पिता जी उसे सौंपते हैं। यह एक चित्र है जो रिमहों की बिटिया के गौने में किया जाता है।

डहर–डहर दिया बरै–बरै सलगी राति हो
कि आजी आपन नातिन साजै साजै सगली रात हो
डहर–डहर दिया बरै–बरै सलगी राति हो
कि माता अपनी ढेरिया साजै साजै सारी रात हो
डहर–डहर दिया बरै–बरै सलगी राति हो
कि काकी अपनी ढेरिया साजै–साजै सगली रात हो
डहर–डहर दिया बरै–बरै सलगी राति हो
कि भौजी अपनी ननदी साजै–साजै सगली रात हो
माया साजै झांपियां औ भउजी करैं सिगार हो
भइया साजै डोलिया कि कलप कै ओहार हो

बेटी की विदाई के लिए सारी रात उसकी और उसके लिए प्रदेय वस्तुओं की सजावट की जाती है। दीपक घर में सारी रात भर अकेले जलता चमकता रहता है, परन्तु उसके प्रकाश में पोती की विदाई की तैयारी की जाती है। दादी अपनी पोती को सजाती रहती है। इसी रात में मद्धिम ये के प्रकाश में माँ अपनी बेटी, चाची अपनी भतीजी भाभी अपनी ननद को सजाती रहती है। झांपी एक बड़ा बाँस का बर्तन है, जो माँ विदाई के साथ में बेटी की ससुराल में भेजती है। भाभी अपनी ननद का श्रृंगार करती है और भाई डोली सजाता है। साफ सुथरा ओहार अर्थात् ओढ़ाने का वस्त्र सजा देता है।

इस गीत में बिटिया की विदाई में दिए जाने वाले श्रृंगार प्रसाधन और खाद्य वस्तुओं को बाँस के पात्र में सजाने का उल्लेख है। अपनी–अपनी भावनाओं के अनुसार माँ, चाची, भाभी सब विदाई की तैयारी में व्यस्त है। भाई भी पालकी में सुन्दर वस्त्र को ओढ़ाता है और इस प्रक्रिया में सक्रियता निभा रहा है।

ओरी के तरी–तरी फिरइं लछिमन राम हो
कि खोलि देती मोरी धना बजर केमार हो
कैसे के खोलूं मोरे साहब बजर केमार हो

कि पापा केरी दीन्ही चुनरी धूमिल होइ जाइ हो
पापा के चुनरिया पै एतना गुमान हो
कि हमरे चुनरिया धना जनम सिरायं हो

बेटी ससुराल में है, परन्तु वहाँ भी उसे अपने पिताजी द्वारा दी गयी चुनरी का बड़ा स्वाभिमान है। उसे धूमिल नहीं होने देना चाहती है। गीत शुरू होता है कि लक्ष्मण के साथ श्रीराम अर्थात् दूल्हे के छोटे भाई के साथ घर की दीवाल के साथ–साथ घूमता है और कमरे के पास जाकर कहता है। वज्र के समान बन्द दरवाजा खोल दो। नववधू दरवाजा खोलने हेतु न करती है। कहती है कि यह वज्र के समान दरवाजा मैं किस प्रकार खोलूँ, क्योंकि मेरे पिताजी की दी हुई चुनरी गन्दी हो जायेगी। उसका पति कहने लगता है कि अपने पिता जी की चुनरी के प्रति इतना गर्व है, जबकि मेरी चुनरी से ही सारी जिन्दगी पूरी होने वाली है। इस गीत के द्वारा नारियों को पितृगृह या मातृगृह (मायके) के प्रति सम्मान रखने की बात प्रकट की गयी है।

मंडप के नीचे सीता रोवइं अंसुवन की धार हो
कि छूटै लागें माई बाप नैहर के लोग हो
आने दिना बाबू मोरे करइं पूजा पाठ हो
कि आज मोरे बाबू जी के अंसुअन धार हो
आने दिना माया मोरी नीकहूं जगावै हो
कि आज मोरी माया बैठी रोवैं दिन औ रात हो
आने दिन भाभी मोरी नीकहूं दुलरावै हो
कि आज मोरी भाभी बैठी देत दूध भात हो
आने दिन भइया मोरे नीकहूं बोलावैं हो
कि मोरे भइया ठाढ़े जियरा दुःखी क हो
आने दिन सखियां मोरी खेलइं साथ साथ हो
कि आज मोरी सखियां त मनमां उदास हो

विवाह का मण्डप बना हुआ है, उसके नीचे सद्यः विवाहिता बेटी सीता आँसुओं की धार से रोने लगी है। संभवतः इसलिए कि उसके माता–पिता और नैहर (मायके) के लोग छूटे जा रहे हैं। सोचती है कि अन्य दिनों में मेरे पिता जी तो पूजा–पाठ करते थे, परन्तु आज मेरे पिताजी के आँसुओं की धारा लगी हुई है। दूसरे दिनों में मेरी माँ ठीक से जगा देती थी, परन्तु आज मेरी माँ बैठी–बैठी दिन और रात रोती रहती है। दूसरे दिनों में मेरी भाभी अच्छी तरह दुलार करती थी, परन्तु आज वह दूध और भात खिला रही है। दूसरे दिनों में मेरे भइया अच्छी तरह से बुलाते थे, परन्तु आज मेरे भाई

खड़े–खड़े जी दुःखी कर रहे हैं। दूसरे दिनों में मेरी सखियाँ साथ–साथ खेलती थीं, परन्तु आज वे सब मन में उदास हो रही हैं।

उस घड़ी का वर्णन है, जिसका साक्षात्कार कन्या अपनी विदाई में करती है। उस समय माता–पिता, भाभी–भइया और सखियाँ सभी उदास हो जाते हैं, रोते रहते हैं और ममता की मूर्ति की विदाई करते रहते हैं। वह भी उनमें सम्मिलित होती है, परन्तु वह यह घर छोड़कर घर बनाने, बसाने जा रही होती है।

काहेन केरे सीसा कंघी काहे केर तेल हो
कि कौन ढेरिया झारन बैठी लम्बे–लम्बे केश हो
सोनेन केर सीसा कंघी तिलन केर तेल हो
कि उनकी ढेरिया झारन बैठी लम्बे–लम्बे केश हो
के हो देइही चिट्ठी पत्री के ही संदेश हो
कि कौन भइया आनै जइहीं एतनिनि दूर हो (2)
पापा देइही चिट्ठी पत्री मम्मी जी सन्देश हो (2)
कि भइया मोरे आनै जइहीं ओतनिनि दूर हो (2)

शीशा कंघी किसकी बनी हुई है और कौन बेटी लम्बे–लम्बे बालों को झाड़ रही है, सुलझाने जा रही है। शीशा और कंघी सोने की बनी हुई है। तेल तिल का है और बिटिया लम्बे–लम्बे बाल सुलझा रही है। कौन चिट्ठी पत्री देंगे और कौन सन्देश देगा। कौन सा भाई बुलाने जाएगा। इतनी दूर पर हूँ। बेटी कहती है कि पिताजी चिट्ठी पत्री देंगे। माता जी सन्देश देंगी और मेरा भाई बुलाने जायेगा, चाहे कितनी भी दूर होगा।

इस गीत से यह प्रकट हो जाता है कि पिताजी पत्र देते रहेंगे, माँ सन्देश भेजती रहेगी, भाई बुलाने के लिए जायेगा। अस्तु वह निश्चिंत रहती है। हर स्त्री को मायके से यही अपेक्षा रहती है कि कोई उसे बुलाने आ जाये, चिट्ठी मिलती रहे और सन्देश भी मिलता रहे।

काटि कूटि बमूरी कटीली ओखी डारि हो
कि ओहीं तरी खेलती है लाड़िली बेटी खेल हो
ओहीं होइके चले आवइं सासु जी के पूत हो
केकरे भरोसे धना खेलतिउ अकेलि हो
केकरिन आहू बेटी बड़ी गभुआर हो
हां कि केकरे भरोसे तुम खेलतिउ अकेल हो

बाप केर आही हाथी बड़ी गभुआर हो
कि भैया के भरोसे हम खेलतिउं अकेल हो

बबूल के फल को बमुरी कहते हैं। उसे काट डाला गया, उसकी काँटों भरी शाखाओं को भी काट दिया गया है। इसी पेड़ के नीचे लाड़ली बिटिया खेल खेलती हैं उसी ओर से उसका पति अर्थात् सासू जी का लड़का चला आ रहा है। वह पूछ बैठता है कि तुम किसके भरोसे यहाँ अकेली खेल रही हो। तुम किसकी बिटिया हो? बड़ी सुकुमार हो। मैं अपने पिताजी की बेटी हूँ, बहुत सुकुमार भी हूँ और अपने भइया के भरोसे अकेले ही हम यहाँ खेल रही हैं।

यह गीत लड़कियों के भरोसे का है। उन्हें अपने भाई का भरोसा रहता है। वे अकेले होकर भी यह समझती है कि उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक, शारीरिक एवं पारिवारिक रक्षा भाई और केवल भाई करेगा। यही भाई बहन की सम्बंधगत दृढ़ता है, जिसका पग–पग में उदाहरण आज के समाज में भी पाया जाता है।

काटि कूटि बबुरी मैं खेलतउं अकेलि हो
कि राजा के कुमार दूनउं झांकि झूंकि जायं हो
केकरी तूं बारी आहू केकरी दुलारी हो
केकरे भरोसे तुम खेलतिउं अकेल हो
माया की मैं बारी आहूं पिता की दुलारी हो
कि भइया के भरोसे मैं खेलती अकेले हो
केकरी तूं बारी आहू केकरी दुलारी हो
केकरे भरोसे तुम खेलती अकेल हो
चाची की मैं बारी आहूं चाचा की दुलारी हो
भइया के भरोसे हम खेलतिउं अकेल हो
केकरी तूं बारी आहू केकरी दुलारी हो
केकरे भरोसे तुम खेलतिउं अकेल हो
आजी की मैं बारी आहूं आजा की दुलारी हो
कि भइया के भरोसे मैं खेलती अकेल हो

बबुरी को काट कूटकर मैं अकेली ही खेलती रहती हूँ। तब दोनों राजकुमारों ने इधर–उधर से झाँकना शुरू कर दिया और पूछने लगे कि तुम किसकी बिटिया हो किसकी प्यारी दुलारी हो और किसके भरोसे तुम अकेले यहाँ खेल रही हो? वह उत्तर देती है कि मैं, माँ की बेटी हूँ पिता, की दुलार वाली हूँ और भाई के भरोसे अकेले खेल

रही हूँ। दूसरी बार चाची की बेटी, चाचा की दुलारी, तीसरी बार दादी की बिटिया और दादा की दुलार भरी होने को तो कहती है, परन्तु भाई का ही भरोसा अकेले घूमने में देती है।

यह गीत भी पूर्वगीत जैसा ही है, इसमें थोड़ा सा अन्तर है, शेष वही सब है।

आंगन चन्द्र जुन्हैया त उइके अथइं गई हो
होत बिहान देखी माया त झापियां सजावइं हो
उठत के भइ भिनसार बिदा कइ देवइं हो
होत बिहान देखी भउजी त ननंदि का बुलावै हो
उठा ननदी भए भिनसार बिदा कइ देवइं हो
होत बिहान बेटी भइया त डोलिया सजावैं हो
उठा बहिनी भए भिनसार बिदा करि देवइं हो
होत बिहान बेटी भौजी त ननदी गोहरावैं हो
उठा ननदी भए भिनसार विदा करि देवइ हो
एतना जो सुनिन हवै ढेरिया डुहुकियन रोवइं हो
भइया के महल अटरिया हमहिं परदेश भेजइं हो

आँगन में चन्द्रमा की चाँदनी उगती है और अस्त हो जाती है। सुबह होने लगती है, परन्तु माँ अपनी बेटी की विदाई हेतु झांपी सजाती है और सजाते–सजाते सुबह हो गयी है। सोचती है कि सुबह होते ही बेटी की विदाई कर दूँगी। सुबह–सुबह भाभी ननद को बुलाती है और कहती है, उठो सुबह हो गयी है, विदा करूँगी। सुबह भाई डोली सजाता है, बहन को सुबह होने की खबर देता है। यह सुनते ही बिटिया डहक–डहक कर फफक–फफक कर रोने लगती है और सोचने लगती है कि भाई का महल है, अटारी है परन्तु हमें परदेश भेजे दे रहे हैं।

इसमें बेटी का ससुराल के लिए घर छोड़कर परदेश जाने का कथन उसका ममत्व प्रकट करता है। माँ, भाभी का प्रातः विदाई का कथन बेटी के लिए मार्मिक सा है।

जाहु लली तुम फलियो फूलियो सदा सुहागिन रहियो मोरे राम।
सास ससुर की सेवा करियो पतिव्रत सीस नवइयो मोरे राम।
जेठनी देउरानी से हिलि मिलि रहियो ननदी से हँसमुख बोलियो मोरे राम।
जो कुछ दिन में लावइं कमाइ के ओही मां गुजर चलइयो मोरे राम।
आगे उठहु और पीछे सोवहु सबसे पीछे जइयो मोरे राम।।

बेटी की विदाई के समय परिवार, गाँव एवं समाज की सहानुभूति, सम्वेदना और करुणा उमड़ उठती है। फिर भी वह गीत बनकर प्रकट होती है। ये गीत निर्देश, संदेश, भावना और कुलाचार–देशाचार के रहते हैं। राम का नाम लेते हुए गीत बेटी को आशीर्वाद देता है कि तुम ससुराल जाओ, फलो–फूलो और सदा सौभाग्यवती रहना, सास–ससुर की सेवा में लगी रहना, पतिव्रत धर्म का पालन करना और सबको शीश झुकाना; तुम्हारा स्वभाव रहना चाहिए। देवरानी जेठानी मिलेगी। उनसे मिल–जुल कर रहना और ननद से भी हँसमुख व्यवहार बनाकर रखना। पति दिन में जो भी कमाई कर के ले आए, उसी में अपना गुजारा कर लेना। परिवार में सबके बाद सो जाना और पहले उठ जाना। किसी यात्रा प्रसंग में सबसे पीछे चलना। यह सभी आचरण कुलवधू के लिए आदर्श के रूप में गाए गए हैं।

जाओ लली तुम फलियो फूलियो सदा सुहागिन रहियो मोरे राम।
प्यारी लली मोरी जहां ससुरारी माता जी देती असीस मोरे राम।
एक बात हम तुमसे कहत हंइ चित धरि सुनतइ जइए मोरे राम।
सास ससुर की सेवा करियो पति की पूजा करियो मोरे राम।
देवरानी जेठानी से हिलि मिलि रहियो ननद का आदर करियो मोरे राम।
जेठ ससुर जी से बाते न करियो पतिव्रत धर्म निभइयो मोरे राम।
जो कुछ स्वामी कमाइ घर लावइं उतने में गुजर चलइयो मोरे राम।
भइया कहै लली दोउ कुलतारन अमर रहे अहिवात मोरे राम।

बेटी तुम ससुराल जाओ, सदा सौभाग्यवती रहो, पुष्पित–फलित या फलो फूलो, अपनी सर्वविध प्रगति विस्तार करो। जहाँ भी तुम्हारी ससुराल हो, सुखी रहो। यही तुम्हारी माँ का आशीर्वाद है। मैं एक बात ध्यान से कह रही हूँ चित्त लगाकर सुन लेना– ससुराल में सास और ससुर की सेवा करना तथा पति की पूजा करते रहना, देवरानी और जेठानी से प्रेम पूर्वक मिलकर रहना, ननद का आदर करते रहना। पतिव्रत धर्म का पालन करना और ससुर तथा जेठ जी से बातें भी न करना, पति जो भी कमाई करके ले आए, उसी से अपना गुजारा करते रहना। भाई कह रहा है कि बहन दोनों कुलों का उद्धार करना तथा तुम्हारा सौभाग्य अमर रहा आए।

इस गीत में बेटी की विदा के प्रसंग में सबने शिक्षा दी है। सास, ससुर की सेवा करना, पति की पूजा करना, देवरानी–जेठानी से मिलकर रहना, ननद का आदर करना, पतिव्रता धर्म का पालन करना, जेठ और ससुर से बातें न करना, पति की कमाई से गुजारा करना और ऐसी बेटी दोनों कुल को तारने वाली होती है।

आपने बाबुल जी की बहुत दुलारी हो
कि चलि भई आज बेटी देशवा परायी हो
महल में बाबा रोवइं आंगने में माया हो
कि द्वारे मां भइया रोवैं बहिनी मैं परायी हो
एक कोस गयी बेटी दूसर कोस गई हो
कि तीसरे मां खोजैं लागी माया जी के गांव हो
ना हीं मोरा बाबा संग ना ही मोरा चाचा हो
कि नाहीं मोरे भइया संग केहिं संग जाब हो
ना हीं तोरे संग बाबा नाहीं संग चाचा हो
कि नाहीं संग भइया तोरे हम ही संग जावै हो
न ही जावै बाबा हम देश परदेश हो
कि माया संग रहबै भइया की दुलारी हो

अपने पिता जी की बहुत प्यारी–दुलारी बेटी आज परदेश चलकर परायी होती जा रही है। महल में दादाजी रो रहे हैं, माता आँगन में रो रही है, दरवाजे में भाई रो रहा है कि बहन परायी हो गयी है। बिटिया एक कोस जाती है, दो कोस जाती है, परन्तु तीसरे कोस में जाते ही माँ का गाँव ढूँढने लगती है। कहती है कि न तो मेरा बाबा या दादा साथ में है, न ही मेरा चाचा साथ है, न ही मेरा भाई साथ है। तब किसके साथ जाऊँगी। पति कहता है कि तुम्हारे साथ बाबा नहीं है, चाचा भी नहीं और भइया भी नहीं है, परन्तु मैं तुम्हारे साथ जाऊँगा। बिटिया कहती है कि दादा जी मैं देश–परदेश नहीं जाऊँगी, माँ के साथ रहूँगी और भइया का दुलार मैं स्वीकार करती रहूँगी।

तीन कोस दूर गयी बेटी व्याकुल हो जाती है। वह न पिता, न चाचा, न दादा और न ही भाई को देखती है तो उसका विश्वास टूट जाता है पति से कहने लगती है कि मैं परदेश क्यों जाऊँ, माँ भाई और बाबा के साथ ही रहूँगी। यह भी ममता का ही चित्रण है, गीतात्मक निरूपण है।

ससुरे के नउआ सुदिन लैके आवा हो।
सुदिन क दिहे ओही पिता हांथे माया न जानइ हो
जो सुनि पइहै माया हमारि डुहुकियन रोइहंइ हो। ससुरे ....
सुदिन क दिहे ओही चाचा हांथे चाची न जानइ। हो
जो सुनि पइहै चाची हमारि डुहुकियन रोइहंइ हो। ससुरे ....
सुदिन क दिहे मोरे भइया हांथे भौजी न जानइ। हो
जो सुनि पइहै भौजी हमारि डुहुकियन रोइहंइ हो। ससुरे ....

ससुराल का नाई सुदिन लेकर आया है, अर्थात् बिटिया के विवाह के बाद गमन (द्विरागमन) के लिए सिन्दूर लेकर आया है। सुझाव है कि यह सुदिन (सिन्दूर) पिता जी के हाथ ही देना। माँ को जानकारी न होने पाए, क्योंकि वह दुलार के कारण स्वीकार करने में रुचि नहीं लेगी। यह भी है कि माँ सुनेगी तो सिसकी दे–देकर रोती रहेगी। चाचा को सुदिन दे देना, क्योंकि चाची सुनेगी तो डुहुक–डुहुक कर रोती रहेगी। यही सुदिन भइया के हाथ दे देना भाभी सुनेगी तो डुहुकि–डुहुकि कर रोने लगेगी।

ममता का स्थान स्त्रियाँ ही होती हैं, अतः बेटी का कहना है कि सुदिन अर्थात् सिन्दूर पिता, चाचा, भाई के हाथ में देना, क्योंकि माँ, चाची, भाभी यदि जानेंगी तो बहुत रोएँगी। गौना होने के लिए पति के पक्ष के लोग सुदिन अर्थात् सिन्दूर रख लेते है तो गौने का मुहूर्त बना दिया जाता हैं।

गरुअ कठोर धनुहियां सिया मोरी सुकुमारी।
कि बाएं हांथे लिहिनि उठाय करन पूजा पगु धारी।
छापि लीपि करैं पूजा धनुष सिय अति प्यारी
सुनत चकित सब लोग सिय जी की बलिहारी
सुनत जनक मन हरषेउ कठिन प्रण डारी
शिव धनुही जे टोरैं बरौं सिया सुकुमारी
रंगभूमि आए भूप कर तन धार
लागे उठावहिं धनुहिया उठा नहिं गए हारी
अकुलाने तब जनक भयो दुख हिय भारी
कोऊ नहिं वीर जगत मां नृप बल धिक्कारी
बचन सुनत उठि लछिमन करन लगे तैयारी
गुरू आज्ञा लै राम धनुष खण्ड करि डारी
सीता राम उर मेली माला करहिं देव जयकारी

मेरी सीता जी सुकुमारी हैं परन्तु वह धनुष बड़ा कठोर है। फिर भी बाएं हाथ से ही उठा लिया और पूजा करने के लिए चली गयी। अत्यन्त प्रिय सीताजी छाप–लीपकर धनुष रखती है और पूजा करती है। यह सुनकर सभी लोग चकित हो जाते हैं। सियजी की बलिहार जाने लगते हैं। जनक जी सुनकर मन में बहुत प्रसन्न होते हैं। कठोर प्रण कर देते हैं, जो शिवधनुष को तोड़ेगा उसी को सुकुमारी सीता वरण करेगी। रंगभूमि में अनेक राजा शरीर धारण करके आ जाते हैं। धनुष उठाने लगते हैं, परन्तु हार जाते हैं।

उठा नहीं पाते हैं तब जनक व्याकुल हो उठते हैं। हृदय में बहुत दुःखी हो जाते हैं। कोई संसार में वीर नहीं है। राजाओं के बल को धिक्कार है। यह बात सुनते ही लक्ष्मण तैयार होने लगते हैं, परन्तु गुरु की आज्ञा पाकर राम ने धनुष तोड़ दिया। सीता ने राम के गले में माला डाल दी और सभी देवता जय–जयकार करने लगते हैं।

इस गीत में सीता और राम के विवाह पूर्व धनुष भंग का प्रसंग गाया गया है।

प्राणप्यारी सुकुमारी जनक दुलारी हो
कि सीता प्यारी वैदेही मिथिलापति की प्यारी हो
छोड़ि के बाबुल के देसवा अरु महल अटारी हो
कि छांड़ि सखियन केर सथवा अरु नगर नर नारी हो
छोड़ि कै रानी सुनैना बनी कौशिल्या की प्यारी हो
कि राजा दशरथ प्राणप्यारी मिथिलाकुमारी हो
छोड़ि कै माता की गोदी अरु जनक की खोरी हो
कि छांड़ि दिहिनि नेह नगरी जाइ चली ससुरारी हो
कौशिल्या से नेह कीन्हेउ मां सूरति बिसारी हो
कि कीन्हे बेटी पति की सेवा बनिकै आज्ञाकारी हो

प्राणों से प्यारी सुकुमारी, जनक के दुलार वाली विदेह की बिटिया प्यारी सीता मिथिलाधीश की प्यारी है। वह पिताजी का देश, महल, अटारी सब छोड़कर, सखियों का साथ और नगर के नर–नारी को भी छोड़कर रानी कौशिल्या की प्यारी हो गयी है। राजा दशरथ के प्राणों की प्रिय जानकी हो गयी। जनक की गलियाँ और ममता की गोद छोड़कर, स्नेह की नगरी छोड़कर ससुराल चली जा रही है। सीता जी की माता कहती है कि बेटी, कौशल्या माता से स्नेह करना और माँ की सूरत को बिसरा देना। आज्ञाकारिणी बनकर पति की सेवा करना।

सीता का जनकपुरी छोड़कर अयोध्यापुरी जाने का प्रसंग निरूपण किया गया है।

रोइ दिहिन रे बन्नी डोला का देखि के
पहली रोइनि बन्नी आजी का देखिके भेटि लिहिनि हो बना आजी का जाइके ।
दुसरी रोइनि बन्नी माया का देखिके भेटि लिहिनि हो बना माया का जाइके ।
तिसरी रोइनि बन्नी चाची का देखिके भेटि लिहिनि हो बना चाची का जाइके ।
चउथी रोइनि बन्नी भाभी का देखिके भेटि लिहिनि हो बना भाभी का जाइके ।
पंचवी रोइनि बन्नी जेठी का देखिके भेटि लिहिनि हो बना जेठी का जाइके ।

डोली विदाई के लिए दुल्हन हेतु सजाई जाती है, जब डोला सजा हुआ देखती है तो बन्नी रोने लगती है। उस समय दादी को देखकर बन्नी रो पड़ती है, तब बन्ना (दूल्हा) दादी के पास जाकर भेंट कर लेता है। फिर माँ को देखकर बन्नी रोने लगती है, तब वहाँ भी बन्ना अर्थात् दूल्हा चला जाता है और उनसे भेंट कर लेता है, फिर चाची को देखकर रोने लगाती है, तब बन्ना चाची से मिल लेता है। चौथी बार बन्नी ने भाभी को देखा और रोने लगती है, तब भी बन्ना ने भाभी से भेंट कर ली और अब बड़ी बहन के देखकर रोने लगती है, तब भी बन्ना जाता है, उनसे भी मिल लेता है।

बेटी विदा के समय डोली देखती है और रोने लगती है। दादी, माता, चाची, भाभी और बड़ी बहन को देखती है और रोने लगी, तब दूल्हा उनसे जाकर मिल लेता है और वे समझ जाती हैं। परिवार में पली बिटिया की ममता इन्हीं से अधिक होती है, जिससे उन्हें देखते ही विदा के समय रो पड़ती है।

अत्तिस कोठरिया के बत्तिस दुआर हो
कि बत्तिसउ आइ हइ मरिचिया कइ झारि
काहे के सिलउटी काहेन केर लोढ़ा हो
कि कउन ढेरिया बांटइ बइठी बहु का पिराने हो
सोनेन सिलउटी रूपेन केर लोढ़ा हो
बांटन बइठी राजा बेटी बहुंका पिराने हो
एतनी जो रहिउ अपने बाप कइ दुलारी, अपने माया कै पियारी हो
एक चेरिया लेती अउतिउ अपनेनि साथ हो।

इकतीस कमरों में बत्तीस दरवाजे हैं और उन सब में मिर्च के बघार की गंध आ रही है। सिलौटी किसकी है, किसका लोटा है और कौन बेटी बाँटने बैठी है उसकी भुजा दर्द कर रही है। सिलौटी सोने की बनी है, रूपा या चाँदी का लोढ़ा है, राजकुमारी बिटिया बाँट रही है, बाहु में पीड़ा होने लगी है। यह सुन जानकर व्यंग्य वचन मिला कि इतनी सुकुमारी और पिताजी की दुलारी थी तो एक दासी नौकरानी साथ लेती आती।

इस गीत में नई–नवेली बहू की सुकुमारता प्रकट होती है, परन्तु उसे साथ में नौकरानी लाने हेतु कह देना ससुराल में प्राप्त असहयोग का उदाहरण है।

गैलहाई

राम का मधुबन जात दिखे रे कोउ।

(राम लखन ब्रह्मचारी दिखे रे कोउ)
रामा के माथे मुकुट भल सोहइ रे, चन्दन भरा है लिलार दिखे रे कोउ। राम...
अंग मां उनके पीताम्बर सोहै रे, पहिरे पिअर परदनियां दिखे रे कोउ। राम.....
हांथ मां उनके धनुष भल सोहै रे, गले बैजंती का माल दिखे रे कोउ। राम......
राम के पाए पैजनियां सोहइ रे, चलत मधुरियन चाल दिखे रे कोउ। राम.........

मधुबन जाते हुए श्रीराम को क्या किसी ने देखा है अथवा क्या ब्रह्मचारी राम और लक्ष्मण को किसी ने देखा है? इस राम के मस्तक में सुन्दर मुकुट सुशोभित है, ललाट में चन्दन लगा हुआ है, उनके अंगों में पीताम्बर सज रहा है और पीली परदनी या धोती वे पहने हुए हैं। क्या इस रूप में किसी ने देखा है? उनके हाथों में सुन्दर धनुष सुशोभित है तथा गले में वैजयन्ती माला भी पहने हुए हैं। श्रीराम के पैर में पायजेब सुन्दर लग रही है और मधुर–मधुर धीमी–धीमी चाल से वे चले जा रहे हैं।

मार्ग या रास्ते को बघेलखण्ड में गैल कहते हैं। देवालयों, तीर्थों, मन्दिरों की यात्रा में देवताओं की लीलाओं को स्मरण कराने वाले गीतों को गाते हुए नर–नारी यात्रा करते थे। इससे पदयात्रियों की यात्रा भी आराम से पूरी हो जाती थी, थकान का आभास भी नहीं हो पाता था। इन्हीं गीतों को गैलहाई कहा जाता है, ये पथिक गीत या पन्थी गीत कहे जाते हैं। जिन देवी–देवताओं के लिए यात्रा होती है, उन्ही का चरित्र गाते–गाते लोग धर्माचरण भी करते थे, धरती की परिक्रमा भी करते थे, साथ ही मार्ग में आने वाले लोगों की सांस्कृतिक पहचान भी करते थे। भारतीय समाज एवं क्षेत्र की समाज–संस्कृति, रहन–सहन, खाना–पानी, बोली–बानी सबका ज्ञान होता जाता है। यही इन गीतों की विशेषता है। कुछ गीतों में पारिवारिक सुख–दुःख व्यवहार आदि का भी निरूपण किया गया मिलता है।

नीका लागइ राम उहइ हो बन।
जौने बन एक कोइली बसत है बोलै बचन पिआरी उहइ रे बन ।। नीका........
जौने बन एक सुअना बसत हंइ बोलै सीताराम उहइ हो बन ।। नीका........
ओहिंन बन मां गंगा बहत हंइ राम करइं असनान/गोदान उहइ रे बन।
ओहिंन बन मां साधु बसत हंइ तापइं धुइनी जलाइ उहइ रे बन। नीका ....

अरे श्रीराम जी! हमें वही वन अच्छा लग रहा है, जिस वन में एक कोयल निवास करती है और वह प्यार भरी बातें बोलती रहती है। जिस वन में एक तोता निवास करता है और सीताराम बोलता रहता है। उसी वन में गंगाजी बहती हैं और रामजी स्नान, गोदान करते हैं, साधु भी वहीं रहते हैं और धूनी जलाकर तापते रहते हैं।

यह वही तीर्थ है जहाँ के पक्षी भी सीता राम बोलते हैं ऐसे वन में ही गंगा स्नान होता है। रामजी का निवास हो सकता हैं, रहने वाले भी साधु हो जाते हैं। ठण्ड में धूनी जलाकर तापते रहते हैं। तीर्थ यात्रा के गीतों में ऐसे ही भाव रहते हैं। यही भारतीय जीवन की विशेषता है कि त्याग, तपस्या, तपोवन की स्मृति वाले स्थान तीर्थ बन जाते हैं और लोग वहाँ की यात्रा करके पुण्य कमाने का भाव रखते हैं।

मोरे राम त बन का हीं जायं मनाए नहि मानइं।
राम के संग है सिया सुकुमारी लछिमन भइया है साथ। मनाए..........
अरे भूंख लगे भोजन कहं पइहैं प्यास लगे कहं पानी। मनाए...........
अरे नींद लगे डासन कहं पइहैं कासकुशा गड़िजाय। मनाए............
अरे अमलि लगे बिरिया कहं पइहैं घाम लगे कहं छांह। मनाए...........

मेरे राम वन जा रहे हैं, मनाने से भी नहीं मान रहे हैं। राम के साथ सुकुमारी सीता है और भाई लक्ष्मण भी साथ जा रहे हैं। जब उन्हें भूख लगेगी, तब भोजन और प्यास लगने पर पानी कहाँ पाऐंगे। नींद आने पर बिस्तर कहाँ मिलेगा? काँस और कुश लग जायेगा। आदत लगने पर बीड़ा कहाँ मिलेगा और धूप लगने पर छाया कहाँ मिलेगी।

गीत में श्रीराम–लक्ष्मण–सीता के वन जाने पर उनके भोजन–पानी, पान एवं बिस्तर की चिन्ता की गयी है। उसी चिन्ता में यह गीत बन गया है।

लछिमन लिहे बान रामा हिरनियां मारइं।
जबही हिरनिया ताला बिच आई धोबियन के ओट रामा हिरनियां मारै।......
जबहीं हिरनियां कुंअन बिच आई घइलन लै ओट रामा हिरनियां मारै।.........
जबहीं हिरनियां बागा बिच आई फुलवन लै ओट रामा हिरनियां मारै।.........
जबहीं हिरनियां महल बिच आई रनियन लिहे ओट रामा हिरनियां मारै।.........

राम जी हिरनी को मार रहे हैं और लक्ष्मण बाण लिए हैं। जब हरिणी तालाब में आई तो धोबियों के आड़ में हो गयी। जब वह भागती हुई कुँए के बीच आती है तो घड़ों की आड़ में आ जाती है, परन्तु जब यह हरिणी बगीचे में आती है तो फूलों की आड़ में आ जाती है। यह हरिणी जब महल में आती है जो रानी की आड़ में हो जाती है और रामजी उसे मारना चाहते हैं। यह गीत अहिंसा प्रवर्तक है इसमें एक ओर राम उसे मारना चाह रहे हैं, परन्तु वे नहीं मार पाए हैं। गीत हिरणी को बचा ले गया है।

रामलखन दूनउ भइया त ठाढे अरज करैं

माता मुँह भरि देतिउ अशीष बनै हम जाबै हो।
अंखिया मां खोसउं सरइया त जिभिया अंगार धरौ हो
अब छतियां बजुर परि जाय बचन कइसे बोलउं हो।
राम लखन दोनों भइया त ठाढ़े अरज करै हो
माता मुँह भरि देतिउ अशीष पिता की आज्ञा पालब हो।
अंगना त मोरे लेखे मरघट डेहरी होइगै परबत हो
अब भीतर भरा अंधियार तीनउ जन बन चले हो।

राम और लक्ष्मण दोनों भाई खड़े होकर आग्रह कर रहे है कि– हे माँ! प्रसन्नतापूर्वक आशीर्वाद दो, हम लोग वन के लिए जा रहे हैं। यह सुन माँ कहती है कि आँख में सलाई डाल लूँगी, जीभ में अँगार रख लूँगी और छाती में वज्र लग जायेगा। जब मैं ऐसा बोलूँगी, कैसे वनवास के लिए आशीर्वाद दूँ। दोनों भाई कहते है कि माँ–पिता की आज्ञा पालन करेंगे, माँ आशीष दे दो। माँ कहती है कि मेरे लिए तो आँगन श्मशान बन गया है। देहली तो पर्वत हो गयी है और घर के भीतर अंधेरा ही अंधेरा भरा है, क्योंकि तीनों लोग वन चले जा रहे हैं। बहू–बेटों के बिना घर ग्राम्य जीवन में कैसा हो जाता है, इसका इस गीत में वर्णन हुआ है।

राम चले बनवासा सीता मन सोचइं सीता मन सोचइं हो।
अब खेबरै न नइया केवट बिन धनिया पुरुष बिन हो
न हमरे ससुरे दुख ना नइहर दुख हो
स्वामी तोहरइं ता होई वियोग नींद नहि आवइ हो।
सासू की तकिउ रसोइयां ससुर जेउनरिया हो
पै अलग रहिहैं रउरे से भइया त कइसे के रहबइ हो
सिकिया न डोलइ पवन बिन पुरइनि जल बिन हो
अब खेबरै न नइया केवट बिन धनिया पुरुष बिन हो
माया कहइ छाती पीपर भौजाई कहइ बइरिन हो
अब भइया देखइं भउहै तरेरै त कइसे के रहबइ हो।

जब राम वनवास के लिए चल दिए, तब सीता मन ही मन सोचने लगती है कि नौका अब केवट के बिना नहीं चलायी जा सकती है, जैसे पुरुष के बिना स्त्री नहीं चल सकती है। वे सोचती हैं कि न तो मेरी ससुराल में कोई दुःख है और न ही मायके में कोई दुःख है, परन्तु– हे स्वामी! तुम्हारा वियोग होगा इसी से नींद नहीं आती है। मैंने सास जी की रसोई का ध्यान रखा, ससुर जी के भोजन का ध्यान रखा, परन्तु जब हमसे

अलग रहेंगे तो कैसे हम रहेंगे। हवा के बिना घास नहीं हिल पाती और पानी के बिना कमल का पत्ता या पुरैन नहीं हिल पाती उसी प्रकार जीवन की नौका पुरुष (पति) के बिना नहीं चलायी जा सकती है। माता जी छाती की पीपल कहने लगेंगी, भाभी बहरी (वधिर) कहने लगेंगी और भैया जी भौंह तिरछी करके देखने लगते हैं तो मैं किस प्रकार रह सकूँगी।

इस गीत में पति के बिना पत्नी की जीवन नौका को पार करने वाला कोई नहीं होता और पति के बिना वह परिवार में रह पाना भी संभव नहीं समझती है, यह दर्शाया गया है।

सिया मांगइ बरदान शिव की मेढुलिया के भीतर।
दशरथ अइसे ससुरा जो मांगइ रानी कौशिल्या सास। शिव की ......
लछिमन जइसे देवरा जो मांगइ बर मांगइ भगवान्। शिव की ....
मइके मां मांगइ पांच बिरनमां बहिनी मांगइ अकेल। शिव की ....

शिवजी के मंदिर में सीता जी वरदान मांगती है कि ससुर जी दशरथ जी जैसे हों और सासूजी रानी कौशल्या जी जैसी हो। देवर लक्ष्मण जैसा मांगती है तो पति भगवान् श्रीराम जी जैसे होना मांगती है। वे मायके में पाँच भाई मांगती है और बहन अकेले ही होने का वरदान मांगती है।

वधू ने पाँच भाई और एक ही बहन तो मांगी, परन्तु सास–ससुर वही कौशल्या–दशरथ, देवर, लक्ष्मण और पति राम को ही मांगती है और यह सब शिवजी से अपेक्षा करती है।

गेंदा के फूल कहां पांऊ रे ईं रामा गेंदा के विरुझे।
गेंदा के फूल मोरे ससुरा की बगिया सासू टोरन नहि देइ रे। रामा ....
गेंदा के फूल मोरे जेठा की बगिया जेठी टोरन नहि देइ रे। रामा ....
गेंदा के फूल मोरे देवरा की बगिया लहुरी टोरन नहि देइ रे। ....

ये रामजी तो गेंदा का फूल लेने का हठ कर रहे हैं, वह गेंदा का फूल कहाँ पाऊँ? यह गेंदा का फूल तो मेरे ससुर के बगीचे में है, परन्तु सासूजी तोड़ने ही नहीं देती हैं। यह फूल मेरे जेठजी के बगीचे में तो है, परन्तु जेठानी तोड़ने नहीं देती। इसी प्रकार यह गेंदा का फूल मेरे देवर के बगीचे में तो है, परन्तु देवरानी तोड़ने नहीं दे रही है और वे रामजी तो गेंदे के फूल हैं के लिए जिद कर रहे है।

पति की हठ को पूरा न कर पाने की बात पत्नी ने गीत के रूप में कर दी है।

बरसै बड़ी–बड़ी बूंदें सीता कदम तरी भींजइं।
कहां गए राम कहां गए लछिमन कहां गए हनुमान। सीता...........
बन गए राम बनै गए लछिमन लंका गए हनुमान। सीता..........
का खइहैं राम औ का खइहैं लछिमन का खइहैं वीर हनुमान। सीता............
फल खायं रामजी औ फल खायं लछिमन दाल खायं हनुमान। सीता.............

बादल बड़ी–बड़ी बून्दों की बरसात किए जा रहे हैं, परन्तु सीता कदम्ब के पेड़ के नीचे भीगी जा रही हैं। राम जी कहाँ गए, लक्ष्मण जी कहाँ गए है और हनुमान जी भी कहाँ चले गए है? राम वन गए हैं, लक्ष्मण भी वन गए हैं, साथ ही हनुमानजी तो लंका चले गए हैं रामजी क्या खायेंगे, लक्ष्मण जी क्या खायेंगे और वीर हनुमान क्या खायेंगे? राम जी फल खायेंगे, लक्ष्मण जी भी फल खायेंगे और श्री हनुमान दाल खायेंगे। यात्रा में सीता जी कदम्ब के नीचे भीग रही हैं। इस समय राम, लक्ष्मण, हनुमान सभी वन गये हैं, वे सभी फल खाते हैं।

सांवरी सूरत पर बारी हो राघव मैं तो तुम्हारी सांवरि सूरत पर वारी।
ऋषि पत्नी भई शिला शाप बस छुअत शिला भई नारी। हो राघव.......
रण सुबाहु मारीच संहारों की मुनि मख रखवारी। हो राघव...............
रचा स्वयंवर जनक राज ने सुता विदेह कुंआरी। हो राघव...............
धनुष खण्डकर दुःख मिटायो निज इच्छा पशुधारी। हो राघव...........
सफल कामना भई सिया की नारद कह्यो बिचारी। हो राघव..........

हे राघव! मैं तो तुम्हारी साँवली सूरत पर न्योछावर हो गयी हूँ, शाप के कारण ऋषि की पत्नी पत्थर हो गयी थी जो तुम्हारे छूते ही स्त्री बन गयी। युद्ध में मारीच और सुबाहु को मार डाला और मुनि के यज्ञ की रक्षा कर दी। जनक राजा ने स्वयंवर रचाया था। उनकी कन्या कुमारी थी। उनके यहाँ धनुष तोड़कर सबका दुःख दूर कर दिया और अपनी इच्छा से आकर सीता की इच्छा पूरी कर दी थी। यही सोच–विचार कर नारद जी ने कहा था।

जोगियन भए श्याम राधा मिलन के कारन।
पहिली मिलन उनकी बागा मां भई है, मलिया बने श्याम। राधा ......
दूसरा मिलन उनका कुंअना मां भा है, कहरा बने श्याम। राधा ....
तिसरा मिलन उनका ताला मां भया है, धोबिया बने श्याम। ....
चउथा मिलन उनका महला मां भया है, रजबा बने श्याम। ....

राधा के मिलने के कारण श्यामजी योगी बन गए हैं। पहली बार वे बगीचे में मिले थे, तब श्याम माली बन गए थे। दूसरी बार कुँए में मिले थे, तब श्याम कहार बनकर आ गए थे। तीसरी बार श्याम तालाब में मिले थे, जब श्याम धोबी बने थे। चौथी बार राधा से मिलना महलों में हुआ था, जब श्याम राजा बन गए थे। राधा से मिलने के लिए श्याम बहुरूपिया बन जाते हैं, जोगी बनते हैं, माली बनते हैं, कहार बनते हैं, धोबी बनते हैं, राजा बनते हैं पर सब कुछ राधा से मिलने के लिए ही करते हैं।

बसतीं है राधा दूर हमसे मिलन कब होई।
एक तौ बोलिया प्यारी लागइ बोलिया प्यारी लागइ।
दूजे खाए बीरा पान हमसे मिलन कब होई।
एक तो पहिरे रंग सारी पहिरे रंग सारी।
दूजे गोटा लहरेदार हमसे मिलन कब होई।
एक तो चलन प्यारी लागइ चलन प्यारी लागइ।
दूजी चलैं मधुरियन चाल हमसे मिलन कब होई।

राधा जी दूर रहती है, मुझसे मिलना कैसे हो सकता है। एक तो उनकी बोली प्यारी लगती है, दूसरे उन्होंने पान का बीड़ा भी खा रखा है पर हमसे कब भेंट होगी। एक तो राधा ने रंगीली साड़ी पहन रखी है, दूसरा वे लहरदार गोटा भी धारण किये हुए हैं, कब मिल पाएंगी। एक तो उनका चलना बहुत प्यारा लगता है, दूसरी उनकी चाल बहुत मधुर है, पर मुझसे मिलना कब हो पाएगा।

गोकुल बसै प्राण मन मथुरा मां लागइ।
जो मैं होतिउं गंगा जमुना बहतिउं एक साथ। मन..............
जो मैं होतिउं बेला रे चमेली फुलतिउं एक साथ। मन...............
जो मैं होतिउं चन्दा औ सूरज उगतिउं एक साथ। मन...............
जो मैं होतिउं ग्वालिन गुजरिया दधि बेचतिउं एक साथ। मन.........

मेरा मन मथुरा में लगा रहता है और प्राण गोकुल में बसा रहता है। यदि मैं गंगा और यमुना होती तो एक ही साथ बहती रहती। बेला–चमेली होती तो एक ही साथ फूलती रहती। चन्दा और सूरज होती तो भी एक ही साथ उगती। यदि ग्वालिन या गूजरी होती तो भी दही एक ही साथ बेचती ।

इसमें गोकुल मथुरा दूर–दूर हैं और प्राण तथा मन दोनों में पृथक्–पृथक् रहता है। गंगा–यमुना होती तो एक साथ बहती, बेला चमेली होती तो भी एक साथ फूल देती, चंदा सूरज होने पर भी एक साथ ही उदय होती, ग्वाल कन्या होकर दही बेचती। मन–प्राण एक साथ ही रखती ।

बसतीं हैं राधा दूर अबके मिलन कब होइ हैं। (2)
गंगा जमुन दूनउं बहिनी बहतीं एक साथ। अबके मिलन ....
राम लखन दूनउं भइया चलते एक साथ। अबके मिलन ....
चन्दा सूरज भाई बहिनी उगइं सुबह और शाम। अबके मिलन ......

राधा जी बहुत दूरी पर निवास करती हैं, अब किस प्रकार मिलना हो सकेगा? गंगा और यमुना तो दोनों बहनें हैं, एक ही साथ बहती हैं पर अब मिलना कैसे संभव है। ये राम और लक्ष्मण भी दोनों भाई–भाई हैं, एक साथ ही चलते हैं अब उनका मिलना किस प्रकार हो सकेगा। सूरज और चन्द्रमा दोनों भाई और बहन है एक सुबह और एक शाम को उगते हैं तो मिलन कैसे होगा।

यमुना और गंगा के समान, राम और लक्ष्मण के समान और सूर्योदय तथा चन्द्रोदय के समान, राधा–श्याम के दूर रहने से परस्पर भेंट कैसे होगी। यही बात का अभिप्राय है।

जनम इया बिरथा गा भाई इतने दिना।
गंगा नहाए कउन फल पायउं दीन्हेउं न कन्यादान। इतने ....
जमुना नहायउं कउन फल पायउं दीन्हेउं न गउअन दान। इतने ......
सरयू नहायउं कउन फल पायउं दीन्हेउं न मोतिअन दान। इतने .....'

भाई यह जनम इतने दिन तक व्यर्थ चला गया है। गंगा स्नान का क्या फल मिला, जबकि आज तक इतने दिन में कन्यादान ही नहीं किया। यमुना नहाने का क्या फल मिला, कभी भी गायों का इतने दिन तक दान नहीं दिया। सरयू नहाने का भी कोई फल नहीं मिला, क्योंकि इतने दिन तक मोती का दान नहीं किया।

गंगा स्नान करने पर भी कन्यादान करना चाहिए, यमुना स्नान करने पर भी गोदान और सरयू स्नान पर भी मुक्ता दान करने का फल और भी अधिक होता है।

नैहर हवै रे उदास माया के बिना।
माया जो होतीं खबरि मोरी लेती हो बाबू का दूसर नाता। माया के बिना.......
चाची जो होतीं खबरि मोरी लेती हो चाचा का दूसर नाता। माया के बिना......
भाभी जो होतीं खबरि मोरी लेती हो भईया का दूसर नाता। माया के बिना.....

माँ के न रहने पर मायका (मातृघर) उदास हो जाता है। बेटी कहती है कि माँ होती तो मेरा समाचार जरूर लेती, परन्तु उसके बिना पिता जी का दूसरा संबंध हो जाता है। काकी भी होती तो हाल–समाचार लेती, परन्तु माँ के बिना काका का भी संबंध

ा बदला–सा होता है। भाभी होती तो मेरी खबर ले लेती, परन्तु भइया का भी माँ के न रहने पर संबंध दूसरा–सा हो गया है।

इस गीत में बेटी के लिए माँ की महिमा कही गयी है। माँ के बिना मायके में पिता, चाचा, भाई सबके नाते रिश्ते बदल जाते हैं।

चलो बद्री के धाम आगे के दिन बड़े गाढे।
आगे गंगा जी मिलिहंइ कर लो असनान।। आगे ....
आगे तुलसी का बिरवा कइके पूजा पाठ। आगे के............
आगे गौआ जी मिलिहैं कइले गऊदान। आगे के..............
आगे कन्या जी मिलिहैं कइले कन्यादान। आगे के ....

अरे! अभी बद्रीधाम की यात्रा में चलते हैं। आगे के दिन कष्ट के आने वाले हैं। मार्ग में आगे गंगा जी मिलेंगी वहाँ अभी स्नान कर लो, आगे दिन कष्ट के आएंगे। आगे तुलसी का पौधा मिलेगा उसका पूजा–पाठ कर लो। आगे गाय माता भी मिलेगी तो गोदान भी कर लो। कन्या भी मिलेगी तो कन्यादान कर लो।

बद्रीधाम की यात्रा में गंगा, तुलसी, गोदान, कन्यादान सबकी महिमा अनिवार्य है। बद्रीधाम का तीर्थ अंतिम तीर्थ है, उसके बाद पुनर्जन्म न होने का लोक विश्वास है, अस्तु सभी काम करने की बात गीत करता है।

बेला फूलइं आधी रात गजड़ा मै केखे गरे डारौं।
राम गरे डारौं श्रीराम गरे डारौं सीता रस लेय। गजड़ा मैं ....
ब्रह्मा गरे डारौं ब्रह्मा गरे डारौं ब्रह्माणी रस लेय। गजड़ा मैं ....
शंकर गरे डारौं शिवशंकर गरे डारौं गिरिजा रस लेय। ....
कृष्ण गरे डारौं श्रीकृष्ण गरे डारौं राधा रस लेय। गजड़ा मैं ....

आधी रात में बेला का फूल खिलेगा। गजरा किसके गले डालूँ, यह समस्या नायिका सोच रही है। राम के गले में यदि डालती हूँ तो सीता जी उसका रस लेंगी। ब्रह्मा के गले में डालूँगी तो ब्रह्माणी रस लेंगी। शिव के गले में गजरा डाल दूँगी तो पार्वती जी उसका आनन्द लेंवेगी, यदि कृष्ण के गले में गजरा डालूँगी तो राधा जी इसका रस लेंगी।

कंकना कै जोड़ी दोहरिया हो नदी नारे बिसरिगै।
जो सुनि पइहैं ससुरा हमारे हिरकइ न देइहैं डेहरिया हो। नदी.........
जो सुनि पइहैं जेठा हमारे हिरकइ न देइहैं ओसरिया हो। नदी..........

जो सुनि पइहैं देवरा हमारे हिरकइ न देइहैं बरोठबा हो। नदी............
जो सुनि पइहैं सइंया हमारे हिरकइ न देइहैं अटरिया हो। नदी.........

नदी नाले की ओर गयी थी और वहीं कंगन की जोड़ी भूल गयी हूँ। यदि हमारे ससुर को पता चलेगा तो वे देहली नहीं चढ़ने देंगे। यदि जेठ जी को सुनने को मिलेगा तो वे ओसारी अर्थात् चौपाल में घुसने नहीं देंगे। यदि यह हमारे देवरजी सुन लेंगे तो कमरे में नहीं जाने देंगे। यदि मेरे पति यह सुन लेंगे तो अटारी में घुसने नहीं देंगे। इसमें नववधू को कंगना नदी में भूल जाने का भय बना हुआ है, वही इसमें वर्णित है। यह परिवारों की सामान्य प्रवृत्ति है।

जमुना तेरी ओट बइरिन बसुरिया बाजी।
गंगा जमुन दूनउ बहिनी रे दूनउ बहिनी।
बहै लागीं एक साथ बइरिन बंसुरिया बाजी।
चन्दा सूरज दूनौ बहिनी रे भइया।
उगइ लागे दिन रात बइरिन बंसुरिया बाजै। जमुना...........

बैरी बाँसुरी बजने लगी, यमुना तुम्हारे बहाने से तुममें छिपकर बाँसुरी बजने लगी है। गंगा और यमुना दोनों बहनें हैं वे एक साथ ही बहने लगती हैं और बाँसुरी बजती है। चन्द्र और सूर्य भी दोनों भाई और बहन हैं। वे रातों दिन उगने लगते है। बाँसुरी बैरी जैसी बजने लगती है।

बाँसुरी बजने का रस इस प्रकार होता है कि गंगा और यमुना दोनों एक साथ बहने लगती हैं। सूरज और चाँद भी दोनों एक साथ उगने लगते हैं।

जेठ कै तपी दुपहरिया धरती धधकि बरइ हो।
तेहिमां सीता क रामा निकारिन त बिरहा विपति परइ हो
जे भउजी भूंखे क भोजना अउ नंगे का ओढ़ना हो
अब तेइ भउजी गरुए गरभ से मैं कइसे निकारउं हो
हो भउजी सीतल रानी बड़ी ठकुराइनि हो
भउजी आवा है तोहई नेउतबा बिहाने बन चलवई हो
अचला मां लीन्ह सरसबा छिटव सीता निकली हो
अब लउटइं जब लछिमन देवरा खोटि कै टोरि खइहै हो
बइठा नंचिउ चंदन बिरछ तर हो
भउजी पनिया कहौ से खोजि लाई त तोहईं पिआई हो
कहां गया लछिमन देवरा त हमी न बतावा हो

हिरदय भर तुमहीं के देखतेन नजर भर रोउतेन हो
को मोरे आगे पीछे बइठइ औ को लट छोरइ हो
अब को मोरे जागी रयनिया को नारा का छीलइ हो
बन से निकरि बनतपसिन सितल समुझावइं हो
सीतल चलहु न हमरी मेढुलिया विपत्ति तोहरी हरबइ हो
हम तोहरे आगे पीछे बइठब हमिनि लट बेउरब हो
अब हम तोहरी जगब रइनिया त विपति नेवारब हो

जेठ महीने की तपती दोपहर में धरती धधक कर जल उठती है। इसी समय राम ने सीता को निकाल दिया। एक तो विरह दूसरी विपत्ति आ जाती है। जो भाभी भूखे को भोजन और वस्त्रहीनों को कपड़ा देती थी, वही अब सगर्भा है, उसे कैसे निकालूँ। अरी! भाभी सीता बड़ी मालकिन हैं, उन्हें न्योता आया है कि सुबह वन चलेंगे। सीता जी आँचल में सरसों लेकर छिटकती हुई चलती है, जब लक्ष्मण जी लौटेंगे तो इसकी भाजी खोंटकर खाएंगे। लक्ष्मण ने कहा– भाभी थोड़ा चंदन के पेड़ के नीचे बैठ जाओ, कहीं से पानी ढूँढकर लाता हूँ। तब सीता ने कहा– बेटा लक्ष्मण तुम्हें मैं जी भर कर देखूँगी, नजर भर कर रो लेती हूँ। कौन आगे–पीछे बैठेगा? कौन लट छोड़ेगा, रातभर कौन जगता रहेगा? कौन बेटों का नालच्छेदन करेगा? वनतपस्विनी मिलती है और सीता को समझाती है कि तुम हमारी मेढुली यानी मंदिर में चलो, तुम्हारा दुःख मैं दूर कर दूँगी। मैं तुम्हारे आगे–पीछे बैठूँगी। बालों की लट ठीक कर दूँगी, रातों–रात लट ठीक कर दूँगी। रातों–रात जगूँगी और विपत्ति दूर करूँगी। इस गीत में सगर्भा सीता के वनवास का चित्रण किया गया मिलता है।

राजा भरती के होने वाले घरे कब अउबे।
जेठ नहिं अउबै वैशाख नहिं अउबइ लगत अषाढ़ जिया तरसउबै। घरे..
माया तोरी तरसै हमरिउ तरसइ बलाइ हो नैहर चली जावै। घरे...........
केके संग जाबू केके संग रहबू केकरे करबू श्रृंगार केकर होइके रहबू। घरे....
माया संग जाबइ बहिन संग रहवै तोहरइ करब श्रृंगार तोहार होइके रहबै। घरे...

पति को राजा से संबोधित करती हुई कोई स्त्री कहती है कि राजा जी, नौकरी में भर्ती होने तो जा रहे हो, परन्तु घर कब आओगे? वह कहता है कि ज्येष्ठ महीने में नहीं आऊँगा, वैशाख में भी नहीं आऊँगा और आषाढ़ में भी जी तरसाऊँगा। औरत उत्तर देती है कि तुम्हारी माँ तरसे, बहन तरसे, परन्तु मैं नहीं तरसूंगी, मायके चली जाऊँगी। पति पूछता है कि किसके साथ जाओगी, किसके साथ रहोगी, किसका श्रृंगार करोगी

और किसकी होकर रहोगी? माँ के साथ जाऊँगी, बहन के साथ रहूँगी, तुम्हारा ही श्रृंगार करूँगी और तुम्हारी होकर ही रहूँगी।

नववधू के पूछने पर पति नौकरी से नहीं आने और तरसाने की बात कहता है। वधू तब मायके चले जाने की बात कहती है। नारियों को ससुराल के बाद पुनः मायका ही शरण होता है।

आए न बिरना तोहार ननदिया रे।
अतरन फुलवन गलियां सजायउं रामा पलकन डगर बुहारेउं। आए .....
सोने की थाली रामा जेमना लगायउं झंझरे करोला मां जल भरि लायउं। आए .....
लौगन खीला मां वीरा लगायउं चुनि–चुनि फूला मां सेजा लगायउं। आए ....

अरी ननद जी! तुम्हारे भइया नहीं आए। मैंने इत्र और पुष्पों से गलियाँ सजा–सँवार दी हैं और अपनी पलकों से मार्ग को बुहार दिया है। सोने की थाली में भोजन बनाया और सच्छिद्र करोलापात्र में पानी भर लायी हूँ। उनके स्वागत में पान भी लौंग की कीलों से लगा रखा है। साथ ही फूल चुन–चुन कर बिस्तर लगा दिया है, परन्तु तुम्हारे भइया की प्रतीक्षा है। वे अभी तक नहीं आए हैं।

प्रतीक्षा का दृश्य है। वधू अपनी ननद से उसके भाई के आने की बात करती है और अपनी स्वागत की तैयारी भी बता देती है।

कौनउ रसिया मिचिकिसि फुलबा गलिया मोरी गमकाय।
सोने की थाली मां जेमना बनाएउं।
कौनउ रसिया मिचकइ अब फूल जेमना मोरा गमकाय।
सोने के लोटा मां जल भरि लायउं।
कौनउ रसिया मिचकै अब फूल जलवा मोरे गमकाय।
लौंगा इलायची के बीरा लगायउं।
कोनउ रसिया मिचकइ अब फूल त बिरिया मोरी गमकाय।

किसी रसिक ने फूल फेंक दिया है, जिससे मेरी गली सुगन्धित हो गयी है। सोने की थाली मे भोजन बनाया, परन्तु किसी रसिक ने फूल फेंक दिया तो भोजन सुगन्धि ात हो गया। सोने के लोटे में पानी भर कर लायी और किसी रसिक ने फूल फेंककर पानी को सुगन्धित कर दिया। लौग इलायची से पान का बीड़ा लगाया, जिसमें किसी रसिक ने फूल फेंककर बीड़ा सुगन्धित कर दिया।

कइसे धरउं मन धीर हो मोर दूनउ लाला निकरिगें।
केखर आहीं बाग बगइचा केखर आहीं फुलबाग हो। मोर दूनउ.........
राजा के आहीं बाग बगइचा रानी केर फुलबाग हो। मोर...कइसे........

मेरे दोनों बेटे निकल गए हैं, चले गए हैं। मैं धीरज कैसे धारण करूँ। बाग बगीचा किसके हैं, पुष्पवाटिका किसकी है? मेरे तो दोनों बेटे चले गए। बाग–बगीचे तो राजा के ही हैं। पुष्प वाटिका रानी की है। बेटे के जाने की स्थिति का वर्णन है।